CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवत् लावनी शतक

8·3

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो-५

नी शतक

जैन

नेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८२

卐 श्री ऋषभ जिनेन्द्राय नमः 卐

卐 भगवत् लावनी शतक 卐

गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं० ८८२
दिनांक.....
नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी

रचियता

भगवत्स्वरूप जैन "भगवत्" स० महामंत्री
श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र ऋषभनगर (मरसलगंज)
मु० पो० फरिहा (मैनपुरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain.·Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशिका

धर्मनिष्ठा, उदारमना श्री सेठानी भंवरीबाई जैन

धर्मपत्नी

धर्मोत्साही जैनरत्न, रायसाहब श्री सेठ चांदमल जी

जैन पाण्डया अध्यक्ष श्री भा० दि० जैन महासभा

मु० पो० गौहाटी (आसाम)

प्रथमवार १०००) भाद्र पद शुक्ला (मूल्य धर्म प्रचार

पंचमी (ऋषि पंचमी)

वीरसम्वत् २४९४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्री पं० रत्नेन्दु जैन शास्त्री की ❀

अमर आत्मा को

÷ समर्पण ÷

[छप्पय छन्द]

सुधी सुगुण भण्डार, सरल चित शान्ति सौम्य तन ॥
देव, सुगुरु, श्रुत, भक्त, सदा सद्धर्म रक्त मन ॥
सहयोगी सत्कार्य, सदाचारी गुण धारी ॥
साथी "श्री रत्नेन्दु" याद नित करें तुम्हारी ॥

अल्प आयु में स्वर्ग पद,
पाया तजि हम साथ ॥
अमर आत्म को भेंट यह,
रची लावनी हाथ ॥

भेंट कर्ता—

तुम्हारा परम स्नेही बन्धु—
भगवत्स्वरूप जैन "भगवत्"
मंत्री क्षेत्र कमेटी मु० पो० फरिहा (मैनपुरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

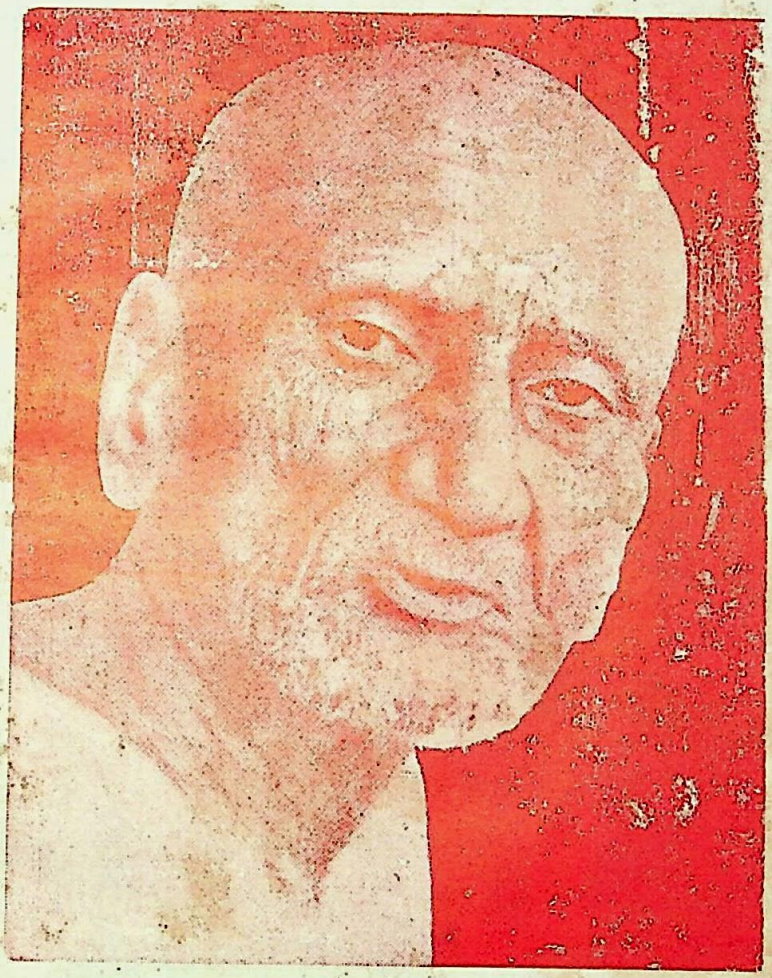

श्री १०८ परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उद्देश्य

[दोहा]

समोशर्ण में ऋषभजिन,
खिरी दिव्य ध्वनि सार ॥
चतु अनुयोग स्वरूप है,
द्वादशाँग सुखकार ॥ १ ॥
श्री प्रथमानु सु योग में,
पुण्य रु पाप निधान ॥
स्वर्ग मोक्ष पद प्राप्ति का,
जिसमें सकल विधान ॥ २ ॥
इस संग्रह में भी सकल, कथन किया उस तौर ।
रची लावनी छन्द युत, जैनागम करि गौर ॥ ३ ॥
पुन्य पुरुष जीवन चरित, सति चरित्र विशाल ॥
लिखा सु धर्म प्रचार हित, पुण्य, पाप, फल ख्याल ॥ ४ ॥
पढें सुनेंगे नारि नर,
बढै हृदय सु विवेक ॥
होवै धर्म प्रभावना,
यहीं सु "भगवत" टेक ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

श्री वर्धमानाय नमः

* भगवत् लावनी शतक पर मेरे दो शब्द *

श्री शांतिवीर दि० जैन सिद्धान्त संरक्षणी सभा की मीटिंग उसके सभाध्यक्ष श्रीमान सेठ सुनहरीलालजीके निवास स्थान आगरामें १० जून १९५७ को हुई थी। उस मीटिंग में मैं भी गया था, फरिहा के श्री पं० भगवतस्वरूप जी अतिश्य क्षेत्र मरसलगंज के मंत्री भी वहाँ आये थे, उन्होंने अपनी बनाई हुई १०० लावनीयों का संग्रह मुझे दिखाया था और उस पर मेरी सम्मति मांगी थी। मैंने उनमें से कतिपय लावनियों को पढा, पढते ही मुझे बहुत आनन्द हुआ एवं उन चरित्र नायकों के प्रति भक्ति पूर्ण उल्लास उत्पन्न हुआ मैंने सहर्ष स्वीकार किया कि मैं इन पर दो शब्द अवश्य लिखकर आपके पास भेज दूंगा।

लावनीयों की रचना जिन पवित्र आत्माओं के विषय में की गई है वे सभी प्रसिद्ध ऐतहासिक महापुरुष हैं, तथा जिनेन्द्र देव की प्रगाढ श्रद्धा और भक्ति के प्रसाद से घोर संकटों को निवारण करने वाले महान प्रभावक अतिश्य के सूचक हैं, इन लावनीयों के पढ़ने वालों के हृदय में जिन भगवान की भक्ति के उद्रेक के साथ २ संसार से विरक्तता भी जाग्रत होती है

जिनवाणी चार अनुयोगों में विभक्त है, १ प्रथमानुयोग २ चरणानु योग ३ द्रव्यानु योग ४ करणानु योग इन चारों योगों में से गृहस्थ के लिये सबसे प्रथम प्रथमानु योग के शास्त्रों का स्वाध्याय करना उपयोगी है, जिन शास्त्रों में मोक्ष गामी त्रेसठ शला का पुरुषों का, संसार विरक्त मुनियों का, तथा देव, शास्त्र, गुरुओं में अकाट्य श्रद्धा रखने वाले धर्म सेवी श्रावकों का जीवन चरित्र है जो परम हितकारी है ऐसे पुराण शास्त्रों के स्वाध्याय से संसार और इन्द्रिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावनाओं से वैराग्य उत्पन्न होता है, चरित्र पालन में अभिरुचि बढ़ती है, आत्मा अपने हित की ओर झुक जाती है।

प्रथमानुयोग शास्त्रोंके साथ चरणानुयाग शास्त्रोंका स्वाध्याय करना अत्युपयागी है, चरणानुयोग के शास्त्रों से श्रावकों को क्रम से अपने पद के अनुसार धार्मिक आवश्यक क्रियाओं का बोध होता है। शेष दो अनुयाग भी तत्व बोध में पूर्ण सहायक सम्यक्ज्ञान वर्धक है। इन लावनीयों में उन्ही प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुराण पुरुषों की कथाओं का स्तर कविता रूप में सरलता से प्रकट किया गया है, जैन समाज में यह परपाटी चली आरही है कि शास्त्र प्रवचनके बाद महिला समाज और पुरुष समाज द्वारा भजन बोले जाते हैं, उन भजनों में तत्वों का और चारित्र का सार भरा रहता है, जितना मन उन भजनों के सुनने में लगता है उतना शास्त्र श्रवण में भी नहीं लगता है। विशेष बात यह है कि जो भजन स्व० पं० दौलतराम जी, द्यानतराय जी, भूधर दास जी, भागचन्द जी आदि विद्वान कवियों ने बनाये हैं और उनमें जो तत्वों का सार श्रवण प्रियता शब्दलालित्य आदि चित्ताकर्षक महत्व है वैसा आधुनिक खड़ा बोली के अथवा सिनेमा के नई चालों के भजनों में गम्भीर तत्व विवेचन और सार नहीं पाया जाता है। लावनीयों की चाल और विवेचन शैली पुराने भजनों के समान ही अत्यन्त प्रिय और चरित्र और चारित्र पर मधुरता के साथ प्रकाश डालने वाली है। इस लावनी शतक में आचार्य मुकट समन्तभद्र स्वामी, भगवन् अकलंक देव, सुदर्शन महामुनि, अंजनासती, चेलना सती, भगवान् पार्श्वनाथ जी का घोर तपश्चरण और कमठ शठ का घोर उपसर्ग, वज्रकरण की कथा, सुकोशल महामुनि की कथा आदि महान महर्षियों और पवित्र सतियों की कथायें लावनी रूप हिन्दी पद्य रचना में बहुत सुन्दरता से सुकवि श्री पं० भगवत्स्वरूप जी महोदय ने लिखी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लावनी लेखक महोदय का परिचय

इस भगवत् लावनी शतक के लेखक श्री पं० भगवत्स्वरूप जी फरिहा (मैंनपुरी) यू पी० के निवासी हैं, हिन्दी भाषा के शास्त्रों के स्वाध्यायी विद्वान हैं, समाज की गति विधि के जानने वाले हैं, दृढ आगम निष्ट हैं यही कारण है कि उनकी जितनी भी कविताऐं हैं वे सब आगमानुकूल हैं, तथा देव शास्त्र गुरुओं में श्रद्धा भक्ति प्रगट करने वाली हैं। वे अतिश्य क्षेत्र मरसलगंज (ऋषभनगर) के मंत्री हैं उन्हीं की धार्मिक लगन और सत्प्रयत्न से मरसलगंज क्षेत्र जो पहले उजाड जंगल जैसा बना हुआ था अब महान रमणीय एवं दर्शनीय बन गया है, उन्होंने परम पूज्य चारित्र चूड़ामणि श्री १०८ आचार्य विमल सागर जी के चरण सान्निध्य में अपना धार्मिक मनोरथ पूरा किया है। आचार्य महाराज के संकेत पर उन्होंने धार्मिक-सज्जनों से द्रव्य प्राप्त कर ८॥ साड़े आठ फुट ऊंची महामनोहर विशालकाय श्वेतबर्ण पदमासन श्री १००८ भगवान आदिनाथ जी की सुन्दर नवीन प्रतिमा जी बनवाई और समाज रत्न दानवार राय-साहब सेठ चाँदमल जी पाण्डया गाहाटी (आसाम) वालों को उक्त आचार्य महाराजके संकेत पर पंचकल्याण प्रतिष्ठा को तैयार किया, श्री रायसाहब जी ने अपना एक लाख रूपया लगा कर बड़ी भारी प्रभावना के साथ प्रतिष्ठा कराई, इस प्रतिष्ठा में श्री १०८ आचार्य विमल सागर जी महाराज ससंघ पधारे थे। भा० दि० जैन महासभा का श्रीशान्ति वीर जैन सिद्धान्त संरक्षिणी सभाका अधिवेशन बहुत शान दार हुआ था। श्री रायसाहब जितने उदार हैं उतने ही दृढ़ धार्मिक हैं, वे धर्म कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग एवं अपना विपुल द्रव्य लगाने में सदैव तत्पर रहते हैं। इन्होंने सुजानगढ़ (मारवाड़) में भी बड़े वैभव के साथ पंचकल्याण प्रतिष्ठा कराई है आप भा० वर्षीय दि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

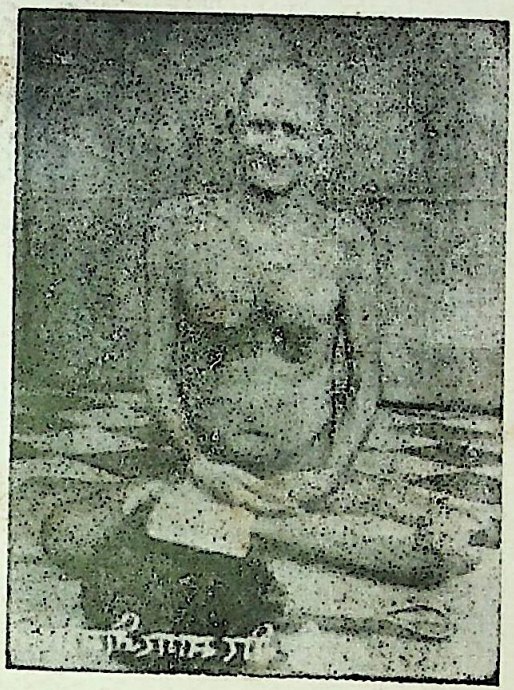

श्री १०८ परमपूज्य आ० श्री वीरसागर जी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

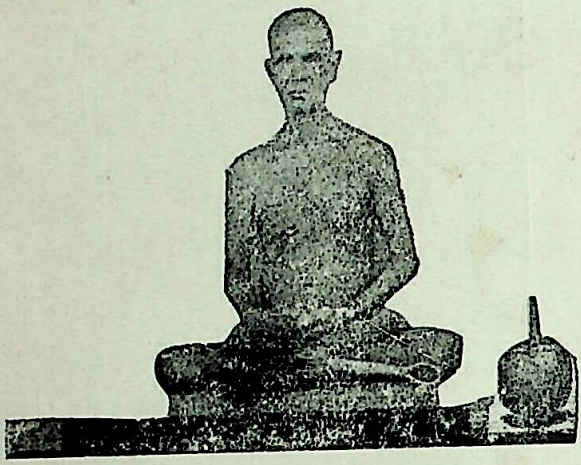

श्री १०८ परमपूज्य आ० श्री शिवसागरजी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन महासभा के सभापति हैं भारत प्रसिद्धि धार्मिक संस्था श्री गोपाल दि० जैन सिद्धान्त विद्यालय मोरेना के भी सभापती हैं, तथा शान्ति वीर दिगम्बर जैन सिद्धान्त संरक्षणी सभा के संरक्षक हैं । श्रीमान रायसाहब का समाज अतीव कृतज्ञ है।

इस भगभत् लावनी शतक को प्रत्येक श्रावक और श्रावकायें बड़ी अभिरुचि के साथ पढ़े, और उन विशुद्धात्माओं की सुकथा से स्वात्म हित का लक्ष्य पूरा करें।

—मक्खनलाल शास्त्री

आचार्य—गो० दि० जैन सिद्धान्त महा विद्यालय

मोरेना (म० प्र०)

श्रावण शुक्ला पंचमी गुरुवार

श्री वीर नि० सं० २४६३

८-८— ७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

(मैं) न तो कवि हूँ, न पण्डित, देव, शास्त्र, गुरु भक्ति वस कुछ तुक बन्दी कभी २ जोड लेता हूं । बस मेरे द्वारा लिखा हुआ और भी धार्मिक साहित्य है, जो आर्षमार्गानुकूल कवितामय छन्दोबद्ध है। यथा "श्री जिनवाणी माहात्म" (श्री सेठ सुकमाल जी का जीवन चरित्र) जो कि आधुनिक शैली में तीन संधियों में है, मनोरंजन के साथ २ महान शिक्षाप्रद है। दूसरा "श्री शीलमाहात्म" (श्री सुखानन्द मनोरमा सती चरित्र) यह स्टेज पर भी खेलने योग्य है और वैसे भी मनोरंजक है तथा विशेष शिक्षाप्रद है । तीसरा "भगवत् भजन संग्रह" यह सग्रह भी महान हितकारी शिक्षाप्रद है इसमें कण्ठस्थ कर गायन योग्य भजन हैं। "श्री जिनेन्द्र पूजन संग्रह" यह सत्तरह जिनेन्द्र तथा मुनिराजों की पूजा का संग्रह है। इसे आगरा के धर्मनिष्ठ सेठ श्री सुनहरीलाल जी ने एक हजार छपवा कर बट वाया था यह पूजन का संग्रह आधुनिक शैली में सरल सुबोध रूप में लिखा गया है जिसे जनता ने इतना पसन्द किया कि सब प्रतियां खतम हो चुकी है, और अभी बराबर मांगी जा रही है अब जब श्री सेठ साहब इसका दूसरा संस्करण छपवावें तभी इच्छुक जनों को प्राप्त हो सक्ती हैं । इसके अलावा श्री जिनेन्द्र मुनिन्द्र पूजन की दूसरी पुस्तक श्री सुरेशचन्द्र राजीवकुमार जैन (इशौली वाले) नई बस्ती फीरोजाबाद वालों ने छपवा कर बट बाई है।

इस पुस्तक में श्री दि० जैन अ० क्षेत्र ऋषभनगर मरसलगंज स्थित पूलनायक चमत्कारी अतिश्यधारी श्री १००८ भगवान ऋषभदेव जी की पूजन है जो क्षेत्र परिचय सहित है, श्री १००८ भगवान बाहूबली जी की पूजन है, श्री बाहूबली चालीसा तथा आरती है, और श्री १०८ महामुनि विश्णुकुमार जी तथा अकंपनादि सातसौ मुनि पूजन हैं । यह पुस्तक भी बट चुकी है । मेरी भावना धर्म प्रचार हेतु ही अपने द्वारा लिखित साहित्य प्रकाशन कराने की है, मैं इस धार्मिक रचना की विक्रा कर लाभ करने के पक्ष में नहीं हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा विचार सदैव से यह रहा है कि जो सज्जन निज द्रव्य लगा कर धर्म प्रचारार्थ पुस्तकें छपवाकर बटवाना चाहेंगे तो उन्हें ही मैं अपनी कृति दूंगा, विक्री करने के लिये नहीं। मैं जिनवाणी की विक्री करके लाभ उठाकर भोगमें लानेके पक्ष में नहीं हूँ। यही कारण है कि कई बुकसेलरों द्वारा लालच देने पर भी मैंने उन्हें अपनी रचना नहीं दी और अब तक अप्रकाशित हैं। दूसरे मैं अपनी कविताओं के प्रकाशन करने की बात भी किसी से जोर देकर नहीं करता हूं, जब कि मैं ऋषभनगर मरसलगंज क्षेत्र के हर प्रकार का जोर देकर दातार तैयार करता हूँ, और वहां की उन्नति का साधन जुटाता हूँ। उपरोक्त दो मूल कारण ही अब तक मेरे लिखे साहित्य के अप्रकाशित होने के हैं। प्रस्तुत लावनी शतक भी एक शिक्षा प्रद संग्रह है इसमें सभी लावनी पूज्य पुरुषों के जीवन चरित्र की हैं तथा पांच पापों के त्याग की, सप्त विषन त्याग का, उपदेशीय, तथा पूज्य महान सतीओं के जीवन चरित्र की एवं श्री पद्मपुराण के रावण राम सम्बन्ध की हैं। इन्हें कंठस्थ करके पढ़ने से पाठक और श्रोतागणों को महान आनन्द प्राप्त होगा। साथ ही धर्म भावना जाग्रत होगी। इसके प्रकाशन के लिये मैंने आगरामें पधारे हुये जैन समाज जैनरत्न, धर्मनिष्ठ, उदारमना, श्री सेठ रायसाहब चाँदमल जी पाण्डया से निवेदन किया, श्री पाड्याजी ने बिना इन्हें देखेही तत्काल स्वीकृति देदी, और श्री महावीर जी में पूज्य श्री ब्रह्मचारी सूरजमल जी द्वारा छपने का और वहीं कापी भेजने का मुझे आदेश दे दिया।

श्री रायसाहब की उदारता के बारे में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने मात्र है, समस्त दि० जैन समाज आपकी उदारता की भूर २ सराहना करता है। धन प्राप्त करना सहज है परन्तु उस धन का सदुपयोग करना धर्म मार्गमें लगाना यह महान पुरुषोंका ही काम है। आपकी धर्म पत्नी सौभाग्यशीला, धर्मनिष्ठा, सुगुरु भक्ता, महा उदार हृदय विनुयालु स्त्री रत्न हैं, उनकी सदैव धर्म कार्यों के लिये ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरणा रहता है यह लावनी शतक भी उन्हीं की तरफ से पाठकों की भेंट है। मुझे विश्वास है कि धार्मिक समाज इस संग्रह से धर्म लाभ प्राप्त करेगी, और इसकी लावनीओं को पढ़कर उनसे अपना पुण्य बन्ध करेगी। जहां तक मुझसे होसका है मैंने लावनीं की तर्ज (चाल) को कई २ वार पढ़कर लिखा है इसकी चाल में जो दूसरी लायन आती है उसको अर्ध विराम पर ही जोर देकर पढ़ने से उसकी चाल सही आ जाती है, मैंने उस अर्द्ध विराम को लायनों में लगा दिया है, पाठक देखकर पढ़ें। यथा

सुखकारी है दिन आहरी, जो निश भोजन का त्यागी।
दोष सहित है, रात्रो भोजन त्यागै सो बढ भागी॥

यहां "दोस सहित है" यह पद जोर देकर पढने से चाल ठीक रहेगी मैं ने और भी अन्य कविओं द्वारा रचित लावनीओं को इसी तर्जमें देखा है। मैं सम्मानीय धर्मधांर, विद्यावारिधि, वादीभकेशरी, न्यायालंकार, न्यायदिवाकर, विद्वत्तिलक, निर्भीक वक्ता, आर्ष मार्ग पोषक विशिष्ट विद्वान श्री पं० मक्खन लाल जी जैन शास्त्री मोरेना का विशेष २ आभारी हूँ जिन्होंने इस लावनीं शतक की प्रस्तावना लिखकर इस तुच्छ कविता को गौरव शाली बना दिया है। साथ ही मैं सुगुरु भक्त, धर्मनिष्ठ, धर्मोत्साही श्रद्धेय पुज्य ब्रह्मचारी श्री लाड़मल जी तथा संहितासूर, प्रतिष्ठाचार्य. बालब्रह्मचारी श्रद्धेय पूज्य पंडित सूरजमल जी शास्त्री तथा महाविद्वान् कुशल लेखक सुयोग्य तार्किक श्री पं० अजितकुमार जी जैन शास्त्री का भी महान २ आभारी हूँ कि जिन्हों की विशेष देख रेख मेंइस पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। प्रूफ संशोधन आदि का जो गुरु तर कार्य हुआ है वह इन विद्वान त्रय मूर्तियों द्वारा हुआ है। अन्त में मैं सभी पाठक गणों से सविनय निवेदन करूगां कि जो कुछ भी त्रुटियां इस शतक में उन्हें दृष्टिगत हों उनसे मुझे अवगत करें, और मुझे अल्पज्ञ समझ कर क्षमा करें।

विनीत—

भगवत्स्वरूप जैन "भगवत्" फरिहा [मैंनपुरी]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

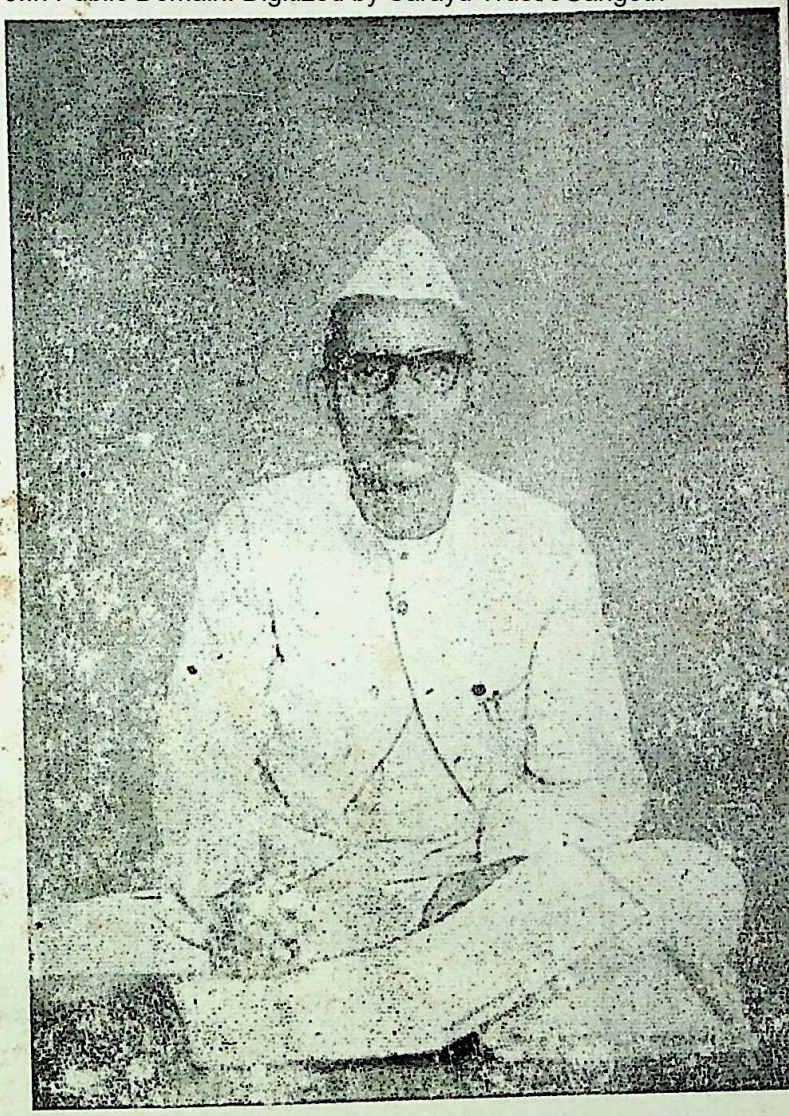

पं० भगवत्स्वरूप जी जैन स० मंत्री
श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र ऋषभ नगर फरिहा (मैनपुरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

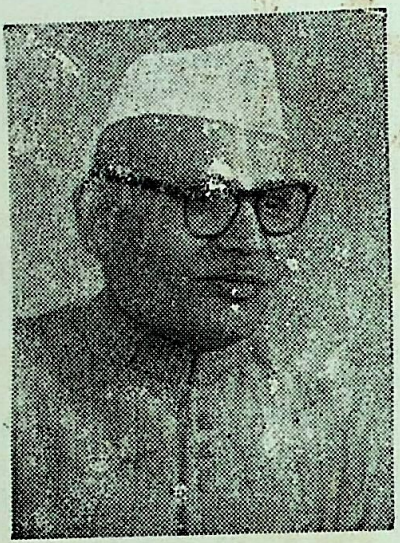

धर्मोत्साही, जैनरत्न रायसहाब श्री सेठ चांदमल जी पांड्या
गौहाटी (आसाम)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय अनुक्रमणिका

क्रमांक	नाम कविता	पृष्ठ संख्या
१	श्री वर्त्तमान चौवीस जिनेन्द्र वन्दना	१
२	श्री णमोकार मन्त्र का महात्मय	४
३	श्री अकृतिम चैत्यालय वन्दना	६
४	श्री सिद्ध क्षेत्र पूजन महात्म्य	८
५	श्री नन्दीश्वर द्वीप चैत्यालय वन्दना	१०
६	श्री जिनेन्द्र पूजन महात्मय	१३
७	श्री शास्त्र स्वाध्याय प्रेरणा	१५
८	श्री पार्श्वनाथ जी कमठ चरित्र	१७
९	श्री मोक्षगामी वन्दर की कथा	२०
१०	श्री शीलव्रत महात्म्य	२२
११	श्री वाहूवली स्वामी चरित्र	२४
१२	श्री चरण ऋद्धिधारी श्री सप्त ऋषि चरित्र	२६
१३	श्री सेठ सुदर्शन चरित्र	२८
१४	श्री सुकमाल महामुनि चरित्र	३१
१५	श्री महामुनी श्री सुकौशल जी	३३
१६	श्री साधु स्वरूप वर्णन	३५
१७	श्री ईश्वर कर्त्ता खन्डन तथा ईश्वर सरूप	३८
१८	श्री दयाधर्म प्रधानता एवं श्रेष्ठता	४०
१९	श्री चार उत्तम रत्न परीक्षा	४२
२०	श्री समन्त भद्राचार्य चरित्र	४५
२१	श्री अकलङ्क महामुनि चरित्र	४७
२२	श्री शुभ चन्द्राचार्य एवं भर्तृहरि चरित्र	५०
२३	श्री पात्रकेशरी महामुनि चरित्र	५३
२४	श्री वारिषेण महामुनि चरित्र	५६
२५	श्री दृढ़श्रद्धानी श्री राजा वज्रकर्ण की कथा	५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ श्री दृढव्रति श्री यमपाल चाण्डाल की कथा ६१
२७ वैश्यागामी दृढ सूय चोर की कथा ६३
२८ अभिमानी निषेध ६५
२९ धर्मात्मा सत्पुरुष लक्षण .९
३० श्री अहिदेव महिदेव की कथा ७०
३१ जैन की पहिचान ७२
३२ सप्त व्यसन निषेध ७४
३३ अभक्ष्य भोजन त्याग प्रेरणा ७९
३४ (हिंसा निषेध) धन श्री सेठानी की कथा ८१
३५ (असत्य निषेध) सत्यघोष की कथा ८४
३६ (चोरी निषेध) तापसी चोर की कथा ८७
३७ (कुशील निषेध) कामी कोतवाल की कथा ९१
३८ (लोभ निषेध) महा लोभी पुरुष की कथा ९४
३९ नरभव को व्यर्थ न खोओ ९७
४० विपत्ती की जड़ सम्पत्ती (अगांर देव की कथा) ९९
४१ सत्पात्र दान महिमा १०२
४२ अंजना चरित्र १०५
४३ श्री चेलना रानी चरित्र १०८
४४ श्री सुखानन्द मनोरमा शील चरित्र १११
४५ सत्पात्र दान प्रभाव (अग्निला ब्राह्मणी चरित्र) ११५
४६ श्री द्रोपती सती चरित्र ११७
४७ श्री महासती राजुल देवी चरित्र १२०
४८ श्री जिनदत्ता सेठानी चरित्र १२२
४९ महासती सोमादेवी चरित्र १२५
५० श्री महासती चन्दनवाला चरित्र १३१
५१ श्री शीलवती महासती नीलीवाई चरित्र १४०
५२ सुलक्षणा नारी स्वरूप १४४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३ कुलक्षणा नारी स्वरुप १४६
५४ राजा यशोधर चरित्र १४८
५५ कर्मोदय महा बलवान १५०
५६ श्री मानतुगाँचार्य चरित्र १५२
५७ श्री आ र्य शान्ति सागर चरित्र १५५
५८ मनुष्य जीवन सफल करो १५८
५९ मनोभावना शुद्ध रखो १६१
६० तब और अब में क्या अन्तर है १६३
६१ समय का प्रभाव १६६
६२ पैसे का महात्म्य १६९
६३ सिनेमा निषेध १७१
६४ समाधि मरण के लिये १७३
६५ कल्याण कारी सम्वर तत्व १७५
६६ एक सज्जन और यमराज की मित्रता १७७
६७ सत्संगति का प्रभाव १८०
६८ नरकगामी ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती १८२
६९ सनत्कुमार चक्रवर्त्ती का चरित्र १८४
७० श्री जिन दर्शन महात्म्य १८७
७१ निशि भोजन त्याग महात्मय १९२
७२ सेठ चारुदत्त चरित्र १९६
७३ स्वार्थलीन संसार १९९
७४ अञ्जन चोर की कथा २०५
७५ अनन्तमती चरित्र २१०
७६ उद्दायन राजा चरित्र २१५
७७ श्री रेवती रानी चरित्र २१८
७८ सेठ जिनेन्द्र भक्त चरित्र २२२
७९ श्री मुनि वारिषेण चरित्र २२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८० श्री विष्णु कुमार चरित्र २२७
८१ श्री यक्ष कुमार मुनि चरित्र २३२
८२ बानर वंशी हनुमान २३७
८३ राक्षस वंशी रावण २३९
८४ रावण का शील प्रतिज्ञा २४१
८५ सीता हरण २४४
८६ सीता के वियोग का दुख २४६
८७ हनुमान का लंका गमन २४८
८८ लंका पर चढाइ २५०
८९ राम रावण युद्ध २५२
९० शक्ति से छुटकारा २५४
९१ रावण से मन्दोदरी का अनुरोध २५६
९२ राम की विजय २५९
९३ कुम्भकर्ण आदि का मुक्ति गमन २६१
९४ सीता का वनवास २६४
९५ लवण कुमार मदनांकुश से पिताका युद्ध २६६
९६ सीता की अग्नि परिक्षा २६९
९७ जम्बू स्वामी चरित्र २७३
९८ अन्तिम श्रुत केवली श्री भद्र बाहु २८२
९९ मोह निद्रा त्यागो २९२
१०० निश्चय व्यवहार सम्यक्त्व २९४
१०१ अपनी बात २-९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वीरजिनेन्द्राय नमः ।

लावनी-संग्रह

श्री जिनेन्द्र बन्दना

—※×※—

लावनी १

श्री जिनवर चौवीस नाम, मन वच तन कर जो नर ध्यावै ।
पूजै वन्दै, नर सुरग सुख लहि शिव पद को पावै ॥टेक॥
स्वयं सिद्ध संसार अनादी, जीव अनन्तानन्त बसें ।
कर्म-योगसे, चतुर्गति अरु निगोद जन्में सु नसें ॥
उत-अव-सर्पिणि छह छह घूमें, पुन्य पाप दर्शाते हैं ।
हानि वृद्धि मय, आयु, बल, बुद्धि, काय बतलाते हैं ॥
(छन्द) दश सु कोड़ाकोड़ि सागर, काही होता एक है ।
उत्सर्पिणी में आयु काया, बढै बुद्धि विवेक है ॥
अवसर्पिणिमें हानि हो, यह नियम आदि अनादि का ।
दश क्षेत्र ऐरावत, भरत, किया कथन तजि सबवादिका ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) त्रेसठ पुरुष शलाका होते, चौथा काल सु जब आवै ।
पूजै वन्दै, नर सुरग सुख लहि शिव पद को पावै ॥१॥
हों चौबीस जिनेश धर्म मारग प्रकाशि शिव जाते हैं ।
द्वादश चक्री, क्षेत्र पूरे के भूप कहाते हैं ॥
नव प्रति हर जो विद्या धारी, अर्द्ध क्षेत्र-पति गाते हैं ।
इन्हें मारिकर, राज्य लें नारायण कहलाते हैं ॥
(छ०) भ्रात बड़े बल भाग्यशाली कहे नव हरिके सही ।
हरि से रखें बहु प्रेम नित, बलदेव संज्ञा इन कही ॥
बलदेव, चक्री, नरक, सुर, औ मोक्ष त्रय पद पावते ।
हरि और प्रतिहर नियम से. ही नरक धाम सु जावते ॥
(दौ०) नर होकर तप करें कर्महनि सबहो शिवपुरको जावें ।
पूजैं बन्दें, नर सुरग सुख लहि शिव पद को पावें ॥२॥
वर्तमान चौवीस जिनेश्वर, नाम सुनों मंगलकारी ।
ऋषभनाथ जी, अजित, शम्भव, अभिनन्दन सुखकारी ॥
सुमति, पद्म, औ प्रभू सुपारस, चन्दा-प्रभ हैं अघहारी ।
पुष्पदन्त जी, श्री शीतल, श्रेयांस, भवभय टारी ॥
(छंद) हैं वासुपूज्य, विमल, अनन्त सुधर्म, जिन जगतार हैं ।
श्री शान्ति, कुन्थु, अरह जिनेश्वर करें पातिक छार हैं ॥
श्री मल्लि, मुनिसुव्रत, सु नमि, प्रभु, नेमि, पारसनाथजी ।
महावीर जिन चौबीस पद, पुनि २ नमों नवि माथजी ॥
(दौ०) भवभय भंजन नाम निरंजन, पद पावै जो नित गावै ।
पूजै वन्दें नर सुरग सुख लहि शिव पद को पावै ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वासुपूज्य मलि, नेमि पार्श्व, प्रभुवीर, बाल ब्रह्मचारी है।
पंच बालयति, चरण में सविनय धोक हमारी है॥
आदीश्वर कैलाश, नेम गिरनारि, सिद्धि पद पाया है।
वासुपूज्य जो वीर, चम्पा, पावापुर भाया है॥
(छन्द) बाकी जिनेश्वर वीस, श्री सम्मेद गिरसे शिव गये।
अरु मुनि अनन्ते सिद्धि पद, हम उन चरण मस्तक नये॥
श्री पुष्पदन्त, सु चन्द्र प्रभ, शशिसमधवल तन धारते।
पारस, सु पारसनाथ, का तन हरित वरण उचारते॥
(दौ०) वासुपूज्य औ पद्मप्रभ तन, लाल जिनागम बतलावै।
पूजै वन्दै नर सुरग सुख लहि शिवपद को पावै ॥४॥
मुनिसुव्रत औ नेमिप्रभु ने, श्याम रूप तन पाया है।
बाकी सोलह, श्री जिन तन कंचन सम गाया है॥
यह शरीर थित वरण बताये, शुद्ध ज्ञान दर्शन मय है।
सिद्ध शला पै, अनन्ते सिद्ध मिली लय में लय है॥
(छन्द) यह वर्तमान जिनेश, भूत भविष्य चौवीसी महा।
दश क्षेत्रके गिन सात सौ, औ वीस जिन शिवपद लहा॥
त्रयकाल निश दिन ध्याय इनको शुद्ध मन वच होय के।
नरराय सुर पद पाय शिव हो, जन्म मरण सु खोय के॥
(दौ०) 'भगवत' हृदय ध्यानि धरि अहनिश,
निजस्वरूप जो चमकावै।
पूजै बन्दै, नर सुरग सुख लहि शिव पद को पावै ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री णमोकार मन्त्र माहात्म्य

—:o:—

लावनी—२

शुद्ध हृदय से णमोकार का, मंत्र सदा जपिये भाई।
पंच परम पद, जगत में हैं सबको मंगल दाई ॥ टेक ॥
दोष अठारह रहित, सहित छयालीस सुगुण अरहंत जपो।
उन गुण ध्यावौ, दया पालौ पापों से सदा कपौ ॥
सिद्ध शिला पै सिद्ध अनन्तानन्त, विराजें निर-आकार।
गुण अनन्त हैं, उन्हें ध्यावौ बन्दन कर बारम्बार ॥
(छन्द) षट तीस गुण धारी मुनी, चतु संघके जो ईश है।
निस्पृह दिगम्बर वीतरागी, ध्याइये नमि शीश है ॥
जो पठन पाठन लीन, निश दिन भाषते द्वादशांग को।
जो नग्न भेषी शास्त्र ज्ञानी, जपि नमा निज अङ्ग को ॥
(दो०) अठ्ठाईस मूल गुण धारी, जपौ सदा श्री मुनिराई।
पंच परम पद, जगत में हैं सबको मंगल-दाई ॥१॥
णमोकर में इन्हीं पंच परमेष्ठी को वन्दन कीना।
जो नर ध्यावै, उन्हीं का सार जगत में है जीना ॥
श्रद्धा और विनययुत होकर, जो ध्यावै वह सुख पावै।
स्वर्ग सुखों, को भोगकर पुनः सिद्ध थल को जावै ॥
(छंद) यह मूल मन्त्र अनादि है, इसको सुने जो कान में।
मरते समय शुभ भाव से, वे गये स्वर्ग विमान में ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल रहे नागिन नाग, सुनते मन्त्र सुधरी है गती।
बहु ऋद्धि धारक देव हैं, धरणेन्द्र औ पद्मावती॥
(दौ०) बैल सुना जो मन्त्र देव हो, फिर सुग्रीव हुआ आई।
पंच परम पद, जगत में हैं सबको मंगल दाई॥२॥
बकरा सुनकर मन्त्र देव हो चारुदत्त को पूजा है।
बन्दर सुनकर, देव पद पाया सुरग सू दूजा है॥
होय सुप्रतिष्ठित पाय ज्ञान, केवल शिवधाम पधारे हैं।
दोही भव में, भये जगदीश जगत से न्यारे हैं॥
(छंद) हथिनी फसी थी कीच में, थी, मृत्यु छाई प्राण में।
सौभाग्य से यह मन्त्र प्यारा, सुन लिया था कान में॥
भव देय कुछ वह हो गई, सीता सती विख्यात है।
जग आज उन पद शीश नावै, कहै सीता मात है॥
(दौ०) अञ्जन चोर निरंजन होकर, मंत्र प्रभाव सुचमकाई।
पंच परम पद जगत में हैं सबको मगल दाई॥३॥
शूली पर दृढ़ सूर्य चोर ने, कही सेठ सों जल प्यावौ।
लाता हूं मैं, सेठ ने कहो मन्त्र मेरा ध्यावौ॥
ताणं, ताणं कहै सेठ वच, परमाणं ऐसे गावे।
दृढ़ श्रद्धायुत, मरा सौधर्म सुरग में थिति पावै॥
(छंद) इत्यादि पशु नर मन्त्रसे, सुर पाय शिवपद पाइया।
वसु ऋद्धि नवनिधि सुख मिलै जो मन वचन तन ध्याइया।
जो चाहते हौ सुख मिलै, तो मन्त्र का सुमरन करो।
नर सुखों को भोगकर, फिर जाय शिव तिय को बरो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) 'भगवत्' अहनिश जपौ, वंदन करो पंचपद शिर नाई।
पंच परमपद, जगत में हैं सबको मंगल दाई ॥४॥

—:०:—

श्री अकृत्रिम चैत्यालय वन्दना

—:०:—

लावनी—३

अकृत्रिम चैत्यालयवन्दों, मन वच तन शिर नाई है।
स्वयं-सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुखदाई है ॥टेक॥
नीचे चित्रा पृथ्वी के तल, लोक पताल बताया है।
त्रिकालदर्शी, केवली जिनवाणी समझाया है ॥
रत्न प्रभा पृथ्वी है पहली, तीन भाग बतलाये हैं।
खर सुपंक हैं, अब्बहुल भाग नाम श्रुत गाये हैं ॥
(छंद) खर पंक में रहें भवनवासी, देव जो दश जाति के।
दो इन्द्र दो प्रतीन्द्र सब में, ऋद्धिधर बहुभांति के ॥
उनके विमानों में जिनालय बने अकृत्रिम महा।
सब हैं करोड़ जु सात, लाख बहत्तरें संख्या कहा ॥
(दो०) एक एक जिनभवन, एकसौ आठ श्री जिनराई है।
स्वयं सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुखदाई है ॥१॥
राजू सात पाताल लोक है, पृथ्वी सात बताते हैं।
सात नरक हैं, क्रमशः नीचे नीचे जो पाते हैं ॥
सात प्रभायुत सात भूमि हैं पापी जीव सु जाते हैं।
पाप कर्म का, दुक्ख फल नाना भांति उठाते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) पाताल देव सु भवनवासी, असुरनाम सु कहत हैं।
तीजे नरक तक जा लड़ाते, दुक्ख नारक सहत हैं॥
पाताल रचना है सही, पाताल जो जिनधाम हैं।
सब विम्ब औ सब ही जिनालय, नमों आठौ याम हैं॥
(दो०) कर युग जोड़ि नवाकर मस्तक, परोक्ष वंदन भाई है।
स्वयं सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुख-दाई है ॥२॥
मध्य लोक तेरह द्वीपों में, चार शतक अठ्ठावन हैं।
भवन अकृत्रिम, श्रीजिन सुर नर के मनभावन हैं॥
ढाई द्वीप द्वीप नन्दीश्वर, कुण्डल, रुचिक द्वीप गाये।
साल्मली है वृक्ष जम्बू वैताढ्य शिखर पाये॥
(छन्द) जिन धाम इष्वाकार गिर, औ चैत्य वृक्ष सुजानिये।
हैं पांच सौ धनु उच्च प्रतिमा, स्वयं सिद्ध सु मानिये॥
बन्दन करूं कर जोड़ के, बहु भक्ति भाव विचार के।
सद्दर्श, ज्ञान, चारित्र, सम्यक्, प्राप्ति हेतु सुधारि के॥
(दो०) सद्गति कारक भवदुख हारक, जिनवन्दन श्रुत गाई है।
स्वयं सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुख-दाई है ॥३॥
मध्य और पाताल लोक के व्यन्तर देव सु वासी हैं।
तिन आलय में असंखे जिन आलय गुण रासी हैं॥
नभ में ज्योतिष देव विमानों, में असंख्य जिन मन्दिर हैं।
सभी अकृत्रिम, विम्ब शत आठ सभी के अन्दर हैं॥
(छंद) सौधर्म सुरग सु आदि सोलह, ग्रीव नव नव अनुदिशें।
शुभ विजय आदि सुपंच थानक, धाम जिनवर तिन विषें।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं लाख चौरासी, हजार, सतानवै तेईस गिन ।
त्रैलोक्य में जिन धाम अकृत्रिम नमों नित रात दिन ॥
(दो०) वन्दत पात कटें भव भव के दर्शत सम्यक् पाई है ।
स्वयं सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुखदाई है ॥४॥
द्वीप अढ़ाई मांहि जिते, श्रावक जिन मन्दिर बनवाये ।
संग धातु के रत्न चांदी स्वर्ण जिन पधराये ॥
भूत भविष्यत वर्तमान, चौवीस को हम शिर नाये ।
विदेह वासी, वीस जिन विद्यमान मन वच ध्याये ॥
(छन्द) हैं पांच ऐरावत भरत, दश क्षेत्र के चौवीस दश ।
त्रैकाल के हैं सात सौ, अरु वीस वन्दों शीश घस ॥
कृत्या अकृत्रिम जिन भवन, जिन बिम्बकी करि बन्दना ।
नित शुद्ध मन शुभ भाव से फिर रहै भवका फन्द ना ॥
(दो०) जिनमन्दिर प्रतिमाजिन सबको 'भगवत्' धोकलगाई है
स्वयं सिद्ध है, मनोहर रचना अति सुखदाई है ॥५॥

—:०:—

श्री सिद्धचक्र पूजन माहात्म्य

—:०:—

लावनी—४

सिद्ध-चक्र पूजन विधान की, महिमा आगम में भारी ।
जिन फल पाया, उन्हों की कथा सुनों सब नर नारी ।टेक।
कोटिभट श्रीपाल नृपति के कोढ़ हुआ सारे तन में ।
तजि रजधानी, जायकर बसे उज्जैनी वन में ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघ सातसौ सुभट कुष्ठ वाधासे दुखित सभी मन में ।
नहिं क्षण साता, असाता उदय रहे निर्जन वन में ॥
(छन्द) पहुपाल नृप उज्जैन के, हैं दो सुता जिनके घरें ।
सुर और मैना सुन्दरी, शुभ नाम सुन्दरता धरें ॥
मैना सती कहा पिता से, निज भाग्य जग बलवान है ।
सुख दुख मिलै सब भाग्य से विपरीत वह अभिमान है ॥
(दौ०) क्रोधित होकर भूप व्याह दी, कोढ़ी संग सुता प्यारी ।
जिन फल पाया, उन्हों की कथा सुनों सब नर नारी ॥१॥
मैना सुन्दरि मुनिवर पूछे, क्यों कर मो पति कुष्ट मिटै ।
कही मुनीश्वर, करो व्रत सिद्ध-चक्र सब पाप कटै ॥
कार्तिक फागुण अरु अषाड़के, अन्तिम अष्टदिवस सुखखान ।
नन्दीश्वर के पूज्य दिन उनमें कीजै यह सु विधान ॥
(छन्द) श्री सिद्ध यन्त्र प्रक्षालकर बहुमंत्र युत शुभ भावसे ।
वसु दिन करो श्री सिद्ध गुण, पूजन महान् उच्छाव से ॥
प्रक्षाल जल से कुष्ट आदिक व्याधि सब हट जायगी ।
श्री सिद्ध-चक्र विधान से, मन चिन्तते फल पायगी ॥
(दौ०) मुनि वच सुन मैना सुन्दरिने. सिद्धविधान किया जारी
जिन फल पाया. उन्हों की कथा सुनों सब नरनारी । २॥
करि अभिषेक यंत्र का मैना, ला जल सब पर डाला है ।
पाई साता, रोग का होने लगा मुँह काला है ॥
कोटीभट श्रीपाल नृपतिका, वसुदिन में तन कनक समान ।
हुआ मनोहर, सात सौ भट तन हुआ पूर्व उनमान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) श्रीपाल नृप निज भाग्य, अजमाने चले परदेश को।
जहां गये वहां बहु निधि मिली, सब चकित हो लख भेषको॥
फिर खोल बज्र किवाड़, को ब्याही मंजूषा नार है।
दुर्लंघ सागर भुज बलों से, चीर कीना पार है॥
(दो०) वरी जायकर सुता भूपकी गुणमाला अति सुखकारी।
जिन फल पाया उन्हों की कथा सुनों सब नरनारी॥३॥
सोलह सहस सुता सु नृपों की, कोटीभट ने ब्याही हैं।
बहु विभूतिसों, आयकर सुन्दरि को दिखलाई हैं॥
पटरानी पद मैना सुन्दरि, सब जन शीश नवाते हैं।
बहु सुख भोगें, सु दम्पति सिद्ध यन्त्र नित ध्याते हैं।
(छंद) चिर काल भोगे भोग, पुनि धारा दिगम्बर रूप है।
तप योग केवल बोध पा, पुनि बने शिव के भूप है॥
मैनासती हो आर्यिका, सोलम सुरग में जावहीं।
भव एक दे तप घोर करके, सिद्ध पद को पावहीं॥
(दो०) सिद्धचक्र पूजन प्रभाव, 'भगवत' शिवदाता अघहारी।
जिन फल पाया, उन्हों की कथा सुनों सब नर नारी॥४॥

—:०:—

श्री नन्दीश्वर द्वीप चैत्यालय वन्दना

लावनी—५

अष्टम महाद्वीप नन्दीश्वर, रचना अति सुखदाई है।
अर्ध शतक द्वय, जिनालय वन्दों शीश झुकाई है॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक शतक त्रेसठ करोड़, चौरासी लाख सु योजन है।
लम्बा चौड़ा, द्वीप यह सुरगण के मन-मोहन है॥
पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन, रचना एक प्रकारी है।
तेरह तेरह, बने गिरिवर सुन्दर सुखकारी है॥
(छन्द) शुभ श्यामवर्ण महाउतंग, सु नाम अंजनगिरि कहा।
यह बीच में चारौ दिशा में चार दधिमुख हैं महा॥
दधिवर्ण सम उज्वल हैं चारों ढोल सम सब गोल हैं।
इन बीच में दो दो हैं रतिकर लाल मानों ढोल हैं॥
(दो०) चौरासीहजार योजन, अंजनगिरिकी सु उचाई है।
अर्ध शतक द्वय, जिनालय वन्दों शीश झुकाई है॥१॥
चारि बावड़ी चारि दिशा में, लाख लाख योजन जल है।
महा मनोहर, जन्तु वर्जित औ रहित सकल मल है॥
उनके बीच सुगिरि दधि मुख हैं, दश दश सहस उतंग सही।
चारि दिशा में चार वन लाख लाख योजन सु कही॥
(छन्द) इन बीच दो दो बावड़ी, चारों दिशा में आठ है।
तिन बावड़ी में गिर सु रतिकर, यह अनूपम ठाठ है॥
प्रत्येक रतिकर इक हजार, उतंग योजन मानिये।
इक दिशा के तेरह सुगिरि, गिरि पर जिनालय जानिये॥
चारि दिशा के बावन गिरि, जिनआलय बावन भाई है।
अर्ध शतक द्वय, जिनालय वन्दों शीश झुकाई है॥२॥
स्वयं सिद्ध रचना अनादिकी, मणिमाणिक कर पूरित है।
एक एक में, एक सौ आठ आठ जिन मूरति है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांच पांच सौ धनु उतंग हैं, रत्नमयी मन मोहन हैं।
पद्मासन हैं, प्रभा शशि भानु कोटि छवि को हन हैं॥
(छन्द) हैं अति मनोज्ञ जिनेन्द्र बिम्ब, सुदर्शतैं सम्यक् फुरै।
ना तृप्ति मन औ नेत्र हों विन-बोल मन वाणी खिरै॥
दुर्लभ मनुज को दर्श, देवी देव दर्शन पावते।
बहु भक्ति विनय सु करि हृदय, शुभ पुण्य बन्ध उपावते॥
(दो०) पूजा पाठ नृत्य गायन, करले संगीत बजाई है।
अर्ध शतक द्वय, जिनालय वन्दों शीश झुकाई है ॥३॥
कार्तिक, फागुन, औ अषाढ़, यह तीन मास जब आते हैं।
शुक्ल पक्ष के, अन्त दिन नन्दीश्वर सुर जाते हैं॥
वसु दिन वसु विधि द्रव्य, लेयकर, पूजन जाय रचाते हैं।
गद्य पद्य में कहैं स्तोत्र सुगुण बहु गाते हैं॥
(छन्द) देवांगनी बहु भक्ति युत, सांगीत नृत्य रचें महा।
वसु याम वसु दिन बन्दि जिनवर, अतुल पुन्य सु संचहा॥
अष्टाह्निका महापर्व यह, सब पर्व में सु बड़ा कहा।
जिन शुद्धभाव हृदय जपा, उन जाल सब जग का दहा॥
(दोड़) 'भगवत्' चैत्य और चैत्यालय पूजौ मन वच काई है।
अर्ध शतक द्वय, जिनालय बन्दों शीश झुकाई है ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनेन्द्र पूजन महात्म्य

लावनी—६

जिन पूजा सम पुन्य, न दूजा, जिन पूजा कीजै भाई।
शिव सुखकारी पापप्रहारी मंगलमय जिनराई ॥टेक॥
जिनने काम, क्रोध, मद, माया, लोभ, मोहका नाश किया।
बने जितेन्द्री, सर्व-दर्शी सब का ज्ञायक बोध लिया ॥
दोष अठारह रहित नाम, सर्वज्ञ निरंजन शिव वासी।
अजर, अमर हैं, श्री जिनचन्द्र सकल भव दुख-नासी ॥
(छन्द) शुभ सौम्य शान्ति विरागताको मूर्ति जो प्रत्यक्ष है।
जिन राग द्वेष विकार नहिं, शुभ ध्यान जिनका लक्ष है ॥
अविरोध सत्यारथ वचन, हितकार भविजन के लिये।
ऐसे श्रीजिन देव को पूजौ भजौ भविजन हिये ॥
(दौ०) अहनिश जजौ जपौ मन वच तन श्रीजिन हैं सुर शिवदाई
शिव सुखकारी, पापप्रहारी मंगल मय जिन-राई ॥१॥
लख चौरासी योनि भटकते, नर भव उत्तम पाया है।
श्रावक कुल भी मिला, जिन धर्म परम सुखदाया है ॥
तन निरोग पूर्ण इन्द्रीबल शुभ सत्संग सुहाया है।
जजौ जिनेश्वर, प्रात उठि त्यागि जगत को माया है ॥
(छन्द) माता पिता दारा सुभाई, पुत्र पुत्री जन सभी।
स्वारथ सगे प्रत्यक्ष हैं, तेरे नहीं होंगे कभी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनके लिये अन्याय से, दुख पाय के धन संचवै ।
चिन्ता चिता अह निश जलै, शुभ श्रेय मार्ग न चिन्तवै ॥
(दो०) मृत्यु समय में साथ न देते, झट मरघट दें पहुंचाई ।
शिव सुखकारी, पाप प्रहारी मंगल मय जिनराई ॥२॥
नारी मतलब से रोती है, रोवै स्वारथ-वश माता ।
चिता बना के, भस्म कर तोड़ें सब तुझ से नाता ॥
जिन कारण तुम पाप कमाते, धर्म ध्यान सब विसाराके ।
वे सब परिजन, नरक में साथ न दें तेरा जा के ॥
(छन्द) नरक में दुस्सह भयानक, जो सही तुम वेदना ।
शीत उष्ण सुधा तृषा, बध बन्ध ताड़न छेदना ॥
पाई न साता एक क्षण, सब काल दुख में ही गया ।
थावर विकल त्रस तन धरा, फिर २ मरा फिर २ भया ॥
(दो०) नन्तानन्त काल दुख भोगे, अब शुभ घड़ी उदय आई ।
शिव सुखकारी, पाप प्रहारी मंगल मय जिनराई ॥३॥
यह मानुष तन महा कठिन है, जो खोवौ फिर पछितावौ ।
तजि कषाय को, विषय इन्दिय तजि उर समता लावौ ॥
तजौ व्यसन दुखकार पांच पापों को त्यागौ सुख पावौ ।
अन-छन जल को, तजौ निश भोजन जैनी कहलावौ ॥
(छन्द) जो दया-मय धर्म पालै, बस वही जिन-भक्त है ।
जो नभक्ष न भक्षता है, वह अहिंसक व्यक्त है ॥
मान्य जिन धर्मी वही पूजा करै जिनराज की ।
शुद्धाचरण जो जैन का, तो ख्याति जैन समाज की ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत्' जेनी नित जिन पूजौ, अविचल पद जासों पाई,
शिव सुख कारी, पाप प्रहारी मंगल मय जिन राई ॥४॥

—*×*—

शास्त्र स्वाध्याय प्रेरणा

लावनी ७

सम्यक् ज्ञान वृद्धि का कारण, स्वाध्याय जग में भाई।
मन-वच तन से, करै स्वाध्याय सुरग शिवपद पाई ॥टेक॥
आदि अन्त अविरोध दयामय, पाप हरण जो है वाणी।
ज्ञाता दृष्टा, चर अचर केवल ज्ञानी व्याख्यानी ॥
श्रुत केवली अङ्ग के धारक, गुरु निर्ग्रन्थ हृदय आनी।
निष्पृह होकर, रची आगम मय वाणी कल्याणी ॥
(छन्द) त्रेसठ शलाका पुरुष, जीवनकी कथा प्रथमानु में।
त्रैलोक्य की रचना विशद, वर्णन करी करणानु में ॥
मुनि और श्रावक व्रत कथन, चरणानु योग रचा सही।
षट द्रव्य नय निक्षेप, विधि, द्रव्यानुयोग सहा कही ॥
(दो०) द्वादशांग रूप जो वाणी, श्री सर्वज्ञ सु सुख गाई।
मन वच तन से, कर स्वाध्याय, सुरग शिव पद पाई ॥ ॥
जा वाणी के ज्ञान होत, अज्ञान अन्ध मिट जाता है।
दृढ होकर के, करे श्रद्धान वह शिव पद पाता है ॥
दया मई है जग उद्धारक, जोडो, इससे नाता है।
मंगलकारी, पाप हारी, जिनवाणी माता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) नित एक अक्षरका भी जो, स्वाध्याय करता ध्यानसे।
है वह विवेकी समय पाकर, कर्म नाशै ज्ञान से॥
स्वाध्याय ही परमं तपः, ऐसे सभी ऋषि मुनि कही।
नित स्वाध्याय सभी करौ, जो आत्म-बोध मिलै सही॥
स्वाध्याय मन शुद्ध करै है, स्वाध्याय मंगलदाई।
मन वच तन से, करै, स्वाध्याय सुरग शिव पद पाई॥२॥
जिन वाणी को मृत्यु समय, इक हंस सुन लिया जंगल है।
सुर पद पाया, पुनः आकर हुवा भामण्डल है॥
मृत्यु समय इक बैल सुनी, वाणी सुरपद को पात है।
वहां से चयकर, वंश बानर सुग्रीव कहाता है॥
(छन्द) एक हिरण वाणी सुन हुआ, अहमिद्र बहुसुख भोगकर।
पुनि बालि भूप प्रसिद्ध हो, शिवपद लिया है योगधर॥
इक अन्ध चण्डाली सुना, जिन बैन आयू अन्त में।
भव तीसरे सुकमाल हो, प्रख्यात हूये सन्त में॥
(दौ०) भीम केवली शिवपद पाया, वचन प्रभाव सुजिवराई।
मन वच तन से, करै स्वाध्याय सुरग शिवपद पाई॥३।
वाचन, प्रच्छन, आम्नाय, उपदेश, चिन्तवन भेद महा।
स्वाध्याय है, पंच परकार जिनागम में सु कहा॥
मति, श्रुत, अवधि, और मनपर्यय, केवलज्ञान पंच परकार।
स्वाध्याय से, उत्तरोत्तर सु ज्ञान बढ़ि जात अपार॥
(छंद) है अगम शास्त्राभ्यास महिमा, कौन कवि मुख कहिसकै।
चतुज्ञान के धारी मुनी भी, करत वर्णन को थकै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल्याण जो चाहौ सुधी स्वाध्याय नित प्रति कीजिये।
पूजों सदा अरहन्त पद, उन वचन पर चित दीजिये ॥
(दो०) 'भगवत्' स्वाध्याय नित कीजै निज स्वरूप दे प्रगटाई
मन वच तन से, करै स्वाध्याय सुरग शिवपद पाई ॥४॥

—:०:—

श्री पार्श्वनाथ जी कमठ चरित्र

लावनी—८

श्री जिन पार्श्वनाथ पूरव भव, गाया अजब निराली है।
एक, हाथ से किस तरह वजती देखौ ताली है ॥टेक॥
पिछले दशभव पूर्व, विप्र सुत थे मरुभूति, कमठ भाई।
राज पुरोहित, गये मरुभूति जोतने रिपु राई ॥
कमठ दुष्ट मरुभूति वधू सग जवरन कीनी जाई।
सुनी भूप ने, चढ़ा खर किया नगर बाहिर भाई ॥
(छद) तब जा कमठ ढिग तपसियोंके, शिला ऊर्द्ध उठायके
होकर खड़ तप करै खोटा, हृदय दुक्ख उपाय के ॥
मरुभूति भ्राता मोह करि, पहुंचा है उस ही थान में।
जहां बड़ा भाई दुष्ट चित, शिल धरें ठाड़ा ध्यान में।
(दो०) पडि चरणोंमें करी प्रार्थना, दुष्ट शिला शिर डालो है
एक हाथ से, किस नरह वजती देखौ ताली है ॥१॥
लगते शिला प्राण तन छूटे, वन में हाथी होता है।
मुनि के मुख सों, सुना यह जगत मार्ग सब थोता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रावक व्रत धरि जल पीवन गया, वहै जहां जल स्रोता है।
फसा कीच में उधर मरि कमठ सर्प यहां होता है॥
(छद) डस लिया गजको सर्पने, सन्यास धरि सुरपद लिया।
मरि सर्प पहुंचा नरक में, फल मिला जिन जैसा किया॥
चय देव विद्याधर हुआ, तप किया वन में जाय के।
अजगर कमठ हो नरक से, निगला मुनि तन आय के॥
(दौ०) मुनि सोलम सुर नर्क छट्टमे, अजगर मरि थिति पाली है।
एक हाथ से, किस तरह बजती देखौ ताली है ॥२॥
बज्रनाभि चक्री पद भारी, देव आय कर पाता है।
नव निधि स्वामी, भूमि छह खण्ड-तना हुआ नाता है॥
क्षेमंकर मुनि करो बन्दना, गृह तजि दीक्षा धारी है।
कमठ नरक से निकल हुआ भील महा भयकारी है॥
(छंद) देखि मुनि को तीर मारा, देह तजि मुनि सुर भया।
मध्य ग्रीवक सुक्ख भारी, भील मरि नरकें गया॥
सप्तम नरक तेतीस सागर, दुख सहे हैं जाय के।
अहमिन्द्र चय राजा भये, पद मण्डलीक सु पाय के॥
(दौ०) धारि मुनी पद शुद्ध भावना, षोडश तन मन भाली है।
एक हाथ से, किस तरह बजती देखौ ताली है ॥३॥
नरक आयु कर पूर्ण कमठ, होता है सिंह वन में आके।
पूर्व वैर, से मुनी के तन को लीना है खा के॥
मुनी ध्यान युत तजी देह, सुर प्राणत में पहुंचे जाके।
केहरि मरि कर, पंचमे नरक गया बहुत दुख पाके॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) प्राणत सुरग सों देव चय, हुये पार्श्वनाथ जिनेन्द्र हैं।
हुई रत्न वर्षा, मेरुगिरि पर थापि पूजे इन्द्र हैं॥
उत नरक थितिकरि पूर्ण, फिर वहु भ्रमण करि संसार का।
महीपालपुर महीपालनृप, नाना है पार्श्वकुमार का॥
(दौ०) तियवियोग तापस हो तपता, पंच अग्नि को बाली है।
एक हाथ से, किस तरह बजती देखौ ताली है॥४॥
गज चढ़ि पार्श्वकुमार गये, जहां तपै तापसी अग्नि जलाय।
अवधिज्ञान सों, कही प्रभु नाग नागिनी जलते हाय॥
अभिमानी मानी न एक, तब काठ चीर करि दिये दिखाय।
मन्त्र सुनाया, भये धरणेन्द्र और पद्मावति जाय॥
(छन्द) वैराग्य भावन भाय प्रभु, तप किया वन में जाय के।
वह तापसी मरि जोतिषी, सुर चढ़ि विमान सु आयके॥
तबै देखि प्रभु को ध्यान व्रत, सब वैर पूरव चिन्तिया।
जल, अग्नि, धूम उड़ाय के, उपसर्ग प्रभु तन को किया॥
(दौ०) आ धरणेन्द्र और पद्मावति फणकी ढाल बनाली है।
एक हाथ से, किस तरह बजती देखौ ताली है॥५॥
प्रभू ध्यान में लीन घातिया क्षीण बने केवल-ज्ञानी।
सुर नर पूजें, जोतिषी मन में बहु शंका मानी॥
समोशर्ण में आय द्वेष तजि दृढ़ सम्यक्त्व सुधारा है।
पारस प्रभु के, संग से दुष्ट हुआ भव पारा है॥
(छन्द) देखो कमठ ने किस, तरह, इक तर्फ तीना वैर है।
भ्राता चरण में पड़ा आके, किया उसका ढेर है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारा उन्हें हर बार वह, शुभ भाव के सुख भोगते।
इन नरक में दुख सहा भारी, काटा जीवन रोवते॥
(दौ०) 'भगवत' वैर न करौ किसीसे, वैर जहरकी प्यालो है।
एक हाथ से, किस तरह बजती देखौ ताली है ॥६॥

—:०:—

मोक्षगामी बन्दर की कथा

लावनी—९

श्रद्धायुत जो प्रभु वाणी को, अन्त समय सुन लेता है।
पशु था बन्दर दोय भव देकर भव तजि देता है ॥टेक॥
दो व्यापारी परदेशों से, द्रव्य कमाकर लाये थे।
राजा भय से, ग्राम बाहर ही गाढ़ कर आये थे॥
देख रहाथा एक पुरुष, वह सब निकाल निज घर लाया।
यह दोनों ही, लड़े परस्पर निकालो क्यों माया॥
(छंद) लड़ते झगड़ते मर गये, धन हेतु दीने प्राण है।
पुनि जन्म धरि दोनों लड़े, भव तीन तक सु प्रमाण है॥
चौथे सु भव भये बांदरा, पुनि लड़े दोनों जाय के।
इक मर गया इक अधमरा, मुनि मन्त्र दीना आय के॥
(दौ०) श्री जिनवाणी पड़ी कानमें, समता धरि सुनि लेता है।
पशु था बन्दर, दोय भव देकर भव तजि देता है॥१॥
मन्त्र प्रभाव देवगति पाई, महाऋद्धि धारी सु विशाल।
सम्यक्दृष्टी, जपै जिनवर नित पूजा करै त्रिकाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्रांगद था नाम मनोहर, आयु पूर्ण हुई पाया काल।
पोदनपुर की, लक्ष्मण रानी उर से उपजा लाल॥
(छंद) शुभ सुप्रतिष्ठित नाम पाया, परम धार्मिक भाव है।
संसार भोग शरीर नश्वर, योग का मन चाव है॥
तजिकर सकल जंजाल जग का, तप धरा वन जाय के।
गंध-मादन गिरि शिखर पर, ध्यान कीना आय के॥
अथिर अनित्य शरीर, मुनि के ज्ञान हृदय में चेता है।
पशु था बन्दर, दोय भव देकर भव तजि देता है ॥२॥
मरा बांदरा दूजा लड़कर, वह भव भ्रमण कराया है।
पुन्य योग से, मनुज हो तपा कुतप मन भाया है॥
कुतप प्रभाव देव पद पाया, इस पर्वत पर आया है
जहां सुप्रतिष्ठित, मुनीश्वर अपना ध्यान लगाया ह ॥३॥
(छन्द) पूर्व भव का वैर मुनि देखत हुआ संताप है।
उपसर्ग भारी किया मुनि पर, मन कमाया पाप है॥
वहु अग्नि धूलि सु पाथरा, वर्षा रहा मुनि ऊपरें।
मुनि ध्यान निश्चल थिर सहा, उपसर्ग समता मन धरें॥
(दो०) शुक्लध्यान धरि नाशि घातिया, बने जगतके नेता हैं।
पशु था बन्दर, दोय भव देकर भव तजि देता है ॥४॥
केवल ज्ञान हुआ मुनिवर को, सुर पूजन को आये हैं।
शौरीपुर के, भूप अन्धक वृष्टि भी धाये हैं॥
करि वन्दन पूजन भूपति ने, प्रभु को वचन सुनाये हैं।
प्रभु बतादो आपको क्यों सुर आनि सताये हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तब केवली भगवान, सारा हाल बतलाया सही ।
सुनि देव चरणों में पड़ा, प्रभु करि कृपा ऐसे कही ॥
भगवान धर्मदेशना, दे शुद्ध सम्यक्ती किया ।
नाशे अघाती चारि प्रभु, जा शिव-महल में पग दिया ॥
(दो०) 'भगवत्' वाणी है कल्याणी, मुक्ति वधूका छेता है ।
पशु था बन्दर, दोय भव देकर भव तजि देता है ॥४॥

—:०:—

शील-व्रत-माहात्म्य

लावनी १०

शील धर्म जग सार सदा, मन वच तन पालौ नर नारी ।
शील धर्म का, किया वर्णन मुनिगण श्रुत में भारी ॥टेक॥
शील प्रभाव सु सेठ सुदर्शन शूली से बच जाते हैं ।
सुरगुण आकर, थापि सिंहासन पूज रचाते हैं ॥
शील प्रभाव सुखानंद जाकर हंस द्वीप यश पाते हैं ।
राजसभा में, पाय सन्मान द्रव्य बहु लाते हैं ॥
(छन्द) इस शील के सु प्रभाव से सागर तरे श्रीपाल हैं ।
इस शील के सु प्रभाव से, हनुमन्त बुद्धि विशाल हैं ॥
इस शील से श्री रामने, रावण पछारा जाय है ।
इस शील से प्रद्युम्न के खगपति चरण पडे आय है ॥
(दो०) शील प्रभाव सु जयकुमारको इन्द्र किर्ति वहु विस्तारी
शील धर्म का किया, वर्णन मुनिगण श्रुत में भारी ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शील प्रभाव सती सीता ने अग्नि करी जल धारा है।
सती द्रोपती, चीर खींचता दुःशासन हारा है ॥
शील प्रभाव सु मनोरमाने, फाटक बन्द उघारा है।
देव सहाई, भये जब घर से उसे निकारा है ॥
(छन्द) शुभ शीलवन्त सु अंजना उपसर्ग जीता जाय वन।
शुभ शीलवन्त सु चन्दना, महावीर लखि हो गई धन ॥
शुभ शीलवन्त सुलोचना, गज-ग्राह से छुड़बावती।
रानी सुभद्रा शील से, चलनी में जल भरि लावती ॥
शील प्रभाव सुरयनमजूषा, धवल सेठ की की ख्वारी।
शील धर्म का, किया वर्णन मुनिगण श्रुत में भारी ॥२॥
शील प्रभाव सु सती विशल्या शक्ती जाय निकारी है।
सती सु सोमा शील से नाग हार किया भारी है।
शील प्रभाव चेलना रानी, पति का कष्ट मिटाती है।
घोर मिथ्याती, उन्हें क्षायक सम्यक्त कराती है ॥
(छन्द) इस शील विन जीवन निरर्थक, पशु समान सुगुरु कहो।
त्रैलोक्य की हो सम्पदा, वह धूल सम जानों सही ॥
जो शील को पालै नहीं, उसको मिलै वहु त्रास है।
अपकीर्ति इस भव में मिले परभव नरक का वास है ॥
(दौ०) रावण आदि भये जो कामी, देता जग उनको गारी।
शील धर्म का, किया वर्णन मुनिगण श्रुत में भारी ॥३॥
सुर, नर, पशु चित्राम, त्रिया यह चार प्रकार बताई हैं।
तजें सर्वदा, साधु वह महाव्रती सुखदाई हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो निज तिय सों तोष करें पर-नारी क्वारी त्यागी हैं।
वह सन्तोषी, स्वदार कहलाते जग बड़-भागी हैं॥
(छन्द) जो बड़ी माता सम गिनै, छोटी सुता सम जानते।
सम वय बहिन सम जानि तजि, निज नारि में रति ठानते॥
नारी भी इस अनुसार चलती, वह वह सती कहलावती।
जो पर पुरुष छाया तलक, निज अङ्ग सों न लगावती॥
(दो०)'भगवत' शील बिना धिक्जीवन, घने विन्दु विन अङ्क री
शील धर्म का, किया वर्णन मुनिगण श्रुत में भारी ॥४॥

—:०:—

श्री बाहुबली स्वामी चरित्र

लावनी—११

मंगल करन हरन दुख दारिद, महातपस्वी महाव्रती।
चरम शरीरी, सुगुण मंडित सु बाहुबलि वीर यती ॥टेक॥
श्री जिन ऋषभ सुनन्दा नन्दा के इक शतक एक सुत जान।
श्री भरतेश्वर, बाहुबलि कहे शलाका पुरुष प्रधान॥
दिया आदि प्रभु राज्य सबोंको, भरत अयोध्याऽधिप सुखकार।
राज्य भुजबली, प्रतापी श्री पोदनपुर नगर मझार॥
(छंद) श्री आदि जिन वैराग्य धरि, करि नाशि चारौ घातिया
दृग, ज्ञान, सुख, बल, पूर्णयुत, केवल सु बोध प्रकाशिया॥
भरतेश नृप करि दिग्विजय, शुभ चक्रवर्ती पद लहौ।
सब बन्धुओं पर करी आज्ञा, आय कर मम पद गहौ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ० सुनि यह वचन दूत मुख सेती, करि विचार यह शुद्धमती
चरमशरीरी, सुगुण मंडित सु बाहुबलि वीर यती ।१॥
करै अनीति मान-वश चक्री, युद्ध किये ना काज सरै ।
क्षण भंगुर है, राज्य यह को बुधि वैर विरोध करै ॥
यों विचार निन्यानवै भाई, प्रभु ढिग जिन दीक्षा धारी ।
भये दिगम्बर, जगत निष्पृह अघ प्रकृति सु परिहारी ॥
(छंद) चक्रेश यह संदेश मुनि, इक चतुर दूत बुलाइयो ।
समझाय बहु विधि मंत्र युत, भुजबली पास पठाइयो ॥
वच दूत मुख सुनि बाहुबलि कहने लगे यों गाज कर ।
पुरुषार्थ-हीन नमूं न पद, आवे रणांगण साज कर ॥
(दौ०) दिया पिताने राज्य हमें, हम क्यों फिर सेवें चक्रपती ।
चरमशरीरी, सुगुण, मंडित सु बाहुबलि वीर यती ॥२॥
लौट दूत वच सुनि चक्रेश्वर, चाले पोदनपुर अवदात ।
बहुवलि भी, साज निज कटक चले पुर वहिर प्रभात ॥
मिली परस्पर दोनों सेना, भयौ कोलाहल शब्द महान ।
सैन्य नाश हो, दुहूं दल मंत्री मंत्र करौ गुण-खान ॥
(छंद) तुम वज्र वपु नहिं छिदै स्वामी सैन्य का संहार हो ।
जल युद्ध नेत्र रु मल्लता पर, जय अजय निरधार हो ॥
पच्चीस धनु ऊँचे कुमार, न नेत्र जल पीड़ा करै ।
पाई विजय भुजवली ने पुनि मल्ल युद्ध सु आचरै ॥
(दौ०) लड़ें परस्पर दोनों भाई, निरखें, सुर नर नागपती ।
चरमशरीरी, सुगुण मंडित सु बाहुबली वीर यती ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाबली बाहुवलि योद्धा, चक्री उठालिये इक हाथ ।
क्रोधित होकर, चक्र का सुमरण कीना चक्री नाथ ।।
छोड़ा बाहुबली के ऊपर, दी प्रदक्षिणा करी न घात ।
देख पराजय, भरत नृप करै सु मन बहु पश्चाताप ।।
(छंद) बाहुबली लखि जग अथिरता राज्य पाट सु त्यागकर ।
शुभ धरी जिन दीक्षा दिगम्बर, आत्म पंथ सु लागकर ।।
इक वर्ष कायोत्सर्ग धरि मन, वचन, तन, ममता हरी ।
चक्रेश आ पूजे चरण, हुआ ज्ञान केवल उन घरी ।।
(दौ०) 'भगवत्' दे उपदेश जगतको, गये, फेर पंचम सु गती ।
चरमशरीरी, सुगुण मंडित सु बाहुबली वीर यती ।।४।।

—※×※—

चारण ऋद्धिधारी श्री सप्त ऋषि चरित्र

लावनी—१२

सप्त ऋषी चारण ऋद्धिधारी जिनका चरित महा सुखकार ।
मंगलकारी, पाप प्रहारी सुनिये शिव सुख दातार ।।टेक।।
पिता श्री नन्दन राजगृह, धरण सुन्दरी माता जान ।
तिन उर, उपजे, पुण्य मूरती यह सातों पुत्र महान् ।।
प्रथनाम श्रीमन्यु द्वितीय सुरमन्यु तृतिय श्रीनिचयवखान ।
चतु सब सुन्दर, पांचमे नाम श्रीजयवान सु जान ।।
(छंद) श्रीविनयलाल सु छट्टमे, जय-मित्र सप्तम जानिये ।
शुभ सुभग लक्षण मन हरण, सब अतुल विक्रम मानिये ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव भोग सों जु विरक्त, इन्द्रिय विषयरु चिता ना धरें।
नित करें आगम-पाठ, ध्यानाभ्यास संयम आचरें ॥
(दौ०) रहें अलिप्त कमलवत घरमें, रागद्वेष मदमदन निवार।
मंगलकारी पापप्राहारी सुनिये शिव सुख दातार ॥१॥
पुन्य योग श्री प्रीतकर मुनि, हुआ उस समय केवल ज्ञान।
सुर नर पूजें, जजैं मुनिगण बहु गावै गुण अमलान ॥
राजा श्रीनन्दन तप धारा, सातौ पुत्र धरा वैराग।
केश लुंचकर भये दिगम्बर पिता संग ही वे बढ़-भाग ॥
(छंद) इक मासके बाल कुमर, को राजतिलक कराय के।
स्व स्वरूप में तन्मय भये, सब मोह मान नशाय के ॥
हनि घातिया चारों पिता, पाया सु केवल ज्ञान है।
सातों भये श्रुत केवली, वहु ऋद्धि युत गुणवान है ॥
(दौ०) चारण ऋद्धि प्रभाव करें, आकाश गमन मनरहित विकार
मंगलकारी, पापप्रहारी सुनिये शिव सुख दातार ॥२॥
हनि लंकेश राम अवधापुर आये भरत धरी दिक्षा।
कही राम ने, शत्रुघन लेहु राज्य जो हो इच्छा ॥
मथुरा राज्य शत्रुघन मांगा, मधुसों वैर किया भारी।
लड़े परस्पर, अन्त मधु भाज मुनी दिक्षा धारी ॥
(छं०) चमरेन्द्र पूरव मित्र मधु का, क्रोध नगरी पर किया।
उपसर्ग मथुरा नगर कीन्हां त्रास सब जन को दिया ॥
महामरी रोग असाध्य फैला, मची हाहा-कार है।
दुखी बहु नर नारि मूवे करी करुण पुकार है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) तजकर मथुरा नगर शत्रुघन आये अपने नगर मझार ।
मंगल कारी, पाप प्रहारी सुनिये शिव सुख दातार ॥३॥
करत विहार सप्त मुनि चारण आये हैं मथुरा नगरी ।
इन प्रभाव से असुर कृत मरी व्याधि भागी सगरी ॥
वर्षा योग किया मथुरा पुर घर २ आनंद छाया है ।
धर्म वृष्टि करि, किया मगल अघ दूर भगाया है ॥
(छंद सुनि शत्रुघन संवाद यह झट करी पूजा आय के ।
वसु द्रव्य युत करि शुद्धि, मन वच काय शीश नवाय के ॥
आदेश गुरु का पाय, चैत्यालय अनेक कराइया ।
घर घर जिनालय होय पूजा, मरी रोग विलाइया ॥
(दो०) मुनि साततौं पंचमगति पाई 'भगवत्' अजर
अमर अविकार ।
मंगलकारी पाप प्रहारी सुनिये शिव सुख दातार ॥४॥

—:०:—

श्री सेठ सुदर्शन चरित्र

लावनी—१३

सेठ सुदर्शन ब्रह्मचर्य, महिमा जग में चमकाई है ।
शूली जिनकी, बना सिंहासन अति सुखदाई है ॥टेक॥
कामदेव अवतार सेठ का रूप मनोहर है भारी ।
महा विवेकी, स्वपत्नी तोष रखै ब्रत सुखकारी ॥
रूप देखि मोहित मन होगई, मित्र कपिल द्विजकी नारी ।
बहु प्रपंच करि बुला घर सेठ करी माया-चारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) काम सेवन की कुचेष्टा, सेठ देखी है जबै।
शुभ शील व्रत रक्षा करन, वच झूठ बोला है तबै॥
है मात सम सुनि मित्र नारी, मैं न तेरे काम का।
मैं हूं नपुंसक भोग कैसा, सुख न जानूं वाम का॥
(दो०) देकर धोखा मित्र नारि को, सेठ गया घर आई है।
शूली जिनकी बना सिंहासन अति सुखदाई है॥१॥
बहु दिन पीछे नगर भूप ने वन-उत्सव करवाया है।
सभी प्रतिष्ठित, सज्जनों को उसमें बुलवाया है॥
सेठ नारि निज पुत्र साथ ले बैठि पालकी जाती है।
कपिल नारि भी, और राजा की रानी आती है॥
(छंद) सुंदर कुँवर लखि सेठ का, रानी हृदय हुलसात है।
सेठ-सुत यह सुनि कपिल-तिय, कहै झूंठी बात है॥
सेठ के सुत होय कैसे, वह नपुंसक गात है।
रानी कहै क्यों जानती कह दी पुरानी बात है॥
(दो०) सुनी बात लखि रूप सेठ का, काम व्यथा उर छाई है।
शूली जिन की, बना सिंहासन अति सुखदाई है॥२॥
कामातुर रानी मनभारी दासी को यों समझावै।
सेठ मिलादे,, मुझे तू तो सन वांच्छित धन पावै॥
दासी कहै सेठ है धार्मिक, कैसे तेरे ढिग आवै।
विकल होयकर, चरण तल पड़ि रानी हा हा खावै॥
(छंद) दासी बँधाया धैर्य रानीको, लगी करने यतन।
इधर व्रत दिन सेठ जी, तप करन को जाते हैं वन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टमि चतुर्दशि के दिना, करते खड़ हो ध्यान है।
निशि में अकेला देखकर दासी गई उस थान है॥
(दौ०) उठा सेठको धरि निज कांधे, दासी महलन लाई है।
शूली जिनकी, बना सिंहासन अति सुख दाई है ।३॥
दिया पँलग पर पारि सेठ को मुर्दा-सम हो जाते हैं।
रंच हिले ना, शुद्ध मन निज-स्वरूप को ध्याते हैं॥
रानी नाना भेष बनाकर, काम रूप दर्शाती है।
किन्तु सेठ का धैर्य देख हृदय बहुत पछताती है॥
(छंद) निशि भर अनेक कुचेष्टा, कीनी न चित्त चिगा सकी।
फिर भेज वापिस दिया वन मन है दुखी लज्जा थकी॥
नारी बनी अब नाहरी, त्रिय जाल को फैलावती।
निज नखन से सब तन विदारा, और रुदन मचावती॥
(दौ०) वस्त्र फाड़कर केश उघाड़े, हा हा कार मचाई है।
शूली जिनकी, बनी सिंहासन अति सुखदाई है॥४॥
सुन राजा यह बात तुरत, शूली का हुकम सुनाया है।
उधर सेठ भी, प्रभू सों निश्चल ध्यान लगाय है॥
टल जाये उपसर्ग धरूं, मुनि-व्रत गृह सम्पति त्यागी है।
शूली होगी सेठ को भीड़ नगर में लागी है॥
(छंद) शूली लगाने का हुकम, राजा दिया है जाय के।
मणि-युक्त सिंहासन मनोहर प्रगट हूआ आय के॥
थापि उस पर सेठि सुरगण पूजते मन लाय के।
दुंदुभि बजै सुर लोक नर, जयकार रहे मनाय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सेठ मुनी पद धार कर्महनि, 'भगवत' शिवगति पाई है।
शूली जिनकी, वना सिंहासन अति सुखदाई है ॥५॥

—:०:—

श्री सुकुमाल महामुनि चरित्र

लावनी—१४

श्री सुकुमाल महान मुनी का चरित सुनो मंगलदाई।
कैसे भोगी, बनकर योगी तप में दृढ़ता दिखलाई ॥टेक॥
सेठ पुत्र सुकुमाल मात ने, सुनी मुनीश्वर मुख-वाणी।
तेरे उर से, प्रगटैगा जो, पुत्र प्रतापी बहु ज्ञानी॥
किन्तु पुत्र मुख देखि पिता, घरवार छोड़ि मुनि पद धारे।
मुनि वच सुनते, पुत्र भी धरै योग पिता अनुसारे॥
(छंद) माता चतुर सुकुमाल की, सुत जनों गुप्त स्थान में।
पर भेद पाकर के पिता तप धरा जाय विहान में॥
सुकुमाल रक्षा हेतु माता, चौकसी बहु विधि करी।
बत्तीस कन्या सेठियोंको, पुत्र अपने: को वरी॥
(दौ०) भोगै भोग मनोग कुमर ना जाने रात्रि दिवस भाई।
कैसे भोगी, बने योगी तप दृतढा दिखलाई ॥१॥
चन्द्र सूर्यका भेद न जाने, रत्न ज्योति का लखै प्रकाश।
महा मनोहर, महल बत्तीस बने तहां करै निवास॥
कमल पत्रमें मुदित सालि कन, का कोमल भोजन खाते।
सुर सुरेन्द्र सम, भोग जु भोगै सदा उसे जो मन भाते॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) भोग भोगत आयु बीती, शेष त्रय दिन की रही।
मुनिवर श्री यशोभद्र स्वामी, अवधि धर इम वच कही॥
आ महल के पीछे निशा में, मुनि उचारा पाठ है।
पूर्व भव सोलम सुरग का सब बताया ठाठ है॥
(दो०) जातिस्मरण हुआ सुनि वाणी, सेठ हृदयमें दहलाई।
कैसे भोगी बने योगा तप दृढ़ता दिखलाई ॥२॥
बन्द किवाड़े चहूँ ओर के कैसे निकलूं करै विचार।
वस्त्र वस्त्र सों बांधकर कुमर हो गया घर से पार॥
आय गुरु के चरण कमल को, वन्दन कीना बारम्बार।
मैं बहु भूला, प्रभु अब मुझे लगादो भव से पार॥
(छंद) मुनि कही आयू तीन दिन, धारौ दिगम्बर भेष को।
संन्यास धरि तप दृढ़ करौ, जो हेरे भव के क्लेश को॥
सुकुमाल मुनि पद धारि, एकाकी लिया संन्यास है।
पग नग्न भूमि कठोर मग चलते लही बहु त्रास है॥
(दो०) लगे रक्तके दाग चरणके, जिस मारग गये मुनिराई।
कैसे भोगी बनकर योगी तप दृढता दिखलाई ॥३॥
एक स्यालिनी युग बच्चा युत, चाटत खून चली आवै।
मुनि तट आकर, पूर्वभव वैर चितार सु घुघरावै॥
सीधे पग को भखै स्यालिनी, बायां पग बच्चा खावैं।
नखन विदारें किन्तु मुनि-निश्चल चित आतम ध्यावै॥
(छन्द) भोगी महा योगी बने, उपसर्ग जीता ज्ञान से।
सर्वार्थ सिद्धि सु थान उत्तम, पालिया शुभ ध्यान से॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य नर सुरगण कहें धन वीर धीर महायती ।
अहमिन्द्र सुख का भोगि पुनि प्रभु पायगे शुभ शव गती ॥
(दो०) पढ़ै सुनें यह चरित मनोहर, 'भगवत्' सुर शिव पदपाई
कैसे भोगी, बने योगी तप दृढ़ता दिखलाई ॥४॥

—:०:—

महामुनि श्री सुकौशलजी चरित्र

लावनी १५

महा मुनीश सुकौशल स्वामी, चरित महा मंगलकारी ।
घोर उपद्रव, जीतकर जाय वरी है शिव नारी ॥टेक॥
राय कीर्तिधर गृह महदेवी, रानी अति सुखदाई है ।
पूछे जाकर, एक दिन अवधि-ज्ञानि मुनिराई है ॥
सुत होगा या नहीं कही मुनि, होगा सुत वहु बुधि-धारी ।
महा विवेकी, किन्तु बतलाऊँ बात होगी भारी ॥
(छन्द) सुत मुँह निरखते भूप वन में जाय जिन दीक्षा धरै ।
मुनि को निरख कर सुत प्रतापी, त्यागि घर मुनिपद धरै ॥
यह बात सहदेवी सुनी, मन में विकलता धारती ।
शुभ गर्भ आदिक भेद कुछ भी, भूप सों न उचारती ॥
(दो०) तहखाने में जन्मा बालक, तेजस्वी अति सुखकारी ।
घोर उपद्रव, जीत कर जाय वरी है शिवनारी ॥१॥
होनहार सो होय जगत में, उसे न मेंट सकै कोई ।
धाय एक दिन, धोवती वस्त्र विप्र देखी सोई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानि जन्म बालक नृप घर में, आकर दई बधाई है।
भूप पुत्र को, देखि वन जाने की ठहराई है ॥
(छन्द) राजा धरी दीक्षा सकल तजि भोग राज समाज है।
रानी पिटाया ढोल नगरी, करी यह सु आवाज है ॥
आने न पावें मुनि कोई पहरे कड़े चहुं ओर है।
सुत मोह-वश रानी यतन, यति रोकने का घोर है ॥
(दौ०) अवधिज्ञानयुत मुनी कीर्तिधर, नगर ओरको गति धारो।
घोर उपद्रव, जीतकर जाय वरी है शिव नारी ॥२॥
देख मुनी आवत नगरी में, रानी शोर मचाया है।
इसे निकालो, रंक यह कैसे यहां पर आया है ॥
सुनि अपशब्द राय पहिचाने, धाय नेंन जल छाया है।
देखि सुकौशल, धाय से पूछी क्या यह माया है ॥
(छंद) हठ करी ज्यादा धाय तब, सब हाल बतलाया इन्हें।
हैं यह पिता तेरे कुमर, दुत-कारती रानी जिन्हें ॥
तेरे लिये यह पापिनी, मुनि को न आने देत है।
सुत मोह में भूली सभी, अघ भार सिर पर लेत है ॥
(दौ०) सुनकर विरतन्त कुमर, मुनि-बन्दन की की तय्यारी।
घोर उपद्रव, जीतकर जाय वरी है शिव नारी ॥३॥
करी बन्दना जाय धरी दीक्षा, सब भोग निवारा है।
पिता संग ही भ्रमण करि योग धरा अति भारा है ॥
इत सहदेवी पुत्र शोक में, प्राण त्याग कर दीना है।
हुई नाहरी, उसी वन जहां योग मुनि कीना है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) मुनि सुकौशल देखि, व्याघ्रीको हुआ जाति स्मरण।
मन क्रोध करि भक्षण किये मुनिराज के दोनों चरण॥
फुफकारती धुधरावनी, तन को विदारै है नखन।
उपसर्ग भारी है मुनी पर खद ना किञ्चित है मन॥
(दो०) मुनि सु अनित्य भावना भाई मानि जगत को दुखकारा
घोर उपद्रव जीतकर जाय वरी है शिवनारी ॥४॥
चरण गोड़ जंघा तक खाये उदर विदारन लागी है।
उधर मुनी के, ध्यान की ज्योति हृदय में जागी है॥
ज्ञानावरण, दर्शनावर्णी, और मोहनी भागी है।
अन्तराय भी, चूर कर बन गये पूर्ण विरागी है।
(छंद) हो अन्त-कृत प्रभु केवली, फिर घाति कर्म अघातिया
सब योग भोग निरोध फिर, जा वास शिवपुरमें किया॥
श्री कीर्तिधर मुनिराजजी, वसु कर्म हनि शिवगति लई।
निर्वाण, ज्ञान, कल्याण की सुर आयकर पूजा थई॥
(दो०) 'भगवत्' कर युग जोरि सुकौशल चरण कमल
बंदन म्हारी॥
घोर उपद्रव, जीतकर जाय वरी है शिव नारी ॥५॥

—:०:—

साधु स्वरूप वर्णन

लावनी—१६

साधु भेष जो धरा साधुका, क्या लक्षण यह पहिचानों।
लोक दिखावा, पेट भरन को मत यह व्रत ठानों ॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोड़ दिया घर बार बने साधू फिर भी तृष्णा मन में ।
अन्न-गृद्धता लालसा लगी रहै हर दम धन में ॥
नाम चाहना रहै सदा ब्रत चारित का न निभाते हैं ।
विषय-लोलुपी साधु पद का जग माहि लजाते हैं ॥
(छद) जो नाम की प्रख्याति का विपरीत आगममें करें ।
जो खोलि सस्था भक्त जन से नित्य धन संचय करें ॥
जो साधु पद की ओट में नित पोषते परिवार को ।
जो स्वयं भोजन भट्ट हैं, क्या ज्ञान दे संसार को ॥
(दो०) साधु रूपका दुरुपयोग कर नरक पड़ें इनको जानों ।
लोक दिखावा, पेट भरन को मत यह ब्रत ठानों ॥१॥
धौले, पीले लाल, वस्त्र-धारी, जो साधु कहाते हैं ।
मूंड़ मुड़ावें, जटा धारी तन में भस्म रमाते हैं ॥
कोई कोई हाथी घोड़ा रखें महंत बताते हैं ।
ठाठ राजसी, रखें चेला चेली बहु पाते हैं ॥
(छद) कुछ हैं अघोरी वामपंथी रखें कुछ कर-दंड हैं ।
तिरसूल भारी चर्मधारी, साधु संड मुसंड हैं ॥
तजि भक्ष और अभक्ष्य का, सु विवेक भोजन पावते ।
गांजा चरस पियें भँग भारी, साधु पद सु लजावते ॥
(दो०) इन्द्रिय विषय लीन बाबाजी, क्या निज आतम गुण जानों
लोक दिखावा, पेट भरन को मत यह ब्रत ठानों ॥२॥
दृष्टि उठा देखो उतको ही, बाबा दृष्टि सु आते हैं ।
धर्म-भावना-शून्य बहुतेरे दड़ा बताते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माया के संचय करने में, सिद्ध-हस्त दिखलाते हैं।
मायाचारी, बने बाबा जी मौज उड़ाते हैं॥
(छंद) हैं ज्ञान ध्यान सु हीन, इन से होय क्या कल्याण है।
जब स्वयं इन्द्रिय विषय पोषक, देंय क्या जग ज्ञान है॥
आचार और विचार का, जिनके हृदय ना भान है।
अदया असत्, अविवेक युत यह साधु भार समान है॥
(दो० क्रोध मान में लीन होय जो उन्हें न जग साधू मानों।
लोक दिखावा, पेट भरन को यह व्रत मत ठानों ॥३॥
साधु स्वरूप यही-गृह तजि जिन आशा तृष्णा मारी है।
निष्पृह होकर, सभी मन इन्द्रिय विषय विडारी है॥
निर्लोभी हो तजी परिग्रह, क्रोध, मान, मद हारी है।
ज्ञानी, ध्यानी, लीन-आतम तजि माया-चारी है॥
(छंद) भोग सों ना नेह, संयम, शील सत्य सु आचरें।
हित मित सरल चित सत्य-वक्ता, शुद्ध सो भोजन करें।
ना देह नेह न रंच परिग्रह, धीर वीर सु दृढ़ व्रती।
श्रुत मार्ग-गामी हो तपस्वी, सत्य वह मानों यती॥
(दो०) ऐसे साधु व्याधि हरें जगकी, 'भगवत्' उन पद मन आनों
लोक दिखावा पेट भरन को यह व्रत मत ठानों ॥४॥

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईश्वर कर्ता खंडन तथा ईश्वर स्वरूप

लावनी—१७

सुख दुख कर्माधीन जीव को, करै वही फल पाता है।
ईश्वर जग में किसी को सुख दुख नहीं दिलाता है ॥टेक॥
ज्ञाता दृष्टा चर औ अचर का निष्कलंक अविकारी है।
अचल अगोचर, अजय अक्षय अनन्त सुखधारी है॥
है अशरीरी अमल अनूपम दर्श, ज्ञान भण्डारी है।
जन्म मरण औ, जरा से रहित ईश सुखकारी है॥
(छंद) जो लेत ना अवतार, ना संहार रक्षा को करै।
यह जीव जैसा कर्म करता, फल भी तैसा अनुसरै॥
व्रत, दान, पूजा, जाप संयम, पुन्य फल सुख पावता।
हिंसा, कुशील, असत्य, चोरी, पाप फल दुख लावता॥
(दो०) जैसा करै भरै फल वैसा ईश्वर से क्या नाता है।
ईश्वर जग में किसी को सुख दुख नहीं दिलाता है ॥१॥
जो शुभ कर्म करै सुख पावै, सुख तजि जो ईश्वर ध्यावै।
घर सम्पति को त्याग कर वीतराग जो बन जावै॥
आशा, तृष्णा, क्रोध, मोह, लालच, ममताको नशि पावै।
निष्पृह होकर, ईश के गुण अनन्त में वस जावै॥
(छंद) मन, वचन, काया वश करै, इन्द्रिय विषयको त्यागता।
सब भोग भाव निरोध, तन मन, ध्यान ईश्वर लागता॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन बांधि दृढ़ वैराय में, थिर होय आपा आप में।
शुभ शुद्ध रूप स्वरूप ध्यावै, लीन हो इस जाप में॥
(दौ०) कर्म जालको नष्ट भ्रष्ट कर, वह ईश्वर बन जाता है।
ईश्वर जग में, किसी को सुख दुख नहीं दिलाता है ॥२॥
मिल जाती है लौ में लौ, वह वसै शिवालय में जाके।
अजर अमर वह, नहीं अवतार लेत जग में आके॥
उसका ध्यान धरै जो कोई, गुण गाता है मन लाके।
हो उस सम ही, पुजै वह जग में ईश्वर पद पाके॥
(छंद) जो भूल कर उस ईश को, धन-ईश की पूजा करै।
निश दिन करै बहु पाप, हिंसा झूंठ ही सूझा करै॥
इस कर्म फल से हो दुखी, भोगें महा संताप्त है।
जो दुखी दुखिया दुक्ख पावै, समझलो फल पाप है॥
(दौ०) ईश्वर दुक्ख न देत किसीको, सुखी ईश बनाता है।
ईश्वर जग में, किसी को सुख दुख नहीं दिलाता है ॥३॥
है अनादि संसार अनन्ते जीव मरें जन्में यामें।
जैसी करनी, करें, बस उसी तरह का फल पावें॥
सृष्टि न ईश्वर रचै सँहारै, सब से अलग वसा जाके।
पापी धर्मी, दुष्ट, सज्जन, क्यों रचै यहां आके॥
(छंद) वस्त्र शस्त्र न नारि संग में, ईश तौ निकलंक है।
जो ईश में रमि ईश ध्यावै, ईश हो ना शंक है॥
यह आतमा परमात्मा, बन जाय शुद्ध ध्यान से।
ईश्वर व करता विश्व का सज्जन विचारो ज्ञान से॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो० 'भगवत् ईश्वर वह बन जाता जो ईश्वर को ध्याता है।
ईश्वर जग में, किसी को सुख दुख नहीं दिलाता है ॥४॥

—*×*—

दया धर्म की प्रधानता एवं श्रेष्ठता

लावनी— ८

श्रेष्ठ धर्म है दया, अहिंसा अपर नाम कहलाता है।
जीओ सबको जिअन दो का जो पाठ सिखाता है ॥टेक॥
घटते, बढ़ते, चलते फिरते, वह सब जीव कहाते हैं।
रक्षा इनकी, करै वह दयावान कहलाते हैं ॥
अपने सम ही पर जिय जानें कभी न किसी सताते हैं।
दुखी देखकर, जीव को दया हृदय भरि आते हैं ॥
(छंद) सब प्राण धारी जीव को, जो भूल कर मारे नहीं।
निज दुक्ख-सम पर-दुक्ख मानें, भाव कोमल हैं सही ॥
जो रत स्वपर उपकार में, मन त्याग कर्कश भावना।
मन से, वचन से, काय से. करते न जीव विराधना ॥
(दो०) षट कायिक जीवोंका रक्षक, वह साधू कहलाता है।
जीओ सबको, जिअन दो का जो पाठ सिखाता है ॥१॥
पूर्ण अहिंसा धर्म पालता, पंच महाव्रत धारी है।
ज्ञानी, ध्यानी, सुगुरु के चरणों धोक हमारी है ॥
पृथ्वी, अग्नि, पवन, जल, तरुवर विन कारण न विराधै है।
बने जहां तक, तजै हिंसा सु दया को साधै है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) दो, तीन, चार सु पांच इन्द्री, जीव को न सतावता।
निज प्राण दे कर प्राणि-रक्षा, वह अहिंस कहावता॥
नख, चर्म, रोम, व्यापार, चक्की और भट्टा का तजै।
भर शक्ति नित हो दया पालै, दूर हिंसा से भजै॥
(दौ०) त्रस कायक जीवोंका रक्षक, नर श्रावक कहलाता है।
जीओ सबको जिअन दो का जो पाठ सिखाता है॥२॥
पुष्पों का रस चूस चूस कर, फिर उगाल कर देती हैं।
मधु कहलाता, उसे लेने पर प्राण दे देती हैं॥
अन्डा बच्चा मरें साथ में, मधु अभक्ष कहलाया है।
सही अहिंसक, वही जिसने मधु को नहीं खाया है॥
(छंद) मादक पदार्थ सड़ाय के, कृमिराशि बहु यामें पड़ै।
फिर खींच नाम शराब धरि पीवै नशा याका चढै।
बुधि भ्रष्ट हो बकता फिरै, दुर्गन्ध तन आवै महा।
नहिं पास बैठन दे कोई, त्यागे अहिंसक वो कहा॥
(दौ०) मदिरा त्यागी है बढ़ भागी, दया भाव अपनाता है।
जीओ सबको जिअन दो का जो पाठ सिखाता है॥३॥
दीन पशू त्रण भखें विचारे, जो जंगल के वासी हैं।
पल भक्षण को दुष्ट जन उनके प्राण विनाशी हैं॥
दुनियां में जो जीव सभी को अपना जीवन प्यारा है।
निज तन पोषण, विदारैं पर को वह हत्यारा है॥
(छंद) मुर्गी, कबूतर, मोर, मछली, हिरण, बकरा मार के
हरियल दुपद, चौपद पशू का, मांस अदया धारि के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो खात अन्डा निन्द्य जन, रजवीर्य से उपजात है।
हैं निर्दयी पापी अघोरी, मांस को जो खात है॥
(दो०) जिन्दा कब्र समान नीच नर जो मुर्दे को खाता है।
जीओ सबको, जिअन दो का जो पाठ सिखाता है ॥४॥
बड़ फल, पीपल और कठूमर, पाकर फल अञ्जीर अजान।
त्यागो इनको, तोड़कर देखो इनमें जीव महान॥
आसव और अचार कन्द, मांटी विष, बहुबीजा तुछजान।
ओला आदिक तजो निश भोज, पियो नित पानी छान॥
(छंद) जग जीव रक्षा हेत सद् आचार पालो ध्यान से।
दुख होय ना पर जीव को वच वह कहो सु जवान से॥
संतोष में व्यापार, हिंसा त्याग कर करते रहो।
नित सत्य संयम, शील पालो, जो उभय भव सुख चहो॥
(दो०) धर्म अहिन्सा परम धर्म 'भगवत्' सुर शिवका दाता है
जीओ सबको जिअन दो का जो पाठ सिखाता है ॥५॥

—:o:—

चार उत्तम-रत्न-परीक्षा

लावनी—१९

सत्य रत्न जग चार परीक्षा, भली बुरी करनी चहिये।
देव, शास्त्र, गुरु, धरम चारों सांचे लखि मन गहिये ॥टेक॥
जन्म, जरा, औ मरण क्षुधा, विस्मय, आरति सु तृषा जानों।
रोग, शोक, मद, मोह, भय, स्वेद, खेद, निद्रा मानों॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राग, द्वेश, चिन्ता सब मिल यह दोष अठारह बतलाये।
सत्य देव है, वही जिसमें यह दोष नहीं पाये॥
(छंद) जो छोड़ जग जजालको तप ध्यान बल ज्ञानी बने।
जो चर अचर सब वस्तु ज्ञाता, शुद्ध विज्ञानी बने॥
जो शान्ति शत्र मारग वक्ता सत्य देव सु पाय के।
सुर असुर नर नागेन्द्र मुनिगण, पद जजें शिर नाय के॥
(दौ०) जजों सदा हो नाम कृष्ण, शिव, बुद्ध वीर, ब्रह्मा कहिये
देव शास्त्र गुरु, धरम चारौ लखि सांचे मन गहिये॥१॥
पूर्ण आत्मज्ञानी जो देवता, श्री सर्वज्ञ बताया है।
दया रूप है, धर्म का मर्म कहा तजि माया है॥
आदि अन्त अविरोध, अहिन्सा का जिसमें सन्देशा है।
पाप पुण्य का फल बता वृष में धरे हमेशा है॥
(छंद) सर्वज्ञ वाणी जग हितैषी, प्रेम का सन्देशा है।
निज प्राण सम पर प्राण जानों दो न पर को क्लेश है॥
जिसमें नरक और स्वर्ग, शिव पाने का पूरा हाल है।
वह शास्त्र सच्चा शास्त्र जानों जजौ उसे त्रिकाल है॥
(दौ०) जो उत्तम ज्ञानी ऋषिगण कृत सत्य शास्त्र संशय नहिये।
देव शास्त्र गुरु, धरम चारौ, सांचे लखि मन गहिये॥२॥
जो गृह तजिकर बना विरागी, मन इन्द्रिय का जेता है।
रहित परिग्रह और आरम्भ, ध्यान चित देता है।
ले एक बार प्रासुक अहार सब कंद मूल का त्यागी है।
नीरस भोजन, अयाची निर्लोभी सु विरागी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) निज हाथ से जो केश लुँच, क्रोध माया को तजै।
षट काय जीव सु दया पालै, नित्य निज आतम भज ॥
हित मित सरल चित सत्य वक्ता, चलै आगम रूप है।
व्रत संयमी उपसर्ग जेता, जानि सुगुरु अनूप हैं ॥
(दो०) आशा तृष्णा लालच टारो, शुद्ध विचारो गुरु सहिये।
देव शास्त्र गुरु, धरम चारा सांचे लखि मन गहिये ॥३॥
वही धरम है सही अहिंसा, जिसमें कूट समाई है।
जो जग प्राणी, परम रक्षा को विधि समझाई है ॥
धर्म नाम पर भी पर तन को, दुख देना अघ माना है।
सकल जीव से, मित्र सम भाव बता भय हाना है ॥
(छंद) जो क्षमा, मार्दव, औ सरलता, सत्य शौच अनूप है।
तप, त्याग, संयम औ अकिंचन, ब्रह्मचर्य स्वरूप है ॥
आक्रोश वचं आघात पर भी, क्षमा शान्ति दिखावता।
जो प्राण जाते भी कभी, पर प्राण को न सतावता ॥
(दो०) सत्य धर्म है वही, जोओ जोने दो सबको यूँ कहिये।
देव शास्त्र गुरु, धरम चारौ सांचे लखि मन गहिये ॥४॥
चार रत्न यह सार बताये, झूठ त्यागि सब ले लीजै।
चमक दमक का, ध्यान करि मति झूठे में मन कीजै ॥
जो नर भव का लाभ उठाना, तो संयम में चित दीजै।
पाप मार्ग को, छोड़कर धर्म मार्ग दृढ गहि लीजै ॥
(छंद) जग लाख चौरासी भटकते, काल बहुंत गमा दिया।
इन्द्रिय विषय के भोग में, फँस पापभार उठा लिया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ योग से अवसर मिला, मत चूक ऐसे दाव को।
जो डूबती भव-सिन्धु में, झट किनारे नाव को ॥
(दौ०) 'भगवत्' अवसर गया हाथ से, ता फिर पीछे पछितइये।
देव शास्त्र गुरु, धरम चारौ सांचे लखि मन गहिये ॥

—:०:—

श्री समन्तभद्राचार्य चरित्र

लावनी—२०

सम्यक् दर्शन दृढ़ हो जिसका, चाहे चरित बिगड़ जावै।
दृढ़ श्रद्धानी, समय पाकर शिव मग को चमकावै ॥टेक॥
स्वामी समन्तभद्र मुनिवरका, भस्म व्याधि व्यापी तनमें।
भूख मिटैना, करें भोजन वह भस्म होय क्षण में ॥
किहविधि मुनिव्रत पलै साधुके, यह चिन्ता व्यापी मनमें।
क्षुधा सतावै, न थिरता वधै, आत्म व्रत चिन्तन में ॥
(छंद) निर्णय किया सुनि मन यही, तजि दिया रूप सुसाधुका
फिर भेष ब्राह्मण का बना, करते यतन निज व्याधिका ॥
कुछ काल में करते भ्रमण, काशी नगर गये आय के।
शिवकोटि राजा से कही, गुरु बात इम समझाय के ॥
(दौ०) शिवमन्दिर में रखौ मुझे, सब भोग द्रव्य पिंडी खावे
दृढ़ श्रद्धानी, समय पाकर शिव मग को चमकावे ॥१॥
राजा कर मंजूर बात शिव मन्दिर में ठहराया है।
भोग द्रव्य को, बन्द करि द्वार खूब इन खाया है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दश औ वीस पचास सैकड़ों, मनों हजारों आया है।
खाली वर्तन, मिलें नित यह चमकादी माया है॥
(छंद) आश्चर्य सब करने लगे, ईर्षा करें मन विप्रगण।
जल छिन्द्र द्वारा छिद्र लखि महाराज सों इस तौर भण॥
शिव पिन्ड को ना भोग दे, खुद खात है सब अन्न कण।
करता अवज्ञा पिन्ड की, करवाइये इससे नमन॥
(दो०) राजा कहै नमन करौ शिवको, जो सब जनके मन भावै
दृढ़ श्रद्धानी, समय पात्रर शिव-मगको चमकावे ॥२॥
दृढ सम्यक्त हृदय में जिनके, वे कब मन शंका खाते।
प्राण गमावें, किन्तु ना अन्य देव को शिर नाते॥
बोले स्वामी सुनिये राजा, शिव पिन्डी फट जायेगी।
नमस्कार को, झेलने की ताकत ना पायेगी॥
(छंद) यह बात जब राजा सुनी, सांकल दई जड़वाय के।
चहूं ओर से दृढ़ बन्ध बांधे, भट दिये बैठाय के॥
बहु शोर फैला नगर में, नर नारि सब गये आय के।
स्वामी सुमिर आदीश को, बैठे ध्यान लगाय के॥
(दो०) रचा स्वयंभूस्त्रोत्र श्री चौवीस जिनेश्वर मन ध्यावै।
दृढ श्रद्धानी, समय पाकर शिव मग को चमकावै ॥३॥
चन्द्रप्रभू जिनचन्द्र नमत ही, शिव पिन्डी फट जाती है।
फटिक मणी की, चन्द्र जिन मूर्ति निकल दिखलाती है॥
करी वन्दना गुरू भूप अरु, परजा शीश झुकाती है।
जल, थल, नभ से, जैन वृष जय जय कार सुनाती है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) स्वामी धरा मुनि भेष, राजा भी मुनि पद धारियौ।
उपदेश देकर के अनेकों, भव्य भव से तारियौ॥
दिग्गज बने आचार्य दोनों, रचि अनेक पुराण हैं।
जब तक रहै संसार तब तक, सुगुरु वाक्य प्रमाण हैं॥
(दौ०) 'भगवत्' समन्तभद्र स्वामीके चरण, कमलको शिरनावै
दृढ़ श्रद्धानी, समय पाकर शिवमग को चमकावै ॥४॥

—:०:—

श्री अकलङ्क महामुनि चरित्र

लावनी—२१

सत्य धर्म की लगन हृदय में, वह नहिं भोग रचाते हैं।
धर्मोद्योतन, हेतु हँस-हँस कर प्राण गमाते हैं ॥टेक॥
दो भाई अकलंक और निकलंक नाम सुखकारी है।
हँसी हँसी में, प्रतिज्ञा ब्रह्मचर्य की धारी है॥
मात पिता जब व्याह करन को, करन लगे तय्यारी है।
ना कर दीनी, पढ़न विद्या इच्छा मन धारी है॥
(छद) बौद्ध चटशाला में जाकर, कर विद्याभ्यास है।
प्रखर बुद्धिविलास दोनों हर विषय में पास है॥
एक दिन गुरु सामने, इक प्रश्न आया है कठिन।
हल होय उससे ही सहो, जो जानता हो धर्म जिन॥
(दौ०) गुप्त रूप से प्रश्न कठिन को, हल करके घर आते हैं।
धर्मोद्योतन, हेतु हँस हँस कर प्राण गमाते हैं ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ प्रश्न हल देख गुरु ने, जान लिया यहां है जैनी ।
भेष छिपाकर, पढै विद्या है बुद्धि उसकी पैनी ॥
क्रोध युक्त हो भेद जानने, प्रतिमा मगवाई है ।
चलो लांघकर, छात्र सब यह आज्ञा सु सुनाई है ॥
(छंद) जान संकट भ्रात दोनों, डाल धागा लंघ गये ।
कीनी परीक्षा और भी, शंकित सभी इन सों भये ॥
पाय कर मौका निशा, आधी निकल कर जात है ।
करना प्रकाश जिनेन्द्र वृष, यह भावना बस साथ है ॥
(दो०) होत प्रभाव चहूं दिश सेवक, ढूँढन इनको जाते हैं ।
धर्मोद्योतन, हेतु हँस हँस कर प्राण गमाते हैं ॥२॥
देखि पिछाड़ी घुड़ सवार को, वच अकलंक उचारा है ।
यत्न कीजिये, होय जिससे जिन वृष उजियारा है ॥
धोबी धोबै वस्त्र वहां जो भेज उसे तू बच जावै ।
तेरे कर से जगत में, धर्म पताका फहरावै ॥
(छंद) निकलंक कहने लगे, भाई छिपौ तुम जाय के ।
हो ज्ञानवान विशेष जग, जिन-धर्म दो चमकाय के ॥
मैं प्राण अपने धर्म हित, अर्पण करू हर्षाय के ।
तजि मोह शीघ्र छिपौ नहीं, मारैगा दोनों आय के ॥
(दो०) तब अकलंक छोड़ भ्राता को, धर्म हेत छिप जाते हैं
धर्मोद्योतन, हेतु हँस हँस कर प्राण गँवाते हैं ॥३॥
घुड़ सवार ने आ धोबी, निकलंक दुहूं को मारा है ।
शीश काटकर, बौद्ध गुरु की जा नजर गुजारा है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रात वियोग धर्म-हित भाई, श्री अकलंक सहारा है ।
वृष-प्रभावना-हेत निकलक दिया तन सारा है ॥
(छंद) धन दे करौ तन की सुरक्षा, देय तन रखि लाज को ।
धन देउ औ तन देउ, लज्जा देउ धार्मिक काज को ॥
शुभ धर्म जग में श्रेष्ठ है, विन धर्म जोवन ख्वार है ।
हो चक्रवर्ति विभूति वह, विन धर्म के निस्सार है ॥
(दौ०) धर्म हेतु तन धन जो देते, वह यश जग में पाते हैं ।
धर्मोद्योतन, हेतु हँस हँस कर प्राण गमाते हैं ॥४॥
हिमशीतल राजा की रानी, एक जैन इक बौद्धमती ।
बाद ठन गया, श्री अकलंक बुलाये जैन सती ॥
बौद्ध गुरू संघ श्री थापी, पट अन्दर घट में तारा ।
छह महीने तक हुआ, है वाद नहीं कोई हारा ॥
(छंद) अकलंक-मन चिन्ता हुई, चक्रेश्वरी सुपना दिया ।
पट फाड़ घट को फोड़ दो, पाजायगी अपना किया ॥
गुरु जा सभा में फोड़ घट, तारा दई ललकार है ।
जग जैन धर्म विजय हुई, हो गया जै जै कार है ॥
(दौ०) श्री अकलंक मुनीश चरण को, भगगत् शीश नवाते हैं
धर्मोद्योतन, हेतु हँस हँस कर प्राण गमाते हैं ॥५॥

—:❀:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शुभचन्द्राचार्य जी एवं भर्तृहरि चरित्र

लावनी—२२

श्री शुभचन्द्राचार्य भर्तृहरि दोनों भाई भाई हैं ।
राजपाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है ॥टेक॥
देखि राज्य हित दम्भ, पिता माता सब को तजि जाते हैं ।
धार उदासी, हृदय में वन की सुरत लगाते हैं ॥
थोड़ी दूर तक साथ रहे, फिर अलग अलग हो जाते हैं ।
हृदय विरागी, भोग लक्ष्मी गृह को ठुकराते हैं ॥
(छंद) थे बड़े शुभचन्द्र शुभ और शुद्ध मन सु विराग था ।
थी भावना जिनकी बड़ी, और बड़ा जिनका भाग्य था ॥
पहुंचे जहा निष्पृह दिगम्बर, साधु श्रुतसागर मुनी ।
करि बन्दना बैठे वहां, सत् धर्म की व्याख्या सुनी ॥
(दो०) पुनि गुरुवर से दीक्षा लीनी, जिनेश्वरी सुखदाई है ।
राज पाट को छोड़ वन जाने की ठहराई है ॥१॥
इधर मुनी तप तपें ध्यान में अपना मन सु लगाते हैं ।
लघु भाई की कथा अब सुनियो मित्र सुनाते हैं ॥
बन जाता वैसा ही जीव जैसे निमित्त मिल जाते हैं ।
बिना निमित्त के अकेले उपादान नहिं भाते हैं ॥
(छंद) भरतरी पहुंचे हैं जहां पंचाग्नि साधू तप तपें ।
शिर जटा दाढ़ी शंख चिमटा मृग-चरम तन पै दिपें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु शिष्य गण बैठे कुटी, चहुँ ओर सुन्दर है चमन।
यह देखि आडम्बर बहुत, भरतरी बैठे करि नमन॥
(दौ०) साधू ने भगवा वस्तर, पहना दिये शिष्य बनाई है।
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है॥२॥
बारह बरस भरतरी रहकर, सेव साधु की कीनी है।
प्रसन्न होकर साधु ने विद्या इनको दीनी है॥
जत्र, मंत्र बहुते सिखलाये, बतलादी सब खूबी है।
चले वहां से, कलङ्क रस को भरि दीनी तूम्बी है॥
(छंद) तब भरतरी बहु शिष्य युत, चल दिये मन हर्षायके।
बड़ भ्रात श्री शुभचन्द्र ढूंढन, दिये शिष्य पठाय के॥
तब लौट कर इक शिष्य ने दीनी खवर है आय के।
पूछी है भाई कुशलता, मन भरतरी हर्षाय के॥
(दौ०) कहो शिष्य वह नंगे बैठे, शिखिर शीश पै जाई है॥
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है॥३॥
मोह महा बलवान भ्रात की, हालत सुन दुख होता है।
सजल नेत्र हो, भरतरी हृदय थाक कर रोता है॥
आधी तुम्बी कलङ्क रस की देकर शिष्य पठाया है।
रस को लेकर, शिष्य आ ऐसे वचन सुनाया है॥
(छन्द) महाराज यह रस लीजिये तांबा सकल कंचन करै।
तुम नग्न भूखे दुख सहो, भ्राता न मन धीरज धरै॥
बोले मुनी शुभचन्द्र जी, शिल ऊपरे डालौ इसे।
कहै शिष्य धन सु असंख्य का फिकवा रहे हौ तुम जिसे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) कही मुनी दो फेंक कहौ जा, रस दीनों फिकवाई है।
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है ॥४॥
कही शिष्य ने आय बात, उन रस पत्थर फिकवाया है।
बहु दुख कीना, भरतरी मन ही मन पछिताया है॥
आधे रस को तूम्बी लेकर, खुद भ्राता ढिंग आया है।
पद वन्दन करि, देखि तन रो रो वचन सुनाया है॥
(छंद) हे भ्रात तुम बहु दुख सहे, काया हुई सब क्षीण है।
तन पै न वस्त्र न पास कौड़ी, दीन रूप मलीन है॥
मैंने पठाया रस तुम्हें, तुमने दिया फिकवाय के।
आधा बचा है स्वयं लाया, रहो अब सुख पाय के॥
(दौ०) तूम्बी लेकर हाथ गुरू ने, शिल पर मार चलाई है।
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है॥५॥
हा, हा, हा, हा, यह क्या कीना, रस को क्यों फैलाया है।
कठिन कठिन करि, वर्ष बारह में मैंने पाया है॥
कही सु गुरु मूर्ख घर छोड़ा ना छोड़ी यह माया है।
कलंक रस को, लिये फिरता कलंक शिर छाया है॥
(छंद) शिल क्यों न सोने की हुई, जब रसमें धनकी ज्योति है
भरतरी रो रो कर कहें, तांबा ही कंचन होत है॥
शुभचन्द्र जी पग धूल ले, मारी सु इक चट्टान है।
वह स्वर्ण की हो चमचमाती, भरतरी मन ज्ञान है॥
(दौ०) चमत्कार तपका प्रभाव लखि, चरण पड़े अकुलाई है।
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य, धन्य है धन्य प्रभो, धन धन तप शक्ति तुम्हारा है।
मैं अज्ञानी, आज घट ज्योति सु जगी हमारो है ॥
शरण शरणमैं शरण, कृपा कर मुझे शरणमैं अब लीजै।
जो शिव पाऊं, नाथ अब निज समान दीक्षा दीजै ॥
(छंद) आचार्य श्री शुभचन्द्र, ज्ञानार्णव रचा सम्बोधने।
निज भ्रात अरु बहु भव्य जन' सत्साधु मग को सोधने ॥
श्री भरतरी बहु शिष्य युत, धारा दिगम्बर भेष है।
युग भ्रात साधु स्वरूप, शिवमग का दिया उपदेश है ॥
(दो०) 'भगवत्' वन्दों ज्ञानार्णव, शुभचन्द्र सदा शिरनाई है।
राज पाट को, छोड़ वन जाने की ठहराई है ॥७॥

—:०:—

श्री पात्रकेसरी महामुनि चरित्र

लावनी—२३

वह सच्चा विद्वान छोड़ हठ, सच्चा मग अपनाता है।
पक्षपात को छोड़ सदा सच्चे से जोड़े नाता है ॥टेक॥
नगर नाम अहिक्षेत्र, जहां पारश प्रभु केवल पाया है।
कमठ उपद्रव, त्रियायुत आ धरणेन्द्र हटाया है ॥
उसी नगर का भूप नाम तसु, अवनिपाल बतलाया है।
प्रजा हितैषी, राज-विद्या पंडित कहलाया है ॥
(छन्द) विद्वान पंडित पांच सौ, राजा सभा में वास है।
नित राज काज सहाय करते, करें वेदाभ्यास है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वान् वक्ता वय अधिक, श्री पात्र केसरि नाम है।
नित जाय राजा सभा में, मग, पडै श्री जिन-धाम है॥
(दौ०) होनहार अच्छो जब होतो, शुभ निमित्त मिल जाता है।
पक्षपात को छोड़ सदा, सच्चे से जोड़े नाता है ॥१॥
एक दिवस मुनि चारित्रभूषण, श्रीजिन भवन मझारी है।
प्रतिमा सन्मुख पाठ देवागम रहे उचारी है ॥
पात्र केसरी सुना पाठ, सुनते सुबुद्धि उर जागी है।
कही मुनी से, करौ इस अर्थ सुगुरु बड़-भागी है॥
(छंद) मुनि कहो अर्थ न करसकूं, फिर पढ़ो यों शर्मा कही
पढ़ दिया फिर मुनिराज, इनको याद सब हूआ सही।
फिर घर लगाया अर्थ, पद प्रत्येक का कर ध्यान है।
ज्यों ज्यों विचारें अर्थ, त्यों त्यों बढ़ा सम्यकज्ञान है॥
(दौ०) सत्य धर्म है जैन, जिनेश्शर हो सच्चा व्याख्याता है।
पक्षपात को, छोड़ सदा सच्चे से जोड़े नाता है ॥२॥
कुछ विकल्प अनुमान आदि पर, शर्मा के मन होता है।
चिन्तित होकर, रात्रि भर खाता भ्रम में गोता है॥
पद्मावती प्रगट होकर के, कही न कुछ चिन्ता कीजै।
जिन मंदिर में, पार्श्वप्रभु फण पर लिखा सु पढ़ लीजै॥
(छंद) पद्मावती को देखकर, जिन धर्म में अति दृढ़ भया।
परभात शुचि हो जिन भवन श्री पार्श्व जिन बन्दन गया
फण पर लिखा सु प्रमाण का लक्षण पढ़ा श्लोक है।
भागा सकल अज्ञान, धन धन कहै दीनी धोक है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) पात्र केशरी वेद-मार्ग तजि, सही जैन हो जाता है।
पक्षपात को, छोड़ सदा सच्चे से जोडै नाता है ॥३॥
देखा अन्य विप्र जब ऐसा, बहुत रहे समझाई है।
पात्र केसरी, कही जिन धम सत्य सुखदाई है॥
छोड़ो सब जन अघ-मारगको, जजौ चरण जिनराई है।
सुर शिव दाता रोग भव भव नाशक, सु दवाई हैं॥
(छंद) द्विज वाद का चैलेञ्ज दे, राजा सभा में आय के।
करने लगे हैं बाद सब, इनको सु वहां बुलाय के॥
क्षण मात्र में जीते हैं सब, जिन धर्म-ध्वज फहराय के।
अज्ञान हठ कर दूर सब जैनी, सु दिये बनाय के॥
(दो०) जैन धर्म का सब-स्वरूप, मुनि श्रावक पद समझाता है
पक्षपात को, छोड़ सदा सच्चे से जोडै नाता है ॥४॥
थे सबही चिद्वान्, ध्यान से सुना समझ में आया है।
राजादिक ने, पात्र-केसरी सु यश बहु गाया है॥
धन्य धन्य सब कहें, ज्ञान का सही लाभ तुम पाया है।
तुम वचनों से, हमारा भी अज्ञान हटाया है॥
(छंद) बहु जन बने श्रावक सुधी वहुजन धरा मुनि पद महा
गृह त्याग संयम लाग, शर्मा जी भी मुनि पद को लहा॥
स्तोत्र पढ़ि रचना की मनोहर, जैन जग प्रख्यात है।
यदि सुनत उपजै बोध सम्यक, अघ सकल नशि जात है॥
(दो०) पात्र-केसरी दिग्गज मुनि हुए 'भगवत् शीश झुकाता है
पक्षपात को, छोड़ सदा सच्चे से जड़े नाता है ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वारिषेण महामुनि चरित्र।

लावनी—२४

सत्य, शील, संयम, व्रतधारी वारिषेण बड़भागी हैं।
दृढ़ सम्यक्ती, जीति उपसर्ग सु बने विरागी हैं ॥टेक॥
राजगृही नृप श्रेणिक के सुत, मात चेलना पटरानी।
सप्त भ्रात थे, सहोदर वारिषेण उत्तम ज्ञानी ॥
अष्टमि और चतुर्दशि के दिन, वन में जाय बनें ध्यानी।
सरल स्वभावी श्रावकोचित द्वादश व्रत मन आनी ॥
(छंद) जो इसी नगरी में रहें, श्री कीर्ति सेठ सु नाम है।
चम्पा सुता जिनके मनोहर, शील धर गुणधाम है ॥
अद्भुत मनोहर मणिमई, पहरें गले में हार है।
सखियों सहित वो एक दिन, देखें सु बाग बहार है ॥
(दो०) सेठ सुता गल हार देखकर, वेश्या मन हुआ रागी है।
दृढ सम्यक्ती, जीति उपसर्ग सु बने विरागी है ॥
राजगृही नगरी में ही कन्दर्पकला वेश्या रहती।
हार देखकर, तीव्र इच्छा करि मन बहु दुख सहती ॥
विद्युतचोर शोर है भारी, वेश्या के घर आया है।
उदास देखी, चोर तब ऐसे वचन सुनाया है ॥
(छन्द) प्यारी दुखारी किसलिये, मन का कहो सब हाल है।
मैं हर तरह सुखदूँ तुझे, फिर क्यों करै सु मलाल है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेश्या मधुर मुस्कान से, कहने लगी समझाय के।
श्री कीर्ति सेठ सु हार मेरे, गले डालौ लाय के॥
(दौ०) चोर वायदा करि वेश्या से, हार लेन लौ लागी है।
दृढ़ सम्यक्ती, जीत उपसर्ग सु बने विरागी है ॥२॥
दृष्टि बचा पहरेदारों की, चोर सेठ घर जाता है।
प्रगाढ़ निद्रा लीन लखि अपना काम बनाता है॥
लेक हार चला प्रकाश लख, पहरेदार जग जाते हैं।
चोर, चोर है चोर कहि जोर सु शोर मचाते हैं॥
(छंद) ले हार भागा चोर विद्युत, चमचमाहट जोर को।
चहुँ ओर कार सु देखि, हिम्मत टूट जाती चोर को॥
नगर बाहर वन विषै, धरें वारिषेण सु ध्यान हैं।
तब डार हार सु इन अगारी, निज बचाये प्राण हैं॥
(दौ०) खुद सु चोर छिपगया, हारके चोर बनाये त्यागी हैं।
दृढ़ सम्यक्ती, जीत उपसर्ग सु बने विरागी हैं ॥३॥
पीछे से सब लोग आय कर, वारिषेण को पकड़ा है।
चोर चोर कहि, दृढ़ तरह जंजीरों से जकड़ा है॥
वारिषण भी करी प्रतिज्ञा, जो उपसर्ग बचूं जाई।
गृह सम्पति तजि, दिगम्बर दीक्षा लूँ वन में आई॥
(छंद) फिर प्रात होते भूप श्रेणिक की कचहरी आय के।
दृढ़ बन्ध युत कुतवाल ने, किया चोर हाजिर लाय के॥
भूपाल निज सुत को निहारा, किया क्रोध अपार है।
शूली चढ़ा शिर काट लो, तलवार पैनी धार है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) कहैं सभी करौ क्षमा पुत्र, भूपति क्रोधाग्नी जागी है ।
दृढ़ सम्यक्ती, जीत उपसर्ग सु बने विरागी है ॥४॥
भूप क्रोध यमदंड देख, शूली पर दिया चढ़ाई है ।
शीश काटने, हाथ में फिर तलवार उठाई है ॥
वारिषेण भी शुद्ध हृदय से, प्रभु सों ध्यान लगाई है ।
वृष प्रभाव से, देवता आकर भये सहाई है ॥
(छंद) बार जो तलवार का, वह फूल माला बन गया ।
शूली सिहांसन बन गई, आकाश बिच जय जय भया ॥
नर नारि जय जय कार करते, भूप मन शर्माय के ।
अपराध सब मो कर क्षमा, राजा कही यों आय के ॥
(दो०) विद्युत चोर भी प्रगट होय कर, क्षमा भूपसों मांगी है ।
दृढ़ सम्यक्ती, जीत उपसर्ग सु बने विरागी है ।५॥
माता पिता कही घर चलौ, पुत्र सु वन को जाते हैं ।
नग्न दिगम्बर, मुनी हो आतम-ध्यान लगाते हैं ॥
विद्युत चोर त्याग जग नाता, मुनि पद धारण कीना है ।
वेश्या ने भी, छोड़ घर संयम में चित दीना है ॥
(छंद) श्री वारिषेण मुनीशने निज मित्र संयम थिर किया ।
मुनिभेष में रहकर के जो इच्छा, धारता कांनो त्रिया ॥
था पुष्पडाल सु नाम, निज बत्तीस नारि दिखाय के ।
थिरता कराई मन विषैं, सम्यक्त दृढ़ सु कराय के ॥
(दो०) 'भगवत्' वारिषेण मुनिदर्शन, थिरता अङ्ग सु पागी है ।
दृढ़ सम्यक्ती, जीत उपसर्ग बने सु विरागी है ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृढ़श्रद्धानी श्री राजा वज्रकर्णकी कथा

लावनी—२५

शुद्ध समकती बज्रकरण नृप, दृढ़ श्रद्धान हृदय धरता।
जिन प्रतिमाको, सदाही मन वच तन वन्दन करता ॥टेक॥
एक बार नृप वज्रकरण ने, मुनि सों वाद किया भारी।
हार गया जब, प्रतिज्ञा यह लीनी अति सुखकारी ॥
जिन मुनि, शास्त्र और प्रतिमा को, ही निज शीश झुकाऊँगा
इन्हें छोड़कर, अन्य को कभी न मस्तक नवाऊँगा ॥
(छंद) बस थी अटल यह धारणा, मनमें अटल विश्वास था
निज राज काज उदास रह, करता महल में वास था ॥
था इक नगर उज्जैन का, राजा, सिंहोदर नाम है।
बलवान था और था प्रतापी, बहुत ही धन धाम है ॥
(दो०) वज्रकरण था उसका सेवक, जो उसको दामी भरता।
जिन प्रतिमाको, सदाही मन वच तन बन्दन करता ॥१॥
किसी पुरुषसे सुनी बात, नहिं वज्रकरण मस्तक नाता।
महा क्रोध कर, सैन्य ले वज्रकरण पुरि चढ़ि आता ॥
चौतर्फा से घेर लिया पुर, मार्ग बन्द कर दीना है।
वज्रकरण ने, नगर का फाटक बन्द सु कीना है ॥
(छंद) इतकी कथा तो इत रही दूजी कथा भी खास है।
श्री भूप दशरथ ने दिया, श्री राम को वनवास है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री राम लक्ष्मण और सीता, चले वन के हेत हैं।
पहुँचे हैं मालव देश देखें पके ठाड़े खेत हैं ॥
(दो०) चहुं तरफा देखें युग भाई, मानुष नजर नहीं पर ा।
जिन प्रतिमा को, सदा ही मन वच तन वन्दन करता ॥२॥
पूछा इन एक राहगीर को, सारा हाल बताया है।
वज्रकरण का, देश यह सिंहोदर चढ़ि आया है॥
जिन प्रतिमा को नमें शीश, नहिं सिहोदर को नाया है।
घेर लिया पुर, उन्होंने फाटक बन्द कराया है ॥
(छन्द) श्री राम आज्ञा करी लक्ष्मण, जाय पकरो दुष्टको।
शीघ्र जाकर के निवारो, बज्रकरण सु कष्ट को॥
महाबली लक्ष्मण वाण-वर्षा, करि सिहोदर बांधिया।
दृढ़ ब्रती धार्मिक वज्रकरण, सु जाय कर निर्भय किया॥
(दो०) मिला रामसे आय, राम चिपटाय, हर्ष मनमें करता
जिन प्रतिमाको सदा ही मन वच तन वन्दन करता ॥२॥
धर्मी, धर्मी, मिलें, मिलें, गुणवान हृदय सुख होता है।
सत्पुरुषों के, हृदय में बहै दया का स्रोता है ॥
वज्रकरण ने सिंहोदर को, लक्ष्मण से छुड़वाया है।
सिंहोदर भी मान तजि जिन-वृष धरि सुख पाया है॥
(छंद) लखि दृढ़ प्रतिज्ञा शुद्ध समकित राम मन हर्षित भये।
करते प्रशंसा हैं परस्पर, राम फिर आगे गये ॥
जो धरि श्रद्धा धर्म में ब्रत आचरण में दृढ़ रहै।
सुर नर असुर सुख भोगिके, तप धारि शिवपुरको लहै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) बज्रकरण राजा सम्यक्ती, 'भगवत्' भव सागर तरता
जिन प्रतिमाको सदा ही मन वच तन वन्दन करता ॥४॥

—:०:—

दृढ़व्रती श्री यमपाल चाण्डाल की कथा

लावनी—२६

व्रत लेकर जो एक वार अति दृढ़ता मन में धरते हैं।
विपत पड़े पर, टले ना देव चरण में परते हैं ॥टेक॥
चाण्डाल था एक सर्प ने, काट लिया उसको भाई।
मरा समझ कर, कुटम्बी जन मसान में ले जाई॥
उस मसान में सर्वौषधि, ऋधि धारी तपते मुनिराई।
तन सपरश कर, पवन चाण्डाल देह लागी आई॥
(छद) तप तेज ऋद्धि प्रभाव, लगते पवन विष निर्विष भया
अद्भुत चमत्कारी मुनी, चाण्डाल पैरों पड़ गया॥
मुनि दया कर दीना सु व्रत, चौदश को हिंसा मत करै।
चाण्डाल व्रत को याद से, पालै दया सु हृदय धरै॥
(दौ०) उसी नगरके भूप महाबल, राज्य प्रजापर करते हैं।
विपति परे पर, टले ना देव चरण में परते हैं ॥१॥
बलिकुमार था, पुत्र भूप का, महादुष्ट अविचारी है।
पर्व अठाई, भूप ने करी घोषणा भारी है॥
आठ दिवस तक किसी जीव का, वध न करै नर नारी है
अभय घोषणा, सकल नगरी में हो गई जारी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) था दुष्टचित सुत भूप का, इक भेड़ गुप चुप मारिके।
खाया है उसका मांस, सब ही अग्नि पर सु उबारि के॥
माली लखी यह बात निशि में नारि अपनी से कही।
इक गुप्तचर सुनली सकल, आ भूप से कह दी सही॥
(दो०) राजा सुन यह बात पुत्रकी अश्रुनैन से झरते हैं।
विपति परे पर, टले ना देव चरण में परते हैं ॥२॥
राजा करे विचार पुत्र मेरा, अनीति मारग चालै।
को मम आज्ञा, चलै जब पुत्र मेरा उसको टालै॥
कोतवाल से बुला पुत्र को, राय दंड दिलवाता है।
सत्य न्याय के, सामने तोड़ा सुत से नाता है॥
(छंद) चौदश पड़ी थी उस दिना, चाण्डाल ब्रत को धारता
कुतवाल समझाया घना पर वह न सुत को मारता॥
ले गये भूपति पास, राजा, पूछता चाण्डाल से।
क्यों भंग आज्ञा करै मेरी, डरै नहिं भूपाल से॥
(दो०) चाण्डाल कहै आज प्रतिज्ञा, भूप न चित्तमें धरते हैं॥
विपति परे पर, टले ना देव चरण में परते हैं ॥३॥
चाण्डाल सब बात सुनाई मुनिवर ने ब्रत दीना है।
एक न मानी, मेरी आज्ञा लौपै जु कमीना है॥
क्रोध हृदय में धारि दोनों की, मुश्क बँधा दीनी भारी।
निज आंखों के, सामने बहुत बड़े सर में डारी॥
(छन्द) जल था अगाध सु सर विषें, पटका दोनों को जाय के
ब्रत के प्रभाव सु देवता, रक्षा करी है आय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुर स्वर्ण सिंहासन रचा चाण्डाल को पधराय कर।
धन धन्य हौ तुम दृढ़ व्रती सुर गण कही यों आय कर॥
(दौ०) व्रत प्रभाव से चाण्डाल की, देव प्रशंस उचरते हैं।
विपति पड़े पर, टले ना देव चरण में परते हैं॥४॥
भूपति भी व्रत का प्रभाव लखि बहु सन्मान कराया है।
अटल प्रतिज्ञा, धन्य है धन्य धर्म जिनराया है॥
बलिकुमार सर में पड़ मरि कर, दुर्गति दुक्ख उठाया है।
धर्म पाप का रूप प्रत्यक्ष नजर में आया है॥
(छंद) चाण्डाल ने पाली दया, सन्मान सुर नर बीच है।
जो ले प्रतिज्ञा छोड़ता, वह नीच से भी नीच है॥
व्रत के विना जीवन निरर्थक, भली इससे मोच है।
पापी पुरुष जीवन है यों दुर्गन्ध युत सड़ी कीच है॥
(दौ०) धर्म करेसे निन्द्य पुरुष भी, 'भगवत्' भवसे तरते हैं।
विपति परे पर टले ना देव चरण में परते हैं॥५॥

—:०:—

वेश्यागामी दृढ़सूर्य चोरकी कथा

लावनी—२७

शूली पर था टंगा चोर, वेश्यागामी कहलाता है।
सेठ वचन का, ध्यान श्रद्धायुत सुर पद पाता है॥टेक॥
उज्जैनी नगरी का राजा था धनपाल प्रभाधारी।
धनवन्ती थी मनोहर जिनके घर रानी प्यारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माघ मास में भूप, वसन्तोत्सव की कीन्ही तय्यारी।
वन उत्सव में, पधारे राजा रानी नर नारी ॥
(छन्द) रानी गले में हार उत्तम, तीव्र जिसकी ज्योति है।
बहु मूल्य जिसको देखि वेश्या, हृदय मोहित होति है॥
था यार उसका चोर इक, दृढ़सूर्य जिसका नाम है।
वह निपुण था निश्शंक था, चोरी करन का काम है॥
(दो०) निशमें वेश्या पास चोर, जब काम क्रियाको आता है
सेठ वचन का, ध्यान श्रद्धायुत सुर पद पाता है ॥१॥
बोली वेश्या सुनों चोर, रानी का हार लादो मुझको।
जो मुझ जीवन चाहो मैं जानूं तब अपना तुझको॥
हार चुराने चला गले से, हार चुरा कर लाता है।
मणि प्रकाश था, हार में मन ही मन घबड़ाता है॥
(छंद) बहु यत्नसे निकाला मगर लखि हारका सु प्रकाश है
पकड़ा इसे बहु जोर से, महलों रहैं जो दास है॥
राजा दिया शूली हुक्म, लटका दिया शूली इसे।
होता क्या होनी अटल, को टाल सकता है जिसे॥
(दो०) महाधर्मज्ञ सु सेठ नाम, धनदत्त वहां हो जाता है।
सेठ वचन का, ध्यान श्रद्धायुत सुर पद पाता है ॥२॥
टङ्का चोर शूली पै कहै, मैं प्यासा हूं पानी प्यादे।
प्राण जा रहे, किन्तु प्यासा न मरूँ पानी लादे॥
दयावान था सेठ, देख नजदीक मृत्यु बोला वाणी।
मंत्र मेरा यह, याद रखना मैं लाता हूं पानी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) शुभ मंत्र दे णवकार उसको, सेठ पानी को गया।
यह पीर में सब मंत्र भूला, इस तरह रटता भया॥
ताणं सु ताणं रट लगी, वच सेठ परमाणं कहै।
समता सहित श्रद्धानयुत, मरि देव पदवी को लहै॥
(दौ०) सौधर्म सुर जाय, ऋद्धिधारी सु देव कहलाता है।
सेठ वचन का ध्यान श्रद्धायुत सुर पद पाता है ॥३॥
इधर किसी ने कहा भूप से, चोर सेठ कुछ कान कही।
भूपति बोला, सेठ को पकड़ यहां लावौ सु सही॥
उधर अवधि से जानि देव सब हाल सेठ घर आया है।
द्वारपाल बन, भूप सेवक सब मार भगाया है॥
(छंद) यहांतक कि सेना लेय भूपति खुद लड़ा है आयके।
ले देव माया मई सेना, दिये मार भगाय के॥
फिर सेठ की पूजा करी, सबको बताया हाल है।
सुर मुक्ति का दाता सु यह, णमोकार मंत्र विशाल है॥
(दौ०) 'भगवत्' चोर सुरग पद पाया, जपै सु पावै साता है।
सेठ वचन का ध्यान श्रद्धायुत सुर पद पाता है ॥४॥

—:o:—

अभिमान निषेध

लावनी—२८

गौरव युत अधिकार मिलै, अपकार नहीं करना चहिये।
प्रभुता पाकर, त्यागि अभिमान नम्र बनना चाहिये। टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लख चौरासी योनि भटकते, यह तन उत्तम पाया है।
पुन्य योग से, मिला वैभव धन धाम रु माया है॥
विद्या भी कुछ मिला मिला अधिकार न जो गर्वाया है
वह मनुष्य ही, जगत प्रख्यात होय यश पाया है॥
छंद) शुभ कीर्ति उसकी जगत में मृत्यु पर भी नाम है।
उपकार मय जीवन हो जिसका, सभ्यता का काम है॥
वह नर नहीं नर देव है, धन पाय मद को ना करै।
अधिकार पा उपकार कर, अभिमान ना मन में धरै॥
(दो०) वही प्रशंसायोग्य, कटु वचन सुनकर भी गमको खइये
प्रभुता पाकर, त्यागि अभिमान नम्र बनना चहिये ॥१॥
जो इससे विपरीत चलै, अभिमान शिखर पर मंडरावै।
प्रभुता पाकर, किसी को भी खातिर में ना लावै॥
जो पाया अधिकार उसे, अपकार रूप में वर्तावे।
दीन हीन को, सतावै अपना रौब सु चमकावै॥
(छंद) जो जोश में बेहोश रहकर, त्याग दे मर्याद को।
स्वार्थान्ध बनकर धन कमावै, मोल लेय विवाद को॥
ना विनय करता बड़े की, लघु न करता प्रेम है।
मद में रहै चकचूर, पुर परिजन से त्यागै क्षेम है॥
(दो०) अभिमानी, स्वार्थी है, लालची, नीच पुरुष उसको कहिये
प्रभुता पाकर, त्यागि अभिमान नम्र बनना चहिये ॥२॥
ऐसा पुरुष न यश को पावै, अपकीरति जग में होवै।
समय परे पर, दुखी होता है कर मल मल रोवै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मित्र पड़ोसी परिजन पुरजन, साथ न दें निज घर सोवै ।
अपनी करनी, भोगनी पड़ै प्रेम सब से खोवै ॥
(छंद) जो नर पराये काम आवै, काम सब उसका करें ।
जो नित रहै अभिमान में, उनसे न कुछ ममता धरें ॥
सब जीव का आपस में ही उपकार करना धर्म है ।
जो धर्म से है शून्य पापी, निन्द्य उसका कर्म है ॥
(दो०) दया, सत्य, समता और संयम, जिसके जीवन में चहिये
प्रभुता पाकर, त्यागि अभिमान नम्र बनना चहिये ॥३॥
अभिमानी बनि भरतेश्वर ने युद्ध किया छोटे भाई ।
हुये पराजित आज तक यह अपकीरति श्रुत गाई ॥
अभिमानी रावण ने अपना, वंश नाश करवाया है ।
सीता हर लो, राम ने नीचा उसे दिखाया है ॥
(छंद) अभिमान कीना द्रोपदी, नारद मुनी को पाय के ।
बहु दुख उठाया धातकी खण्ड में हरी गई जाय के ॥
अभिमान से ही सत्यभामा, का दुखी जीवन रहा ।
अभिमान ही है पाप जड़, ऋषि मुनी गण ऐसे कहा ॥
(दो०) सदा सरल व्यवहार हो 'भगवत्' धर्म मार्ग मे दृढ़ रहिये
प्रभुता पाकर, त्यागि अभिमान नम्र बनना चहिये ॥४॥

—:❀:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मात्मा सत्पुरुष लक्षण

लावनी २९

सदा धर्म में लीन जगत में उसका यश सब गाते हैं।
धार्मिक जनको, देवता, आकर शीश झुकाते हैं ॥टेक॥
षट कायिक जीवों की रक्षा, यत्न पूर्व जो करता है।
त्रस हिंसा को, सर्वथा त्याग दया मन धरता है॥
दुष्ट वचन कमजोर कहै, पर नहीं क्रोध में भरता है।
दयावान अति सभी से क्षमा क्षमा वच झरता है॥
(छंद) कोमल हृदय मृदु रूप भाषा मान का ना लेश है।
मार्दव धर्म को पालता, निज पर के हरता क्लेश है॥
मन में जो है, है वही तन में वचन भी तद् रूप है।
है सरल चित माया-रहित, आर्जव धरम रस कूप है॥
(दो०) संतोषी है, है निर्लोभी, लालच नाम न पाते हैं।
धार्मिक जनको देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥१॥
सत्य वचन मुख कहै, सत्य व्यवहार अमल में लाता है।
नाप तौल में, सत्यता झूठे से ना नाता है॥
मन इन्द्रिय विषयों पर काबू, कर संयम चित पाला है।
लम्पटता को, छोड़ मन संयम रङ्ग रङ्ग डाला है॥
(छंद) जो त्याग ममता भोग तन से ध्यान करता ध्यान से।
निज शक्ति सम व्रत तप करै अघ हरै सब ही ज्ञान से॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो न्याययुत पैदा किया, धन दान दे तजि मान है।
ना नाम की मन चाहना, सत्पात्रता का ध्यान है॥
(दौ०) दुखी जनोंको करुणापूर्वक, गुणकी विनय कराते हैं।
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥२॥
परिग्रह के संचय की तृष्णा, छोड़ तोष को धारा है।
चंचल मन को रोकि अकिञ्चन धर्म सम्हारा है॥
निज नारी में तोष, पराई नारी माता मानी है।
वेश्या आदिक, कुनारी त्याग प्रतिज्ञा ठानी है॥
(छंद) धन धन्य है जीवन उन्हों का, लीन जो निज धर्ममें
जो विषय विषको बमन करके, मन लगा सत्कर्म में ॥
जो देव, गुरु, श्रुत धर्म को ही शीश अपना नावता।
आवें अनेक विपत्ति फिर भी, धैर्य को मन लावता॥
(दौ०) अनछन जल और रात्रिभुक्ति तजि, जो दिनमें ही खाते हैं
धार्मिक जन को देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥३॥
सप्त व्यसन और पंच पाप का, जिसने दूर भगाया है।
पंच उदंवर, मद्य मांस मधू नहिं खाया है॥
क्रोध मान माया औ तृष्णा, इन पर काबू पाया है।
मोह जाल के, प्रबल फन्दे से शीश बचाया है॥
(छन्द) घरमें रहै घरसे अलग, ज्यों कमल रहता नीर में।
सद्धर्म में है प्रेम अति ज्यों प्रेम जल औ क्षीर में॥
सब भोग भोगत भी विरागी, लौ लगी भगवान में।
सुर, असुर, नर, कर पूज्य वह यह शक्ति भारी ज्ञान में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) धर्म जगतमें सार तत्त्व है, 'भगवत्' धर्म सु ध्याते हैं।
धार्मिक जन को देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥४॥

—*×*—

अहिदेव महिदेव की कथा

लावनी—३०

दौलत दौलत को रट निग दिन, जब दौलत पा जाता है
दौलत पाकर, मनुष के मन में मद आ जाता है ॥टेक
लक्ष्मी आते ही मनुष पर, अपना रंग जमाती है।
सहृदयता को दूर करके उन्मत्त बनाती है॥
दुनियां में जितने अनर्थ ,उनको यह खूब कराती है।
भाई भाई, पिता माता में द्वन्द मचाती है॥
(छन्द) अहिदेव औ महिदेव, माताबहिन यह चतुजीव थे।
थे हीन-पुन्नी इसलिये ही, दीन और गरीब थे॥
परदेश को यह भ्रात दोनों, धन कमाने जात हैं।
करि करि कठिन श्रम बुद्धिमानी से सु द्रव्य कमात हैं॥
(दौ०) बहुत दिना गये बीत हृदयमें, माता नेह सताता है।
दौलत पाकर, मनुष के मन में मद आ जाता है॥१॥
घर को चलन लगे, सभी धन देय रत्न इक लीना है।
वेष-कीमती, चमचमाता रवि सम सु नगीना है॥
बड़े भ्रात के पास भ्रात के, मन अब पाप समाया है।
आधा हिस्सा, भ्रात छोटे का इसमें पाया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) सब मिलै मुझको रत्न, यह तब शान्त मन मेरा रहै।
मारूँ इसे झगड़ा मिटे, वध भ्रात का करना चहै॥
कुछ होश आया रात को, उल्टा हुआ सु विचार है।
धन के लिये लघु भ्रात मारूँ, धन तुझे धिक्कार है॥
(दो०) प्रात होत छोट भाई को, रत्न देय सुख पाता है।
दौलत पाकर, मनुष के मन मद आ जाता है ॥२॥
मिला रत्न छोटे भाई को, देखि पाप मन में छाया।
मिलै मुझे ही तभी मेरे पै होय अतुल माया॥
आधे का यह भागीदार, इसको मारूँ तब सुख पाऊँ।
वैभव पाकर, जगत में मैं धनवान सु कहलाऊँ॥
(छंद) कुछ काल में बदला है पहलू, सुमति मनमें आगई।
धन हेत मारूँ बड़ा भाई, क्या बुद्धि सु छागई॥
लौटार के धनदेव को, दीना रतन है जाय के।
भाई राखौ तुम ही इसे, मैं तो गया घबड़ाय के॥
(दो०) फिर दोनोंने रतन जायकर, दीना अपनी माता है।
दौलत पाकर, मनुष के मन में मद आ जाता है ॥३॥
माता पाकर रतन अमोलिक, चकाचोंध हो जाती है।
मिलै मुझे ही, किस तरह यह उपाय मन लाती है॥
जहर देय कर पुत्र मार दूँ, तब इस धन को पाऊँगी।
पाड़ पड़ासी, नगर में मैं धनवान कहाऊँगी॥
(छंद) फिर ध्यान करती इसतरह, हा हा क्या सोची बात है।
पुत्रों को मारूँ जहर दे, सुत-भक्षिणी या मात है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्रों का धन मेरा ही धन, मैं दुक्ख सहि पाले सही।
धिक धिक है इस धन राशि को, जो पाप में डोवै सही ॥
(दौ०) देकर रत्न कहा पुत्रों से, मेरा मन चकराता है।
दौलत पाकर, मनुष के मन में मद आ जाता है ॥४॥
फिर तीनों नें कर सलाह, सागर में रत्न बहाया है।
धन के कारण, भ्रात माता मन पाप समाया है ॥
है आनन्द गरीबी में, जहां धन सन्तोष उपाया है।
सन्तोषी के, हृदय पर असर न करती माया है ॥
(छंद) देखो जु काष्ठाङ्गार को, भूपति दिया सब राज है।
फिर भी नहीं सन्तोष मन, मारा उन्हें तजि लाज है ॥
धन जोश में बेहोश हो करते अनेक कुकाम हैं।
चंचला ठगिनी चपल कुतिया एजु धन के नाम हैं ॥
(दौ०) धनका जहर जहर से ज्यादा 'भगवत्' असर दिखाता है
दौलत पाकर मनुष के मन में मद आ जाता है ॥५॥

—:०:—

जैन की पहिचान

लावनी—३१

जैनी की पहिचान यही, जैनी न रात्रि में खाते हैं।
दया पालते, अकारण कभी न जीव सताते हैं ॥टेक॥
छना हुआ जल पिये सदा, जो मद्य मांस मधु त्यागी हैं।
पंच अणुव्रत, सदा पालें वह जो बड़-भागी हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंसा, झूठ कुशील, परिग्रह, चोरी से रति भागी है।
दर्शन, पूजन, पाठ संयम में नित लौ लागी है॥
(छन्द) व्यापार हिंसा का तजा, संतोष से धन संचरै।
नित भक्ति युत निज शक्ति सम जो चार दानों को करै॥
जो भक्ष्य और अभक्ष्य का, राखें हृदय में ध्यान है।
जिनदेव, आगम गुरूश्रद्धा, विनय युत गुणवान है॥
(दो०) सत्य सु वैनी सच्चा जनी, जिन यह लक्षण पाते हैं।
दया पालते, अकारण कभी न जीव सताते हैं॥१॥
मध्यम जैनी उन्हें जानि, अन्नभोज निशि का त्यागी है।
व्रत संयम भी करै, दर्शन पूजन अनुरागी है॥
यथा समय कुछ दान भी करता, थूल दया को पालै है।
पियै छना जल, धरम मारग पर थोड़ा चालै है॥
(छन्द) जो पर्व दिन में यथाशक्ती, करै कुछ व्रत आचरण।
मेला प्रतिष्ठा धर्म मग में रुचि धरै करै खर्च धन॥
है दान में कुछ नाम रुचि, करै होड़ा होड़ी धर्म को।
है भक्षाभक्ष विवेक कम, कुछ स्वार्थ युत करै कर्म को॥
(दो०) अवसरवादी समय पड़ेपर धर्मध्वजा फहराते हैं।
दया पालते, अकारण कभी न जीव सताते हैं॥२॥
हैं जघन्य वह जैन नाम के आगे जैन लिखाया है।
दर्शन पूजा स्वाध्याय संयम में मन न लगाया है॥
जहां मिला जैसा हो तैसा, होटल बैठि सु खाया है।
निश-आहारी, छना अनछना नीर मन भाया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) जो शास्त्र में सु कुतर्क करके क्षोभ करदें सभा में ।
गुरु देव में श्रद्धान कम, ना दोष मानें दवा में ॥
ना भक्ष और अभक्ष भक्षण का, सु जिन्हें विचार है ।
फैशन विलासी है सु जीवन, वृष रहित आचार है ॥
(दो०) धर्म भावना शून्य, नाम धारी जैनी कहलाते हैं ।
दया पालते, अकारण कभी न जीव सताते हैं ॥३॥
तीन भेद इस तरह जैन के, भी कुछ लोग बताये हैं ।
शुद्ध सदईया, भदईया, मूढ़ मुड़ईया गाये हैं ॥
जो नित दर्शन पूजन में रत, उन्हें सदईया कहते हैं ।
जैन भदईया, जो कि भादों में ही रत रहते हैं ॥
(छंद) मरजाय कुनवा में कोई, आकर जो मूड़ मुड़ावते ।
जिन धर्म मर्म न जानते, तीजे वे जैन कहावते ॥
उत्तम व मध्यम जघन, तीन प्रकार के जैनी कहे ।
जैसो है जिसकी भावना, वैसा ही सुख दुख फल लहे ॥
(दो०) हैं सराहने योग्य सु उत्तम, 'भगवत्' सुर पद पाते हैं ।
दया पालते, अकारण कभी न जीव सताते हैं ॥४॥

—:०:—

सप्त-व्यसन निषेध

लावनी—२३

सप्त व्यसन दुर्गति के दाता दुख-दायक अघकारी हैं ।
त्यागो इनको भला, चाहो अपना नर नारी है ॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुआ खेलना, मांस जु खाना, मदिरा पी वेश्या सेवै ।
शिकार करता, करै चोरी पर नारी सत लेवै ॥
व्यसन सात निज घात करंता, इस भव परभव दुख देवै ।
जो इन त्यागै, दूर रहता वह भव सागर खेवै ॥
(छंद) यह सात सातौ नरक के हैं द्वार इनको रोकिये ।
जो रत भये इन सात में, उन चरित मन में घोकिये ॥
क्या फल मिला इन सात से उस फल से शिक्षा लीजिये ।
दुखदाय अपयश पाय जानों, दूर से तजि दीजिये ॥
(दौ०) यह दुख दानी नरक निशानी, महानिन्द्य घिनकारी हैं ।
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥१॥
प्रथम जुआ का हाल सुनों, खलत ही नाम जुआरी है ।
भय सु निरन्तर पकड़े जाते परै मार करारी है ॥
जीति जाय सब धन बँट जाता, भाट, पिरोहित वारी है ।
नाल निकाले, लेय नाई धोबी औ सोरी है ॥
(छंद) यदि हार हो जाती कभी, तो मर गया परिवार सब ।
देंना पड़ै धन गांठ से बिक जात है घर बार सब ॥
देखौ युधिष्ठिर जुआ खेले, खिचा द्रुपती चीर है ।
बारह वरस वन वन भटकते, फिर सही बहु पीर है ॥
(दौ०) है जुआ बुरा गये बैल हार, मत खेलो सीख हमारी है
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नर नारी है ॥२॥
मांस भक्ष है व्यसन दूसरा, भूमि मसान उदर जानों ।
पर जीवों को, मार के खात हृदय पत्थर मानों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने तन में चोट लगे पर, हाय हाय चिल्लाते हो।
पर जीवों को निर्दयी होय मार कर खाते हो ॥
(छंद) जो तृण भखें वन में रहें, जल में वसें कुछ ना चहें।
जो सुखी हों या हों दुखी, हैं मूक ना मुख सों कहें ॥
जो निरपराधी दीन हीन, सदा रहें भयवन्त हैं।
नर लोलपी हैं क्रूर कर्मी, दुष्ट चित्त जो हन्त हैं ॥
(दो०) जीव मारि जो मांस खात है, वह नर अदयाचारो है।
त्यागौ इनको, भाला चाहो अपना नर नारी है ॥३॥
मदिरा कैसे बनं विचारो, वस्तु सड़ाई जाती हैं।
उठें बबूला, पड़ै कृमि अग्नि तपाई जाती हैं ॥
यन्त्र द्वार से खीच उसे पीवें दुर्गन्ध आती है।
कुत्त मूतें, नशे में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ॥
(छंद) माता बहिन नारी न समझें, करें खोटी वासना।
बकवाद मुह से वकें कोई बैठने दे पास ना ॥
सब यादवा जलकर मरे, मारे जु द्वीपायन मुनी।
उन्मत्त थे सब मद नशे में, बात ना सोची सुनी ॥
(दो०। मदिरा महा निन्द्य घिन आवै, पीवत बुद्धि विगारी है
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥४॥
जो निज तन को धन ले देती, लज्जा शरम गमाती है।
जो धन लेकर, पिवं मदिरा पल को नित खाती है ॥
जो धन से ही प्रीति करै, नित धन से जिसका नाता है।
धन जाने पर, न वोलै सेवै पितु औ भ्राता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) मन है कुटिल, है पापिनी धन धर्म को टगि लेत है।
धन पास जब तक पास, धन ना तभी धक्का देत है॥
वेश्या विषय में दुख उठाया, चारुदत्त महाबली।
धन लेय पाखाने गिराया, त्यागि, वेश्या, ना भली॥
(दौ०) जियत चुडेल समान सु वेश्या, लगै देत दुख भारी है
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥५॥
तीर और तलवार चला, बन्दूक हनें पर प्राणों को।
दुष्ट पारधी, शिकारी कहते उन अहवानों को॥
अपने सुत को माल खिलाते, पर सुत् छुरी चलाते हैं।
वीर बहादुर वीरता पशुओं पर दिखलाते हैं॥
(छंद) जो निशाना मूक का, करते न दिल शर्माते हैं।
जो विनोदी शस्त्र ले पर जीव का करें घात हैं॥
जो स्वाद रसना लोलुपी हनि जीव पल को खात हैं।
मरि नरक रौरव में पड़ें, दुख सहैं अति बिललात हैं॥
(दौ०) दो तजि शिकार उर दया धार जीनेदो जिऔ विचारी है
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥६॥
पर का संचित द्रव्य बिना आज्ञा ले जाना चोरी है।
चोरी करता, आयु उसको जग होती थोरी है॥
पकड़ जाय यदि मौके पर दें मार स्वरग पहुंचाते हैं।
दया करें कुछ, बांधकर नृपति पास ले जाते हैं॥
(छंद) वध बध चोर सहै कठिन फिर जेल खाने में पड़ै।
तन मार पड़ती गति बिगड़ती, अन्त नरकों में सड़ै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग चार की परतीत ना, भय खांय घर के छोड़ते ।
है चोर पापी नीच कहि, सम्बन्ध अपना तोड़ते ॥
(दोड़) चोरी व्यसन तजौ दुख दाता, चोर जु बात बिगारी है
त्यागौ इनको भला चाहौ अपना नर नारी है ॥७॥
पर नारी विष बुझी कटारी, छुअत प्राण को घातै है ।
तन, धन छीजै, अन्त में खानो पड़ती लातै है ॥
चमक दमक नाजो नखरा से नागित मन को डसती है ।
समय पड़े पर, दूर से खड़ी खड़ी मन हँसती है ॥
(छन्द) भय भीत मन परनारि रतका, यदि पकड़ जावै कहीं ।
होती मरम्मत ठीक विधि पूछौ न बतलावै सही ॥
दें दड पंच औ भूगती, अपयश जगत के बीच है ।
कामी, कुकर्मी, दुराचारी कहें सब जन नीच है ॥
(दौ०) रावण आदिक परनारी रत, अपयश शिर पर धारी है
त्यागों इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥८॥
सातौ ही यह दुख के कारण पतन मनुष का होता है ।
सेवन करता, खाय वह भव सागर में गोता है ॥
पापाचरण करें फल दुख है भोगे तब यह रोता है ।
तज दे इनको, संयमी बन सुख की नींद सु सोता है ॥
(छन्द) तजि व्यसन सातों दुक्ख दाई, त्यागि विषय कषायको
भजि देव गुरु सत्शास्त्र वाणी मानि सत्य उपाय को ॥
भव तीर जो जाना चहै, तो छोड़ खोटी वासना ।
करि ध्यान आत्म स्वरूप का, अघ कभी आवै पास ना ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) 'भगवत्' जिन भगवत् शरण गहि राखें लाज तुम्हारी है
त्यागौ इनको, भला चाहौ अपना नर नारी है ॥९॥

—:०:—

अभक्ष्य भोजन-त्याग-प्रेरणा

लावनी—३३

अभक्ष्य भक्षण तजौ, शुद्ध भोजन पै नित ही चित दीजै ।
विवेक पूर्वक, सात्विकी सुन्दर नित भोजन कीजै ॥टेक॥
जैसा खावै अन्न उसी माफिक मन हो जाता प्राणी ।
जैसा पीवै, नीर वैसी मुख बोलै वाणी ॥
यह प्रसिद्ध है बात, सभी मत में ऋषि यही बताते हैं ।
खान पान का असर तन मन पर होना पाते हैं ॥
(छन्द) तन मन असर से वचन भी, होता उसीके रूप है ।
तन मन वचन से पाप आस्रव, रुलै भव के कूप है ॥
इसलिये तजो अभक्ष्य भोजन, चाहते जो सुक्ख है ।
जो लम्पटी रसना विषय, वह सहै भारी दुक्ख है ॥
(दौ०) खान पान मर्यादा युत हो इस पै ध्यान सदा दीजै ।
विवेक पूर्वक, सात्विकी सुन्दर नित भोजन कीजै ॥१॥
ओला, घोर, वड़ा, निशभोजन, वहु बीजा, बेंगन जानो ।
सब प्रकार के, मुरब्बा और अचार न मन आनों ॥
वर्षों तक रखकर जो खाते, सूक्ष्म, जीव पड़ जाते हैं ।
उसी रूप के रंग के नजर नहीं जो आते है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) जो कद होते जमीं अन्दर, जीव राशि अनन्त हैं।
जिन भक्ष से हिसा लगै, आगम कहा भगवन्त हैं॥
जो भक्ष मिट्टी का करें, जो खाय विष जु अभक्ष हैं।
जो मांस-भोजी जीव परघाती जु वधिक प्रत्यक्ष हैं॥
(दो०) कृमिराशि पडि मरें महा, दुर्गंधित मदिरा नहिं पीजै।
विवेक पूर्वक, सात्वकी सुन्दर भाजन नित कीजै ॥२॥
अति छोटा फल औ विन जाना, यह अभक्ष्य मतही खावो
जो रस चलित, धरा भोजन हो उसको मत पावौ॥
रस चलते में त्रस पड़ि जाते, खाकर बुद्धि बिगड़ जावै।
जो तुषार या बर्फ खाता अभक्ष्य-भक्षी गावै॥
(छंद) प्रत्यक्ष, देखौ जो बर्फ में जो पड़ै सो जम जात है।
सब छुऐं जिसको ग्लानि आवै, भव्य नर नहिं खात है॥
'मधु' मक्खियों का है उगाल, सु लेत मरते जीव हैं।
इक ग्राम जालै लगै हिंसा,तजौ इसे सदोव है॥
(दो०) शहद अभक्ष्य न खाओ भाई, चाहे प्राण भले छीजै।
विवेक पूर्वक, सात्विकी सुन्दर भोजन नित कीजै ॥३॥
बड़, पीपर, गूलर, कठूमर, पाकर फल को मत खाना।
फाड़ देखलो, उड़ें कीड़े जिस अन्दर से नाना॥
मधु, मदिरा, माखन औ मांस,यह नहिं छूते जो धार्मिक हैं
शुद्ध अहारी, सदा बोलें सच वच जो मार्मिक हैं॥
(छंद) पानी पिये जो छान कर, बहु शुद्धता से लाय के।
जो अन्न, फल, दधि, दूध घृत मिष्टान्न मेवा खाय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चर्म आदिक में धरी, अपवित्र थान सु पाय के।
तजि वस्तु शुद्ध सु करें भोजन, वरें सुर-सुख जाय के॥
(दौ०) शुद्धाचारी सत्य विचारी, शिवनारी उन से रीझै।
विवेकपूर्वक सात्विकी सुन्दर नित भोजन कीजै ॥४॥
जो अन्डा मछली पल खाते, पर के प्राण विनाशें हैं।
उन्हें नरक में, नारकी नाना-विधि से तांसें हैं॥
हो समर्थ असमर्थ हनें तो वह भी बदला लेवेंगे।
समय पायकर, दुःख वह हर प्रकार से देवेंगे॥
(छन्द) इसलिये त्यागि अभक्ष, बोधा अन्न चून बाजारका।
कृमि-राशि मैदा में पड़ै, भोजन सु करौ विचार का॥
सच बोल, कम न ताल, धरि सन्तोष शील सम्हार के।
करि दान गुण सन्मान, दुखियों पर सु दया विचार के॥
(दौ०) 'भगवत्' सदाचार युत जीवन, बिता पुण्य यश पालीजै
विवेक पूर्वक, सात्विकी सुन्दर नित भोजन कीजै ॥५॥

—:o:—

(हिंसा–निषेध) धनश्री सेठानी की कथा

लावनी—३४

अघ कारण हिंसा है भाई, तजौ महा दुखकारी है।
पर प्राणों को, पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥टेक॥
लट्ट देश भृगु कच्छपुरी में धनश्री सेठानी है।
सुता सुन्दरी, पुत्र गुणपाल महा सुखदानी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक पुत्र दत्तक ले पाला, कुण्डल नाम धराया है।
कछुक समय में, सेठ श्रीधर को काल ने खाया है॥
(छंद) अब रांड़ सेठानी हुई, कुण्डल हुआ बलवान है।
उसकी जवानी देखि, सेठानी का खोटा ध्यान है॥
दत्तक जु सुत संग काम सेवै, खोय कुल मर्याद है।
धिक्कार ऐसे काम को, जिसमें धरम बरबाद है॥
(दो०) काम-अन्ध नर नारी जे हैं निन्द्य नीच अविचारी है।
पर प्राणों को, पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥१॥
भोगै काम-भोग निश वासर, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
एक दिवस वह, जार को ऐसे वचन सुनाती है॥
मार मेरे गुणपाल पुत्र को, हो निशंक सुख भोग करें।
झँझट काटौ, फेरि हम तुम निश दिन रति केलि करें॥
(छंद) होनी महा बलवान, यह सब बात सुनली सुन्दरी।
था प्रेम भ्राता से अतुल, सब बात कहि आगा करी॥
उस दिन निशा पिछले पहर, माता उठा गुणपाल को।
भे ा है गोधन लेय वन, सु चरावने गौ बाल को॥
(दो०) अ मि देकर पीछे कुण्डल को भेजा घात विचारी है।
पर प्राणों को पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥२॥
वन में जा गुणपाल तुरन्त, लकड़ी में वस्त्र लगाया है।
भेष मनुष का, बना कर खुद को वहीं छिपाया है।
कुण्डल आ गुणपाल समझकर असि का बार चलाया है।
असि कर छूटी, उठा कुण्डल को मार गिराया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) फिर मार कुण्डल को तुरत, तलवार ले घर चल दिया
गुणपाल देखा आवता तब, प्रश्न माता ने किया ॥
कुण्डल कहां बतला मुझे, तलवार दे कहने लगा ।
ले पूछ इससे है कहां, सुनि क्रोध माता उर जगा ॥
(दो०) मारा उसको तू बच आया, ले अब तेरी बारी है ।
पर प्राणों को, पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥३॥
किये खंड दो निज सुत तन के, बहिन देखि दुख पाती है ।
मूसल लेकर, मात के शिर में चोट लगाती है ॥
चोट लगत असि गिरी धरण पर, पुत्री मार लगाई है ।
चलो बचईयौ, मरी मैं ऐसे शोर मचाई है ॥
(छंद) सुन शोर आ कुतवाल देखा आंख से सब हाल है ।
फिर बांध दोनों को लिया, ले गया जहां भूपाल है ॥
भूपति सुता से बात सब, पूछी बताई सत्य है ।
हे नाथ दुष्टा मात यह, इसने किया जु कुकृत्य है ॥
(दो०) भूपति मूड़ मुड़ाय, करा मुख श्याम जु खर बैठारी है
पर प्राणों को, पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥४॥
डोल पीट कर नगर फिराई, फिर बन्दी-गृह डारी है ।
बूढे, बच्चे, युवा सबने कंकड़ पत्थर मारी है ॥
रौरव दुख से मृत्यु पाय कर, नरक गती जा धारी है ।
हिंसा करके, दुख सहे इस भव पर भव भारी है ॥
(छंद) हिंसा महादुख मूल है, हिंसक महादुख पावते ।
हैं पाप जेते जग विषें, हिंसा में सभी समावते ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिये हिंसा मत करौ, पालौ दया चित लाय के।
पर जीव को निज सम गिनों, रक्षा करौ सुख पाय के॥
(दो०) दया धर्म मन बच तन पालौ, 'भगवत्' भवभयहारी है।
पर प्राणों को, पीड़ि दुख सहा धनश्री नारी है ॥५॥

—:०:—

(असत्य-निषेध) सत्यघोष की कथा

लावनी—३५

सत्यघोष वच झूठ बोलकर, जग में निन्द्य कहाया है।
राजदड सहि, मरा जा रौरव नरक सु पाया है ॥टेक॥
भरत क्षेत्र में नगर सिंहपुर, सिंहसेन भूपति ज्ञानी॥
महा विवेकी, रामदत्ता सु नाम नृप-गृह रानी॥
राज पुरोहित एक नाम श्रीभूत महा मायाचारी।
तीक्षण कैंची, जनेऊ बांध गले अपने डारी॥
(छंद) यदि लोभ-वश वच झूठ बोलूं, जीभ अपनी काट दूं।
मैं सत्यवादी सत्य बोलूं, वच अलीक जु छांट दूं॥
प्रख्यात जब यह करी सब जन करत मन विश्वास है।
यह पुरुष सतवादी सुधी, धरते धरोहर पास है॥
(दो०) एक दिवस सागरदत सेठी पास विप्र के आया है।
राज दंड सहि, मरा जा रौरव नरक सु पाया है ॥१॥
सोंपे पांच रतन सेठी ने, विप्र धरोहर धारा है।
बहुत कीमती, देय फिर वह परदेश सिधारा है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप उदय से सेठ-यान, फट गया सहा दुख भारा है ।
लगा किनारे, कष्ट कर आया यहां विचारा है ॥
(छंद) तब विप्र देखा दूर से पहिचान यों कहने लगा।
जो आ रहा है सामने, बावला देना भगा ॥
वह बावला यहां आयकर, बोलेगा दे दीजै रतन ।
तुम मार कर देना भगा, बतला दिया मैंने यतन ॥
(दौ०) सेठ आय कर मांगता, दीजै विप्र सु माया है।
राज दंड सहि, मरा जा रौरव नरक सु पाया है ॥२॥
सत्यघोष क्रोधित हो बोला, पागल रतन बताता है।
कहां रतन हैं, बावला मुझको दोष लगाता है ॥
डाट और फटकार लगाकर, उसको मार भगाता है।
रतन लेलिये, सेठ नगरी में यो चिल्लाता है ॥
(छंद) विश्वास कोई ना करै पागल बतावें लोग है।
हा रतन लीने रतन लीने, करै ध्वनि मन शोग है ॥
राजा महल पीछे है इमली वृक्ष चढ़ि नित रात है ।
श्रीभूत पुरोहित रत्न लीने कहै एक सु बात है ॥
(दौ०) छह महीना हो गये इस तरह रानी नृप समझाया है।
रांज दंड सहि, मरा जो रौरव नरक सु पाया है ॥३॥
नृप रानी से कहै तुही ले, पुरोहित को सु परीक्षा है।
मैं देखूगा, न्याय तेरा मेरे मन इच्छा है ॥
रानी प्रोहित बुला जुआ, खेलन का रंग जमाती है।
दासी अपनी सिखा, कर प्रोहित घर भिजवाती है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) दासी गई घर विप्रके मांगे रतन ना कर दई।
नारी सिखाई विप्र ने, दासी आं रानी से कही॥
भेजी अंगूठी विप्र की, फिर भी न दीने हैं रतन।
कैंची जनेऊ जीत, रानी ने किया सुन्दर यतन॥
(दौ०) भेजे दासी हाथ देखते, कैंची निश्चय आया है।
राज दंड सहि, मरा जा रौरव नरक सु पाया है ॥४॥
रतन पांच दीने दासी ने ला, रानी को देती है।
रानी लेकर, भूप को बुला भेद कह देती है॥
भूप रत्न बहु मिला बुला, गहला पहचान कराता है।
सेठ परख कर, अपने पांचों रतन उठाता है॥
(छंद) तब भूप मन हर्षित हुआ, सम्मान कर राख उसे।
बहु क्रोध प्रोहित पर किया सतघोष कहते थे जिसे॥
राजा कहै तू चोर, वह बोला मैं सतवादी महा॥
वच झूठ-त्यागी, बावला यह रत्न मैंने लहा॥
(दौ०) राजा अति हो क्रुद्ध, विप्र को तीन दंड ठहराया है।
राज-दंड सहि, मरा जा रौरव नरक सु पाया है ॥५॥
तीन थाल गोबर के खा, या मल्लमुक्क त्रय तन धारौ।
इन्हें न राचौ, फेरदीजै धन गृह में जो सारौ॥
विप्र खाय गोबर लालच वश, ना खाया परे मुक्का है।
मुक्क पड़े से मृत्यु हुई जाय नरक में धुक्का है॥
(खंद) उस नरक दुख की वेदना भौगै सो जाने है सही।
बीछू डसें इक सहस इक-दम भूमि परसत दुख लही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वहां गर्म लोहा प्यावते, नाती पुतलियां अङ्ग सों ।
क्षण एक चैन नहीं जहां दुख है तन के भंग सों ॥
(दौ०) पाप फल मिलै नरक, नरक में भयानीक दुख गाया है ।
राज-दंड सहि, मरा जा रौरब नरक सु पाया है ॥६॥
लालच लोभ मनुष जीवन को हर दम गर्त गिराता है ।
लोभी मानुष, झूठ बोलै न हृदय सकुचाता है ॥
दौलत सब छन गई, दंड तीनों दिये प्राण गमाता है ।
वचन झूठ से विप्र नरकों में पड़ा बिललाता है ॥
(छद) वच झूठ है दुखदाय, झूठे का न कुछ पतियार है ।
राजा भी दंडै, पंच भंडै, देत जग धिक्कार है ॥
वसु भूप भी वच झूठ से, साहित्य में बदनाम है ।
तजि झूठ हित मित सत्य बोलौ, सत्यता शुभ काम है ॥
(दौ०) सदा सत्य वचभाषौ 'भगवत्' सत्य सदा सुखदाया है
राज दंड सहि मरा जा रौरब नरक सु पाया है ॥७॥

—:०:—

(चोरी–निषेध) तापसी चोर की कथा

लावनी—३६

विन आज्ञा मालिकके वस्तु, जो ले वह चोर कहाता है ।
चोरी करना, पाप हैं आगम यह बतलाता है ॥टेक॥
गिरी, पड़ी, या धरी याद भूली, परवस्तु जु है भाई ।
विन आज्ञा के, उसे लेना चोरी मानी जाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो हरते परद्रव्य दुष्ट जन, पापी चोर कहाते हैं।
सब जन मारें, पकड़ राजा शूली चढ़वाते हैं ॥
(छंद) जा है पड़ी या धरी, वह वस्तु ना लीजै कभी।
जो याद भूली है धरोहर, लेय चोरी है सभी ॥
पर प्राण को दुख देय कर, लेता जो पर की चीज को।
वह बंध बध दुख बहुत पावै, बोय अघ के बीज को ॥
(दौ०) चोर हृदय शंकित नित रहना, चोर दुक्ख बहु पाता है।
चोरी करना, पाप है आगम यह बतलाता है ॥१॥
चोरी की इक कथा याद आई, मित्रो अब सुन लीजै।
सुनकर उसको, हृदय से चोर भाव को तजि दीजै ॥
वत्स देश कौशाम्बी नगरी, भूप सिंहरथ है भारी।
विजया रानी, शील सुन्दरी सुगुण की भण्डारी ॥
(छंद) धर्मात्मा धनवान दानी, न्यायवन्त दयाल है।
सज्जन सुधी रक्षक महा, पापी पुरुष को काल है ॥
जिस राज्य में परजा सुखी, राजा वही सु सराहिये।
प्यारी प्रजा का क्लेश हरता, पुत्र तुल्य निभाहिये ॥
(दौ०) वही भूप स्तुत्य स्वयं जो सदाचार अपनाता है।
चोरी करना, पाप है आगम यह बतलाता है ॥२॥
उसी नगर में तापस रहता, पंच अगिन को जालै है।
दिन में छीके टगा रहता निश माल निकालै है ॥
नहीं जमी पर पांव देत, जग यह प्रसिद्धिता पाई है।
प्रति दिन निश में, करै चोरी पुर जन दुखदाई है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) पुर लोग भूपति सों कही, भूपति बुला कुतबाल को।
आज्ञा करी ला चोर विन लाये समझ निज काल को॥
दिन सात में करि चोर हाजिर, प्राण तो तेरे बचै।
कुतबाल सुनि चिन्ता हृदय, नहिं अन्न पान उसे रुचै॥
(दौ०) होनहार बलवान वृद्ध भिक्षुक भिक्षा को आता है।
चोरी, करना पाप है आगम यह बतलाता है॥३॥
कोतबाल बोला भिक्षुक से, भीख न मुझ पर दी जावै।
पड़ी भीख की, तुझे यहां प्राण मेरा बहु घबड़ावै॥
पूछी भिक्षुक बात बतादो कोतवाल बतलाई है।
चोर न मिलता, प्रात मम प्राण हरै नरराई है॥
(छंद) अनुभवी भिक्षुक ने बताया, आंख देखा हाल है।
मैं चार ठग पाये कथा सुन चार की कुतबाल है॥
है चोर छींके टंगा साधू तपै अग्नी बाल है।
मैं आज ही उसकी परीक्षा, करूं तजि सु मलाल है॥
(दौ०) साधू लेन परीक्षा भिक्षुक, तत्क्षण वन में जाता है।
चोरी करना, पाप है आगम यह बतलाता है॥४॥
साधू पास जाय भिक्षुक ने, अपना आसन डाला है।
बोला साधू, भाग जा यहां से कर मुह काला है॥
भिक्षुक कहै रतोंध आवता, कुछ ना देत दिखाई है।
अन्धा धुन्धा, रात भर पड़ा रहूं हे भाई है॥
(छंद) साधू दिखा अंगुली परीक्षा करि समझ अन्धा इसे।
और दीन हीन दरिद्र वृद्ध सु जानि ठहराया जिसे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश अर्द्ध छींके से उतरि चोरी करी पुर जाय के ।
ला द्रव्य गाढ़ी वृक्ष नीचे, चढा छींके आय के ।
(दौ०) प्रात होत कुतबाल बुला, भूपति शूली लगवाता है ।
चोरी करना, पाप है आगम यह बतलाता है ।।५।।
सब नगरी में चर्चा भारी, कोतवाल शूली पावै ।
अवसर पाकर, आय भिक्षुक भूपति को समझावै ।।
माल सहित चोर आपका, साधू मायाचारी है ।
इसी दुष्ट ने, चोर धन दुखी किये नर नारी है ।।
(छंद) दिन में रहै छींके टंगा, निश में करै चोरी यही ।
सब माल चोरी का इसीके, पास निकलेगा सही ।।
यह धूर्त ढोंग बना तपस्वी का हरै धन रात को ।
यह साधु पापी हो करे, बदनाम साधु जमात को ।।
(दौ०) चार कथा ऐसे धूर्तों की, भूपति को सु सुनाता है ।
चोरी करना पाप है, आगम यह बतलाता है ।।६।।
ले चाकर भूपति को दन में, चोरी माल निकलवाया ।
माल पायकर, भूप के हृदय क्रोध भारी छाया ।।
भूपति साधू पकड़ि मूड़ मुड़वाय मुख किया करा है ।
खर चहोड़ि के नगर की गली गली सु निकारा है ।।
(छंद) धिक्कार दें नर नारि सब, बहुईंट पत्थर मारते ।
पाया भयानक कष्ट साधू, चोर लोग पुकारते ।।
फिर दई शूली भी इसे, मरि गया रौरव नरक है ।
चोरी करे फल बुरा पावै, कुगति हो ना फरक है ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) त्यागौ वस्तु अदत्त सु चोरी, 'भगवत्' पावो साता है।
चोरी करना, पाप है आगम यह बतलाता है ॥७॥

—*×*—

(कुशील–निषेध)कामो कोतवालकी कथा

लावनी—३७

सदा कुशील कुगति का दाता कुलकलंक अघकारी है।
जग में निन्दा, नरक दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥टेक॥
सुरदेवी नर पशु की नारी तथा चित्र की छाया है।
चार त ह की, त्रिया श्रीगुरु ऐसे बतलाया है ॥
जो चारौ मन वच तन त्यागी वह पुरुषोत्तम होता है।
काम सुभट को चूर कर भव-अर्णव को खोता है॥
(छंद) जो है गृही गुरु देव अग्नि सु पंच साक्षी देय के।
भौगे स्व जाति पुरुष सुता शुभ पाणिग्रहण सु लेय के॥
जो अन्य नारी मात भगिनी, सम सदा ही मानता।
निज नारि में सन्तोष धारै, हेय सब तिय जानता॥
(दो०) जो मर्यादा युक्त गृही, वह एक देश ब्रह्मचारी है।
जग में निन्दा, नरक दुख पावै, नर व्यभिचारी है ॥१॥
जो इससे विपरीत चलै, वह पापी कहिये नर नरी।
जो पर-नारी तथा वेश्या सेवै वह व्यभिचारी ॥
जो नारी निज पतिको तजि कर, परसे अङ्ग लगाती है।
महा पापिनी, कुटिल वह रौरव नरक सु जाती है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छद) जो अङ्ग अपना दूसरों को देय पाप कमावती ।
कुलघातिनी जु कलंकिनी, कुल दुहू लाज गमावती ॥
जो होय विधवा काम सेवै देत जग धिक्कार है ।
इस पाप फल विधवा हुई, फिर धरै पाप जु भार है ॥
(दौ०) धिक् धिक् कामी पापाचारी अविवेकी नर नारी है ।
जग में निन्दा नरक दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥२॥
कोतवाल कामी निज माता, रमी सु कथा सुनाते हैं ।
दुराचार का, कहा फल मिला सु बात बताते हैं ॥
नासिक नगर कनकरथ राजा, रानी नाम कनकमाला ।
कोतवाल है, नगर रक्षक जमदंड नाम आला ॥
(छद) है मात नाम वसुन्धरी, पति मृत्यु रांड़ कहावती ।
कुटिला कुशीला है महा, पर-पुरुष संग रमावती ॥
कुतवाल नारी ने दिये, अपने जो भूषण सास को ।
वह पहन कर निज अङ्ग में, निश चली जार सु पासको ॥
(दौ०) विधवा माता कोतवाल को रमें जार अघकारी है ।
जग में निन्दा नरक, दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥३॥
माता जार पास को जाती, कोतवाल मिल जाता है ।
भूषण सारे, लिये फिर काम कुकर्म रचाता है ॥
अन्ध निशा में जँची न माता, मात न भेद बताया है ।
बहु प्रकार से केलिकर कामी मन भरमाया है ॥
(छद) धिक्कार है इस कामको, माता सु निज सुतको रमें ।
कुल शील मर्यादा तजी, धिक् लोक लज्जा को गमें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुतवाल निज घर आय के भूषण निहारे नारि के।
निज मात संग में क्रीलि कीनी, काम विविध प्रकार के॥
(दौ०) जानि मानि माता संग निशम नित प्रति भो विचारी है
जग में निन्दा नर्क दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥४॥
व्यभिचारिणी मात भो सुन को भोगै शरम न आती है।
बहुत दिन हुये, नारि कुतवाल हृदय दुख पाती है॥
धोबिन आवै गेह उसे, निज पति का हाल सुनाती है।
सास कुचेष्टा, पाप का भण्डाफोड़ कराती है॥
(छंद यह बात जगत प्रसिद्ध है, कहौ बात नारी कान में।
दिन एक दो में ही वही फैलेगी सकल जहान में॥
तिल को बनावै ताड़, कऊआ एक के सौ करति है।
नारी प्रचारक बात भारी, कान यन्त्र सु धरति है॥
(दौ०) धोबिन सुन सब बात जाय, मालिनसों गिरा उचारीहै
जग में निन्दा, नरक दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥५॥
मालिन सुन यह बात, तुरत फूलों की माल बनाती है।
माला लेकर, जाय रानी को भेंट चढाती है॥
रानी हर्षित होय बहुत धन देय, सु पास बिठाती है।
नगर कहानी, बात अद्भुत कहि क्यों सकुचाती है॥
(छंद) मालिन बताया हाल सब, कुतवाल के व्यभिचारका।
निज नारि तजि निज मात सेवै, मात दुर्व्यवहार का॥
रानी किया आश्चर्य बहु, बुलवाय भूपति सों कही।
भूपति सुनी जब बात यह मन क्रोध अति पाया सही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) कोतवाल बुलवाय नृपति ने आज्ञा कीनी जारी है।
जग में निन्दा, नरक दुख पावे नर व्यभिचारी है ॥६॥
मूड़ मुड़ाय करौ मुख कारौ दोनों खर चढ़वाये हैं।
डोल गले में, डालकर नगर मध्य फिरवाये हैं॥
नर नारी धिक्कार देत, बालक तन डेला मारे हैं।
गाली देवें, कहें, मुह मत देखौ हत्यारे हैं॥
(छंद) फिर दई आज्ञा भूपने, शूली चढ़ा दीजै इन्हें।
पापी दुराचारी जु कामी हैं मिलै शिक्षा उन्हें॥
शूली लगी मरि नरक में, जा घोर पाया ताप है।
पुतली लगाई गर्म तन, दुख सहे कीना पाप है॥
(दो०) नीच काम सेवन तजि 'भगवत्' परनर औ परनारी है
जग में निन्दा, नरक दुख पावै नर व्यभिचारी है ॥७॥

—:०:—

(लोभ-निषेध) महालोभी पुरुष कथा

लावनी—३६

सब पापों का बाप लोभ है, तृष्णा अति दुखदानी है॥
आशा फाँसी, फँसे दुख पावें जग के प्राणी है ॥टेक॥
लोभी पुरुष महाअघ करता हृदय लाज तजि देता है।
लोभी जग में प्रगट अपयश कानों सुन लेता है॥
लोभी खाय न निज तन पोषै जोड़ जमी में धरता है।
लोभी जीवन, रङ्क सम विता दुखी हो मरता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) लोभी पुरुष हो स्वार्थी, हृदये न जिसके है धरम ।
लोभी पुरुष बहु अघ कमावै, करै नित खोटा करम ।।
लोभी परिग्रह जोड़ भारी, धरै उसे छिपाय के ।
लोभी करै धन धाम रक्षा, प्राण देत गमाय के ।।
(दौ०) परिग्रह संचक लोभीकी ही कथा जु आज सुनानी है ।
आशा फाँसी, फसे दुख पावैं जग के प्राणी है ।।१।।
नगर अयोध्या वनिक एक, भवदत्त नारि धनदत्ता है ।
लुब्धदत्त है, पुत्र लोभी धन लालच रत्ता है ।।
बनिज हेत देशान्तर चाला, पाप उदय तहां आया है ।
मिले लुटेरे लूट लीनी सब याकी माया है ।।
(छंद) अब रङ्क होकर घूमता, देखा है गौधन ग्वाल है ।
होकर क्षुधातुर छाछ पीने का, सु किया सवाल है ।।
छाछ पीकर मूछ पोंछी, लगा कुछ नवनीत है ।
लोभी विचारे करूं इकठा धन-बढ़ावन रीत है।।
(दौ०) मांगै छाछ नित्य घर घरसे कण माखन जु जुड़ानी है
आशा फांसी, फसे दुख पावें जग के प्राणी है ।।२।।
घास फूस की एक झोंपड़ी, माखन हेत सु डाली है ।
छाछ पीयकर जोड़ता, मूछ पोंछ घृत डाली है ।।
सोचै है दिन रैन इकठा, हो जावें रुपया लाके ।
छेली लूंगा, करूं घृत फिर उसका इकठा जाके ।।
(छंद) घृत बेचि लूंगा गाय भैंसि, करूं बहुत गौधन यहां ।
घृत होयगा मेरे बहुत, रुपया करूं इकठा जहां ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश दिन यही लालसा, धनवान मैं जल्दी बनूं ।
बहु काल में कण कण इकट्ठा, हो गया माखन घनूं ॥
(दौ०) श मश्रू नवनीत नाम ले नर नारी सु बखानी है ।
आशा फांसी, फसे दुख पावें, जग के प्राणी है ॥३॥
शरद काल आया शर्दी में बन्द झोंपड़ी कीनी है ।
एक तरफ ही आग सुलगा करके धर लीनी है ॥
चपटा घी का वहीं धरा है पग सकोड़ के लेटा है ।
नींद न आवै, विचारै हो धन का अब भेटा है ॥
(छद) है एक चपटा घृत उसे बेचूं रुपैया लाय के ।
फिर लू कपास कपास बेचू, भरूं धान अघाय के ॥
फिर बढगा धन से सु धन, व्यापार में मेरे यहां ।
मैं सेठ हो जग नाम पाऊं, मिलै आदर जहं तहां ॥
(दौ०) बना हबेली राजभवनसी ,सफल करूं जिन्दगानी है
आशा फांसी, फसे दुख पावै जग के प्राणी है ॥४॥
दौलत से बढती है दौलत, मैं भूपति कहलाऊंगा ।
नई तर्ज का सतखना महल विशाल बनाऊंगा ॥
सुन्दर रूप रसीली प्यारी, उससे व्याह रचाऊंगा ।
फूल सेज पर लेटकर नारी पास बुलाऊंगा ॥
(छंद) नारी पलाटे पग मेरे, मैं करूं काम कलोल है ।
कोमल सुकर तन महा सुन्दर गोल कुच रु कपोल है ॥
पग को पलट कर लात मारूं, अब न तेरे भाग में ।
पग लात मारी लगी घृत में, घृत पड़ा जा आग में ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) घृतसंयोग मिला सु अग्निको अग्नि तभी धधकाती है
आशा फांसी, फँसे दुख पावें जग के प्राणी है ॥५॥
प्रजुलो अग्नि जलो सब झुपड़ी, मूरख हा हा रोता है।
निकल सके ना, अग्नि में ध्यान न इसका होता है॥
मन विकल्प जो किये लालची उसके वश तन खोता है।
पाप बन्ध, से शुभ्र सागर में खाता गोता है॥
(छन्द) चक्री सुभौम सु लाभ वश सप्तम नरक पद पावता।
थी चक्रवर्ति विभूति सारी, लोभ योग गमावता॥
सब पाप का है मूल लालच, लोभ दुगति-दाय है।
तज लोभ धरि संतोष मन, सतोष शिव सुखदाय है॥
(दो०) 'भगवत्' धरि संतोष हृदय, संतोष सुगति अगवानी है
आशा फांसी फँसे दुख पावें जग के प्राणी है ॥६॥

—:❀:—

नर-भव का व्यर्थ न खोओ

लावनी ३९

नरभव पाकर व्यर्थ गमाता, वार वार नहिं पावैगा।
समय चूकते नरक पड़ि कर-मल मल पछितावैगा ॥टे॥
इन्द्रियविषयन के विष भोया, मोह निशा में सोता है।
वेष कीमती, मनुष्य भव व्यर्थ विषय में खाता है॥
भोगों में सब सुधि बुधि भूला, ज्ञान न मन में होता है।
अथिर विनाशी, जगत सागर में खाता गोता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) देख जगी क मोह माया, फंस गया उस जाल है।
पर को कहै यह है सु मेरा, मेरा तेरा ख्याल है॥
हो जाय इष्ट वियोग तो, करता अतीव मलाल है॥
नहिं सोचता शिर पर मेरे भी, आ पहोंचा काल है॥
(दो०) छोड़ चलेगा मेरा तेरा, जब यम आनि दवावैगा।
समय चूकते, नरक पड़ि कर-मल मल पछितावैगा॥ ।॥
नौ दश मास उदर माता के, औंधे मुख दुख पाय, है।
अङ्ग सिकोड़, मूत्र मल थान दिया लटकाया है॥
जन्त्री से ज्यो खिचै तार, तैसे निकला बतलाया है।
पड़ा भूमि पर, पिया पय सब दुख गर्भ भुलाया है॥
(छंद) फिर बालपन को खेलकर, अज्ञानता में खादिया।
कुछ बोध पाया तब तलक, घर में सु आय गई त्रया॥
अब डूब मधुरस में गया, माया त्रिया के जाल है।
धुनि धन कमाने की लगी घर हो गया इक लाल है॥
(दो०) द्रव्य कमाता पुत्र खिलाता खावे और खिलावैगा।
समय चूकते नरक पड़ि कर-मल मल पछितावैगा॥२॥
भूल गया वह सब बातें, जो माता गर्भ विचारी थी।
निकल यहां से, करूँगा धर्म हृदय यह धारी थी॥
अब तो इसका धन, सुत, नारी जगमें सबसे प्यारी है।
धर्म ध्यान की बात तो उर से सकल विसारी है॥
(छंद) ज्यों ज्यों बढ़ा परिवार, ममता भी त्यों आयकर।
अब यह करूं फिर यह करूं, घर में कहै समझायकर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृष्णा से चिन्ता बढ़ गई, आया बुढ़ापा हाल है।
यम ने दिया बे-म्याद नोटिस, श्वेत पड़ गये बाल है॥
(दो०) कान सुनाई नहीं देत, चश्मा ले नेत्र लगावैगा।
समय चूकते, नर पड़ि-कर मलमल पछितावैगा ॥३॥
दाँत उखड़ सब गये, पोपला डुकरा कहन लगे सब ही।
काया भूरी, किन्तु नहिं चेत हृदय हाता अब ही॥
कुछ दिन में ही राम नाम, सत की अवाज लग जावैगी।
नरक पहुंच कर, दुखी होगा तब याद सु आवैगी॥
(छंद) सतगुरु कहें जो गई, जाने दे रही को राख ले।
रे मूर्ख जीवन सब गया, प्रभु नाम-अमृत चाख ले॥
जप ले हृदय से शुद्ध हो जगदीश के शुभ नाम को।
सत्कर्म कर शुभ ध्यान धर, पावै सु अविचल धाम को॥
(दो०) 'भगवत् प्रभु का नाम धर्म ही, अन्त साथ में जावैगा।
समय चूकते, नरक पड़ि कर-मलमल पछितावैगा ॥४॥

—:०:—

(विपत्ति की जड़ सम्पत्ति) अङ्गार देवकी कथा

लावनी—४०

सम्पति जितनी विपति जगत में सब ही जन बतलाते हैं।
सम्पति को ही, प्राप्ति करने में विपति कमाते हैं ॥टेक॥
सम्पति के ही लिये जूआ, चोरी हत्यायें होती हैं।
सम्पति के ही, लिये माता निज सुत को खोती है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पति के ही लिये भ्रात, भ्राता का खून बहाता है।
पिता पुत्र से पुत्र भी पितु से तोड़े नाता है॥
(छन्द) इन्सान को हैवान करदे, धन में वह तासीर है।
धन स्वार्थी निर्दय हृदय, जानें न पर की पीर है॥
धन लोलुपी-मन उचित अनुचित, कुछ न साचे बात है।
धनवान के ना सहृदयता, धन जु रट दिन रात है॥
(दो०) रिस्तेदारी प्रेम मित्रता, धन के लिये गमाते हैं।
सम्पति को ही, प्राप्ति करने में विपति कमाते हैं ॥१॥
कोशाम्बी के धन-कुबेर, अङ्गार देव कहलाये हैं।
नगर प्रतिष्ठित, जोंहरी नग-जड़िया बतलाये हैं॥
दूर २ से नग जड़ने को, जिनके यहां सु आते हैं।
मणि माणिक का, काम विश्वास-पात्र कहलाते है॥
(छंद) गंधर्वसेन नृपतो दई, मणि पद्मराग सु जड़न को।
गृह लाय मणि बैठे तुरत, आभूषणों में मढ़न को॥
मणि कनक भूषण फिट करन, सोची अनेक डिजायनें।
धुनि भग हो जब शिर उठाया, देखतें क्या सामने॥
(दो०) नग्न दिगम्बर ज्ञानसिन्धु मुनि, चर्या हेत सु आते हैं।
सम्पति को ही, प्राप्ति करने में विपति कमाते हैं ॥२॥
देख मुनी अङ्गारदेव के, मन में भाव सु आया है।
मैं अहार दूं, छोड़ि मणि श्रीमुनि को पड़गाया है॥
नवधा भक्ति समेत दिया, आहार लेय मुनि जाते हैं।
हर्ष सहित पुनि, आय मणि जड़ने की ठहराते हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) देखी न मणि सुस्थान पर, अंगार मन अंगार है।
चहुं ओर देखी ना मिली, तब किया हा हा कार है॥
आश्चर्य है इस बात का, सब चीज ज्यों की त्यों रही।
वह पद्मराग मणी सु चोरी, चोर ने कीनी सही॥
(दौ०) घबड़ा कर शिर थाम बैठि, मणि-कारण रुदन मचाते हैं
सम्पति को ही, प्राप्ति करने में विपति कमाते हैं ॥३॥
करै विचार सेठ मन ऐसे, मैं मुनि तीजा ना कोई।
हम दोनों के, बीच ही सु कीमती मणि खोई॥
साधु नहीं ले सकें विरागी, मन इन्द्रिय के जेता है।
कहाँ गई फिर, अरे मेरा मन काम न देता है॥
(छन्द) है अपार सु द्रव्य की मणि, साधु मन डिग सकत है।
धन पाय कर छोड़ेगा क्यों, धन से यह मन थकत है॥
कुछ देर तक घम घम रहो, ली ना लई यह ध्यान है।
जब तीसरा यहां पर न कोई, लो यही अनुमान है।
(दौ०) फिर अङ्गारदेव वन जाकर, मुनि पर धोंस जमाते हैं
सम्पति को ही प्राप्ति करने में विपति कमाते हैं ॥४॥
ठगिया, डांकू, चोर, लुटेरा बगुला-भगत बताया है।
क्रोध भाव में, रोष कर मुनि को चोर जताया है॥
मुनि बैठे ध्यानस्थ मौन से, यह बहु शोर मचाया है।
भोजन दीना, मैंने तू मणि चोरी करि लाया है॥
(छंद) अब क्रोध में हो गया अन्धा, भूल आपे को गया।
इक बेंत था जो हाथ में, तैयार मुनि मारन भया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारा है बेंत सु फेंक के लगा मोरनी को नार है।
झट उगल दी मणि, मोरनी, भागी जु अरन मझार है ॥
(दो०) चम चमात मणि पड़ी देख, लज्जा से शीश झुकाते हैं।
सम्पति को ही, प्राप्त करने में विपति कमाते हैं ॥५॥
मणि उठाय अंगारदेव, गिरता पड़ता घर आता है।
जाय भूप को देय मणि निज मणि लेने जाता है ॥
बार बार वच यही कहै, धिक्कार तुझे धन दुखदाई।
धन के पीछे, बना अन्धा निन्दे श्री मुनिराई।
(छंद) वन जाय गुरु के पद गहै, नयनों बहाया नीर है ॥
हे दया–सागर क्षमा कीजै, मैं दई बहु पीर है।
धिक् धिक् है धन जिसके लिये, मैं मूर्ख मतवाला बना ॥
सन्तोष धन दो पूज्यवर, जो पाप काटूं आपना।
(दो०) 'भगवत्' मुनि अंगारदेव अब वन्दनीय बन जाते हैं।
सम्पति को ही, प्राप्त करने में विपति कमाते हैं ॥६॥

—:०:—

सत्पात्र दान महिमा

लावनी—४१

सत्कर्मों से लक्ष्मी पाई, दान सदा करिये भाई।
विना दान के, निन्द्य लक्ष्मी पशु सम काया पाई ।टेक॥
व्रत संयम, उपवास, दान तप से होता है पुण्य महा।
पुण्य उदय से, मिलै लक्ष्मी आगम में है यही कहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्रवर्ति, नारायण, राजा सेठ धनाढ्य कहाते हैं।
पूर्वोपार्जित, सभी सत्कर्मों का फल पाने हैं॥
(छंद) तप से मिलै है स्वर्ग सुख, तप से मिलै शुभ राज है।
तप, दान, से दौलत मिलै, दौलत से हो सब काज है॥
यह बात जगत प्रसिद्ध है, धन धर्म से होता सही।
निर्धन पना है पाप फल, "श्री" धर्म की चेरी कही॥
(दो०) धन की शोभा सदा दान से, दान करौ घर धन आई।
बिना दान के, निन्द्य लक्ष्मी पशु सन काया पाई ॥१॥
स्वर्ग, नरक, मानुष, पशु गति में मानुष भव उत्तम पाया।
इस तन से ही, होय जप तप संयम सु दान माया॥
इस तन से ही होय इन्द्र अहमिंद्र, अतुल सुख पाते हैं।
इस तन से ही, कर्म नाश कर परमातम बन जाते हैं॥
(छंद) यह तन महा उत्तम मिला, औ पुन्य से धन पालिया।
ता कर सफल यह देह धन, कर दान नित हर्षित हिया॥
आहार, औषधि, शास्त्र, अभय सु दान चार प्रकार है।
दो नित्य ही निज शक्ति सम, करके सु हृदय उदार है॥
(दो०) कूप नीर सम, धन नित दीजै, बिन देवें वह सड़ि जाई
बिना दान के, निन्त लक्ष्मी पशु सम काया पाई ॥२॥
बड़ का बीज तुच्छ सा होता, वृक्ष महान दीखाता है।
इसी तरह से, दान फल मिलै बनें जो दाता है॥
फैले कीर्ति जगत में भारी, बहु सन्मान सु पाता है।
दान दीजिये, दान भव भव में सुखी बनाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) जो हों गुणी जन पूज्य नर, उनको विनय से दीजिये ।
जो हों स्वजन साधर्मि सज्जन, प्रेम उन से कीजिये ॥
जो दीन दुखिया, अन्ध, लूले, पंगु और अनाथ है ।
करुणा हृदय में धार दीजै, दान दोनों हाथ है ॥
(दौ०) तीर्थ क्षेत्र धार्मिक कार्यों में, आगे कदम पड़ेजाई ।
विना दान के, निन्द्य लक्ष्मी पशु सम काया पाई ॥३॥
देश धर्म औ कुल-मर्यादा, दीन हीन रक्षा कीजै ।
शङ्का तजि कर, रहित अभिमान दान नित ही दीजै ॥
विना दान धन धूल बराबर, सूम न जग शोभा पावै ।
खाय न खरचै, जोड़ धन धरं अपयश ले मर जावै ॥
(छंद) नित पेट कस कस सूम जौड़ै, चोर, डाकू लूटते ।
राजादि गुन्डा धन उजाड़ें, सूम माथा कूटते ॥
अपयश जगत जन देत नित ही, सूम मुह देखें नहीं ।
धनवान है पर सूम है, सन्मान ना होता कहीं ॥
(दौ०) धनी सूम, निर्धन से बदतर जीवित मृतक गिना जाई ।
बिना दान के, निन्द्य लक्ष्मी पशु सम काया पाई ॥४॥
दान, भोग, औ नाश, तीन गति लक्ष्मी की बतलाते हैं ।
दान देयकर, खर्च करदे वह सुयश कमाते हैं ॥
जो भोगों में खर्च करे, वह भौतिक सुख को पाते हैं ।
दोनों त्यागी माल को लूट लुटेरे खाते हैं ॥
यह सोच दीजै दान, विनय सु प्रेम, दया विचार के ।
पुरुषार्थ से जो द्रव्य पाया, खर्च करौ सम्हार के ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित खिचै पानी कूप से, हो शुद्ध बढ़ता जात है।
जितना करौगे दान दो इस हाथ-लो उस हाथ है॥
(दौ०) भोग भूमि, सुर, शिवपद दाता, 'भगवत्' दान सु बतलाई
बिना दान के, निन्द्य लक्ष्मी पशु सम काया पाई ॥५॥

—:०:—

अंजना-चरित्र

लावनी—४२

सती अंजना शीलवती जो, हनूमान की माता है।
वन वन भटकी, उदै जब कर्म असाता आता है ॥टेक॥
विद्याधर प्रहलाद पुत्र थे, महा प्रतापी पवन कुमार।
भूप महेन्दर, सुता थी सती अंजना अति सुखकार ॥
व्याह हुआ दोनों का लेकिन, पतिके मन में हुआ विकार।
पास न आवें अंजना पति-वियोग सहती दुख-भार ॥
(छन्द) दासी अकेली साथ है, जो अंजना महलों रहै।
दो-बीस, वर्ष व्यतीत हूवे, अंजना बहु दुख सहै ॥
एक दिन रिपु जीतने को, जाय पवनकुमार है।
देखा सती ने दूर से नयनों बही जल धार है ॥
(दौ०) पवन कुमार जाय सागर तट, निज डेरा लगवाता हैं
वन वन भटकी, उदै जब कर्म असाता आता है ॥१॥
मित्र सहित बैठे सन्ध्या को, चकवा चकवी से छूटा।
चकवी रोवै बिना पति के उसका धीरज टूटा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखा पवन कुमार रात्रि भर का वियोग दुखदाई है।
सती अंजना, मैंने बाईस वरष भटकाई है ॥
(छन्द) रात्रि को प्रच्छन्न आये अंजना के पास है।
हे सती मैंने ही तुझे, दीना बहुत ही त्रास है ॥
संभोग कर चलने लगे, बोली सती सकुचाय के।
माता पिता से हाल आने का कहो पति जाय के ॥
(दो०) कड़ा मुद्रिका देय निशानी, पवन लौटकर जाता है।
वन वन भट की उदै जब कर्म असाता आता है ॥२॥
होनहार ना टलै सती के, गर्भ रहा सुखदाई है।
गर्भ चिन्ह लखि, सासु के मन में चिन्ता छाई है ॥
कहै अंजना सासु रात्रि में, तुम सुत मो घर आये हैं।
दासी पूछौ, निशानी मुद्री कड़ा दिखाये हैं ॥
(छन्द) मानी न एकहु बात मन, सासू ससुर दुख पायकर।
बैठाय रथ में सारथी दो, वन इसे छुटकाय कर ॥
अपकीर्ति जग में होयगी जो. यह रहैगी घर बिसे।
बहु दूर जाकर छोड़ना, निर्जन भयानक वन इसे ॥
(दो०) छोड़ौ बन में जाय सारथी, रहा न कोई नाता है।
वन वन भटको, उदै जब कर्म असाता आता है ॥३॥
बैठा कर रथ मांहि सारथी, जंगल में पहुँचा जाके।
रुदन अंजना किया कही देहु पिता घर पहुंचा के ॥
गई पिता घर पिता न राखी, पास तलक नहिं आये हैं।
महाभयानक, देख वन सती सु रुदन मचाये हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) दासी दिलाया धैर्य रही, पर्वत गुफा में जाय के।
इत गर्भ के नव मास पूरे, होंन लागे आय के॥
वन केहरी इक दिना निश में, दई जोर दहाड़ है।
भयवन्त सब ही जन्तु, दहला उठा सकल पहाड़ है॥
(दौ) घोर उपद्रव सहा धीर धर, देव बधाई साता है।
वन वन भटकी, उदै जब कर्म असाता आता है॥४॥
शुभ दिन शुभ मुहूर्त में उपजा, सती उदर से पुत्र महान।
नभ में अटका, इधर जाते विद्याधर का सु विमान॥
उतरा नभ से आय सतो को देख बात करली पहिचान।
मामा तेरा, चलौ बेटी अब तुम मेरे सु मकान॥
(छंद) तब हर्षयुत ले गोद बालक जा चढ़ी सु विमान में।
वह उछल बालक गोद से गिर पड़ा जा चट्टान में॥
इक दम रुदन करने लगे, अब आय कर देखा वहां।
बालक पड़ा है मोद युत, अंगुष्ट पीवै है जहां॥
(छंद) खण्ड खण्ड होगये शिला के वज्र संहनन पाता है।
वन वन भटकी, उदय जब कर्म असाता आता है॥५॥
दासी माता बालक-युत, विद्याधर घर सुख पावै है।
उधर शत्रु को जीतकर पवन कुमर घर आवै है॥
समाचार वनवास अंजना, सुनि बहु रुदन मचावै है।
भेष फकीरी, बनाकर, सती ढूढने जावै है॥
(छंद) कुछ काल में मामा घरें, दम्पति हुआ सु मिलाप है।
हनुमान पाई वृद्धि चमका, अतुल बुद्धि प्रताप है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिरकाल तक सुख भोग जग के, पुनि लिया तप जैन है।
श्री पवन, हनुमन शिव गये अंजना सुर गति चैन है॥
(दौ०) भगवत कर्म महाबल ।।ग जग को नाच नचाता है।
वन वन भटको, उदै जब कर्म असाता आता है। ६॥

—:o:—

श्री चेलना रानी चरित्र

लावनी—४३

सती चेलना दृढ़ श्रद्धानी, जिनका चरित सुनो सुखकार।
अपने पति को, जिन्होंने लगा दिया है भव के पार ॥टेक॥
राजा चेटक का पुत्री थी, सती चेलना रूप महान।
चित्रकारने, चित्र में गुप्त अङ्ग का लिया निशान॥
शङ्का धार क्रोध किया भूपति, चित्रकार मन में भय मान।
राजगृही में नृपति श्रेणिक को चित्र दिखाया आन॥
(छंद) चित्र देखत भूप श्रेणिक, हो गये मन मुग्ध है।
चिन्ता अहर्निश मिलन को रहते सदा मन क्षुब्ध है॥
सुन धीर, वीर, गम्भीर अभय कुमार जानी बात है।
छल फन्द से ला चेलना, हर्षित किये निज तात है॥
(दौ०) पट रानी पद मिला चेलना, पति सङ्ग भोगै भोग अपार
अपने पति को, जिहोंने लगा दिया है भव के पार ॥१॥
राजा श्रेणिक बौद्ध धर्म में, रत हैं यह चिन्ता भारी।
कैसे सुधरें यत्न करने लागी धार्मिक नारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बौद्ध गुरू की करी परीक्षा, राजा क्रोध किया जारी।
क्रोधित होकर, भूपने काम किया अति दुखकारी॥
(छंद) एक दिन राजा गया है, विकट भूमि मसान में।
जहां अवधि मन पर्यय सु धारी, खड़े थे मुनि ध्यान में॥
इक मृतक सर्प उठाय राजा मुनि गले में डा लया।
तत्काल घोर जु पाप से सप्तम नरक थिति पालिया॥
राजा आकर महल आपने, राज काज को करी सम्हार।
अपने पति को, जिन्होंने लगा दिया है भव के पार॥२॥
कुछ दिन बाद निगा आधो में. रानी को बतलाया है।
सुनते रानी, कही प्रभु तुम बहु पाप कमा ा है॥
राजा कहै निकाल दिया होगा, क्या अब तक पड़ा रहा।
रानी बोली, जैन मुनि वही जो परिषह अड़ा रहा॥
(छंद) तत्काल चाले देखने, जहां थे मुनी मसान में।
वह मृतक सर्प पड़ा गले में, साधु रत निज ध्यान में॥
उस सर्प मुख से खून टपका, लगी चींटी आय के।
उपसर्ग घोर हुआ मुनी को. सहा आतम ध्याय के॥
(दो०) रानी जाकर निज हाथों से, सर्प गले से दिया निकार।
अपने पति को, जिन्होंने लगा दिया भव है के पार॥३॥
रानी कोमल वस्त्र पोंछ कर, चींटी तन से रहीं हटाय।
श्रेणिक नृप का, जैन मुनि की दृढ़ता को रही दिखाय॥
हुआ प्रभात मौन गुरु खोला, धर्म वृद्धि दीनी सुखदाय।
भेद भाव विन दोनों को धर्म-स्वरूप रहे समझाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) यह देख समता भाव श्रेणिक, मन किया बहु ताप है।
मैं मूर्ख मुनि को कष्ट दीना, बहु कमाया पाप है॥
मन में विचारी शीश अपना, काट कर अर्पण करूं।
निज रक्त से मुनिराज के चरणों को मैं तर्पण करूं॥
(दो०) मन पर्यय ज्ञानी थे मुनिवर, बोले ऐसे वचन उचार।
अपने पति का जिन्होंने लगा दिय है भव के पार ॥४॥
हे श्रेणिक क्यों पाप कमावै, आत्मघात कर तन खोवै।
खून दाग को, खून से ही अब तू क्यों कर धोवै॥
धर्म करो जिस से सुख पावो, मिलै वही जैसा बोवै।
यह सुनि श्रेणिक, गुरु चरणों में पड़ि बहु विधि रोवै॥
(छंद) श्री गुरु बताया ज्ञान, श्रेणिक दृढ़ किया श्रद्धान है।
बन गये क्षायिक समकिती, जो पूज्य पुरुष महान है॥
सौभाग्य से श्री वीर जिनका, मिल गया सत्संग है।
किये प्रश्न साठ हजार, प्रभु सों, प्रगट जो द्वादशांग है॥
(दो०) समवशरण विपुलाचल पर्वत, आया प्रभु का वारम्वार
अपने पति को, जिन्होंने लगा दिया है भव के पार ।५॥
वीर प्रभू के समवसरण में, श्रोता श्रेणिक बने प्रधान।
गुरु गौतम सों प्रश्न कर कर के जग हित किया महान॥
सप्तम नरक तनी थिति छेदी, प्रथम नरक में प्रथम सु थान
पाया श्रेणिक, आयु नहिं छिदै बताया यह जिनवाण॥
(खंद) जब आयगा शुभ काल चौथा, प्रथम तीर्थंकर यही
श्री ऋषभ देव समान, पद्म सु नाम धरि होंगे सही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चेलना रानी सु तप कर, स्वर्ग में सुर पद धरै ॥
चतुकाल में नर होय तपकर, शिव महल में सुख करै ॥
(दो०) 'भगवत्' नारी वह सुखकारी, जो निज पतिका करै सुधार
अपने पति को जिन्होंने लगा दिया है भव के पार ॥६'॥

—※×※—

श्री सुखानन्द मनोरमा शील चरित्र

लावनी—४४

सुखानन्द औ मनोरमा ने, शील धर्म को धारा है ।
बन्द किवारे, नगर के, उनको जाय उघारा है ॥टेक॥
सेठ पुत्र श्री सुखानन्द थे, महा प्रतापी बहु धनवान ।
मनोरमा थी, तिन गृहे नार शीलधारी गुण-खान ॥
करने को व्योपार सेठ, परदेश गमन को मन ठानी ।
बहु समझाया, पिता माता नारी पर नहिं मानी ॥
(छद) प्रोहन भरा कर चल दिये, पहुँचे हैं हँस जु द्वीप में
मणि रत्न, माणिक, होय भारी, होय मुक्ता सीप में ॥
बहु काल यहां व्यापार कर, काफी कमाया माल है ।
चलते समय राजा से मिलने, का किया मन ख्याल है ॥
(दो०) भेंट भूप सों करी, भूप के हृदय हर्ष हुआ भारा है ।
बन्द किवारे, नगर के उनको जाय उघारा है ॥१॥
बांदी मुख से सुनी प्रशंसा, रानी महल बुलाया है ।
गज मुक्ता का हार रानी की भेट चाढ़या है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रानी लखकर रूप हुई, कामातुर मन ललचाया है।
यत्न किये बहु, कुमर माता कहकर बच आया है॥
(छंद) मन क्रोध रानी धार, वस्त्र उघार आ दरबार है।
त्रिय जाल फैलाकर कहा, यह सेठ सुत बदकार है॥
यह बात सुन किया कोप भूपति सेठ को बुलवाइया
ले पांच सौ संग सूर अपने, सेठ तत्काल आइया॥
(दौ०) हुई भूप सों बात बताया, हाल महल का सारा है।
बन्द किवारे नगरके उनको जाय उघारा है॥२॥
धन्य धन्य सब कहें, भूप के हृदय उदासी छाई है।
पुत्री मेरी, विवाहौ कहै भूप सुखदाई है।
सेठ कहै वह बहिन मेरी मैं, रानी माता बतलाई।
राज पिता हैं, आप हम दोनों हुये बहिन भाई॥
(छंद) राजा सुनी यह सेठ वाणी, लिया गले लगाय के।
बहु रत्न मणि, माणिक, सु मुक्ता दिये जहाज भराय के॥
इत की कथा यहां छोड़ कर, सुनिये सती का हाल है।
इक दिन चढ़ी गृह सतखने पति देखने के ख्याल है॥
(दौ०) राजकुमर की पड़ी दृष्टि, पापी मन पाप विचारा है
बन्द किवाड़े नगरके उनको जाय उघारा है॥३॥
कामातुर हो राजकुमर, दूती को घर भिजवाई है।
पाप बात सुन, सती दूती को मार लगाई है॥
दूती मन हो दुखी जाय, सेठानी को समझाई है।
बहु प्रपंच रचि, कही तुम गृह बहू पापिन आई है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छंद) व्यभिचारिणी है यह बहू, इसका न घर में काम है
छुटकाय दो वन खंड में, नहिं दे सुनाई नाम है॥
तब सेठ सेठानी सलाह कर भेज दी उद्यान है।
माता पिता भी ना रखी, यह कर्म क्या बलवान है॥
(दौ०) रोवन मूर्छा आई, सुधि बुधि सभी विसारा है।
बन्द किवारे, नगर के उनको जाय उघारा है॥४॥
राजगृही का राजकुमर, ले गया उठाकर कामी है।
होश हुआ जब, सती तब जपती अन्तरयामी है॥
शील प्रभाव देव आकर के, राजकुमर को मारा है।
सती शरण ली, बचा तव शील प्रभाव अपारा है॥
(छं) पद पूज करके सती को, वन में गया छुटकाय के।
संयोग-वश मामा मिला, गृह ले गया समझाय के॥
उत सेठ सुत घर को चला, कुछ दिनों में गया आय के।
वनवास सुनकर सती का मूर्छा गया है खाय के॥
(दौ०) दर दर डोलै नारि ढंड़ता, भेष फकीरी धार है।
बन्द किवारे, नगर के उनको जाय उघारा है॥५॥
पहुंच गया मामा के घर, तब मिली नारि सुखदाई है।
अपना अपनी कथा दोनों ने तभी सुनाई है॥
शील परीक्षा हेत सती फिर, पति नगरी में आई है।
रहै अकेली, अलग निश्चल प्रभु ध्यान लगाई है॥
(छंद) राजा सुनी यह बात होगा न्याय कल ऐसे कही।
निश में नगर द्वादश किबारे, देव सब कीले सही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होते प्रभात सु शोर फैला गया राजा आय के।
गज, अश्व, महिष, जु मल्ल भारी, रहे जोर लगाय के॥
(दो०) रंच न चिगे किवार सभीने, जोर लगाया भारा है।
बन्द किवारे, नगर के उनको जाय उघारा है॥६॥
हुई शाम ना हुआ काम, निश अन्धकार फैलाया है।
अर्ध निशा में, देव ने ऐसे वचन सुनाया है॥
पतिव्रता नारी पग छूवै, तो सब द्वार खुलाया है।
खुलै न वैसे, व्यर्थ क्यों राजा दुक्ख उठाया है॥
(छंद) जब सुनी यह आकाशवाणी, भूप मन हर्षाय के।
होते प्रभात त्रियां नगर की, सब लईं बुलवाय के।
का शील-धारी शुद्ध नारी, खोल दे फाटक नगर।
यह बात सुन सब जोर कीना ना खुला फाटक मगर॥
(दो०) राजा का रणवास खास आ, फाटक पै झकमारा है
बन्द किवारे नगर के उनको जाय उघारा है॥७॥
मन्त्री मुख नृप सुना हाल, नहिं मनोरमा यहां आई है।
नंगे पैरों, भूप जा ऐसे गिरा सुनाई है॥
बेटी तेरे हेत किसी ने यह माया फैलाई है।
तू सतवन्ती, सती है खोलो फाटक जाई है॥
(छंद) भूप आग्रह से सती, चल दी मना मन वीर का
देख हँसने लगीं नारीं, धीर, वीर, गम्भीर को॥
सती कर उठाकर यों कही, स्वप्ने न देखा पर-पती।
खुल जाय फाटक पग छुवाते, तो मुझे कहना सती॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत' फाटक खुला, करें सुर नर सब जै जै कारा है
बन्द किवारे नगरके उनका जाय उधारा है ॥८॥

—※×※—

सत्पात्र दान प्रभाव (अग्निला ब्राह्मणी चरित्र)

लावनी—४५

शुभ भावों से करें दान, श्रद्धायुत शुभ गति पाते हैं ।
पात्र दान की, अतुल महिमा श्रुत में मुनि गाते हैं ॥टेक॥
सोमशर्म द्विज नाम अग्निला, त्रिया सु नाम बताया है ।
जैनी पुत्री, किन्तु वैष्णव पति जिसने पाया है ॥
एक दिना द्विज सोमशर्म ने, निज गृह श्राद्ध कराया है ।
भोजन करने, नगर के विप्रों को सु बुलाया है ॥
(छन्द) सोमशर्मा विप्र युत, गया पिण्ड दान सु देन को ।
इत अग्निला आते सु देखा, सामने मुनि जैन को ॥
गिरनार गिरि से उतर मुनि वरदत्त भोजन लेन को ।
आये अक्षीण सु ऋद्धि धारी, सुने नारी वैन को ॥
(दो०) तिष्ठतिष्ठ मुनि शुद्ध ह भोजन, वच सुन मुनि रुक जाते हैं
पात्र दान की, अतुल महिमा श्रुत में मुनि गाते हैं ॥१॥
नवधा भक्ति युत दिया अन्न, मुनि ले अहार गिरि जाते हैं ।
पिण्ड दान कर, उधर से सब द्विज घर को आते हैं ॥
देख निकलते मुनि को घर से, विप्र रुष्ट हो जाते हैं ।
झूठा भोजन, नहीं हम खायें लौट सब जाते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) लौट ब्राह्मण गये, गृह से, रोष शर्मा मन किया।
ले दंड निज नारी सु मारी दोष सब उसको दिया॥
बहु मार दीनी है करारी, अग्निला मन खार है।
दो सुत उन्हें निज लार ले, जा चढ़ी गिरि गिरनार है॥
(दो०) गिर परि जाय मुनि तट पहुंची, मुनि यह वचन सुनाते है
पात्र दान की, अतुल महिमा मुनि श्रुत में गाते हैं॥२॥
हे पुत्री क्रोधित मन तेरा, साथ न घर का कोई है।
मिले न दीक्षा, सुनत यह वचन ब्राह्मणी रोई है॥
बोले मुनि धीरज धारो, तब वृक्ष तले जा सोई है।
कल्प वृक्ष सम, हुआ वह वृक्ष शुष्क सर तोई है॥
(छन्द) जिसदिन गई यह नारि घरसे, लगी नगरी आग है।
सब ग्राम जलकर भस्म हूवा, छोड़ सब गये भाग हैं॥
बस सोमशर्मा वचा गृह, उसमें न आया दाग है।
सब ग्रामवासी कहें भाई, यह बड़ा बढ़-भाग है॥
(दो०) किया देवता मुनि-बन भोजन, आपस में बतलाते हैं।
पात्र दान की, अतुल महिमा मुनि श्रुत में गाते हैं॥३॥
सुनी बात यह सब विप्रों ने, शर्मा से बोले आके।
भोजन दीजै, उस दिन गया देवता मुनि खा के॥
सोमशर्म करवाया भोजन, गये विप्र सब हर्षा के।
नगर जिमाया, किन्तु ना कम सामान हुआ था के॥
(छन्द) जब ध्यान आया नारि का, वह सती साध्वी थी त्रिया
उसके ही पुन्य प्रताप से परवेश अग्नि नहीं किया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढूंढ़न चढा गिरनार देखा, नारि दे दुख आय के।
गिरकर मरी सु पहाड़ से, देवी हुई है जाय के॥
(दो०) बना अग्निला रूप बैठ गई, द्विज यह वचन सुनाते हैं।
पात्र दान की, अतुल महिमा मुनि श्रुत में गाते है॥४॥
हे प्यारी घर चलो मैं पापी, तुम को बहु दुख दीना है।
क्षमा करो, सा, सकल अपराध जो मैंने कीना है॥
बोलो देवी नारि तेरी वह, मरी पड़ी है देख उसे।
देख कलेवर, हुआ बहु दुखो कहा सब हाल इसे॥
(छन्द) सुत लेय दोनों आय गृह, सबको, कहा सब हाल है
श्रद्धा करौ जिन धर्म को, यह धर्म परम विशाल है॥
हुई मृत्यु फिर शुभ भाव से, सुर देव पद पाया महा।
सुत पा अवस्था तप किया, बहु बोध केवल को लहा॥
(दो०) सुत दोनों शिव धाम, पधारे' भगवत्' शीश नवाते हैं
पात्र दान को, अतुल महिमा मुनि श्रुत में गाते हैं॥५॥

—:❀:—

श्री द्रोपती सती चरित्र

लावनी ४६

सती द्रोपती जगत जानता, पतिव्रता सुखकारी थी।
महा प्रतापी, वीर, अर्जुन की प्यारी नारी थी॥टेक॥
माकन्दी पुर भूप द्रुपत की, सुता, द्रोपती सुखकारी।
रचा स्वयंवर, भूपने की विवाह की तैयारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्याधर दे गया धनुष, जो चढ़ा धनुष वेधै मोती।
सब भूपों को, सुनाइ दई घोषणा यह होती ॥
(छन्द) क्रम क्रम सभी भूपति चढ़ा, धनुष ना कोई चढ़ा।
था भेष ब्राह्म ण का धरें, चुपचाप तब अर्जुन बढ़ा ॥
झट बेध मोती को दिया, धनु तोड़ि डाला भूमि पर।
तब द्रोपती, माला गले, में, डाल दी लखि योग्य वर ॥
(दौ०) हुआ युद्ध सब गयेहार, किया ब्याह सुता जो क्वारी थी
महा प्रतापी, वीर अर्जुन की प्यारी नारी थी ॥१॥
गजपुर पाण्डव राज्य करें, कौरव मन द्वेष करें भारी।
जूआ खेला, पाण्डव, राज पाट सब गये हारी ॥
दुःशासन था दुष्ट द्रोपती, की करनी चाही ख्वारी।
सभा मध्य में, चीर खेंचन की कीन्ही तैयारी ॥
(छन्द) उन केश पकड़े द्रोपती के, सभा में ले जाय के।
फिर द्रोपती का चीर भी खेंचन लगा आय के ॥
तब ध्यान प्रभु का किया भारी, सती मन वच काय कर।
सुर लोक से आ देव रक्षा, की तभी वहां आय कर ॥
(दौ०) बढ़ गया चीर रह गई, लाज सब करें सु जैजैकारी थी।
महा प्रतापी, वीर अर्जुन की प्यारी नारी थी ॥२॥
बारह वर्ष व्यतीत किये वन में रह के पाण्डव भाई।
वर्ष तेरहें, नौकरी की विराट नृप के जाई ॥
मालिन वन कर रही, द्रोपती, कीचक, हृदय पाप छाया।
छेड़न लागा, सती ने भीमसेन से दुख गाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तब भीम नारी रूप धरि कर, दिया कीचक मार है
सौ भ्रात उसके लड़न आये, उन्हें दिया पछार है ॥
फिर जीत कर सब कौरवो को राज्य कीना जाय के ।
पर द्रोपती को विपत पर ही, विपति पहुँची आय के ॥
(दौ०) नारद निज अपमान समझ, दुख दूं यह इच्छा धारी थी
महा प्रतापी, वीर अर्जुन की प्यारी नारी थी ॥३॥
द्वीप धातकी के भूपति को, सती चित्र दिखलाया है ।
चित्र देखकर, होय मोहित हरवाय मगाया है ॥
विद्या बल से अर्द्ध निशा में पलंग सहित उठवाया है ।
प्रात होत ही, सती ने देखा तो गस खाया है ॥
(छन्द) वह काम-वश वच कहे खोटे, सती फटकारा उसे ।
इक मास की मर्याद कर निज पास से टारा उसे ॥
जल अन्न तजि जा जिन भवन, बैठी है ध्यान लगाय के ।
इत पाण्डवा रहे खोज, नारद कही हरि सों आय के ॥
(दौ०) कृष्ण पाण्डवा जाय, धातकी खण्ड सु सती निकारी थी
महा प्रतापी, वीर अर्जुन की प्यारी नारी थी ॥४॥
नेमि प्रभू जब केवल पाया, भवि सुन सुन वैरागे हैं ।
पांचों पाण्डव, धरी दीक्षा सब भोग सु त्यागे हैं ॥
सती द्रोपती भी राजुल से व्रत सु आर्यिका लीना है ।
दुद्धर तप कर, स्वर्ग सोलम में सुर सुख कीना है ॥
(छन्द) नर होय तप कर कर्म हीन, जो थान शिरपुर का लहै
ऐसी सती को मूर्ख जन, हा ! पंच-भरतारी कहैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो पांच पुरुषों की त्रिया, कैसे कहें उसको सती।
प्रत्यक्ष में देखै जगत, व्यभिचारियों की दुर्गती ॥
(छंद) 'भगवत्' सती द्रोपती जगमें, उच्चादर्श विचारी थी
महाप्रतापी, वीर अर्जुन की प्यारी नारी थी ॥५॥

—:०:—

श्री महासती राजुलदेवी चरित्र

लावनी—४७

सती शिरोमणि राजुल देवी, चरित महा मगलकारी।
नेमि प्रभू संग, भोग तजि जाय चढ़ी है गिरनारी ॥टेक॥
जूनागढ़ नृप उग्रसेन को, राजुल कन्या प्यारी थी।
सौम्य सरलचित, विवेक की अति सुन्दरता धारी थी ॥
विश्ववंद्य श्री नेमिकुमर के साथ व्याह ठहराया है।
शौरीपुर में, कृष्ण ने साज बरात सजाया है ॥
(छंद) थी भावना खाटी हृदय, जब तक प्रभू घर में रहे।
निष्कंटक राज्य न होय म्हारा, पूर्ण प्रतिभा ना लहें ॥
घिरवा दिये हैं मूक पशु, जहां हो बरात सु आयगी।
वैराग्य होगा नेमि को, दुविधा सकल मिट जायगी ॥
(दो०) ले वरात चल दिये साथ में नेमि प्रभू रथ असवारी।
नेमि प्रभू संग भोग तजि जाय चढ़ी है गिरनारी ॥१॥
उधर झरोखे में बैठी राजुल पति बाट निहारे है।
इत रथ पहुँचा, प्रभु का भूपति जाय दुवारे है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करुणानिधि को देखि दीन पशु, कीनी करुण पुकारें है।
हमें छुड़ावौ, सारथी प्रभु सों वचन उचारें हैं ॥
(छन्द) हे नाथ यह पशु मार कर, भोजन बने सु बरात को।
सुनकर दयामय अवधि, से जानी किशन मन बात को ॥
धिक्कार है यह राज्य लक्ष्मी, भ्रात छल बल करत है।
मेरे निमित्त से दीन पशुओं, का भी जीवन हरत है ॥
(दौड़) मुझे न चहिये राज्य-सम्पदा, मैं शिव नगरी अधिकारी
नेमि प्रभू सग, भोग तजि जाय चढ़ो है गिरनारी ॥२॥
कंकण ताड़ा मौर उतारा, भूषण वस्त्र जु त्यागे हैं।
लौकान्तिक सुर, कही प्रभु धन्य मुक्ति-मग लागे हैं ॥
पंच मुष्टि से केश लूंच कर, सिद्ध सु शीश नवाया है।
चढ़ि गिरनारी, स्वात्म चिन्तन में ध्यान लगाया है ॥
(छन्द) यह बात राजुल ने सुनी, खाई जु तुरन पछार है।
सब महल नगर बरात में, फैला सु हा हा कार है ॥
होकर सचेत सु रजमती, चढ़ि गई गढ़ गिरनार है।
पहुंची जहां निज ध्यान में, बैठे सु निज भरतार है ॥
(दौ०) नौ भव साथ रही मैं स्वामी, अब क्या चूक पड़ी भारी
नेमि प्रभू संग, भोगि तजि जाय चढ़ी है गिरनारी ॥३॥
मौन ध्यान में लीन प्रभू लखि सब शृङ्गार निवारा है।
केश लुंच कर, आर्यिका बनकर तप को धारा है ॥
केवल ज्ञान हुआ स्वामी को, मुख्य आर्यिका राजमती।
अन्त शिवनगर, प्रभू पधारे सती सोलमे सुरग गती ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) भव एक दे होकर मनुज, तप धारि शिव पुर वास है।
कुछ काल में जाकर रहेंगी निज पती के पास है॥
नारी जगत में नाम इनका, लेत श्रद्धा भक्ति से।
तजि भोग योग सु बालपन में, लिया शील सु शक्ति से॥
(दौ०) धन्य शील धर वीर बालिका, भगवत् तुम गुण बलिहारी
नेमि प्रभू संग भोगि तज जाय चढी है गिरनारी ॥४॥

—:०:—

श्री जिनदत्ता सेठानी चरित्र

लावनी—४८

सम्यक् दर्शन सहित सुधी नर, शिवमारग को पाते हैं।
धर्मिक जन को देवता आकर शीश झुकाते हैं। टेक॥
मगध देश सु राजगृही नगरी सेठ बसै सुखकारी है।
वृषभदास है, नाम जिनदत्ता धार्मिक नारी है॥
सती शिरोमणि शुभ गुण मंडित, पति की आज्ञाकारी है
नहीं पुत्र है यही बस मन में चिन्ता भारी है॥
(छन्द) बहु यत्न कीने पर न कुछ, पाई है याने सफलता।
सब कुछ है पर नहि पुत्र सुख, यह भाग्य की है प्रबलता॥
तब एक दिन होकर दुखी भरतार को समझा रही।
बिन पुत्र जीवन शून्य है, करौ ब्याह दूजा यों कही॥
(दौ०) सेठ कही ना करूं नारि को हर प्रकार समझाते हैं।
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेठानी मन पुत्र लाभ, हठ करके सेठ लुभाया है।
चाचा चाची, उन्हीं के घर जा वचन सुनाया है॥
तुम पुत्री है बहिन मेरा, मा पति को इसे ब्याह दीजे।
मैं गुण मानू, पूज्य वर कहना मो इतना कीजै॥
(छन्द) तब मात पुत्री को कही, तू सौत क्यों पुत्री दऊँ।
निज सुता को दुख जन्म भर यह मोल बाधा क्यों लऊँ॥
तब कहे जिनदत्ता प्रतिज्ञा करि तजूं भरतार है।
इक बार दिन में जाउँ भोजन, हेत मैं पति द्वार है॥
(दौ०) ब्याह कनकश्री संग सेठ का, हुआ सु मौज उड़ाते हैं
धार्मिक जन को देवता आकर शीश झुकाते है ॥२॥
जिनदत्ता जिन मन्दिर में रह, पूजन पाठ रचाती है।
दुष्ट कनकश्री एक दिन निज माता गृह आती है॥
माता पूछै सेठ प्रेम, यह बिल्कुल झूठ बताती है।
दुखी रहूं मैं, सेठ जिनदत्ता मौज उड़ाती है॥
(छन्द) माता सुना यह हाल दिल में, ठान ली यह बात है।
हो सकै जैसे हो मैं, जिनदत्ता करादूं घात है॥
दिन रात चिन्ता में रहै, देखा है योगी एक दिन।
है अघोरी, रौद्र भेषी. देखते आती है घिन॥
(दौ०) रुंड माल गल पड़ी, हाथ मानुष कपाल को लाते है
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ३॥
सिद्ध कार्य इससे मेरा हो जोगी को ठहराया है।
नाना व्यञ्जन, खीर पकवान सु उसे खबाया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोगी हुआ प्रसन्न, कहै चेला क्या मन में भाया है ।
जिनदत्ता को, मार दे ऐसे वचन सुनाया है ॥
(छन्द) जोगी ने जाय मसान में, साधी है विद्या आय के ।
वैताली नर संहारनी, दीना है भेद बताय के ॥
विद्या ने जिनदत्ता लखो जिन-भवन ध्यानारूढ़ है ।
सम्यक्त्व युत दृढ़ धर्म में विद्या झुकाया मूढ है ॥
(दो०) लौट जाय जोगी से कहती, वहां न घात चलाते हैं ।
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥४॥
जोगी कहा दुष्ट नारी को मारो विद्या आती है ।
कनकश्री को मार कर फिर अदृश्य हो जाती है ॥
प्रात होत माता निज पुत्री, मरी हुई जब पाती है ।
रुदन मचाया, भूप को जाकर हाल सुनाती है ॥
(छन्द) महाराज जिनदत्ता ने पुत्री, मो दई मरवाय है ।
दई भूप आज्ञा, सेठ सेठानी को पकरो जाय है ॥
जब सेठ जिनदत्ता लखा, संकट पड़ा यह आय है ।
अन पान तजि जिन भवन म बैठे सु ध्यान लगाय है ॥
(दो०) वन देवता तभी आकर के, किंकर मार भगाते हैं ।
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥५॥
वनदेवी ने जोगी मुख से, भेद सकल प्रगटाया है ।
मेरे द्वारा, कनकश्री को माता ने मरवाया है ॥
गली गली घर घर जोगी ने, ऐसे बचन सुनाया है ।
राजा सुनकर, भागता सेठ द्वार पर आया है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) राजाने देखा आंख से, दम्पति सु ध्यान मझार है।
वर्षा रहे हैं पुष्प करते देव जै जै कार है॥
है शुद्ध जिनदत्ता सती वाणी गगन से हो रही।
कर जोर घुटने टेक भूपति, विनय वच एसे कही॥
(दौ०) धन्य धन्य जिनदत्ता देवी, सुयश देवगण गाते हैं।
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥६।
राजा बन्दे साधु दिगम्बर, मन वैराग्य समाया है।
रानी मत्री, सेठ सेठानी संयम भाया है॥
बारह भावन भाव विचारा, भोग सो नेह हटाया है।
गृह तजि वन में, जाय निज आतम रूप सु ध्याया है॥
(छंद) तप लिया बहु जन संग में, बहु लिया गृह आचार है।
जिन धर्म का श्रद्धान कर, हो गया बेड़ा पार है॥
अन्तर-मुहूरत होय समकित, जीव हो उद्धार है।
सम्यक्त दृढ श्रद्धान विन, जप तप सभी बेकार है।
(दौ०) 'भगवत्' सम्यक् दर्श विना, भव सागर गोता खाते हैं
धार्मिक जन को, देवता आकर शीश झुकाते हैं ॥७॥

—:०:—

श्री महासती सोमादेवी चरित्र

लावनी—४६

शील प्रभाव सती सोमाके, नाग हार हो जाता है।
सुयश जगत में आज तक उसका गाया जाता है। टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हस्तनागपुर महामनोहर, त्रय जिन जन्म सु थाना है।
उसी नगर में, सेठ गुणपालक नाम महाना है॥
जिन धर्मी, दानी सु विवेकी, आदि सुगुण की खाना है।
गुणवति नारी, पति-भक्त्यादि धर गुण नाना है॥
(छन्द) इस ही नगर में विप्र इक, जो सोमदत्त सु नाम है
है दुख दरिद्र सुपाप पूरित, सोमिला तसु वाम है॥
सोमा सुता तिन के मनोहर, रूप सुगुण विशाल है।
सोमिला तन ज्वर हुआ पीड़ित, आ गया तसु काल है॥
(दो०) नारि मरण से सोमदत्त द्विज, शोक महान उपाता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥१॥
अति विलाप करै दुख पावै, इत दरिद्र दुख भारी है।
भ्रमत फिरत है, एक दिन आया अरण मझारी है॥
बैठे ध्यान करें जहां मुनिवर, रूप दिगम्बर धारी है।
बिन कारण ही, जगत बांधव जग को हितकारी है॥
(छन्द) जानि द्विज को भव्य मुनि, बोले दुखी द्विज किस लिये।
सब भोगने तुमको पड़ेंगे, कर्म जो तुमने किये।
द्विज रोय करके हाल सारा, तिय-वियोग बता दिया।
मुनि धर्म का उपदेश दीना, शोक रहित हुआ हिया॥
(दो०) सम्यक् दर्शन सहित, गृह-व्रत लेकर घरको आता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥२॥
श्रावक के बारह व्रत उत्तम, मन वच, तन द्विज पालै है।
देव शास्त्र गुरु, भक्ति कर अतिचार को टाले है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धार्मिक श्रावक जानि सेठ, गुणपाल दिया धन भारी है।
दान पुन्य कर, सुता युत रहता विप्र सुखारी है॥
(छन्द) गुणपाल सेठ सदा करै, द्विजराज का सन्मान है।
भोगोपभोग औ धर्म कारण, दिया बहु धन दान है॥
लखि आयु अन्त सु दी सुता, द्विज सेठ को बुलवाय के।
हे सेठ करना व्याह जिन धर्मी, सु ब्राह्मण पाय के॥
(दौ०) हो कुलीन सज्जन सन्तोषी, करना उससे नाता है।
सुयश जगत में, आज तक, उसका गाया जाता है॥३॥
सोमा रहै सेठ के घर में, धर्म-क्रिया नित करती है।
रुद्रदत्त द्विज. एक दिन दृष्टि सु उसकी परती है॥
है कुलीन पर जूआ खेलता, सप्त व्यसन का धामी है।
वेश्या-सेवी, देख कन्या मोहित हूआ कामी है॥
(छन्द) तब साथियों से कही जाकर, मिलै कैसे सुन्दरी।
साथी कहैं पापी है तू, धार्मिक पुरुष जावै वरी॥
जिन धर्म धारी सेठ इसका, व्याह सज्जन सङ्ग करै॥
तब रुद्रदत्त विदेश जाकर, कपट धर्म सु आचरै॥
(दौ०) जैन शास्त्र का किया अध्ययन जैन क्रिया अपनाता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है॥४॥
माया चारी बनि ब्रह्मचारी, सेठ जिनालय आया है।
गद्य पद्य से, जिनेश्वर देव वन्दना गाया है॥
व्रत उपवास और सामायिक, पूजा पाठ रचाता है।
जिनवर वाणी करै, व्याख्यान सेठ मन भाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) सेठ ने कुल गोत्र पछा, दिया सकल बताय है।
सुख पाय मन अति सेठ, सोमा दई परनाय है॥
दीना बहुत धनमाल साधर्मी समझ सुख पाय है।
यह धूर्त सोमा ब्याह कर, खेला जुआ फिर जाय है॥
(दो०) कामलता गणिका संग जाकर, काम कलोल रचाता है
सुयश जगत में, आज तक जिसका गाया जाता है ॥५॥
सेठ देख यह बात, समझ मायाचारी दुख पावै है।
मन पछितावै, सती सोमा को जा समझावै है॥
सोमा कहै पिता जी मेरा, कर्म उदय यह आवै है।
हँस, हँस कीया, उसका फल निश्चय पावै है॥
(छन्द) सोमा रहै रत धर्म में नित भजन पूजन जाप में।
क्षण एक भी ना व्यर्थ खोवै, धूर्त लीन सु पाप में॥
तब सेठ दीना धन अतुल, सोमा को सुख भोगो घन।
सोमा किया सब दान, सुन्दर एक जिन मन्दिर बना॥
(दो०) करी प्रतिष्ठा दूर दूर से, यात्री गण बहु आता है।
सुयश जगत में आज तक उसका गाया जाता है ॥६॥
नगर भोज सोमा करवाया, है सब भोजन को पाते हैं।
कामलता को, मात ले रुद्रदत्त भी आते हैं।
वसुमित्रा गणिका की माता, सोमा रूप निहारै है।
निरखि रूप को, दुष्टिनी मन में कहा विचारै है॥
(छन्द) यह रूपवन्त महान नारी, रुद्रदत्त कहें सभी।
जो भोग भोगे सङ्ग या, ना मो सुता भोगै कभी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो त्याग दे मेरी सुता, तो हाय धन की हानि है।
धन बिना जीवन व्यर्थ मारा, न जगत सुख खानि है॥
(दौ०) मारूँ इसे तभी सुख पाऊँ, सुता सौति दुख-दाता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥७॥
प्राण हरूं ऐसा निश्चय करि, काल भुजंग मंगाती है।
धारि धड़ा में, सुता सोमा को दे समझाती है॥
वेष कीमती रत्नहार है, सोमा ले सुख पाती है।
पंच परम पद, सुमिर घट मे से हार उठाती है॥
(छन्द) वह हार निकला अति मनोहर सोच गणिका मन करै
मैं सर्प विषधर धरा घट मे, हार क्यों कर हो परै॥
सोमा पहिन कुछ दे फिर गणिका सुता गल डालिया।
वह हार पन्नग हो गया, गणिका सुता को खा लिया॥
(दौ०) खाई कामलता विषधर ने मृत शरीर हो जाता है।
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥८॥
गणिका रुदन किया अति भारी, राज-सभा में जाती है।
रो रो करके, भूप को अपनी कथा सुनाती है॥
गुणपालक पुत्री सोमा ने, मो पुत्री को मारा है।
सौति-डाह करि, भूप मो कों दिया दुक्ख करारा है॥
(छन्द) भूपति बुलाये सेठ सोमा, गये दोनों आय के।
कहै भूप गणिका क्यों हनी, सोमा कहौ समझाय के॥
सोमा कहै मैं जैनधर्मी, दया नित चित धरत हों।
पर-घात से हो पात भारी, पाप से मैं डरत हों॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) जो घातै पर-प्राण भूप वह, रौरव नरक सु जाता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥९॥
वसुमित्रा सुन बात कहै, घट में पन्नग विष धारी है।
उसे निकालौ, उसी से मारी सुता हमारी है ॥
सोमा सुमिर श्री जिनवर को, हाथ घड़े में डारी है।
वृष-प्रभाव से, हो गया पन्नग हार हजारी है ॥
(छन्द) जब हार गणिका लेय कर में, होय विषधर नाग है
सोमा करै स्पर्श कर, हो हार अद्भुत राग है ॥
हो रहा खेल सभा विषें देखें सभी अनुराग है।
मुख से कहें सोमा सती पुण्यात्मा बड़भाग है ॥
(दो०) शीलवान है सच्चरित्र है, पूजनीय जग-माता है।
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ।१०॥
वेश्या कहै सती तब जानू, पुत्री मेरी जी जावै।
जो ना जीवै, पापिनी मन्त्र-वादिनी कहलावै ॥
सोमा शुद्ध भाव से मन में, णमोकार मन्त्र सुध्यावै।
अंजुलि जल ले, मन्त्र पढ़ि गणिका ऊपर छिड़कावै ॥
(छन्द) जल परसते गणिका उठी, मानों शयन से उठ रही
धन धन्य शीलवती सती नर नारि सब ऐसे कही ॥
नभ से गिरे हैं पुष्प, दुन्दुभि वजी जै जैकार है।
सुर सुरी थुति गावें सुनभ हो रहे पंचाचार है ॥
(दो०) वसुमित्रा से सत्य हाल, भूपति सारा सुनि पाता है।
सुयश जगत में आज तक उसका गाया जाता है ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूप, सेठ, सोमा, सेठानी, रानी पुरजन नर नारी।
गये सु वन में जहां जिनचन्द्र मुनीश्वर अघहारी ॥
सुनो धर्म-उपदेश भूप औ, सेठ दिगम्बर पद धारी।
सती सु सोमा, सेठानी रानी सुता सु सेठ प्यारो ॥
(छन्द) श्रीमती आर्या पास ब्रत, आर्यिका धारा जाय के।
वह रुद्रदत्त सु उभय गणिका, गृही-ब्रत सुख पाय के ॥
नर नारि बहु ब्रत शक्ति सम, लीने हृदय हर्षाय के।
जिन किया जैसा तप उन्हें, वैसा मिला फल जाय के ॥
(दो०) 'भगवत्' सोमा चरित मनोहर पढ़ै सुनें लहै साता है
सुयश जगत में, आज तक उसका गाया जाता है ॥१२॥

—:o:—

श्री महासती चन्दनबाला चरित्र

लावनी—५०

शुद्ध समकिती संयमधारी, सुन्दर रूप विशाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥टेक॥
कौशाम्बी नारी के भूपति दधि वाहन सत धारी है।
श्री जिन-धर्मी, शीलधर प्रिय धारिणी नारी है ॥
उनकी पुत्री चन्दन बाला, रति रोहिण अवतारी है।
शशि शर्मावै, देखि मुख छटा शान्तिता भारी है ॥
(छंद) था एक अभिमानी नृपति, शतानीक नाम सु जानिये
लेकर सकल सेंना चढ़ा करि क्रुद्ध युद्ध सु ठानिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो मारि दधिवाहन नृपति, शपानीक पुर अधिपति हुआ ।
रानी सुता को दुख महा, रक्षक था सो रण में मुआ ॥
(दो०) शतानीक के सेनापति आ, महलों फन्दा डाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दनबाला है ॥१॥
मायावारी वच सेनापति, रानी को सु सुनाता है ।
बना हितैषी, उन्हें अरि भूपति भय सु दिखाता है ॥
चलो साथ मां बेटी दोनों, रो रोकर समझाता है ।
रक्षक समझा, चलीं यह ले जंगल में आता है ॥
(छन्द) जो रहीं मखमल फर्श पर, हा दैव वह पैदल चलें ।
बहु दुक्ख युत कोना गमन, भयकार वन में जा रुलें ॥
रवि अस्त हो व्यापी निशा, निद्रा लई मां धीय ने ।
सब भोगने फल वह पड़ें, जो किये कर्म सु जीय ने ।
(दो०) मां बेटी निद्रा में व्यापी सेनापति मन काला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥२॥
सेनापति को काम सताया, रानी को सु जगाया है ।
कामांतुर हो, दुष्ट ने सारा भेद बताया है ॥
मैं मोहित था तेरे ऊपर, मैंने युद्ध कराया है ।
शतानीक का, मैं सेनापति हूं नृप मरवाया है ॥
(छन्द) रानी मेरे संग भोगकर, चिर काल से मन लुब्ध है ।
रानी कहे चुप धूर्त रह, मो मन करै मत क्षुब्ध है ॥
तू दुष्ट मायावी पुरुष, कामी कुकर्मी नीच है ।
धोका दिया लाया यहां, शंका न की मन बीच है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) पाप कर्म था उदय हमारा, पड़ा दुष्ट से पाला है।
सौम्य सरल चित्त, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥३॥
रानी झपट कटारी छीनी, सेनापति थर्राता है।
दुष्टें सम्हल जा, बदी करने का अब फल पाता है॥
फिर रानी मन बात विचारै, हिंसा दुख की दाता है।
इसे न मारूँ, स्वयं तोड़ू, इस तन से नाता है॥
(छन्द) निज शील रक्षा, हेत तन दूं, मारि गले कटार है।
मारी कटारी प्राण तजि, खाई, सुधरिण पछार है॥
सुनकर धड़ाका सुता जागी, मृतक, माता है पड़ी।
शिर धुनें हा हा शब्द करनी, लगी आंसू की झड़ी॥
(दो०) सेनापति समझाय सुता को, फिर संग लेकर चाला है
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥४॥
महाधूर्त सेनापति मन में, लालच आया भारा है।
बात बनाकर, सती को ले गया नगर मझारा है॥
रूपवन्त नवयौवन सुन्दर, वेश्या इसे निहारा है।
सेनापति को, किया गणिका ने तुरत इशारा है॥
(छन्द) लेकर, रुपया दुष्ट ने, वेश्या को वेची है सती।
ऐसा नराधम पुरुष का, निश्चय मिलेगी दुर्गती॥
वेश्या ने चलने को कही, पूछा सती यह हाल है।
क्या नाम सासु, ससुर, पती, अरु कौन की तू बाल है॥
(दो०) भेद बता तब चलूं साथ में, पड़ा जुवां क्यों ताला है
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेश्या कहै मोल मैं लीनीं, मैं गणिका नगरी जानें ।
दये रुपैया, चलो, घर सती हृदय बहु दुख मानें ॥
ना ना करी पकड़ कर खेंची, सुता सु ध्यान लगाया है ।
लाज मेरी को, बचाओ नाथ कष्ट यह आया है ॥
(छन्द) यह सती बैठी ध्यान में वेश्या जु झटका दे रही ।
तब सेठ धनवाहन सु आकर, बात वेश्या सों, कही ॥
क्यों दे रही झटका इसे, आंखें निकालै लाल है ।
वेश्या कहै मैं मोल लीनीं, दिया पूरा माल है ॥
(दो०) चार हजार रुपैया दीने, सुनों बात यह लाला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥६॥
सेठ रकम सब दे वेश्या को, सती सु कष्ट मिटाते हैं ।
धरमसुता कहि देय, धीरज घर को ले जाते है ॥
जिनधर्मी है सेठ सती को, वात्सल्य दिखलाते हैं ।
हर प्रकार से करें रक्षा वृष मार्ग लगाते हैं ॥
(छन्द) करती है घर का काम चन्दन रात दिन लग धरम में
फल भोगना सब ही पड़ै, जो कुछ लिखा है करम में ॥
उस सेठ नारी के हृदय में, छा गया यह पाप ।
लागे हैं इसको सेठ जी, अपनी बुझाने ताप है ॥
(दो०) है परदेशिन वेश्या लीनी, इसका चरित निराला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥७॥
सेठानी मन रोष धारती, सौति समझ दुख देती है ।
खान पान भी न दे विधिवत मन ईर्षा चेती है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दासी ने समझाई पर ना, बात समझ में आती है।
नाना विधि से कष्ट देकर के सती सताती है ॥
(छन्द) दिन रैन सेठानी हृदय, बेचैन रहता है सही।
होनी महाबलवान, होनी है सो होता है वही ॥
दिन एक सेठानी गई, दासी सहित जिन धाम है।
इत सेठ घर आये सही, था उन्हें घर कुछ काम है ॥
(दौ०) थके हुये थे सेठ देख घर, सूना हुआ उजाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥८॥
देख चन्दना कहीं सेठ जी सेठानी कहाँ दासी हैं।
घर में छाई, आज क्यों कर ये पूर्ण उदासी है ॥
कही चन्दना मान लेय दासी जिन भवन सिधारी हैं।
आती होंगी, उन्हें हो गई, सु बहुत अवारी है ॥
(छन्द) ला गर्म जल मैं पैर धोऊँ, चन्दना हर्षाय के।
चौकी बिछा ला गर्म जल पग, धो रही सुख पाय के ॥
वह धर्म को बेटी समझना, वह समझती बाप है।
वह पैर धोवै शुद्ध चित से, नहीं कोई पाप है ॥
(दौ०) सेठानी आगई देखकर, पड़ा हृदय पर पाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन वाला है ॥९॥
सेठ हृदय था शुद्ध किया भोजन बजार को जाते हैं।
सेठानी के, हृदय के निकले बोल सुनाते हैं ॥
दासी देखा हाल आज क्या, अब भी आंखें फूटी हैं।
तू कहती थी सती है यह सब बातें झूठी हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) कर जोर बोली चन्दना, अपराध क्या माता मेरा ।
दुतकार सेठानी कहा, सौतिन न मुंह देखूं तेरा ॥
माता कहै ना शर्म खाती, सेठ की प्यारी बनी ।
मेरे हृदय को दुक्ख-दाता, नागिनी कारी बनी ॥
(दो०) तूने मेरे पती-हृदय पर, पापिन फन्दा डाला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥१०॥
होनहार दिन एक सेठ जी, परदेशों को जाते हैं ।
तीन दिवस की अवधि सेठानी को समझाते हैं ॥
सेठ गया तब सेठानी ने, नाई एक बुलाया है ।
केश मुड़ाकर, सती का रूप कुरूप कराया है ॥
(छन्द) सांकल मगाकर लोह की तन कस दिया सारा सती
डाला है तहखाने उसे, अब ले बुला कहां है पती ॥
ना अन्न जल कुछ भी दिया, दीना बहुत ही त्रास है ।
सती ध्यान करती वीर का, वस वीर की ही आस है ॥
(दो०) वीर सुनो मो टेर, वीर ही अब मेरा रखवाला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥११॥
तीन दिवस उपरान्त सेठ परदेश लौट घर आता है ।
देखि उदासी और घर में सन्नाटा पाता है ॥
सेठानी दासी चुप बैठी, सती न पड़ी दिखाई है ।
सेठ पूछता, कहां वह सती सु देउ बताई है ॥
(छन्द) करि क्रोध सेठानी कही, ले गये साथ लिवाय के ।
बनवा रखा होगा महल, वहां रखी जाय छिपाय के ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमको बुढ़ापे में कहा, सूझी करो दूजी त्रिया।
घर घर तुम्हारी हो रही. चर्चा सुनों कामी पिया॥
(दौ०) तुम वाके भरतार बने वह बनी गले की माला है।
सौम्य सरल चित. सदाचारी सति चन्दन बाला है॥१२॥
सेठ कही सेठानी तेरी बुद्धि भ्रष्ट दीखै मो को।
धर्म सुना को, बताबै नारि शम नाहीं तो को॥
तू मन पाप धरै है भारी, वह सतवन्ती नारी है।
महासती है, उसे तू कहती हा ! व्यभिचारी है॥
(छन्द) फटकार दीनी सेठ ने करके बहाना गोत का।
चलदी पड़ोसी के घरें, ना मर्म जाना प्रोत का॥
दासी को पूछो सेठ ने भरवा त्रवाचा तब कही।
हे सेठ सेठानो सती को त्रास बहु दीना सही॥
(दौ०) मूंड़ मुड़ाय कसा तन सांकल, भकसी में जा डाला है
सौम्य सरल चित. सदाचारी सति चन्दन बाला है॥१३॥
जब से आई सती तभी से जौ की भुसी खवाई है।
मार मार कर सती की सबतन खाल उड़ाई है॥
सेठ कहै दिखला तू मुझको कहां सती दुख पाती है।
बातें तेरी, सुनूं तब फटती मे री छाती है॥
(छन्द) जाकर दिखाई चन्दना, रट रही प्रभु का नाम है।
ना तीन दिन से अन्न जल, सब तन हुआ बे काम है॥
रो रो के सेठ पुकारता, बेटी क्षमा करना मुझे।
मैं लाय कर घर आपने, घनघोर दुख दीने तुझे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सेठ उठा गोदी में उसको, लाया होश सम्हाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला ॥१४॥
सेठ कही दासी ला भोजन जल ला इसे पिलाना है।
दासी दीने, सूप में उबले उड़द सु दाना है।
मैं जाकर लाता लुहार, बन्धन इसका कटवाना है।
सेठ गया जब, हुई दासी भी तुरन रवाना है॥
(छंद) तब चन्दना कीनी प्रतिज्ञा, दान दे भोजन करूं।
बिन दान मुनि के त्याग अनजल, चांहि मैं अब हो मरूं॥
उन वीर प्रभु आहार को, चाले प्रतिज्ञा धारि है।
जा शिर मुड़ा त्रय दिन उपासो, बन्धो हाथ नारि है॥
(दौ०) नैन नीर उबले हों दाने होय न घर रखवाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है।१५॥
आये वीर इसी मारग से, सती प्रभू लखि पाती है।
तिष्ठौ तिष्ठौ, नाथ जल अन्न शुद्ध बतलाती है॥
नैन नीर विधि सब पाई, प्रभु आगे बढ़ जाते हैं।
दुखी होय के सती के नैंन नीर छा जाते हैं॥
(छन्द) फिर लौट कर आये प्रभू, लीने सती पड़गाय के
श्री वीर चरण प्रताप से बन्धन खुले सब जाय के॥
वह सूप स्वर्ण सु थाल हूआ उड़द बहु पकवान है।
सांकल सकल भूषण हुये, शिर केश चीर महान है॥
(दौ०) खड़े वीर साक्षात् सतीने, दिया अहार विशाला है।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीर लेंय आहार भीड़, दरवाजे भारी छाई है ।
बजें दुंदभी, शब्द जै जै नभ दिये सुनाई है ॥
लेकर सेठ लुहार साथ निज दरबाजे गया आई है ।
देख वीर को, चरण में मस्तक दिया झुकाई है ॥
(छन्द महावीर दर्शन के लिये, आये नगर नरनारि हैं ।
सती चन्दना हर्षित हृदय, सब करें जै जैकार हैं ॥
आई न सेठानी मगर यह भाग्य का ही दोष है ।
जब वीर प्रभु वन को गये, आई किया अफसोस है ॥
(दो०) सेठानी चन्दन बाला, के चरणों मस्तक डाला है ।
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन बाला है ॥१७॥
बारवार अपराध क्षमा कर, कह दिया दुख भारी है ।
महा पापिनी, सती की मैंने कीनी ख्वारी है ॥
कहै चन्दना मात तुम्हारे, योग मिले जिनराई है ।
सच्ची माता, मेरी, तुम सेठ पिता सुखदाई है ॥
(छन्द) बन जाय, दीक्षा लूं मुझे, आज्ञा करौ माता पिता ।
कहै सेठ सब धन माल दे, करूं ब्याह मैं तेरा सुता ॥
वैराग्य में मन लीन कब वह, भोग की इच्छा करै ।
जो चाहता मुक्ति सुख, क्यों तुच्छ सुख पर मन धरै ॥
(दो०) दीक्षा लेकर वनी आर्यिका गणिनी पद लिया आला है
सौम्य सरल चित, सदाचारी सति चन्दन वाला है ॥१८॥
सती चरित्र निहारि सेठ, धनवाहन हुआ विरागी है ।
कही नारि से, सम्हालो मैं सब सम्पति त्यागी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेठानी भी निज कर्मों को, बार बार, धिक्कारे हैं ।
सुनों सेठ जी, चलूंगी साथ सु वचन उचारे हैं ॥
(छन्द) धन माल सब जिन धामके, करि नाम तप लिया जाय है
धारा दिगम्बर भेष हरि मन क्लेश अनि सुख गाय है ॥
आर्यिका सेठानी बनी, तप करं दुद्धर चाव से ।
लौहा तरै है काठ संग पापी, सजन, सतभाव मे ।
(दो०) सती शिरोमणि चन्दन बाला 'भगवत्' नमत त्रिकाला है
सौम्य सरल चित, सदाचारी, सति चन्दन बाला है ॥१९॥

—:०:—

शीलवती महासती श्री नोलीबाई चरित्र

लावनी—५१

शीलवती है नीलीबाई, दोष रहित गुणधारी है ।
सुन नर वन्दित, धर्म धारक कुलवन्ती नारी है ॥टेक॥
लाट देश भृगु कच्छ नगरी नृप बसुपाल बनाया है ।
जिनदत्त सेठी नारि जिनदत्ता नाम सु पाया है ॥
सुता एक तिन के गृह उपजी, नोली नाम धराया है ।
दृढ़ जिनधर्मी, सकल श्रावक आचार सु आया है ॥
(छन्द) है रूपवन्त महान नीली, देख रति शरमात है ।
रोहिणि, शची से रूप अधिको उज्वल धरै गात है ॥
उस ही नगर में सेठ इक, उस नाम सागरदत्त है ।
सागर सु दत्ता नारि सुत का नाम उदधि सुदत्त है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) यौवन वय इक दिवश मित्र युत, श्री जिन भवन अगारी है
सुर नर वन्दित, धर्म धारक कुलवन्ती नारी है ॥१॥
आया उदधि दत्त मन्दिर-तर, देखी नीलीवाई है।
रूप देखकर, हृदय में काम व्यथा बहु छाई हैं॥
नीली प्रभु के सन्मुख ठाड़ो, प्रभु सों ध्यान लगाई है।
कामी मन में, उधर बेचैनी छाई भाई है॥
(छन्द) निज मित्र से सब हाल पूछा उन दिया बतलाय के
जिनदत्त सेठी की सुता, नीली है दी समझाय के॥
गृह जाय अपने पड़ा औंधा, अन्न जल दिया छोड़ि के
सुनि हाल मात पिता सु पूछो, सब कुटम्बली जोड़ि के॥
(दौ०) नीली ब्याह करौ मेरे संग, छाई चिन्ता भारी है।
सुर नर बन्दित, धर्म धारक कुलवतन्ती नारी है ॥२॥
बौद्ध धरम हम सब गृह पालें, वह दृढ जैन धरमधारी।
देय न कन्या, धर्म की अड़चन सब से है भारी॥
पुत्र करी हठ मायाचारी, जैनधर्म अपनाते हैं।
जैन क्रिया को, करें जिन मन्दिर अपनाते हैं॥
(छन्द) बहु दिन हुए जैनी बने, जिनदत्त मन अति हर्ष है।
तजि बौद्ध श्रावक पद धरा, किया धर्म का उत्कर्ष है॥
दी सेठ सुत को ब्याहि नीली, दिया बहु धन माल है।
करि ब्याह तजि दीना धरम, चाले सु खोटी चाल है॥
(दो०) नीली सासु गृहे दुख पावै, इधर सेठ दुख भारी है।
सुर नर नन्दित धरम धारक कुलवन्ती नारी है ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीली शील सम्हार धरम में लीन, जुगे रहि दुख पावै ।
नित प्रति आकर, बौद्ध भिक्षुक नीली को समझावै ॥
आकर कहै गुरु हम ज्ञानी, घट २ की बतलाते हैं ।
तन में रह कर, जाय बैकुण्ठ खबर सब लाते हैं ॥
(छन्द) नीली कही, हैं दिव्य ज्ञानी कल मेरे आहार है ।
न्योता मेरा है बौद्ध गुरु को, लखूं क्या आचार है ॥
वह आ गये भोजन करन, पद-पात्र सब की एक है ।
बहु सूक्ष्म कतरी दे मसाला, दी सु घृत में सेक है ।
(दो०) दधि में मिला बनाया भोजन, जो स्वादिष्ट अपारी है
सुर नर बन्दित, धरम धारक कुलवन्ती नारी है ॥४॥
भोजन कर जब चालन लागे, पग रक्षक ना पाते हैं ।
क्रोधित होकर, सेठ को तीखे बचन सुनाते हैं ॥
नीली कही दिव्य ज्ञानी तुम, भेद न इसका पाते हो ।
झूठ मूट को, कपट कर ज्ञानी-पन दर्शाते हो ॥
(छन्द) पद त्राण थारे पेट में करि वमन देखौ ज्ञान से ।
झूटी प्रशंसा क्यों करौ, कुछ बात कीजै ध्यान से ॥
कीनी वमन लज्जित हुये, स्वस्थान पहुंचे जाय के ।
सब सेठ के मिलकर कुटम्बो, रोष कीना आय के ॥
(दो०) नीली पर सब करने लागे, दोषारोपण भारी है ।
सुर नर वन्दित, धर्म धारक कुलवन्ती नारी है ॥५॥
सासु ननद मिलकर नीली को दोष कुशील लगाया है ।
सब नगरी में सती अपयश यह फैलाया है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीली भी सुन दोषारोपण प्रभु सों ध्यान लगाया है।
मिटै न जब तक, अन्न जल, त्याग सु थिर की काया है॥
(छन्द) नीली किया है ध्यान भारी, नगर देव सु आय के।
सम्बोध कीना है सती को, इस तरह समझाय के॥
मैं शील-रक्षा हेतु पुर के, सब कपाट लगावता।
तुझ पग लगत खुलजांय झट, ना खुलै अन्य छुबावता॥
(दो०) फैलै जग में शील महातम, मैंने यही विचारी है।
सुर नर बन्दत, धर्म धारक कुलवन्ती नारी है।६॥
देव होय अदृश्य लगा फाटक, कौतुक दिखलाता है।
प्रात होत हो नगर सब हा हाकार मचाता है॥
भूपति आकर फाटक खोलन, यत्न अनेक कराता है।
चिर्गै न रंचक, सुबह से समय रात्रि का आता है॥
(छन्द) निश अर्द्ध में आकाश-वाणी, हुई राजा ने सुनी।
फाटक खुलेगा जब कोई, खोलैगी नारी सद्गुणी॥
निर्दोष शीलवती सती, पग लगत ही खुल जायगा।
करि यत्न राजा तू यही बरना बहुत पछितायगा॥
(दो०) प्रात होत राजा बुलवाली, नगरी नारी सारी है।
सुर नर बन्दित, धरम धारी कुलवन्ती नारी है॥७॥
खुला न फाटक किसी नारि से, सेब रणवास बुलाया है।
पार पड़ी न हृदय में राजा सोच समाया है॥
याद किया नीली ना आई, राजा लेने आया है।
चाली नीली, हृदय में श्री जिनवर को ध्याया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) जप कर परम पद मन्त्र, दीना पग अंगुष्ट छुवाय के
जयकार युत फाटक खुला, नभ-पुष्प वर्षे आय के ।।
नभ दुंदभी जै जै ध्वनि, सुर कर रहे हर्षाय के ।
भूपति सभी नर नारि नीली का सुयश रहे गाय के ।।
(दो०) 'भगवत्' नीलो शीलवती का चरित सु मंगलकारी । हैं
सुर नर वदिन्त, धरम धारक कुलवन्ती नारी हैं ।।८।।

—:❀:—

सु लक्षणा नारी स्वरूप

लावनी ५२

सतवन्ती सुशील पति भक्ता, वही प्रशंसित नारी है ।
जो उदार चित, विनय युत पति का अज्ञाकारी है ।।टेक।।
जो सुलक्षणा नारि सुशीला सरल स्वभाव सु वाली है ।
जो सतवादी, मधुर भाषिणि न देत मुख गालो है ।।
पति सेवा में लीन पर-पुरुष, पिता, भ्रात, सुत सम मानें ।
सासु ससुर की, विनय सत्कार अतिथि का उर ठानें ।।
(छन्द) जो जेठ जेठानी दिबर, दिवरानि राखै प्रेम है ।
जो ननद नन्दोई सु आदर, रखै घर में क्षेम है ।।
आलस्य का ना नाम जानें, करै गृह का काम है ।
सुन्दर पवित्र करै रसोई, रखे उज्वल धाम है ।।
(दो०) जो बच्चोंको निल्हा धुलाकर रखती स्वच्छ सुखारी है
जो उदारचित विनययुत पति की आज्ञाकारी हैं ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो जल-गालन-अन्न पचावन, आदि काम को जानें है।
जो मन वच तन, बुजर्गों की आज्ञा को मानें है॥
पाड़ पडोसिन औ सम्बन्धी, सबका आदर करती हैं।
दीन दुखी पर, दया कर मन उदारता धरती है॥
(छन्द) फैशन बना कर जो कभी, घूमे न जा बाजार है।
पति के रिझाने के लिये, निशि में करै शृङ्गार है॥
मर्याद-युत वच कहै पति-दुख सुख में देती साथ है।
जो खर्च करै सम्हाल कर, दे दान ऊँचा हाथ है॥
(दौ०) पति आमद में है सन्तोषिन, सम्यक करै गुजारी है
जो उदारचित, विनय युत पति को आज्ञाकारी है॥२॥
सज्जनता और सदाचार से, जीवन सदा विताती है।
नित्य नियम से देववन्दन पूजन को जाती है॥
जो अघकारी कार्य उन्हें तजि, धर्म कार्य चित लाती है।
ब्रत संयम में, लीन नित प्रभु का ध्यान सु ध्याती है॥
(छन्द) जो सिनेमा थ्येटर नौटङ्की, भांड़ नृत्य सु त्यागती
लगै शील दोष इन्हें सु देखें, भावना यह भावती॥
गृह कार्य में जो दक्ष अक्ष न, विषय न भारी गृद्धता।
मन काम क्रोध सु मन्दता, सत्कार्य सद्गुण वृद्धता॥
(दौ०) ऐसी नारी मंगलकारी, होत प्रशंसा भारी हैं।
जो उदार चित, विनय युत पति की आज्ञाकारी हैं॥३॥
नारी से नर की है उत्-पति, नारी संतति दाता है।
गृह की देवी, नारि से तुष्टि पुष्टि नर पाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा दान प्रतिष्ठादिक में, नारी साथ जु आता है।
कुल की भूषण, रहित दूषण देती सुख साता है॥
(छन्द) पति कार्य दासी सम रहै, रति समय जो सुख दे सही
भोजन सु दे जननी समान विपत्ति सद्बुद्धि दा कही॥
पर पुरुष पै ना दृष्टि, संयम शील में जो लीन है।
धार्मिक विचारो श्रेष्ठ नारी, जग प्रशंशा कीन है॥
(दो०) स्वर्ग,नरक,सुख,दुख, का कारण, 'भगवत्,यह घरवारी है
जो उदार चित, विनय युत पति की आज्ञा कारी है। ४॥

—:❀:—

कु-लक्षणा नारी स्वरूप

लावनी ५३

फैशन में चकचूर आज की, कैसी बनी सु नारी है।
धर्म कर्म को, छोड़ि कुल की मर्याद बिगारी है ॥टेक॥
भौतिकवाद जगत में छाया, शिक्षा खोटी पाई है।
धर्म ध्यान की, बात ना मन में जाय समाई है॥
पूजा, पाठ, नियम व्रत, संयम देती ढोंग बताई है।
अब तो घर घर, रेडियो गाने देत सुनाई है॥
(छन्द) अब नारि देखें हैं सिनेमा, लोग देखे हैं इन्हें।
यह देखती उस नृत्य को, व्यभिचारिणी करती जिन्हें॥
बच्चे हैं छोटे साथ में, कोमल हृदय पर छाप है।
होकर बड़े वह पुत्र पुत्री, करें निशि दिन पाप है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) माता फैशन-चूर करै क्या, पुत्री कहौ विचारी है।
धर्म कर्म को, छोड़ि कुल का मर्याद विगारी है ॥१॥
नकल दूसरों की करने में बडी चतुर दिखलाती हैं।
जैसा देखें, वही भूषण औ वस्त्र मंगाती हैं॥
छोटी छोटी बच्ची देखौ, चोटी तीन लगाती हैं।
क्रीम, पाउडर, लगा लाली सुर्खी चमकाती हैं॥
(जन्द) सलवार कुर्ती और डुपट्टी, शिर खुला ना लाज है।
फैशन बना इठला चलें, निन्दै सु सभ्य समाज है॥
अति सूक्ष्म वस्त्र पहिने, बना फैशन सु चलें बजार है।
निकलें जिधर उतके मनुज, देखें जु दृष्टि पसार है॥
(दौ०) फैशन और दिखावे से, बन जाते नर व्यभिचारी है।
धर्म कर्म को छोड़ि कुल की मर्याद विगारी है ॥४॥
शीश फूल ने शीश उघाड़ा, हार गला खुलवाया है।
आर्मलेट ने भुजा खुल छाती तक दिखलाया है॥
जालीदार सूक्ष्म वस्त्रों में, कुच दोनों दिखलाते हैं।
करके भूषण, खुले हाथों वसु याम दिखाते हैं॥
(छन्द) यदि वर्ण तगड़ी पहन ली कटि खोल दिखावती।
है वस्त्र इतने सूक्ष्म जिनमें रोम रोम गिनावती॥
लाली लगी है होठ सुर्खी से कपोल सु रङ्ग रहे।
कुलवन्तनी वेश्या सु फैशन, फर्क रंच सु ना लहे॥
(दौ०) त्रिजटा लंकामें सु एक थी अब अनेक घरवारी हैं।
धर्म कर्म को, छोड़ कुल की मर्याद विगारी है ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पति खटता दिन रैन दुःख से, द्रव्य कमा कर लाता है।
किन्तु नारि की मांग को नहिं पूरी कर पाता है॥
हैं स्वतन्त्र बजार जायकर, वस्तु खरीद सु लाती हैं।
खुद हंसती हैं, दुकानदारों को जाय हंसाती हैं॥
(छन्द) कालेज में जो पढ़ रहीं, उनका कथा कहना कहा।
कड़ुवी गिलोय जु होत है, चढ़ नीम पर कड़ुवी महा॥
ना शुद्धता का ध्यान निश दिन, स्वच्छता का ध्यान है।
मन भक्ष्य और अभक्ष्य भक्षण का न जिनके ज्ञान है॥
(दो०) 'भगवत्' फैशन छोड़ नारी, जीवन बनें सुखारी है।
धर्म कर्म को, छाड़ि कुल की मर्याद विगारी है ॥४॥

—:o:—

राजा यशोधर चरित्र

लावनी—५४

राययशोधर कथा अनूपम, वर्ण करूं लघुमति अनुसार।
मन वच काया, शुद्ध कर सुनें ता लहिये भवदधि पार ॥टेक॥
पिता यशस्वी मात चन्द्रमति तिन गृह उपजे राजकुमार।
नाम यशोधर, सुगुणधारी पंडित सब जन सुखकार॥
तिन गृह नारी अमृतदेवी, मदादुष्ट, पोषै व्यभिचार।
निजपति तजिकर, रमें कुब्जक संग जाकर अति दुखकार
(छन्द) एक दिन राजा यशोधर, महल रानी के गये।
लखि कर त्रिया के चरित का ससार से विरकित भये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनि भानु ऊगत ही विचारी, आज जिन-दीक्षा धरूँ ।
जो अगम संसार सागर से तरूँ, शिव तिय वरूँ ॥
(दौ०) होनहार की अपार माया, आय गई माता तिहवार
मन वच काया, शुद्ध कर सुनें तो लहिये भवदधि पार ।१॥
बोली माता मोह-मन्त्र-वश क्या चिन्ता व्यापी सुत तोय ।
मुख मलीन है, अन्न जल छांड़ि रहा अश्रुन मुख धोय ॥
कहें यशोधर सुनि हो जननी, आज रात्रि में देखा ख्वाव ।
होय उपद्रव, नगर में यह सुनि माता दिया जबाब ॥
(छन्द) घबड़ाय मत लालन मेरे, धीरज धरौ मन के विषें
कुल-देवि को पुजवाऊंगो, कूकड़ दऊंगी बलि तिसें ॥
यह बात सुनि राजा कही, हिंसा न मैं हर्गिज करूं ।
दुख देय कर पर-जीव कों, अघ-भार ना शिर पर धरूं ॥
(दौ०) फिर माता ने बना पिठी का, मुर्ग दिया यों वचन उचार
मन वच काया शुद्ध करि सुनें तो लहिये भवदधि पार ॥२॥
सांचा मुर्ग वचन कहने से, संकल्पी हिंसा लागी ।
अमृतदेवी, हृदय में उधर और चिन्ता जागी ॥
कृत्य लखा राजा ने मेरा, दिया हलाहल जहर खवाय ।
माता, राजा, दोनों प्राणी मरे वहां नाना दुख पाय ॥
(छन्द) तजि प्राण दोनों जीव वन में, मोर स्वान भये सही
दूजे सु भव में नाग जाहक, तीसरे मछली यही ॥
अज अजा चौथे सु भव में, पांचवे महिषा भये ।
फिर अजा पर्याय धरि कुकड़ा, सु कुकड़ी भव थये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) मुनि वन्दन धर्मोपदेश सुनि जै जै शब्द रहे किलकार
मन वच काया, शुद्ध करि सुनें तो लहिये भवदधि पार ॥३॥
उसी समय निज सुत वाणों, से मरण हुआ सुध राखें भाव
पुत्र वधू के, उर में आये उपजे युगल सुता सुत राव ॥
पुण्य योग से श्री सुदत्त मुनि, मिले सु मंगल मूल महान ।
सुने भवान्तर, ब्रह्म पद धारि सु पाया निर्मल ज्ञान ॥
(छन्द) एक नगर का राजा सु भारी, मारुदत्त महाबली ।
मिथ्या गुरू उपदेश से, हिंसा करै मानें रली ॥
संयोग-वश श्री ब्रह्म वच से त्यागि मिथ्या पथ को ।
धारि मुनिव्रत ध्यान कीना, धन्य गुरु निर्ग्रन्थ को ॥
(दो०) यह संक्षेप कथन 'भगवत्' ने कीना आगम के आधार
मन वच काया, शुद्ध करि सुने तो लहिये भवदधि पार ॥४॥

—:o:—

कर्मोदय महा बलवान

लावनी—५५

कर्म महा बलवान, प्रबल पुरुषों को भी भटकाता है ।
एक चले ना, उदय में कर्म जिस घड़ी आता है ॥टेक॥
ऋषभदेव भी कर्म उदय षट मास आहार न पाया है ।
कर्मोदय से, पार्श्व जिन बहु उपसर्ग सहाया है ॥
कर्मोदय चक्रेश भरत का, मान खड हुआ भारी ।
सगर चक्रपति, सुतों की मृत्यु उठाया दुख भारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) श्री राम से राजा बली, सीता विरह दुख पावते।
बलभद्र नारायण लखन, दर दर फिरे भटकावते॥
इस कर्म-वश रावण प्रतापी, ज्ञान तजि पापी बना।
सीता सती भी कर्म वश, पाया है जीवन दुख घना॥
(दो०) कर्म उदय ही राम त्रिया को, अग्नि प्रवेश कराता है
एक चले ना, उदय में कर्म जिस घड़ी आता है ॥१॥
कर्म उदय से कृष्ण जन्म भी कारागार में पाया है।
कर्मोदय से, ग्वाल घर वसि गोपाल कहाया है॥
कर्म उदय से जरी द्वारिका बचा न कोई घर परिवार।
जाय बनी में, तृषातुर भ्रात बाण से हुआ विदार॥
(छन्द) पांडव महा बलवान, भटकत फिरें बीया वान में।
इस कर्म वश की चाकरी, जाकर विराट सु थान में॥
इस कर्म वश श्रीपाल कोटीभट, भांड बताइया॥
राजा सुदर्शन सेठि को, शूली शिखर लटकाइया॥
(दो०) कर्मोदय हो सती द्रोपती का, अपमान कराता है।
एक चले ना, उदय में कर्म जिस घड़ी आता है ॥२॥
कर्मोदय से सती अंजना, पातक लगा निकारी है।
मात पिता भी, नगर में आते ही धिक्कारी है॥
कर्मोदय से फिर भटकती, हनुमत की महतारी है।
रख न कोई, अकेली फिरती मारी मारी है॥
(छन्द) इस कर्म वश मैना सती, कोढ़ी पती को पावती।
इस कर्म वश ही चन्दना, पर-गेह अति सन्तापती॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह शीलवन्त मनोरमा, अपवाद सहि बन दुख सहे।
सोमा सुलोचन, रुक्मिणी, बहु त्रास कर्मोदय लहे।
(दो०) धीर वीर गम्भीर मनुज भी पावै महा असाता है
एक चले ना, उदय में कर्म 'जस घड़ी आता है। ३॥
कर्मोदय सुकमाल सेठ को, भखै स्यालिनी युत बच्चा।
कर्म उदय से व्याघ्री खाय सुकोशल तन कच्चा॥
कर्मोदय पांडव वीरों के, लोह तप्त भूषण डारे।
कुल भूषण जी, देश-भूषण पर वरसे अंगारे॥
(छन्द) मुनि मानुतुंग सही जु पीड़ा, कर्म के वश आय के।
श्री गुरु समन्त सुभद्र, भस्मी व्याधि अति दुख पाय के॥
बहु अनगणित नर कर्म वश, भटकते फिरे ससार है।
पावें न साता एक क्षण, इस कर्म को धिक्कार है॥
(दो०) ध्यान अग्नि से कर्म-नाशि, तब 'भगवत पावै साता है।
एक चले ना, उदय में कर्म जिस घड़ी आता है॥४॥

—:०:—

श्री मानतुङ्गाचार्य चरित्र

लावनी—५६

महामुनी श्री मानतुङ्ग जी का, चरित्र सुनिये नर नार।
कालीदेवी चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार॥टेक॥
नगर उज्जैनी करै राज्य, राजा सु नाम श्री भोजकुमार।
महाविवेकी, गुणी-जन आदर पावें तसु दरबार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कालीदास भक्त काली का, सिद्ध करी देवी सुखकार।
राज्य सभा में, जमा रक्खा सब पर अपना अधिकार॥
(छन्द) एक सेठ ले निज पुत्र को, राज-सभा में आइया।
लख पुत्र भूपति कही इसने, कहां शिक्षा पाइया॥
शुभ नाममाला पढ़ी इसने, जो धनंजय की बनी।
लाओ धनंजय को सभा में, भूप धनपति सों भनी॥
(दौ०) सेठ धनंजय कालिदास में, हुआ वाद सभा मझार।
कालीदेवी, चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार॥१॥
हारे पंडित सभी सभा के, कालीदास मन दुख को पाय।
कही भूप सों, गुरु इन मानतुङ्ग सों वाद कराय॥
भेजे किंकर राय गुरू ढिग, महामुनी-मुख निकरी नांय।
बिना प्रयोजन, बिना आये राजा, न सभा में जाय॥
(छन्द) मुनि वचन सुनि किंकरन सेती, भूप क्रोध उपाय के।
भेजे पुनः सेवक सु वन लाये मुनीश उठाय के॥
उपसर्ग लखि मुनि मौन निश्चल-चित भये शुभ ध्यान में।
यह देखि भूपति कोप करि, मुनि बन्द किये मकान में॥
(दौ०) अड़तालीस कोठरी अन्दर, ताले सांकल जड़े किवार।
कालीदेवी, चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार॥२॥
हाथ हथकड़ी पांयन बेड़ी, तन जंजीरों से कसवाय।
अन्ध कोठरी, बन्द कर चौकीदार दये बैठाय॥
तीन दिवस मुनि सही वेदना, फिर मन ऐसा किय विचार
कार्य करूं कुछ, होय जिससे जगमें जिन धर्म प्रचार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) श्री आदि-जिन ऋषभेश स्तुति, करी मुनि मनलाय के
बहु ऋद्धि मन्त्र सु युक्त, वसु चालीस काव्य बनाय के ॥
मुनि भक्ति शक्ति महान, आसन कंपा देवी जाय के ।
तोड़े सकल बन्धन श्री, चक्रेश्वरी तब आय के ॥
(दो०) तीन बार बन्दी गृह डारे, टूटे बन्धन तीनों बार ।
कालीदेवी, चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार ॥३॥
चौथी बार भूप निज सन्मुख, दृढ़ बन्धन ताले जड़वाय ।
करी चौकसी, शस्त्र ले पहरेदार दये बैठाय ॥
स्वयं राय रखवारी राखी, हर ताले पर मुहर लगाय ।
देखें कैसे, तोड़ बन्धन ताले निकलें मुनिराय ॥
(छन्द) मुनिराज काव्य प्रभाव से, टूटे स्वयं बन्धन सकल ।
सब खुले कारागार पट, स्वयमेव गुरु के तपो बल ॥
आये जहां दरबार, राजा देखि तेज हुआ विकल ।
घबड़ाय थरथर कंपै राजा, धीर ना मन एक पल ॥
(दो०) कालीदास से कहै भूप, हे प्राहित मेरा संकट टार ।
कालीदेवी, चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार ॥४॥
कालीदास भक्त काली का, आराधन कीना तिहं बार ।
प्रगटी काली, भयंकर रूप धरें तत्क्षण दरबार ।
चक्रेश्वरी प्रगट तब होकर, काली को दीनी फटकार ।
अरे पापिनी, करै हिंसा तेरा जीवन धिक्कार ॥
(छन्द) तू पाय सुर पर्याय, हिंसा धर्म जग फैलावती ।
माता कहा कर भखै सुत तन, शर्म ना कुछ आवती ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अघ-मार्ग का पोषण करै, नरकादि दुर्गति जायगी।
तजि पाप मग जिनधर्म. आराधन करै सुख पायगी॥
(दौ०) चक्रेश्वरी प्रभाव पधिक लख, कालीदेवी मानी हार
कालीदेवी चरण तल पड़ा करै प्रभु जै जैकार ॥५॥
काली चरण पड़ा देवी के, देवी गुरु-पद बन्दे आय।
बहु प्रकार से सु गुरु की थुति करि जै जै रही मनाय॥
राजा भोज चरित लखि सारा, श्री मुनिवर का शीश नवाय
कालीदास भी देख यह चरण शरण लीनी मुनिराय॥
(छन्द) मुनि मानतुङ्ग दयाल चित, जिनधर्म में सब दृढ़ किये।
धर्मोपदेश दिया तभी राजादिने धारा हिये॥
फिर राय पूछी नाथ, विद्या कौन बन्धन-मोचनी।
मुनि सकल भक्तामर कथा, तब भोज राजा सों भनी॥
(दौ०) ऋद्धि सिद्धि, बहु मंत्र युक्त, भक्तामर है 'भगवत्' सुखकार
कालीदेवी, चरण तल पड़ी करै प्रभु जै जैकार ॥६॥

—※×※—

श्री आचार्य शान्तिसागर जी चरित्र

लावनी—५५

श्री आचार्य शान्तिसागर जी चरित महासुखदाया है।
वीर मरण कर मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है ॥टेक॥
महाराष्ट्र जिला बेलगांव में, भोजगांव सुन्दर भारी।
पाटिल गोत्री, भीमगौड़ा पितु जैन-धर्म-धारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यवती गुणवती सती है, पूज्यपाद की महतारी ।
गृही नाम था, सातगौड़ा प्रभु का मंगलकारी ॥
(छन्द) आषढ़ कृष्णा षष्टमी, विक्रम उनीस उन्तीस है ।
गुरुवार से सु प्रभाव प्रगटे मात उर गुण-ईश है ॥
कहें होनहार वृक्ष के, ही होत चिकने पात हैं ।
गुरु बालपन मे शान्तिचित शुभ सौम्य सरल सु गात है ॥
(दो०) हुये नव वरष नाथ मात पितु ब्याह किया मन भाया है
वीर मरण कर, तक को न्योंता देय बुलाया है ॥१॥
कुछ दिन बाद मृत्यु हुई पत्नी, प्रभू बाल ब्रह्मचारी है ।
द्वितीय ब्याह का, किया आग्रह गुरु की इन्कारी है ।
वत्तीस वरष अवस्था पाई, सप्तम प्रतिमा धारी है ।
वर्ष इकतालीस, लिया क्षुल्लक पद अति सुखकारी है ॥
(छन्द) सप्त चालीस वर्ष धारा दिगम्बर भेष है ।
करते स्वपर कल्याण प्रभु, देते सु वृष उपदेश है ॥
कोहनूर वन में गुफा अन्दर, किया प्रभु ने ध्यान है ।
अहिराज फण धरि शीश तन से लिपट गया आन है ॥
(दो०)निशि भर लिपटा रहा नाग, गुरु निश्चल ध्यान लगाया है
वीर मरण कर, मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है ॥२॥
जीत उपसर्ग नाथ की, कीर्ति जगत में फैली है ।
भव्य अनेकों लिये व्रत अद्भुत वक्ता शैली है ॥
बावन वरष आयु में गुरुने पद आचार्य सु पाया है ।
वचनामृत से, तृषित भविजन का त्रास बुझाया है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) श्री ब्रह्म हीरालाल औ, खुशहाल चन्द्र सु आय के।
श्री नेमि वीर सु आदि दीक्षा, धरी गुरु पद पाय के॥
श्री सठ पूनमचन्द घासालाल जा हैं जांहरी।
त्रय सुत सहित गुरु चरण वन्दे प्रार्थना पुनि २ करी॥
(दो०) सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शैल वन्दन का संघ चलाया है।
वीर मरण कर, मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है॥३॥
सिद्ध क्षेत्र पर आय जुड़ा, पंच कल्याणी मेला भारी।
दूर दूर के बन्दना हेत जुड़े हैं नर नारी॥
उत्तर भारत तीर्थ वन्दना, हेत सुगुरु संघ आया है।
भव्य अनेकों, कुमारग त्याग सुमारग पाया है॥
(छन्द) श्री सिद्ध क्षेत्र सुवर्ण गिरि पर, चतु मुनी भये आयके।
'नमि, कुन्थ' पाय' सु चन्द्रसागर, नाम उत्तम पाय के॥
आचार्य जी औ 'वीर नेमी' सिन्धु थे पहले सही।
अब चतु मुनी नव हुये दीक्षित, सप्त ऋषि संज्ञा लही॥
(दो०) सी०पी०यू०पी० करि विहार मथुरा जिन रथ चलवाया है
वीर मरण कर मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है॥४॥
रजधानी दिल्ली में प्रभु ने, धर्म-ध्वजा फहराई है।
खान-पान का, जिनागम युत सब क्रिया चलाई है॥
यज्ञोपवीत धरै वह श्रावक, अष्ट मूल गुणधारी है।
ब्याह विजातो, और विधवा का तजि अघकारी है॥
(छन्द) सरकार मन्दिर में कराया जब अछूत प्रवेश है।
त्रय वर्ष अन्न सु त्याग, तप बल हरी भविजन क्लेश है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन धरम हिन्दू धरम से, है भिन्न यह आदेश है।
गुरु दिया जैसा जैन सबको, सत्य वृष उपदेश है॥
(दो०) मद्य, मांस, मधु, हिंसा चोरी और कुशील छुटाया है।
वीर मरण कर मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है॥५॥
वर्ष चौरासी हुई अवस्था, नेत्र-ज्योति घटि आई है।
संयम रक्षा, होय कैसे, प्रभु हृदय समाई है॥
कुन्थलगिरी सु सिद्ध क्षेत्र पर, मरण समाधि सु थापा है।
अमन त्याग कर, गुफा में ध्यावें रूप सु आपा है॥
(छन्द) षट तीस दिन तक क्षेत्र पर निश्चय लगाया ध्यान है
महावृद्धपन में धरी दृढ़ता, त्याग खान जु पान है॥
थे वीर, धीर, गम्भीर गुरु, किया मृत्यु का आह्वान है।
भादों सुदी द्वितिया रवी दिन, हुआ गुरु निर्वाण है॥
(दो०) श्री आचार्य चरण कमलों में 'भगवत' शीश झुकाया है
वीर मरण करि, मृत्यु को न्योंता देय बुलाया है॥६॥

—:०:—

मनुष्य जीवन सफल करो

लावनी—५८

श्रावक कुल इन्द्रिय सपुष्टता तन नीरोग जु पाया है।
सफल कीजिये, न चूको अवसर हाथ जु आया है। टेक॥
काल अनन्तानन्त बिताया, रहा निगोदों में भाई।
एक स्वास में, अठारह जन्म मरण कीने जाई॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षर भाग अनन्त बोध, सर्वज्ञ देव यह बतलाई ।
नरक, दुखों का करै, वर्णन ना कवि में चतुराई ॥
(छन्द) सागरों की आयु तक जहां भयानीक जु दुख सहे ।
जहां निमिष मात्र न मिलै माता, मार मार सदा रहे ॥
कुछ मिला अवसर तब निकल, थावर की धारी काय है ।
जल, अग्नि, पवन, वनस्पती पृथ्वी की धरि पर्याय है ॥
(दो०) वहां से आगे दो इन्द्री, धरते ही त्रस कहलाया है ।
सफल कीजिये, न चूकौ अवसर हाथ जु आया है ॥१॥
लट, पिपील, मांखी, भर, भौंरा, मेंढक, सर्प कहाता है ।
मूस, अजा, गज, स्वान, बन्दर, मानुष तन पाता है ॥
नीच गोत्र के उदय जाय, शूद्रों में नाम गिनाता है ।
बिन विवेक के कुसंगति फंसि कुकर्म मन भाता है ॥
(छन्द) व्यापार भी खोटा मिला मन भावना खोटी रही ।
इन्द्रिय विषय की गृद्धता, ज्यों त्यों निकल वहां से सही ॥
कुछ पुण्य योग मिला सु आकर, मार्ग निज उद्धार का ।
यदि दाव चूक गया अगर, ना पार फिर पतवार का ॥
(दो०) समय न व्यर्थ खोय विषयन में, विषय महा दुखदाया है
सफल कीजिये, न चूकौ अवसर हाथ जु आया है ॥२॥
इक इक इन्द्रिय विषय भोग में, फंस कर दुक्ख उठाते हैं ।
पांच इन्द्रियां, पांच के भोगी सुनों सुनाते हैं ॥
प्रथम स्पर्शन इन्द्रिय वश में, गज दुख सहै करारा है ।
माया हथिनी, हित विषय खन्दक पड़ा विचारा है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) रसना विषय में मच्छ, पानी से निकल भोजन लिया।
था पारधी मन दुष्ट पकड़ा मारि ढेर तहां किया ॥
वह गंध का लोभी भ्रमर, नासिका इन्द्रिय के विषय।
फंस कर मरा जा पद्म में, निज प्राण कर दीने हैं छय ॥
(दौ०) चक्षु विषय में जलै पतंगा, यह प्रत्यक्ष दिखाया है।
सफल कीजिये, न चूकौ अवसर हाथ जु आया है ॥३॥
श्रवणेन्द्रिय के विषय फंसें मृग, वन में मारे जाते हैं।
बधिक शिकारी, जाय वन मीठी तान सुनाते हैं ॥
एक एक इन्द्रिय वश होकर, जीव महा दुख पाते हैं।
पांचों भोगी, हृदय में जरा न शंका खाते हैं ॥
(छन्द) यह विषय विषसे, अधिक घातक, जीवको दुख देत हैं।
विष एक भव का प्राण-हर्ता, विषय भव भव लेत हैं ॥
इसलिये मन इन्द्रिय विषय का पूर्ण निग्रह कीजिये।
जो शिव वधू वरना चहौ, व्रत, ज्ञान अमृत पीजिये ॥
(दौ०) दर्शन, ज्ञान, चरित्र धारि दृढ़, शिव मग गुरु बतलाया है।
सफल कीजिये, न चूकौ अवसर हाथ जु आया है ।४॥
अब जो चूकौ फिर न मिलै, यह योग जु तुमको सुखदाई।
दाव चूकते, लाख चौरासी में भटकौ जाई ॥
जिन कारण तू भूला निजको, वह सब स्वारथ मनलाई।
विन स्वारथ के, न हैं पितु, मात, पुत्र, नारी, भाई ॥
(छन्द) तू रात दिन जिन के लिये, खटता कमाता माल है।
वह स्वारथी समसान, तन करि भस्म फौड़ैं भाल है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब चेत सत्गुरु यों कहें, तजि जगत का जंजाल है।
करि ध्यान आत्म-स्वरूप का शिर पर दहाड़ै काल है॥
(दौ०) 'भगवत्' करि सत्कर्म मिलै सुख, मन दुख से घबड़ाया है
सफल कीजिये, न चूको अवपर हाथ जु आया है ॥५॥

—:०:—

मनोभावना शुद्ध रखो

लावनी—५६

शुद्ध भावना जिनकी होती वह शुभ गति को पाते हैं।
अशुभ भावना, पाप फल नरक पड़े पछिताते हैं ॥टेक॥
पूजा पाठ किया नित जाकर घन्टा बजा बजा भारी।
नाच नाच के, विविध स्वर तन पर तिलक छाप डारी॥
उच्च स्वरों से शास्त्र सुनाये, सुने कथानक हितकारी।
माला लेकर, ध्यान पर बैठा जाय मौन धारी॥
(छन्द) दान भी दीना बहुत, और ज्ञान भी कुछ पास है।
पर भावना खोटी रहा, तो किया सत्यानाश है॥
पूजा पुजारी कर रहा, मन भावना खोटी धरै।
सब लोग कहें धर्मात्मा, वह पाप-बन्ध महा करै॥
(दौ०) रहे भावना शुद्ध पुण्य फल, सुर शिवगति को जाते हैं
अशुभ भावना, फल नरक पड़े पछिताते है ।१॥
स्वार्थ, लोभ, लालच, औ दिखावा, खोटे भाव बनाता है।
इसी पूर्ति में, मनुज अपनापन जाय गंवाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप छिपाने को जो मानुष पूजा पाठ रचाता है।
खुद को धोका, देय जग में ढोंगी कहलाता है॥
(छन्द) मन भावना जो है सही, तो अल्प बहु फल देत है।
शुभ भावना सुखदाय जग में, जीव बहु यश लेत है॥
तोता रटै नित राम पर शुभ भाव बिन निस्सार है।
शुभ औ अशुभ सुख दुख सभी, निज भाव के आधार है॥
(दौ०) इसीलिये मुनि त्यागी सज्जन, निर्मल भाव बनाते हैं।
अशुभ भावना, पाप फल नरक पड़े पछिताते हैं ॥२॥
जो अभिमान करै तन धन का स्वारथ में नित लीन रहै।
मतलब वाली, बात करने में बहु परवीन रहै॥
कमती बढ़ती नाप तौल, मायाचारी दिखलाते हैं।
ऐसे मानुष, दान व्रत करें न यश को पाते हैं॥
(छन्द) जो सरल चित्त अभिमान तज, सन्तोष मन में धारते
जो हर मनुज के कार्य को, निज कार्य समझ सम्हारते॥
जो विनयवान सुधी रखें मन भावना कोमल सदा।
जो बिन दिखावा धरम करते, पुण्य फल लहें सर्वदा॥
(दौ०) वास्तव में ऐसे नर-पुङ्गव, धरमध्वजा फहराते हैं।
अशुभ भावना, पाप फल नरक पड़े पछिताते हैं ॥३॥
धन को शोभा दान दिये से, जो बिन नाम दिया जावै।
जिसे देयकर, न निज गौरव का ध्यान किया जावै॥
जो सब जीवों में रख मैत्री, स्वारथ का न नाम लावै।
वह नर उत्तम, सरल भावो उत्तम गति को पावै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) इस से चलै विपरीत जो, ढोंगी बनें धरमातमा।
मन भावना खोटी रखै. वह ठगै अपनी आतमा ॥
केवल दिखावट धरम से, होता नहीं कल्याण है।
जिन देव श्री जिन धरम में, कही भावना सु प्रधान है॥
(दो) सदा स्व पर उपकार भावना, 'भगवत्' अह निश ध्याते हैं
अशुभ भावना. पाप फल नरक पड़े पछिताते हैं ॥४॥

—:०:—

तब और अब में क्या अन्तर है

लावनी—६०

तब औ अब में कितना अन्तर, जमीं आस्मां जैसा है।
गुण की पूजा, होय तब अब जग पूजै पैसा है॥टेक॥
तब अध्यात्मवाद फैला था, अब भौतिकता भारी है।
तब कुकर्म से, दूर रहते अब पैर अगारी है॥
सदाचार, सभ्यता, विनय, तब, घट घट अन्दर थी भारी
अब उद्दण्डता, असभ्यता गुन्डा गीरी है जारी॥
(छन्द) तब पाप भी पापी सदा रह दूर करते काम को।
अब पाप क्या कहते किसे समझें न इसके नाम को॥
तप, दान, संयम, शील, व्रत तब देश में भर पूर है।
अब ढोंग बतला कर इन्हें, रहते सदा ही दूर है॥
(दो०) अब विलासता औ फैशन में, देश विदेशों जैसा है।
गुण की पूजा, होय तब अब जग पूजै पैसा है॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब माता शिशु के पालन मे, नींव धर्म की डाला ।
अब की माता, बालकों को दें खोटी गली हैं ॥
माता पिता छोटे बच्चों का तब शुभ काम सिखाते हैं ।
अब लेजा के, साथ सिनेमा खूब दिखाते हैं ॥
(छन्द) गुरुकुलों में धार्मिक सुगुरु के, पास विद्या पढ़ें तब ।
धार्मिक सदाचारी बनें, गुरु की विनय मन करें सब ॥
अब कुर्सियां कालेज में, गुरु वर भी फैशन चूर हैं ।
पाश्चात्य शिक्षा पढ़ रहे, गुरुकी विनय मे दूर हैं ॥
(दो०) अनुशासन से हीन और व्यवहार भी उनका वैसा है
गुण की पूजा, होय तब अब जग पूजै पैसा है ॥२॥
कन्या भी कालेजों में पढ़, फैशन अजब बनाई है ।
पूर्व काल की, रीति अब देत न कहूं दिखाई है ॥
तब सीता जी के आभूषण, लक्ष्मण तक न बताते हैं ।
अब नारी के, गुप्त भूषण सबको दिखलाते हैं ॥
(छन्द) लज्जा शरम सब खो गई, कर में मिला कर घूमती ।
बूढ़े, युवा, बालक सभी के, सामने यह झूंमती ॥
तब सासु, ननद जिठानी पद, पूजा पती के नित करें ।
अब रहे अकेली, करें मन मानी पती को दुर दुरें ॥
(दो०) तब पति धार्मिक शीलवान, अब तो जैसे को तैसा है
गुण की पूजा, होय तब अब जग पूजै पैसा है ॥३॥
तब धनवान जाय नित, गुणवानों की पूजा करते थे ।
हृदय विनय धरि, बहुत सन्मान ज्ञान उर धरते थे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब गुणवान सदा, धनवानों को. खुश करते रहते हैं।
सभा सुहाती, खुशामदी बात सदा ही कहते हैं।
(छन्द) तब न्यायवन्त दयालु राजा, पुत्रवत् पालन करैं।
जिस राज्य में सु प्रजा सुखी, शासन सुयश जग विस्तरैं॥
अब घोर हिंसक धरमन्शून्य स्व-स्वार्थी शासक बने।
कर भार आदिक से प्रजा को कष्ट देते हैं घने॥
(दौ०) शासन में जब दुराचार, तब प्रजा हाल कहौ कैसा है
गुण की पूजा, होय तब अब जग पूजै पैसा है।४॥
तब भाई भाई सहधर्मी, देश ग्राममें हित भारी।
अब स्वारथ बिन, बात भी नहिं करती अपनी नारी॥
बिना नाम इच्छा के तब धनवान दान के दाता है।
अब बिन मौडिल, पार्टियां के न दान का नाता है॥
(छन्द) व्यापार तब सन्तोष, औ ईमानदारी का मही।
अब झूठ, चालाकी, फरेबी, जो करैं धनपति वही॥
धनवान तब दयावान थे, दुखियों को देते दाद हैं।
अब हृदय हीन सुखी रहें, ऊंचे बना प्रासाद हैं॥
(दौ०) 'भगवत्' तब औ अबका अन्तर कहूं कहां तक कैसा है
गुण की पूजा होय तब अब जग पूजै पैसा है॥५॥

—:❀:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय का प्रवाह

लावनी ६१

समय प्रवाह बहा तेजी से, गति नीचे को जाता है।
पतन देश का, धरम ह्रास नजर में आता है ॥टेक।
तब औ अब में कितना अन्तर, कलम लिखत थर्राती है।
लखि परिवर्तन, विलाभिता देख बुद्धि चकराती है ॥
राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, अवतार यहां पर पाया है।
पाप मार्ग का, चूर कर धरम मारग दर्शाया है ॥
(छन्द) हुये सत्यवादी श्री युधिष्ठर, वीर अर्जुन थे यहां।
थे ब्रह्मचारी भीष्म जना, नहीं त्रिय सुख है कहां ॥
विद्या कला विज्ञान का, भंडार उत्तम देश था।
थे सदाचारी दयाधारी, जीव ना कुछ क्लेश था ॥
(दौ०) सती द्रोपती, और अंजना, यहीं वो सीता माता है।
पतन देश का, धर्म का ह्रास नजर में आता है ।१॥
तब गुरुजन औ माता पिता, बालक को धर्म पढाते थे।
प्रातः उठ कर ईश बन्दन औ विनय सिखाते थे ॥
स्वयं सदाचारी, रहते थे, सदाचार सिखलाते थे।
मायाचारी-रहित सच्चा नागरिक बनाते थे ॥
(छन्द) अब रेडियो घर घर लगे, उठते ही खोला है उसे।
अश्लील गन्दे गीत गाना, सुन रहे बच्चे जिसे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"है रेशमी सलवार" गाना, सुन मनाते हैं खुशी।
कोमल हृदय पर छाप जो पड़ती है करते हैं उसी॥
(दो०) या उठते अखबार पढ़ें ना धार्मिकता से नाता है।
पतन देश का, धरम का ह्रास नजर में आता है ॥२॥
माता पिता विलासी देखे, फैशन-चूर दिखाते हैं।
छोटे बच्चे, उसी माफिक, निज रूप बनाते हैं॥
कालेजों में शिक्षा पाते, होटल में जा खाते हैं।
लखें सिनेमा, वहां व्यवहार अमल में लाते हैं॥
(छन्द) विनयीपना न दयालुता न विवेक धार्मिकता नहीं।
न पदस्थ का कुछ ध्यान मन, विचार नहीं कही॥
होकर खड़े मूतें लिवास न हाय झुकने देत है।
गुरु, देव, पर श्रद्धा नहीं, मन में न सम्यक चेत है॥
(दो०) पूर्ण नकल पाश्चात् देश की, पूर्व रीति को घाता है
पतन देश का धर्म का ह्रास नजर में आता है ॥३॥
श्रुत अभ्यास न पूजा संयम ना व्रत चारित पालें हैं।
धरम भावना, शून्य सदा मनमाने मारग चालें हैं॥
तब नारी समाज निज जीवन, शील संयमी रखती थी।
विनय सभ्यता, सदाचारी पति सुख को चखती थी॥
(छन्द) पतिसुख सुखी, दुखमें दुखी पतिके सदा अनुकूल है।
पति को समझि परमातमा, देती न उत्तर भूल है॥
सीता सती पति साथ में वन वन फिरी दुख: ना किया।
पति साथ जाय सु द्रोपती ने, काम मालिन का लिया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) शुद्ध सदाचारी पवित्र, जीवन शुभ पाठ सिखाता है।
पतन देश का, धर्म का ह्रास नजर में आता है ॥४॥
अब की नारी फैशनवारी, चोटी तीन बनाती है।
चमक दमक के, पहिन कर वस्त्र घूमने जाती है॥
आभूषण से अङ्ग सजाकर, जग को उसे दिखाती है।
कुछ कहने पर, पती को उल्टी चार सुनाती है॥
(छन्द) हंस हंस खरीदें माल खुद जाकर बजार दुकान में।
लज्जा शरम ना है हृदय, धब्बा लगै कुल शान में॥
यह हाल निज देश का, कैसे कहो उत्थान हो।
जब तक न कुछ भी हो सकुचना, दूर फैशन ध्यान हो॥
(दौ०) जब तक शुद्ध न हो संस्कृति तब तक मिलै न साता है।
पतन देश का, धर्म का ह्रास नजर में आता है ॥५॥
हत्याखोरी बढ़ी देश में, खुद सरकार करांती है।
मुर्गी, शूकर, मत्स, पाल कर पाप भराती है॥
चमड़े के व्यौपार हेत, बूचड़खाने खुलवाये हैं।
लाखों बन्दर, नील गायें औ मोर मराये हैं॥
(छन्द) हो रही हिंसा घोर छाया, पाप फल प्रत्यक्ष है।
कहीं बाढ़, सूखा, पड़ै हैजा, खोलि देखौ अक्ष है॥
यदि चाहते हो मिलै सुख, हिंसा तजो फैशन तजो।
धार्मिक सदाचारी बनो, नित शुद्ध मन प्रभु को भजो।
(दौ०) समय प्रवाह न बहना 'भगवत्' यह बहु दुख का दाता है
पतन देश का, धर्म का ह्रास नजर में आता है ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पैसे का माहात्म्य

लावनी—६२

स्वार्थमय संसार यहां, पैसे का बोल सु बाला है।
सब में आला, आज कल जग में पैसे-वाला है। टेक॥
पैसे में सब गुण हैं, पैसे वाला गुणी कहाता है।
पैसे से ही, जगत में कायम सारा नाता है॥
पैसे वाले की नित सेवा, करें भ्रात औ माता है।
पैसे के ही, आज विद्वान पुरुष गुण गाता है।
(छन्द) पैसेके बल पर आज नभ में, करत जीव विहार है।
पैसे के बल पाताल में जा, गहै जल की धार है॥
पैसे से सूरज चांद-जैसा, हो प्रकाश अपार है।
पैसे से कामी धूर्त जन का, होत जै जैकार है॥
(दौड़) मिलें उपाधि अनेकों जग, पैसे से पंडित लाला है।
सब में आला, आज कल जग में पैसे वाला है॥१॥
पैसे वाला अवगुण करने, पर भी पूजा जाता है।
घोर पाप भी कर पैसा उसे छिपाता है॥
हृदय-हीनता, अहंकारता यह गुण पैसा लाता है।
कूट कूट कर, स्वार्थ-परता भी यही सिखाता है॥
(छन्द) पैसे का मद लाता नशा, अभिमान में चकचूर कर।
अभिमान लाता है कठिनता, सरलता को दूर कर॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनवान ही जग श्रेष्ठ, माने जांय हो सम्मान है ।
धनवान की करें चाकरी, बहु विनय-युत गुणवान है ।
(दो०) करें प्रसंसा भाग्यवान की, धनी सुगुण-मणि-माला है ।
सब में आला, आज कल जग में पैसे वाला है ॥२॥
पैसे वाले के संग चलते, अगल बगल गुण गाते हैं ।
चापलूस औ, खुशामदी नजर सैकड़ों आते हैं ॥
करै अनर्थ और मक्कारी, अवगुण सब दब जाते हैं ।
हां में हां ही, करें सब पैसे वाला पाते हैं ॥
(छन्द) पैसे से निकलें काम सब, पंचात औ दरबार में ।
पैसे से झूठा सच करें, सच झूठ करें हजार में ॥
पैसे से झगड़ा हो सही, माता पिता सुत नार में ।
पैसे से जमती धाक, देश विदेश के बाजार में ॥
(दो०) पैसा सब से मेल करै बिन पैसा कढै दिवाला है ।
सब में आला आज कल जग में पैसे वाला है ॥३॥
पैसे के सब यार, और पैसे के ही सब नाते हैं ।
पैसे वाले मनुज के साले भी बन जाते हैं ॥
पैसे की रस-रङ्गत न्यारी, पलटन फौज रिसाले हैं ।
कल के वाहन, महल मन्दिर औ शाल दुशाले हैं ॥
(छन्द) पैसे से धार्मिक सभा के, जाकर सु बनें प्रधान है ।
मन्दिर, पंचायत, सभा सब, पैसे का करते ध्यान है ॥
पैसे की खातिर लोग, झूठा भी करें गुण गान है ।
कलिकाल धरम सु करम सब में, धन रहा बलवान है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत्' बिन पैसा यह जीवन, ज्यों तरु पड़ा सु पाला है
सब में आला, आज कल जग में पैसेवाला है ॥४॥

×

सिनेमा-निषेध

लावनी—६३

सदाचार के सर्व नाश की, जड़ सु सिनेमा है भाई।
चरित-पतन का, मूल कारण अघ की गहरी खाई ॥टेक॥
इन्द्रिय-विषय-विलास आदि को, प्रोत्साहन यह देता है।
इसे देखकर, मनुष्य इक नई व्याधि शिर लेता है॥
चमक दमक औ नृत्य गान लखि, मन विकार उठता भारी।
फिर फिर देखें, उसी की याद रहै हर दम जारी॥
(छन्द) भिनेत्रियों को देखकर, उन रूप आता याद है।
उन हाव भाव निहारने को, करै धन वर्बाद है॥
अश्लील गाने भंड नृत्य, सुनें लखें बढ़ै स्वाद है।
उस विषय की मन लालसा, उस बिन न दिल हो साद है॥
(दो०) कामकथा व्यभिचार करन की, सिखलाता यह चतुराई
चरित पतन का, मूल कारण अघ की गहरी खाई ॥१॥
देखि सिनेमा की अभिनेत्री, फैशनयुत चहिये नारी।
जाकर सेवें, बजारू गणिका जो अति व्यभिचारी॥
धर्म कर्म कुल की मर्यादा, नष्ट करें जिससे सारी।
धन-बर्बादी, होय फिर होती है जग में ख्वारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) व्यभिचार की आदत पड़ी, घर का हुआ सब नाश है।
घर की त्रिया को नित्य ही, देने लगे बहु त्रास है ॥
लेकर लगाया रेडियो, स्थान शयनागार है।
अश्लील गाने सुन रहे, मन में बढ़ै सु विकार है ॥
(दो०) नन्हे नन्हे बच्चों पर भी, असर पड़ै है दिखलाई।
चरित पतन का, मूल कारण अघ की गहरी खाई ॥२॥
भारत की गौरव-युत नारी, भी इस ओर दिखाती हैं।
धर्म, शर्म को, त्याग कर हाय ! सिनेमा जाती हैं ॥
जाकर वातावरण वहां का, देखि हृदय में लाती हैं।
क्रीम पाउडर, लगाकर फैशन अजब बनाती हैं ॥
(छन्द) नित नित नया शृङ्गार तन, मन में विकारी भाव हैं।
इन रूप को लखि गुण्ड जन अपना लगाते दाव हैं ॥
अखबार में पढ़लो सदा, आते यही समाचार हैं।
है जोर गुण्डों का अधिक, बर्बाद बहु परिवार हैं ॥
(दो०) गरम बजार सु है व्यभिचार का है यह कारण दुखदाई
चरित पतन का, मूल कारण अघ की गहरी खाई ॥३॥
पूर्व काल में सभी मनुष, प्रातः ईश्वर को ध्याते थे।
बच्चा, बच्ची, सभी को धार्मिक पाठ पढ़ाते थे ॥
आज बुजुर्ग जवान सभी मुख, सुनों सिनेमा गाना है।
गली गली में, दर व दर सुनते यही तराना है ॥
(छन्द) अब बालिका अनजान बालक, गीत खोटे गा रहे।
कोमल हृदय सु कठोर हो, फिर पाप मार्ग सु जा रहे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि चाहते उत्थान अपना, तो सिनेमा त्यागिये ।
सब रेडियो गाना तजौ, नित धर्म मारग लागिये ॥
(दो०) खोटा निमित बुरा है 'भगवत्' सत्संगति है सुखदाई ।
चरित पतन का, मूल कारण अघ की गहरी खाई ॥४॥

—×—

समाधि-मरण के लिये

लावनी—६४

अन्त समय जो सद्गति चाहौ, तो समता धरनी चहिये ।
धन कुटम्ब सों, नेह तजि धर्म ध्यान में रत रहिये ॥टेक॥
बारह व्रत श्रावक के पालो, पृथक पृथक बतलाते हैं ।
बिना व्रत श्रावक, पद नहीं यह जिन श्रुत में गाते हैं ॥
त्रस हिंसा का त्याग सर्वदा, थावर, पंच न त्यागी है ।
किन्तु प्रयोजन, कठिन बिन थावर वध सु विरागी है ॥
(छन्द) बच झूठ मुख बोलै नहीं, त्यागो है थूल सु रूप मे ।
पर-घात हित अभिमान धरि, ना सत्य बौलै भूप से ॥
जल और मिट्टी के बिना, दिये पर वस्तू तजो ।
निज नारि में संतोष, माता बहिन त्रिय जग की भजो ।
(दो०) परिग्रह तृष्णा त्यागि धरै, संतोष पंच अणुव्रत कहिये ।
धन कुटुम्ब सों, नेह तजि धर्म ध्यान में रत रहिये ।१।
दशों दिशा में गमनागमन, प्रमाण धारि बाकी छोड़ौ
बिन कारण ही, बिना व्रत पाप लगै मन को मोड़ौ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह दिग्व्रत है देश-विरत में, ग्राम गली बाजार भवन ।
करि प्रमाण को, तजो नित बाकी आवा औ गमन ॥
(छन्द) यह है अनर्थ जु दड त्याग, महान गुणव्रत आचरौ ।
हैं पंच भेद महान इसके, समझ कर मन में धरौ ॥
अतिचार पांच सु पांच सबके, पाप बिन-स्वारथ बधै ।
सब भेद सुनि औ समझि तजि, बिन अर्थ दड सु क्यों लधै ॥
(दौ०) हिंसादान कुश्रुत का पाठन, प्रमादचर्यादिक कहिये ।
धन कुटम्ब सों, नेह तजि धर्म ध्यान में रत रहिये ॥२॥
शिक्षा व्रत हैं चार सदा, मन वच तन से पालन कीजै ।
साम्य भाव युत, सदा समायक में नित चित दीजै ॥
पर्वदिना अष्टमी चतुर्दशि, प्रोषध युत उपवास कहा ।
जो हिय धारै, उन्होंने फल इसका उत्तम सु लहा ॥
(छन्द) हैं भोग औ उपभोग जो, परिमाण करके भोगना ।
वह नर महा सन्तोषधारी, लगै तृष्णा रोग ना ॥
नित करौ साधु समूह सेवा दान आदिक देय के ।
मुनि तन पलोटौ विनय युत, बहु पुण्य यश को लेय के ॥
(दौ०) शुद्ध अहार मुनी को देना, गुरु सेवा का व्रत गहिये ॥
धन कुटुम्ब सों, नेह तजि धर्म ध्यान में रत रहिये ॥३॥
बारह व्रत हित चित नित धारो, समता मन में लाकर के ।
अष्ट मूल गुण सहित जैनी श्रावक पद पा कर के ॥
राग, अग्नि, जल आदि व्याधिसे आयु अन्त लखि धरि समता
कुटुम कबीला, मित्र धन धाम सभी से तजि ममता ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) जीवन मरण संशय तजौ, तजि मित्र नेह विचार है।
भोगे सुखों की याद तजि, भोग भाव अगार है॥
मन इन्द्रियों के विषय तजि, स्वात्मानुभव में चित धरौ।
मन मृत्यु का आह्वान करि, मरि सद्गती निश्चय परौ॥
(दौ०) अन्त मता सो गता है 'भगवत'. मरणसमाधि सु सुख लहिये
धन कुटम्ब सों, नेहि तजि धर्म ध्यान में रत रहिये ॥४॥

—:०:—

कल्याण कारी सवर तत्व

लावनी—६५

संवर है सुखदाय जीव को, आस्रव दुख का दाता है।
संवर शिव दे, तत्व आस्रव जग मांहि रुलाता है ॥टेक॥
मन, वच, काय, चलन होते ही, कर्म वर्गणा आती हैं।
होय भावना, जिसी तद् रूप कर्म बन जाती हैं॥
आत्म प्रदेशों पर आकर वह अपना रंग जमाती हैं।
समय पायकर, वही सुख दुख देकर खिर जाती हैं॥
(छन्द) मन वचन काय अशुद्ध हों, तब पाप कर्म बनें सही।
फल पाप से दुख जीव पावै, बात आगम यों कही॥
व्रत, समिति, गुप्ति सु धर्म मय, हो योग मन वच काय है।
तब पुण्य कर्म बनें सदा, जो जीव को सुखदाय है॥
(दौ०) कर्मास्रव सुख दुख नित देवै चतुगति भ्रमण कराता है
संवर शिव दे, तत्व आस्रव व जग मांहि रुलाता है ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीव्र, मन्द, अज्ञात, ज्ञात अधिकरण, भाव, बल से जानों ॥
इन कारण से, कर्म आस्रव विशेषत मन आनों ॥
समारम्भ, संरम्भ, और आरम्भ, योग, कृत कारित है ॥
अनुमोदन औ, कषाय सब भेद एक सौ आठ लहै ॥
(छन्द) यह जीव नित इन भेद युत आस्रव कर्म का करत हैं
शुभ करैं पुण्य सु बन्ध फल सुख, अशुभ अघ दुख भरत है ॥
बीता अनन्तानन्त काल, इसी तरह जग जाल में।
पशु, नर, कभी सुरपद कभी, कभी नरक दुख था भाल में ॥
दौ०) नटवत स्वांग कर्म वाश जग को धरि धरि जीव दिखाता है
संवर शिव दे, तत्व आस्रव जग मांहि रुलाता है ॥२॥
कभी भूप कभी रंक सेठिया, भिक्षुक रूप धराया है।
दोपद चौपद, बना जलचर, थल, नभचर, काया है ॥
नरक नारकी रूप बना कर, नाना त्रास उठाया है।
शुभ आस्रव से, बना सुर सुरग सुख बहु पाया है ॥
(छन्द) शुभ पुण्य योग मिला मनुज तन, सुकुल आव निरोग है
सद्धर्म सत्गुरु संग करि, सब विधि मिला शुभ योग है ॥
त्रय गुप्ति, पंच समिति, धरम दश धारि बारह भावना।
बावीस परिषह जीत पंच प्रकार चारित ध्यावना ॥
(दौ०) सत्तावन सु भेद संवर के पालै पावै साता है।
संवर शिव दे तत्व आस्रव जग मांहि रुलाता है ॥३॥
पुद्गल की जु अनन्त वर्गणा कर्म रूप बन जाती हैं।
योग द्वार से आय, आतम से बन्ध कराती है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन्ध तत्व है वही रोकने को संवर बतलाया है।
फल देकर के, झरै वह निर्जर तत्व कहाया है॥
(छन्द) तप योग से जो कर्म छेदै, निर्जरा वह सार है।
यह निर्जरा सम्वर दोऊ ही, शिव महल का द्वार है॥
करि उग्रतप सब कर्म छेदै, सिद्धि पद को पावता।
संकट कटै बहु सुख लहै, जो सिद्ध प्रभु को ध्यावता॥
(दो) सिद्धालय में सिद्ध अनन्ते 'भगवत्' शीश नवाता है।
संवर शिव दे, तत्व आस्रव जग मांहि रुलाता है॥५॥

—:o:—

एक सज्जन और यमराज की मित्रता

लावनी—६६

सज्जन एक और यमराजा, आपस में हुई यारी है।
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है। टेक॥
एक दिवस सज्जन ने पूछा, काम आप का क्या भाई।
कौन चीज के, आप व्यापारी दीजै बतलाई॥
सुनत वचन बोले यमराजा, काम हमारा सुन लीजै।
सुर, नर, पशु का, जीव सुरपुर ले जाय सु चित दीजै॥
(छन्द) चाहे बाल हो या हो युवा, चाहे बुढ़ापा छा रहा।
जब हो चुका उसका वह समय, साथ म्हारे जा रहा॥
चाहे रंक हो, चाहे सेठिया, हो भूप छह खड का सही।
होते ही समय समाप्त, फिर वह टिक नहीं सकता मही॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) खाता चौकस रहे हमारा, ना आगे न पिछारी है।
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है १॥
बोले सज्जन घबड़ा करके, तुम तो यार हमारे हो।
हमें छोड़ना, यहीं क्यों मित्र हमारे प्यारे हो॥
कहै बात यमराज मित्र बस, यह हमको लाचारी है।
लाख कही तुम, किन्तु ना मानें बात तुम्हारी है॥
(छन्द) और जो कुछ हाय सेवा, करें हम तैयार हैं।
पर छोड़ नहिं सकते तुम्हें, इस बात से लाचार हैं॥
सज्जन कहें क्या मित्रता, एक पत्र दे देना हमें।
जब हो समय नदीक म्हारे, कहे देता हूं तुम्हें॥
(दौ०) ठीक ठाक सब काम सौंपकर कर लूं मैं तैयारी है।
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है ॥२॥
कहने लगे यमराज मित्र मैं, चार पत्र पहुँचाऊंगा।
करने लायक, काम उसको नहिं चित्त चुराऊंगा॥
काम बहुत है मित्र, घर जाने की आज्ञा दीजै।
चार पत्र दूं, बात मेरी यह निश्चय सुन लीजै॥
(छन्द) यमराज निजगृह को गये सज्जन लगे गृह काम में।
दिन बहुत बीते हो गये हैं, श्वेत बाल तमाम में॥
खीजा लगाया है बहुत, पर हर जगह कहां तक रुकै।
कुदरत में दीना है दखल, पर कहो कैसे लग सकै॥
(दौ०) कुछ दिन बाद दृष्टि पै छाई दिन में भी अन्धियारी है
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं दिखाई देत लेय के. चश्मा नेत्र लगाया है।
बिन चश्मे के धरी न पास वस्तु नहिं पाया है॥
कुछ दिन बीते गार दांत भी मुंह में हुये विहारी हैं।
डुकरा डुकरी कहन अब लगे सब नर नारी हैं॥
(छन्द) तब जायक बाजार में, लगा लिये मुख दांत हैं।
तालो बजावें छोकरे सब मित्र गण दें मात हैं॥
निकले न शुद्ध सु शब्द मुख से, बात करते लार है।
मन चलै पर ना मिलै भोजन, कहैं जीवन खुवार है।
(दौ०) ऊंचा सुनने लगे क्योंकि अब तो कानों की बारी है
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है ॥४॥
झुर्री सब तन परी उठत बैठत में तकें सहारा है।
सब तन कांपै, लगा भय लाठी हाथ सम्हारा है॥
खांसी खुर्रा बहुत जहां तहां मूत्र थूक को डारा है।
दुखी सु घर के, कहें कब मरै वृद्ध हत्यारा है॥
(छन्द) अब आय कर यमराज ने, की मित्र लेह जुहारु है।
देरी न अब पलकी करौ, हो चलन को तैयार है॥
कहने लगा हो मित्र झूंठे, दिये न पत्र न चार है।
दो लात दीनी पीठ पर, तू मूर्ख निपट गंवार है॥
(दौ०) चार नहीं मैं पांच दिये पर बुद्धि तेरी गई मारी है।
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है ॥५॥
पहला पत्र बाल सब धौले, दूजे कम दिखलाया है।
पत्र तीसरे, दांत बिन भोजन जाय चबाया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौथे में हुये कान बन्द, चिल्लावै खुद चिल्लाया है।
लटकी काया, थकी नस नस पचम सु गिनाया है।
(छन्द) यम ले चला ना देर की यह गोय हा हा खात है।
बेटा, बहू, माता, पिता, धन धाम छोड़े जात है॥
शुभ औ अशुभ नेकी बदी यश और अपयश साथ है।
नित देखता सब आंख से, पर लाभ में ललचात है॥
(दो०) 'भगवत्' ध्यावै निज स्वरूप, यह कहेत कथा तुम्हारी है
प्रेम परस्पर, करी तब हिल मिल खातिरदारी है॥६॥

—:o:—

सत्संगति का प्रभाव

लावनी—६७

सत्संगति से सद्गति पावै, साधु संग सुखदाता है।
सत्संगति से सुयश, वैभव विवेक धन पाता है। टेक॥
संगति ही मनुष्य जीवन को अच्छा बुरा बनाती है।
संगति ही तो, गिरादे नीचे उच्च बिठाती है।
सगति का प्रभाव तन पर अपना असर जमाता है।
संगति ही से, पुण्य औ पाप सुक्ख दुख पाता है॥
(छन्द) सत्संग से सद्बुद्धि हो, सद्बुद्धि सद् आचार है।
आचार ही, उत्तम मनुष जीवन का मूलाधार है॥
सत्संग से सद्गुण बढ़ै, सद्गुण से हो सन्मान है।
सन्मान युत जीवन सफल, बिन मान भार समान है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सत्संगति खोटी सगति से शुभगति दुर्गति जाता है।
सत्संगति से सुयश, वैभव, विवेक, धन पाता है ॥१॥
फूल संग में धागा जाकर गले, भूप के आया है।
पान संग में तुच्छ सा पत्र सजन कर आया है॥
बांस फूस मिश्री सङ्ग पाकर, उसी भाव बिक जाती है।
उत्तम फल संग, टाकरी राज महल में आती है॥
(छन्द) यह सब अचेतन सङ्ग से, पावें सु उत्तम थान है।
जो करें चेतन साधु-संगति, लहैं निर्मल ज्ञान है॥
सज्जन पुरुष का संग उत्तम, हरै पर-जन व्याधि है।
दुर्जन पुरुष के सङ्ग आठौ, पहर रहत उपाधि है॥
(दौ०) खोटी संगति धूर्त पुरुष की, करौ न इससे नाता है।
सत्संगति से, सुयश वैभव, विवेक, धन पाता है ॥२॥
हिंसक क्रूर-स्वभावी जेते, होवें झूठे नर नारी।
पर धन-हर्ता, चोर डाकू होवें जो व्यभिचारी॥
वेश्यागामी कुटिल कुकामी, दुष्ट पुरुष मायाचारी।
मद्य मांस मधु, भखें अविवेकी जो असदाचारी॥
(छन्द) जो भंग, सुलफा, चरस, गांजा, वस्तु मादक खात हैं।
उन्मत्त पर-नारी तकें, जो चूर फैशन गात हैं॥
जो लालची, लोभी, औ लंपट, धर्म से विपरीत है।
यह दुक्खदाई हैं सु भाई, तजौ इन से प्रीत है॥
(दौ०) पापी नर से दूर रहौ नित, चाहो जीवन साता है।
सत्संगति से, सुयश वैभवविवेक, धन पाता है ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदा कीजिये संग सत्पुरुष, जो नित मंगलकारी है।
पाप मार्ग से, छुटा जो धर्म मार्ग दे डारी है॥
जो धार्मिक हों सद्आचारी, उनका संग सदा कीजै।
उन संगति से मिलै यश पाप पंक सब ही छीजै॥
(छन्द) तजि क्रोध मान दंभ धरो, चित तजौ स्वारथ भावना
बनि सदाचारी नित चहौ, जग जीव मंगल कामना।
सद्धर्म में शुभ भाव दृढ़, निज पर करौ हित ध्यान से।
ईर्षा, कलह, विद्वेष, तजि, जीवन बितावौ ज्ञान से॥
(दो०) 'भगवत्' सत्संगति नित कीजे, आगम यही बताता है
सत्संगति से, सुयश, वैभव, विवेक, धन पाता है॥५॥

—※×※—

नरकगामी ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती

लावनी—६८

श्रद्धा रहित धर्म का पालन, तोता की सी रटना है।
ब्रह्मदत्त की, कथा भी इसी तरह की घटना है॥टेक।
नगर कंपिला के राजा थे, नाम ब्रह्मरथ सुखकारी।
महा मनोहर, शील युत नाम रामली गृह नारी॥
तिन के ब्रह्मदत्त सुत उपजे, चक्रवर्ति पद के धारी।
अन्तिम चक्री भूमि षट् खण्ड तनी के अधिकारी॥
(छन्द) एक दिन भोजन करन, बैठे सु चक्री, आय के।
अति-तप्त खीर पड़ोस दी, रसोइये ने लाय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखि गर्म भोजन गर्म चक्री, हुये क्रोध उपाय के ॥
भाजन सहित वह खीर मारी, शीश उसके जाय के।
(दो०) तप्त खीर से जला सभी तन, भाजन से शिर फटना है
ब्रह्मदत्त की कथा भी इसी तरह की घटना है ॥१॥
प्राण त्याग कर मरा रसोइया, व्यन्तर देव सु होता है।
क्रोधी नर भी, क्रोध में बुधि विवेक को खोता है॥
अवधि जोड़ के जान बात, खा क्रोध सिन्धु में गोता है।
बदला लेने, मारने चक्री उद्यत होता है ॥
(छन्द) तब भेष तापस का बना, लाया है फल दरबार में।
बहु मिष्ट सुन्दरता करी, केला सु आम अनार में॥
चक्री चखे पाई मधुरता, मिले कौन बजार में।
कहै तापसी मो बाग, टापू है उदधि मझधार में॥
(दो०) चक्री कहै दिखा कहां, टापू, आज वहीं पर डटना है
ब्रह्मदत्त की, कथा भी इसी तरह की घटना है॥
रसन-लोलुपी होकर चक्री, साथ देव के जाता है।
भरत क्षेत्र को, लंघि सागर के मध्य सु आता है॥
देव प्रगट, कर रूप वैर कथा सु सकल सुनाता है।
त्रास देयकर, मध्य सागर में इसे डुबाता है॥
(छन्द) चक्री जपै नवकार मन्त्र सु, देव बाधा ना चले।
बहु यत्न कीने मारने के, बाल तक भी ना हिले॥
तब जाना मन्त्र बल, बोला सु मीठे बैन है।
जो चहौ जीवन कुटम भेंटन, और सब सुख चैन है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) कहदा झूठा धर्म अहिंसा, मन्त्र पैर से कटना है।
ब्रह्मदत्त की, कथा भी इसी तरह की घटना है ॥३॥
चक्री श्रद्धा तजि सु धर्म की, प्राण बचन की आशा है।
जल में लिखकर, मन्त्र को फेरि पैर से नाशा है ॥
मिथ्यादृष्टी बना तजी, श्रद्धा विवेक को छोड़ा है।
तीव्र पाप का बन्ध करि दुर्गति नाता जोड़ा है ॥
(छन्द) तब देव पापी जानि मारा, दिया समुद्र डबोय के।
सप्तम नरक में गया मरि सद्धर्म श्रद्धा खोय के ॥
तेतीस सागर दुख भयानक, भोगि भव वन भ्रमेंगे।
श्रद्धा रहित जो धर्म धारें नरक रौरव रमेंगे ॥
(दो०) 'भगवत श्रद्धायुत वृष धारो, जो भव दुख से छुटना है!
ब्रह्मदत्त की, कथा भी इसी तरह की घटना है ॥४॥

—:❀:—

सनत्कुमार चक्रवर्ती चारित्र

लावनी ६९

सनत्कुमार चक्रवर्ती का चरित मनोहर सुखकारी।
सुरशिव-दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी ॥टेक॥
वीत शोक नगरी के राजा अनन्तवीर्य बतलाये हैं।
सीता रानी, पुत्र श्री सनत्कुमार सु पाये हैं ॥
भरतेश्वर सम चक्रवर्ति की, सब विभूति इन पाई है।
कामदेव थे, प्रतापी शशि-सम सुन्दरताई है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) नव निधि रतन चौदह धरें, छह खंडके हैं भूपती ।
गृह छियानवै सु हजार रानी, शीलवन्त महा सती ॥
बत्तीस सहस नृपति सदा, सेवा में तत्पर रहत हैं ।
कवि क्या समर्थ सुगुण कहै, जब सुरग सुर भी थकत हैं ॥
(दो०) एक दिवस सौधर्म इन्द्र, इन रूप प्रशंसा की भारी ।
सुर शिव दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी ॥१॥
रत्नचूल मणिमाल देव दो, सुन करके वहां आये हैं ।
चक्रवर्ति जहां, इन्हें स्नान गेह में पाये हैं ॥
हो प्रच्छन्न सु रूप निहारा, देख देख हर्षाये हैं ।
अति सुन्दरता, इन्द्र जो, कही अधिक गुण पाये हैं ॥
(छन्द) फिर प्रगट हो दी सूचना दो देव रूप निहारने ।
आये हैं वह सुर-लोक से, श्री चक्रवर्ति सु कारने ॥
यह बात सुनि शृङ्गार कीना, वस्त्र भूषण सजाकर ।
आये सभा में चक्रपति, शुभ शीश पै मणि ताज धर ॥
(दो०) देख रूप सुर शीश हिलावें नाना शब्द सु उच्चारी ।
सुरशिव-दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी ॥२॥
पूछी चक्रवर्ति क्या कारण, भेद सकल बतलाया है ।
गुप्त रूप से लखा वह रूप न अब हम पाया है ॥
एक घड़ा जल भरवा करके, सभा मध्य मगवाया है ।
एक बूंद को, निकाला फिर सबको दिखलाया है ॥
(छन्द) यह गुप्तभेद सु चक्रपति लखि, जग अथिरता जानिके ।
भव भोग से जु विरक्त हो तप धरा वन में आनिके ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्र-गुप्त मुनीश से, दीक्षा दिगम्बर धार है।
द्वादश प्रकार सु तप तपें, करें कर्म रिपु को छार है॥
(दो०) घोर तपस्या करी धीर धर, चतु आराधन उरधारी।
सुरशिव-दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी॥३॥
प्रकृति विरुद्ध आहार एक दिन, मिला देह गलि जाती है।
कोढ़ चुचावै, रुधिर औ पीव वहै दिन राती है॥
किन्तु न तन से मोह ध्यान में, दृढ़ता अधिक लगाई है।
महा-मुनीश्वर देह सों नेह न लई दबाई है॥
(छन्द) एक दिन सुर प्रथम, इन्द्र, करी मुनीश सराहना।
तब मदनकेतु सु देव के, मुनि देखने की भावना॥
आया मुनी को देख के, लिया वैद्य भेष बनाय के।
चहुँ ओर वन में कहै वैद्य हूं, लो इलाज कराय के॥
(दो०) कैसा भी हो रोग भयंकर, खो दूं दवा करौ म्हारी।
सुरशिव-दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी॥४॥
मुनि चौगिरदा बार २ यह वैद्य अवाज लगाते हैं।
ध्यान पूर्ण पर, मुनी जी इनको पास बुलाते हैं॥
खो दो मेरा रोग वैद्य तो, मैं तुमको समझूं ज्ञानी।
देव कहै यों, बतादो क्या क्या कष्ट गुरू ध्यानी॥
(छन्द) मुनि कही खो दो तो बताऊं, व्यर्थ कहने से कहा।
तब देव निश्चय युत कही, सब रोग खोदूं हो महा॥
मुनि कही भैया रोग भव का, शीघ्र इसे मिटाय दे।
जन्मन मरण से मुक्ति पाऊं, दवा ठीक बताय दे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) बता शीघ्र दे बता, बनूं जिससे अनन्त गुण भण्डारी
सुर शिव दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी ॥५॥
अतुल शक्ति औ धीर वीरता देख देव शर्माया है।
प्रगट होय के, जोर कर शीश चरण में नाया है॥
धन्य धन्य है प्रभो आपका, दुर्द्धर तप सु दवाई है।
इस तप से ही, मिलै शिव, आगम देत गवाई है॥
(छन्द) श्री सनत्कुमार मुनीश, तप बल ज्ञान केवल पाय के।
सद्धर्म रूप सुधा पिला, भवि दिये पार लगाय के॥
फिर नाशि चार अघातिया, जा मिले सिद्ध सु थोक में।
जिन गुण अनन्तानन्त पूजा, होत है त्रय लोक में॥
(दो०) निज स्वरूप सम रूप हमें दो, 'भगवत्' चरण शरण धारी
सुरशिव-दाता, शुद्ध मन वच तन सुनिये नर नारी ॥६॥

×

श्री जिन-दर्शन माहात्म्य

लावनी—७०

श्री जिन-दर्श महा सुखदाता, भविजन कीजै सदा त्रिकाल।
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोर लगाकर भुवि में भाल ॥टेक॥
दर्श चित्त मन करत सहस फल, गमन उपास लाख मन जान।
कोड़ा कोड़ी, फल मिलै जब दर्शन कीजै भगवान॥
शुद्ध चित्त हो, शुभ भावोंसे, स्वच्छ वस्त्र धरि करि सु सनान।
दर्शन कीजै, जिनेश्वर का होता है पुण्य महान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) दर्श-व्रत की ली प्रतिज्ञा, कथा सुनिये ध्यान से।
इक सेठ पुत्री थी मनोवति व्रत लिया गुरु ज्ञान से॥
गज मोतियों का पुंज दे जिनराज का दर्शन करूं।
बिन दर्श भोजन जल न लूं यह दृढ़ प्रतिज्ञा मन धरूं॥
(दौ०) ब्याह हागया गई सासु घर, गज मोती पाये न विशाल
जिन प्रतिमा को युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल॥८॥
मौन धार बैठी सुकुमारी, तीन दिवस बीते नहिं खाय।
सासु ससुर ने तभी पीहर से भ्राता लिया बुलाय॥
गज मोती का हाल सुना, दीने गज मोती खोल भण्डार।
जब तक जीवौ, चढ़ावौ मेरे मोती भरे भण्डार॥
(छन्द) मोती चढ़ाकर दर्श कीने करि अशन पीहर गई।
मालिन ले मोती जिन भवन से देख माली यों कही॥
बहु कीमती है पुष्पयुत, माला बना भेजी महल।
दो नारि थी राज गृहे, मालिन गही लघु की गहल॥
(दौ०) लघु नारी गलमाल डाली, रानी दीना बहु धन माल।
जिन प्रतिमा को युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल॥२॥
सुनी बात जब बड़ी नारि ने, खट पाटी ली तजि अन पान।
भूप आकर दिलासा दीनी किया बहुत सन्मान॥
जिते जोंहरी हुते नगर के, सब से पूछी कीनी नाहिं।
सेठ सेठानी, पुत्र छह बैठि घरें ऐसे पछि ताहिं॥
(छन्द) बहू जब घर आयगी, मोती चढ़ावै जिन-भवन।
राजा तभी रिस आय के, छिनवाय लेगा सकल धन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस से भली यह बात, घर से काढ़ि दो सुत सातमा।
मिट जाय झंझट दर्शनों का, कठिन करलो आतमा॥
(दौ०) व्रत निन्दा करि बुद्धसेन को, घरसे काढ़ि दिया तत्काल
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोर लगा कर भुवि में भाल॥३॥
कर विचार ससुरालय चाला, आय बाग में किया मुकाम।
माली मुख से, सेठ सुन गज चढ़ाय ले आया धाम॥
एक पहर निश गई पास तब, आई शीलवती तसु वाम।
बिना बुलाये, पिता मेरे घर आये क्या था काम॥
(छन्द) मुझ को निकाला है पिता, परदेश जाऊं कहन को
हे नारि आया हूं यहां, मैं नहीं आया रहन को॥
परदेश जा धन को कमाऊं, तुम रहो पितु मात घर।
बोली सती मैं साथ चालूं, त्रिया का भूषण है वर॥
(दौ०) गहने सभी उतार पलंग पर डार निकल चाले गुणमाल
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोरि लगा कर भुवि में भाल॥४॥
रात दिवस तक चार दिन चले, पहुंचे नगर रतनपुर जाय।
पग पग बैठत, करमगति पग में लोहू रहे चुचाय॥
बैठ बाग में केश सुखाये, नग चोटी में पड़ौ दिखाय।
दिया पती को, रसोई सामिग्री, ला दई बनाय॥
(छन्द) विन मोतियों जिन दर्श कैसे, विन दरश भोजन कहां।
दिन चार मारग में लगे, दिन तीन अब बीते यहां॥
पति को खबर कुछ है नहीं, आ कंठगत हुये प्राण है।
पर है प्रतिज्ञा पर अटल सौधर्म सुर हुआ ज्ञान है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) एक देव को आज्ञा दीनी, आ जिन मन्दिर रचा विशाल
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल । ५॥
सुन्दर पैर धसक गया नीचे, शिला लगी खोली तत्क्षण ।
चम चमाट युत, देख जिन बिम्ब लगी कहने धन धन ॥
लगे ढेर गज मोतिन के थे, पुंज चढ़ाये भरि भरि थाल ।
दर्शन करके, अष्टमे दिन भोजन कीना गुण माल ॥
(छन्द) देवोपनीत मिले युगल, मोती सो लिये उठाय के ।
नर भेंट राजा की करन, भेजी पती समझाय के ॥
देखि मोती भूप इनको, नगर में बुलवा लिया ।
सुन्दर मनोहर-महल इनके, रहन को भूपति दिया ॥
(दौ०) राजा मोती धरा खजाने, लोहे के सन्दूके वाल ।
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोर लगा कर भुविमें भाल॥६॥
मोती निश में उड़ा, सुन्दरी के हाथों में आया है ।
दिना दूसरे भेजि पति मोती भेंट कराया है ॥
राजा हर्षित हुआ मिली जोड़ी, जब वह दिखवाया है ।
मिला न मोती, क्रोध कर कर-मलमल पछिताया है ॥
(छन्द) फिर धरा मोती यत्न करि, निश में गया वो आय है
दिन तीसरे भी सेठ सुत, मोती लिये वहां जाय है ॥
देखि राजा वह मंगाया, है नहीं धरि क्रोध को ।
समझा दिया है सेठ युत, तब भूप पाया बोध को ॥
(दौ०) जोड़ी का मोती लेजाकर, दीना खुशी हुआ भूपाल ।
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा सोचै इन लायक क्या, कन्या व्य. . क्या इन साथ ।
भूप जमाई, कुमर को सब जन आय नवावें माथ ॥
सुन्दर के कहने से इसने जिन मन्दिर बनवाया है ।
करें मजूरी, जिते आवें यह घोष कराया है ॥
(छन्द) अब इधर सुनिये कुमर, माता पिता व्रत निन्दा करी ।
तसु पाप से सब द्रव्य नाशी, कोटि छप्पन जो धरी ॥
भ्राता बहू सब भूख से, मरने लगे घबड़ाय के ।
भीख मांगत दर ब दर, आये रतनपुर में आय के ॥
(दो०) चौदह प्राणी भीख मांगते, देखौ कर्मतनों यह हाल ।
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल ॥८॥
कहा किसी ने करौ मजूरी, राज जमाई के यहां जाय ।
देखा इनको, कुमर पहिचान कही सुन्दर सों आय ॥
भीख मांगते यहां तक आये, भ्राता भावी पितु औ माय ।
बदला लूंगा निकाला घर से मो मन यही समाय ॥
(छन्द) धर्मात्मा थी सुन्दरी, पति को दिया समझाय है ।
कुछ दिन मजूरी पर रखे फिर दिये सब छुड़वाय है ॥
निश में बुलाकर निज महल, परिचय करा सुख पाय है ।
वैभव सहित बुलवाय के, निज घर रखे हर्षाय है ॥
(दो०) राजा भी समधी समधिन को कर दीना है मालामाल ।
जिन प्रतिमा को, युगल कर, जोरि लगाकर भुवि में भाल ॥९॥
करी प्रतिष्ठा फिर मन्दिर की गजरथ दिये अनेक चलाय ।
चार संघ को, दान दे यात्री गण पोषे हर्षाय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनी बात राजा पितु नगरी, वह भी इनसे भेंटा आय।
बहु विभूति सों, पिता माता की नगरी, में गये आय ।।

(छन्द) करते प्रशंसा सुन्दरी की, धन्य धन मुख उच्चरें।
जिन दर्श की महिमा अगम सुर आय कर पांयन परें ।।
ली थी प्रतिज्ञा सुन्दरी, उसके ही पुन्य प्रताप से।
जग अतुल यश वैभव सु पाया, छूट करके पाप से ।।

(दो०) 'भगवत्' जिन दर्शन नित कीजै, कटि जावैगा जग जंजाल
जिन प्रतिमा को, युगल कर जोरि लगाकर भुवि में भाल ।।१०।।

—×—

निश भोजन त्याग माहात्म्य

लावनी—६४

सुखकारी है दिन आहारी, जो निश भोजन का त्यागी।
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़-भागी ।।टेक।।
निशि भोजन को त्याज्य सभी आगम मुनि बतलाया है।
धन्य वही है, वही जैनी जु रात्रि नहिं खाया है ।।
खाद्य, स्वाद्य, और लेह्य, पेय, यह चतु आहार बताया है।
निशि का त्यागी, दिवस में ही भोजन को पाया है ।।

(छन्द) धय धन्य कमलश्री सती, त्यागा सु निश आहार है।
तसु पुण्य के सु प्रभाव से, विषधर कुसुम का हार है ।।
मुनिराज से लीनी प्रतिज्ञा, जैन वृष में दृढ़ रती।
कुछ पाप कर्म उदै, मिला जिसको पती है शिवमती ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) हेमचन्द है नाम, सदा शिव पूजै शिव-मत-अनुरागी।
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़ भागी ॥१॥
कमल श्री है जैन, ब्याह हो गया गई सासू के घर में।
वहां निशि भोजन, देखकर सती पड़ी है चक्कर में॥
सासु कही बहू भोजन कीजै, कही न निशि में खाऊंगी।
लई प्रतिज्ञा, उसे जीवन रहते सु निभाऊंगी॥
(छन्द) हे सासु जी जो रात्रि में, भोजन करै अघ संचरै।
है मांस सदृश जु रात्रि भोजन, जो करै नरकें परै॥
जो हो सुधा का कौर भी, वह भी निशा में त्यागिये।
सब जीव हिंसा सों बचो, जिन धर्म में मन लागिये॥
(दौ०) सुनी बहू की बात सासु के, तन मन में आगी लागी
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़-भागी ॥२॥
सासु पती से कही बहू कुल-नाशिन घर मे आई है।
जैन धरम में, लीन शिव मत की करै बुराई है॥
देखूं कब तक करै न भोजन, क्षुधा बड़ी दुखदाई है।
ऋषी मुनी को क्षुधा ने जग में दिया डुबाई है॥
(छन्द) नित सासु आकर रात्रि में, भोजन को बहू जगावती।
यह ना करै फिर चुप रहै, णमोकार मन्त्र सु ध्यावती॥
दिन तीन बीते इस तरह, बिन अन्न जल धरै ध्यान है।
चौथे दिवस दिन में कही. इन वच किये सु प्रमान है॥
(दौ०) करि स्नान गई जिनमन्दिर, प्रभूभक्ति हृदयें जागी।
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सौ बड़-भागी ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन मन्दिर से आय कही मैं खुद ही करूं रसोई है।
तब खाऊंगी, बात सुनि सासु क्रोध मन होई है॥
पुत्र कहे से दिया अन्न, भोजन करि उदर भराया है।
कमल श्री ने, दिना चौथे सु पारणा पाया है॥
(छन्द) जा हेमचन्द उद्यान से, एक सर्प जहरी लावता।
विकराल काला धार घड़ा. निज नारि को समझावता॥
प्यारी मैंने तेरे लिये, बनवाया सुन्दर हार है।
तू पहन कर शृङ्गार करि, रक्खा जु घड़ा मझार है॥
(दौ०) सुन्दरि सरलचित्त महाधार्मिक. उठी घड़ा खोलन लागी
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बढ़-भागी ॥४॥
सौधर्मेन्द्र पायकर आयुष, देव हार रचि दीना है।
लड़ी सु चौदह, मणिमयी देखि हर्ष मन कीना है॥
चन्द्र सूर्य सम प्रभा तासु की, हेमचन्द्र तब चीना है।
विस्मय भारी, सकल तन में आया सु पसीना है॥
(छन्द) वह स्वयं सुन्दर हार पहिना, रूप क्या वर्णन करूं।
कोई शब्द तक ना कोष में, जो रूप उपमा मैं धरूं॥
फिर पति गले में हार डाला, नारि ने हर्षाय के।
हो गया फणधारी सु जहरी, पति लिया है खाय के॥
(दौ०) हेमचन्द्र डसि लिया नागने, मृतसम सब सुधिबुधि त्यागी।
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बढ़ भागी ॥५॥
देखि हाल यह पति अपने का सुन्दरि रोवै खाय पछार।
हाय हाय यह लगा टीका कलंक का मेरे लिलार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रात होत ही मात पिता ने किया शोर आये नर नार ।
हेमचन्द्र की न्हाम को लेजाकर धर दी दर बार ॥
(छन्द) तब भूपने सब नगरके, बुलवा लिये हैं सेठिया ।
सच न्याय इसका कीजिये, सब दोष सुन्दरि को दिया ॥
भूपति न मानी बात बरुआ, पकरि बुलवाये सबै ।
शूली चढ़ाऊं झूठ बोले सत्य बतला दो अबै ॥
(दौ०) वायु-तेल के हेत सर्प यह, लाय इक बोला बागी ।
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़भागी ॥६॥
फिर भूपति सुन्दरि बुलवाई, पुत्री हाल बता दीजै ।
तुम दोनों थे, न कोई और किस तरह पति छीजै ॥
सुन्दर धीरज धारि हार का सब विरतन्त सुनाया है ।
धन्य धन्य तब, कहैं नर नारि सती सुखदाया है ॥
(छन्द) पुनि भूप बोले हैं सुता, तू धर्मवन्त सती त्रिया ।
निज सत्य बल से करौ निर्विष, जी उठै तेरा पिया ॥
बोली सभा में सुन्दरी, सब जैन धर्म सु आचरें ।
पालें दया मैं पति जिला दूं जो न निशि भोजन करें ॥
(दौ०) राजा करी प्रमाण सुन्दरी, चार पहर मुहलत मांगी ।
दोषसहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़-भागी ॥७॥
करि स्नान वस्त्र आभूषण, पहरि जिनालय में आई ।
पूज कीनी रखौ लज्जा मेरी हे जिनराई ॥
फेरि सभा में णमोकार जपि, जल छींटे दीने जाई ।
विष निर्विष हुआ, उठा है हेमचन्द बहु सुख पाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) सुर नर सभी जै जैकरें, धन धन्य शीलवती सती ।
तो सम न नारी हम निहारी, करें स्तुति भूपती ॥
फिर जाय वन में धरी दीक्षा, आर्यिका बनि तप किया ।
तिय लिंग छेदि सु ऋद्धि धारी, पंचमे सुर पद लिया ॥
(दौ०) करो त्याग निश भोजन 'भगवत्' निज स्वरूपमें मन पागी
दोष सहित है, रात्रि भोजन त्यागै सो बड़ भागी ॥८॥

—※×※—

सेठ चारुदत्त चारित्र

लावनी—७२

शुभ और अशुभ निमित्त जीव को, अच्छा बुरा बनाता है ।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥टेक॥
सेठ पुत्र थे चारुदत्त, संतोषी सद्आचारी थे ।
ब्याह हो गया, किन्तु नहिं भोगत भोग सुनारी थे ॥
माता मन चिन्ता थी भारी, देवर को समझाया है ।
रुद्रदत्त ने, काम सेवन का निमित लगाया है ॥
(छन्द) प्रख्यात वेश्या नगर की, उस घर दिया पहुंचाय है ।
वेश्या गृहे यह सेठ सुत, रति करै अति सुख पाय है ॥
अब मिल गया खोटा निमित, खोटा किया इन काम है ।
वेश्या गमन में खो दिया, वैभव सकल धन धाम है ॥
(दौ०) माता नारी कुटम कबीला, छोड़ा सबसे नाता है ।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बसन्ततिलका नाम वेश्या, थी, उसमें बहु चतुराई ।
चारुदत्त से, करै थी प्रीति अन्य मानें भाई ॥
माता उसकी देख हाल मन, क्रोध करै झुंझलाती है ।
धन-विहीन है, छोड़ दे–पर न चित्त वह लाती है ।
(छन्द) माता किया मन कोप अति, सोवत में सेठ उठाय के ।
घर के पिछाड़ी है पखाना, वहां दिया डलवाय के ॥
विष्टा में सारा सन गया, दुर्गन्ध से दुख पावता ।
कुछ बोध पा निकला वहां से, महल अपने आवता ॥
(दौ०) देखि झोपड़ीमें माताको, कर मलमल पछिताता है
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥२॥
नारी सेवा कीनी भारी, माता बुलवाया मामा ।
यत्न कीजिये, बढ़ै जिससे वैभव और धन धामा ॥
मामा द्रव्य दिया है संग ले, परदेशों में जाता है ।
चारुदत्त था, चतुर धन से धन खूब कमाता है ॥
(छन्द) कर्म है बलवान मामा साथ छूटा जाय के ।
पिता आगे का सु धन, एक सेठ ने दिया आय के ॥
धन पाय बनवाये जिनालय, दान दीना जोर है ।
जिन शास्त्र बंटवाये अनेकों, हुआ चहुं दिश शोर है ॥
(दौ०) चारुदत्त है दानी भारी, दान कीर्ति फैलाता है ।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥३॥
यत्न परीक्षा लीनी आके, सफल हुआ यश को पावै ।
पड़ दण्डी के, फेर में अन्ध कूप में गिर जावै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देख कंठगत प्राण मनुज को, णमोकार दे सुखदाई।
सुना ध्यान से, हुआ है देव सुरग पुर में जाई ॥
(छन्द) निकला कठिन कर कुये से, वन भयानीक सु पार कर।
पहुंचा है पुर गांधार में, मिले मित्र गण उर धार कर ॥
इक मनुष से सब भेद पा, चढ़ि बोकरों पर जात हैं।
पर्वत शिखर पर पहुंचकर कर, सातों जने सुस्तात हैं ॥
(दौ०) निद्रा युत हुआ चारुदत्त साथी बोकरा कटाता है।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥४॥
अजा पुत्र छह कटे, सातमें की जब वारी आती है।
चारुदत्त की, यकायक निद्रा भी हट जाती है ॥
हाय हाय यह क्या अनर्थ, हिंसा करि पाप कमाया है।
प्राण कंठगत, उसे झट पट णमोकार सुनाया है ॥
(छन्द) सुन लिया मन्त्र सु ध्यानसे, हुआ बोक सुरमें देवता।
सुख पाय शिवपुर जाय वह नर जैन, वैन जु सेवता ॥
भैरुण्ड पक्षी ले उड़े, पहुंचा है पर्वत जायकर।
वहां पर श्री मुनि वन्दना, कीनी शीश नवायकर ॥
(दौ०) मुनि के युगल पुत्र भी भेंटे, युगल देव भी पाता है।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है ॥५॥
युगल देव सब हाल बताया, तुम प्रसाद सुर पद पाया।
मुनी पुत्र ने, अतुल धन देकर घर पर पहुँचाया ॥
भेंटे माता नारि कुटम्बो, गया हुआ वैभव आया।
पतिव्रता थी, वह वेश्या उसको भी घर बुलवाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) जिनधर्म में सब लीन हो, भोगे सु भोग अपार है।
फिर छोड़कर वैभव सकल, मुनि पद लिया सखकार है॥
नारि माता और वेश्या, शक्ति सम व्रत ध्याइया।
मुनि ध्यान से सर्वार्थसिद्धि सु, थान उत्तम पाइया॥
(दो०) 'भगवत्' चरित सु चारुदत्त का, सुनें सो पावै साता है।
शुभ निमित्त से धर्म, खोटे से पाप कमाता है॥६॥

—:❀:—

स्वार्थलीन संसार

लावनी ७३

स्वारथ में हो लीन मनुज तब धार्मिकता हट जाती है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है॥टेक॥
सदाचार और धार्मिकता को, स्वारथ जाय हटाता है।
स्वारथ सनकर, विवेकी भूल जाय सब नाता है॥
स्वारथ का जब दौर होय तब, गिनें न भगिनी माता है।
स्वारथ-वश हो, परम धर्मात्मा पाप कमाता है॥
(छन्द) स्वार्थान्ध औ कामान्ध यह, दोनों हृदय के अन्ध हैं।
भय त्याग करते पाप बहु, स्वार्थी पुरुष निर्द्वन्द हैं॥
मिल जाय यदि खोटा निमित, तो फिर कहो क्या बात है।
कड़ुवी है खुद जु गिलोय, चढ़िकर नीम अति कड़आत है॥
(दो०) स्वारथ ही अनर्थ करवाता, कथा याद एक आती है।
स्वार्थी नरको, भली औ बरी न बात दिखाती है॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचाल देश वर शक्ती नगरी, भूप सुधर्म बताये हैं।
महाविवेकी, प्रजारक्षक जिनमत उर लाये हैं ॥
प्रतिद्वन्दी था राय महाबल, उसको जीत सु आये हैं।
दुर्ग द्वार में, घुसन को ज्यों ही पैर बढ़ाये हैं ॥
(छन्द) इक दम गिरा वह द्वार भूपति, बाल बाल बचे सही।
रहे नगर बाहिर डारि डेरा, हो मरम्मत यों कही ॥
सुनते हुकम नर-राय का, होने लगा सब काम है।
हो गई आवश्यक मरम्मत मनों नूतन धाम है ॥
(दौ०) किया प्रवेश गिरा दरवाजा भूप जान बच जाती है।
स्वार्थी नरको, भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥२॥
करें सभी आश्चर्य भूप भी, मन में शंका खाई है।
हो अति चिन्तित, भूप तब नया रहा बनवाई है ॥
लोहा पत्थर आदि अनेकों जिसमें धातु लगाई है।
कुशल कलाधर, बनाया अपनी कला दिखाई है ॥
(छन्द) दृढ़ सुथिर सुन्दर मोहना बन गया दुर्ग सु द्वार है।
जिसे देखकर भूपति हृदयमें, हुआ हर्ष अपार है ॥
जब नगर जाने को नृपति, पग धरत द्वार मझार है।
अति शब्द करि वह गिरा भूपर, उठा धूलि गुबार है ॥
(दौ०) हा हा कार करें नर, नारीभूप ति चिंता छाती है।
स्वार्थी नरको भली औ बुरी न बात दिखाती है । ३॥
भूपति करें विचार बात क्या, समझ न मेरी आई है ।
देखि दृश्य को, चित्त विस्मय जिज्ञासा छाई है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म अहिंसा साधु प्रकाशे, धारी जो यह नरगई है।
किं कर्तव्य-विमूढ़, हाय मन्त्री को सदा सुनाई है ॥
(छन्द) जयदेव मन्त्री वाममार्गी, धरै मत चार्वाक है।
विपरीत मत है भूप मत से, ज्यों छत्तीस सु आंक है ॥
कहने लगा महाराज बाधा, यह सु दैवी रूप है।
करदे अभी क्या क्या अनर्थ, सु तब कहै यों भूप है ॥
(दो०) बता उपाय तुरत अब मुझको देर न मुझे सुहाती है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ४॥
बोला मन्त्री नर बलि दीजै, देवी खुश हो जावैगी।
बिना बलि दिये, भूप यह बाधा ना मिट पावैगी ॥
सुनत वचन स्तब्ध रहा नृप कानों अंगुली डाली है।
फिर मन्त्री से, कहा क्यों खोटी बात निकाली है ॥
(छन्द) मन्त्री न मैं हिंसा करूं, हर्गिज धरम के नाम पर।
बलि देउं मैं एक पुरुष की, धिक्कार ऐसे काम पर।
मन्त्री कहै महाराज थोड़ी, राज-नीति विचारिये।
आज्ञा हमें दे दीजिये, खुद तुम न नर को मारिये ॥
(दो०) राजा कहै काम यह खोटा, बुद्धि मेरी चकराती है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ५॥
दूजे दिन सब नगर नारि नर, राजा पास सु आते हैं।
मन्त्री वाली बात को ही दृढ़ करि समझाते हैं ॥
राजा कहै बताओ भाई, निरपराध का खून करूं।
हिंसा करके, दुक्ख भोगूं नरकों में जाय परूं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) मन्त्री कहै राजन् सुनों, प्यारी प्रजा के कारने ।
नहिं पाप लागै भूप को एक तुच्छ नर के मारने ।।
यदि पाप भी लग जायगा, फल भोग लेंगे हम सही ।
स्वार्थान्ध बनकर भूप ने तब सचिव से ऐसे कही ।।
(दौड़) जो इच्छा सो करौ करूं क्या, सबको यही सुहाती है ।
स्वार्थी नर को, भली औ न बुरी बात दिखाती है ॥६॥
राजा आज्ञा मिली सचिव फिर युक्ति सु एक निकाली है ।
मानुष कद की, स्वर्ण की मूर्ति एक बनवाली है ।।
सुन्दर रथ में थापि मूर्ति का, सब शृङ्गार बनाया है ।
करी घोषणा, देउ मानुष, लो यह सब माया है ।।
(छन्द) परभात से हुई शाम, सब नगरी फिरा रथ जाय है ।
धन लेय मानुष देय यह सुनि, पास ना कोई आय है ।।
फिर गया रथ जहां पर, गरीबों के निवास सु थान हैं ।
तन लटे कपड़े फटे, दुखिया कर रहे गुजरान हैं ।।
(दौ०) यह भी सच है बात, गरीबों के संतति बढ़ जाती है ।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥७॥
उस थानक वरदत्त नाम का, कृषक गरीब बसाता है ।
उस की नारी एक नहिं सात पुत्र की माता है ।।
एक बार भर पेट कभी भी, भोजन को नहिं पाता है ।
बच्चे रोते उन्हैं बहला करके टरकाता है ।।
(छन्द) देखकर सम्पत्ति भारी, घोषणा सुनकर सकल ।
सुत देय कर धन लेय, यह नारी से पूछा हो विकल ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी भी दुख पाती महा, धन देखकर हां कर दई।
लघु सुत को दे उल्लास से, वह स्वर्ण की मूरति लई॥
(दो०) धिक धिक स्वारथ अन्ध, पिता माताकी वज्र सु छाती है
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ।८॥
इन्द्रदत्त है नाम, देखि पितु मात स्वार्थ अकुलाता है।
किन्तु धैर्य कर, छाड़ि सब को रथ पर चढ़ जाता है॥
नर नारी हर्षित मन होते मन्त्री रथ बढ़वाता है।
चन्द मिनट में, भीड़ युत रथ दरवाजे आता है॥
(छन्द) पण्डे पुजारी मन्त्र बोलें, बज रहे बाजे जहां।
सब पंच गण माता पिता, राजा वगैरह हैं वहां॥
बलि देन का सामां सकल, उस ठौर पर तैयार है।
देखा है राजा दृष्टि से, वह हंस रहा सुकुमार है॥
(दो०) राजा उठकर गया वहां, बलि देने तत्पर घाती है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥९॥
बोला राजा क्यों हंसता तू डर न तुझे कुछ लगता है।
बोला बालक, भूप अब डर तो मुझ से भगता है॥
राजा कहै अरे ओ बालक, तुझे न दुक्ख दिखाता है।
कहता बालक, दुक्ख सीमा को पार कर जाता है॥
(छन्द) महाराज सुन यह बात हो गये सुन्न फिर कहने लगे
मन रो उठा दिल हिल उठा नेत्रों से जल बहने लगे॥
हे पुत्र यह अवसर न हंसने का है रोने का सही।
नजदीक तेरे मृत्यु ठाड़ी, फिर हंसै राजा कही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) रोता है जग सभी सामने, मृत्यु जीव के आती है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥१०॥
बालक कहै नाथ क्यों रोऊं रोने से क्या होवैगा।
किससे रोऊं, कौन रोना सुनकर दुख खोवैगा ॥
माता पिता स्वार्थवश मुझको, धन लेकर कटवाते हैं।
सुनें पंचगण, करें वह न्याय न मुझे दिखाते हैं ॥
(छन्द) पंचगण सब स्वार्थ वश मो, जान के ग्राहक बने।
जाकर के रोऊं भूप से, भूपति खड़े हैं सामने ॥
जब भूप ही निज स्वार्थ हित, मम प्राण लेना ठठ लिया।
निज दुर्ग रक्षा हेत बलिका, काम यह सारा किया ॥
(दौ०) फिर क्यों रोऊं नाथ बतादो कौन मेरा अब साथी है।
स्वार्थी नर को, भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥११॥
सुनत वचन रो उठा भूप, श्रावण की झड़ी लगाता है।
साहस करके, सभी को ऐसे वचन सुनाता है ॥
छोड़ो जल्दी इस बच्चे को, बन्द करो यह खाता है।
हिंसा कारण, नरक दाता नहिं मुझे सुहाता है ॥
(छन्द) मुझ को न चहिये दुर्ग यह, मैं रहूँ बाहर नगर के।
पण्डा पुजारी क्रूर कर्मी, जांय अब सब डगर के ॥
जो स्वर्ग सुख भी मिलै हिंसा, से न मुझको चाहिये।
आकाश-वाणी हुई, अहिंसा परम धर्म सु गाइये ॥
(दौ०) धन्य धन्य सुर कहते 'भगवत्' दुनिया खुशी मनाती है
स्वार्थी नर को भली औ बुरी न बात दिखाती है ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अञ्जन चोर की कथा

लावनी—७४

शंका रहित होय कर मन में, जो जिन वच को ध्याता है।
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ।।टेक।।
राजगृही नगरी में रहते, नगर सेठ कहलाते हैं।
परम धार्मिक, नाम जिनदत्त सेठ सब गाते हैं ।।
चतुर्दशी के दिना जाय, वन में जो ध्यान लगाते हैं।
अर्द्ध निशा में उसी अवसर पर देव दो आते हैं ।।
(छन्द) जिनधर्म धारी एक है, और एक मिथ्याती कहा।
निज निज धरम करने परीक्षा, भाव मन में लग रहा ।।
पहले गये उस साधु तट पंचाग्नि तप जो तपत है।
चहुं ओर आडम्बर लगाकर, राम नाम सु जपत है ।।
(दो०) करि उपसर्ग परीक्षा कीनी, आसन तजि भग जाता है।
अञ्जन तस्कर उसी भव पद सु निरंजन पाता है ।।१।।
फिर आये हैं वहां जहां, जिनदत्त सेठ है सुखकारी।
ध्यान लीन लखि, कहे जिनधर्मी देव वच हितकारी ।।
भाई साधू पीछे देखना, देखो श्रावक व्रत धारी।
करो परीक्षा, लगाकर तुम अपनी शक्ती सारी ।।
(छन्द) यदि ना चिगै यह ध्यान से, तो धर्म मेरा मानना।
जाना गुरू के पास फिर, चेला का करलो सामना ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तेजना पा देव ने, उपसर्ग भारी अति किया ।
पर सेठ तप ना भंग किञ्चित, ज्यों अचल मणि का दिया ॥
(दौ०) हो प्रत्यक्ष देव कर जोड़े, चरणों शीश झुकाता है ।
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ।२॥
दोनों देव प्रसन्न होय, नभ-गामिनि विद्या दीनी है ।
विधि साधन की, मन्त्र बतला आधीनी कीनी है ॥
सेठ नित्य विद्या बल ढाई-द्वीप वन्दना करते हैं ।
कृत्याकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय पूजि सुख भरते हैं ॥
(छन्द) माली ने पूछी सेठ तुम, नित प्रति सुबह जाते कहां ।
कहें सेठ पूजन हेत अकृत्रिम जिनालय हैं जहां ॥
माली कहै करके कृपा, विद्या मुझे सिखलाइये ।
साधन सु विधि औ मन्त्र, सिखलाया कही अब ध्याइये ॥
(दौ०) माली हर्षित होय निशा में, भूमि मसान सु जाता है
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरञ्जन पाता है ।३॥
कृष्ण पक्ष की अन्ध चतुर्दश को निश आधी पै जाई ।
बड़ की डाली, मूज का छींका बना सु लटकाई ॥
लड़ी एक सौ आठ हैं उसमें नीचे भाले गाड़े है ।
शूल करोंते, धार तीक्षण के असि किये ठाड़े हैं ॥
(छन्द) हाथ में तीक्षण कटारी लड़ी काटन के लिये ।
तब बैठि छींके मन्त्र जपि सब काम माली ने किये ॥
पर दृष्टि जब नीचे करै, शंका, उपावै मन विषें ।
ना हुई विद्या सिद्ध नाहक, प्राण यह मेरे नसें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सेठ वचन सच हैं या झूठे, चढ उतरि चढ़ जाता है
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ॥
उतरै चढ़ै फिर उतरि आवै, मन में शंका भारी है।
इसी नगर की, कथा इक और सुनो सुखकारी है ॥
मणि कांचन सु सुन्दरी वेश्या, इसी नगर में रहती है।
अपने प्यारे, चोर अञ्जन से ऐसे कहती है ॥
(छन्द) हे प्राणप्यारे प्राण मेरे की, जो तुमको चाहना।
तो प्राण रक्षा कीजिये, मेरा बचन निर्वाहना ॥
रानी गले में हार सुन्दर, मैं लखा मन भावना।
पहिन भागूं भाग तुम संग, शीघ्र उसको लावना ॥
(दौ०) बिना हार ना रहें प्राण, फिर मिट जावै सब नाता है।
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ॥५॥
है दुस्साध्य मगर अञ्जन ने, वशीभूत हो गणिका के।
भर ली हामी प्रेम से बात करी है बढ़ का के ॥
काम अन्ध को भय नहिं लज्जा, प्राण मोह को छोड़ै है।
धन धान्यादिक, बात क्या अन्न पान मुंह मोढ़ै है ॥
(छन्द) निश गया राजा के महल, सबकी जु, दृष्टि बचाय के।
रानी गले से हार भी लीना है साफ चुराय के ॥
पर चमक रत्नों की हुई, लेकर चला जब हार है।
देखा प्रकाश सु सन्तरी कहै चोर यह बदकार है ॥
(दौ०) आगे आगे अञ्जन पीछे, पहरेदार सु आता है।
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगा चोर यह हुआ शोर, बहु जन सु पिछारी दाबी है।
अञ्जन सोचै, आज ना बचूं हुए सब हाबी है ॥
हार फेंकि भू दिया उठाया, तब तक गया अगारी है।
किन्तु नगर के लोग ना लौटे करी पिछारी है ॥
(छन्द) वह चोर भग आया वहां, जहां मन्त्र माली साधता।
उतरै चढ़ै फिर चढै उतरै, मन महान विवाद था ॥
अञ्जन ने माली से कही, क्या बात है दीजे बता।
माली भी अञ्जन को सकल विद्या का बतलाया पता ॥
(दौ०) अंजन सोचै पकड़ा जाऊं काल शीश मडराता है।
अञ्जन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ॥७॥
माली से यों कही कटारी, दे मैं छींके पर जाऊं।
कैसी विद्या, मन्त्र कैसा है ला मैं अजमाऊं ॥
होकर पूर्ण निशंक चढ़ा, छींके पर मन्त्र सु भूला है।
सेठ बचन है, सत्य निश्चय कर काटा भूला है ॥
(छन्द) शंका रहित बच सेठ सच्चे, ध्यान निश्चय कर कही।
इक हाथ में सब लड़ी काटी सिद्ध विद्या है सही ॥
झट आय कर विद्या लिया, छींका सु अधर उठाय है।
हे नाथ आज्ञा दीजिये, ऐसे कही शिर नाय है ॥
(दौ०) अंजन मन्त्र प्रभाव देख विद्या को बचन सुनाता है।
अंजन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है ॥८॥
हे विद्या ले चलौ वहां, जहां सेठ करै जिन पूजा है।
चैत्य अकृत्रिम, बन्दना करूं यह मन सूजा है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरु शीश चैत्यालय में, है सेठि वहीं पहुँचाया है।
अंजन सत्कर, सेठ चरणों में शीश झुकाया है॥
(छन्द) उपकार का सत्कार करि, सब ही बताई बात है।
फिर द्वीप ढाई के जिनालय की, करी मिलि जात है॥
धन धन्य है जिनधर्म जिन जैवन्त कहि हर्षात है।
भुवि शीश नावै थुति सु गावै, जोर कर युग हात है॥
(दौ०) कहै सेठ से सेठ मेरे तो, तुम्हीं पिता औ माता है।
अजन तस्कर, उसी भव पद सु निरंजन पाता है॥९॥
तुम प्रसाद मैं विद्या पाई अब शिव पद की इच्छा है।
मन्त्र बतादो सेठ मैं मांगूं तुमसे भिक्षा है॥
देख सेठ वैराग्य भाव, चारण, मुनि तट ले जाते हैं।
ऋद्धि सु धारी, गुरू दीक्षा दे साधु बनाते हैं॥
(छन्द) तप धार अंजन महामुनि, कैलाश गिरि पर आय के।
घाते हैं चारौ घातिया, शुभ शुक्ल ध्यान सुध्याय के॥
हो केवली भगवान जग में, जैन वृष चमकाय के।
फिर चतु अघाती नाशि सिद्धालय बसे हैं जाय के॥
(दौ०) अंजन मुनी निरंजन हो गये, 'भगवत्' शीश नवाता है।
अंजन तस्कर, उसी, भव पद सु निरंजन पाता है॥१०॥

—※×※—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तमती चरित्र

लावनी ७५

सम्यक्दर्शन का निःकांक्षित, अंग सु जिसने पाला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमती बाला है ॥टेक॥
अंग देश चम्पापुर नगरी, वसु-वर्द्धन राजा भारी।
दृढ़ जिनधर्मी, सती लक्ष्मी देवी जिन के नारी ॥
पुत्र नाम प्रियदत्त, सदाचारी धार्मिक पर उपकारी।
अङ्गवती है, नारि पुत्री अनन्तमति अति प्यारी ॥
(छन्द) अष्टाह्निका के पर्व का, उत्सव किया युवराज है।
श्री धर्मकीर्ति मुनीश ढिंग, व्रत शील वसु दिन काज है।
थी साथ में पुत्री उसे भी, शीलव्रत दिलवा दिया।
मन में विनोद सुधार कर, युवराज यह कारज किया ॥
(दो०) युवा अवस्था पाई पुत्री, ब्याह करन को चाला है।
नारी-भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥१॥
देख ब्याह आडम्बर पुत्री, कहै पिता क्या करते हो।
ब्रह्मचर्य व्रत, दिला फिर क्यों विवाह चित धरते हो ॥
पिता कही पुत्री विनोद-वश, मैं व्रत तुम्हें दिवाया था।
हंसी खुशी में, और कुछ नहीं समझ में आया था ॥
(छन्द) पुत्री कही व्रत में पिता जी, क्या हँसी का काम है।
जो ली प्रतिज्ञा दृढ़ रहै, बस व्रत उसी का नाम है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर कहन लागे यों पिता, व्रत आठ दिन को लिया था।
पुत्री कहै मुनिराज मुझ से भेद कुछ ना किया था॥
(दौ०) बिन मर्यादा व्रत दिलवाया, अब न जाय वह टाला है
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है॥२॥
धन्य धन्य है महा विवेकी शील धुरन्धर यह नारी।
व्रत रक्षा करि, जगत सुख मांग दई ठोकर मारी॥
सुन्दर रूप मनोहर राजै, रति रोहिण शर्माती है।
शान्ति सौम्यता, सरलता लख शशि कला लजाती है॥
(छन्द) है कर्म जग में अति बली, छोड़ै नहीं आ उदय।
दिन एक झूला झूलने गई, बाग में मन में न भय॥
है दैवगति सु विचित्र, विद्याधर सु विमान आइया।
लखि सुन्दरी का रूप पापी, मन, सु काम सताइया॥
(दौ०) बैठी साथ विमान त्रिया, डर उसके लौट सु चाला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है॥३॥
झट पट नारि उतारि लौट फिर दुष्ट वहीं आ जाता है।
जहां सती है, अकेली आकर उसे उठाता है॥
उधर नारि विद्याधर की भी, समझी कुछ कुटिलाई है।
हृदय क्रोध कर, पति की दाबी आय पिछाई है॥
(छन्द) आकाश में लेकर सती को, जब चला है जामने।
तब क्रोध युत आती त्रिया को देख लीना सामने॥
भय खाय नारी का हृदय, विद्या को दीनी है सती।
जा डाल दो निर्जन बनी, कह कर चला गया दुर्मती॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) विद्या जाय अनन्तमती को वन जु भयानक डाला है ।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ४॥
रुदन करै वन माहिं सती पर, संकट विकट पड़ा आके ।
निर्जन वन है, नहीं मानुष जो रुदन सुनें जाके ॥
कुछ दिन बाद भील वन राजा उस मारग पर आया है ।
देख सती को, धैर्य देकर निज घर पर लाया है ।
(छन्द) देखा सती के रूप को, तन हुआ काम विकार है ।
एकान्त में कामी रहा, खोटे जु बचन उचार है ॥
मैं भूप हों सब बनचरों का, तुम बनो मम नार है ।
भोगो सु भोग मनोग सो सग, भोग वन तन खुवार है ॥
(दो०) करन बलात सती के ऊपर, जब कर उसने डाला है ।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥५॥
शील प्रभाव प्रगट वन देवी हुई सु मार लगाई है ।
पापी जन को पाप का मिलै दण्ड भय खाई है ॥
देवी कही पूज पद इसके महादेवी महानारी है ।
मात पिता घर, भेज दो करौ न तनक अवारी है ॥
(छन्द) तब भील मन दुखपाय अति, देवीवचन पालन किया
लेजा सती को शहर में, एक सेठ का जाकर दिया ॥
पहुंचाय दो इसके नगर, उन कर लिया मन्जूर है ।
देखा है सुन्दरि रूप तब, हुआ काम तन चकचूर है ॥
(दो०) कामातुर हो सेठ, सुन्दरी से बच बुरा निकाला है ।
नारी भूषण जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिता तुल्य है दुष्ट तुझे, कुछ लाज शरम नहिं आती है।
नगर प्रतिष्ठित, किन्तु ठगिया जाली परघाती है॥
उच्च कुलीन होय पर तिय को देख हृदय ललचाया है।
कामी कुत्ते, तुझे निज पद का ध्यान न आया है॥
(छन्द) दीनी है बहु धिक्कारता, कर लिये लोचन लाल है।
निज शील रक्षा हेत सुन्दर, बन गई विकराल है॥
तब सेठ क्रोधित होय सौंपी, एक कुटिला नारि को।
है काम-सेना नाम उसका, दुष्टिनी वदकार को।
(दो०) कुटला करै प्रपंच बहुत, पर सती सु हृदय विशाला है
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है॥७॥
शाम, दाम, औ दंड भेद से, कुलटा काम सु लीना है।
एक चला न, तभी राजा का जाकर दीना है॥
सिंह राज है नाम भूप का, सिंह समान क्रूर भावी।
रूप देखकर, काम पीडित होकर बन गया हावी॥
(छन्द) था दुष्ट चित कामी प्रबल बलपूर्वक अघ करना चाहा
आ गई वनदेवी तुरत, बोली है शठ करता कहा॥
दीना है जब बहु दंड, थ थर कांपता भूपाल है।
कर जोर कर मांगी क्षमा, नारी नहीं तू काल है॥
(दो०) राजा की आज्ञा से सेवक, सती को वन में डाला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है॥८॥
वन में बहु दुख सहे सती जो, पाप उदय में आया है।
किन्तु हर समय पंचपरमेष्ठि परम पद ध्याया है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम उन्हीं का हृदय धारि, पग आगे को सु बढ़ाया है।
बन कन्दर का, पार कर नगर अयोध्या पाया है ॥
(छन्द) दुक्ख के उपरान्त अब, सुख की बारी आ गई।
सुपद्म श्री है नाम जिनका, आर्यिका इक पा गई ॥
उनसे सकल दुख की कथा, सती कही आद्योपान्त है।
लखि शील भूषण पास अपने, रख लिया मन शान्त है ॥
(दौ०) धन्य सती कुलवती तू बेटी शीलवती गुणमाला है।
नारी भूषण जगत पूजित अनन्तमाते बाला है ।९॥
उधर सती के हर जाने पर, शोक नगर में छाया है।
मात पिता ने, रुदन कर हा हा कार मचाया है ॥
पिता ढूंढ़ ने चला सती को संग परिवार सु आया है।
नगर नगर में तलाशा पर न कहीं पर पाया है ॥
(छन्द) श्री सिद्ध तीर्थ सु क्षेत्र अतिशय वन्दना हित चल दिया।
पुत्री विरह में है दुखी, गृह जान को ना मन किया ॥
आया अयोध्या नगर में, जिनदत्त साले के घरें।
परिवार युत प्रियदत्त यहां पर, आय कर डेरा करें ॥
(दौ०) प्रात होत जिनदत्त साथ में, जिन पूजा को चाला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥१०॥
अतिथी का सत्कार और, आर्यिका का अहार सु देना है।
जिनदत्त नारी, गई जा कहै सती सों वैना है ॥
मेरे घर तुम चलौ कार्य में, दो सहाय हे भैंना है।
धार्मिक जन का परस्पर होता देना लेना है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) आई सती जिनदत्त गृह करि कार्य फिर वापिस गई।
जिनदत्त औ प्रियदत्त, पूजा पाठ कर आये सही ॥
प्रियदत्त देखा चौक पूरा, रो पड़े होकर विकल।
जिन चौक पूरा वह कहां, उस विन न कल है एक पल ॥
(दौ०) लाये बुला लखी निज पुत्री, जगा मोह मतवाला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥११॥
पुत्री पिता कुटम्ब सब भेंटा, रो रो नीर बहाया है।
जो जो गुजरा, हाल सब आदि अन्त बतलाया है ॥
पिता कही पुत्री घर चालौ, सती कही जग माया है।
मोह जाल में, फंसा यह जीव बहुत दुख पाया है ॥
(छन्द) मानी न एकौ बात दिक्षा, ली सु गुरुणी पास है।
घोरानुघोर सु तप किया, करती करम का ह्रास है ॥
पुनि अन्त में संन्यास धारि, तजि प्राण हुई जा देव है।
द्वादश सुरग में इन्द्र पद, कर देव देवी सेव है ॥
(दौ०) 'भगवत्' भव दे एक मनुज हो शिव पद पावै आला है।
नारी भूषण, जगत पूजित अनन्तमति बाला है ॥१२॥

—×—

उद्दायन राजा चरित्र

लावनी—७६

सम्यकदर्शन निर्विचकित्सा अंग पालि यश पाया है।
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है ॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कच्छ देश रोरवकनगर का भूप धर्म-जिन धारी है।
ज्ञानी ध्यानी, और दानी उदार चित भारी है ॥
पतिव्रता औ सम्यक्दृष्टी, धार्मिक जिन गृह नारी है।
उदार शीला, प्रभावती रानी नाम पुकारी है ॥
(छन्द) राजा उद्दायन व्रत नियम, पूजादि दान करें सदा।
पाले प्रजा का पुत्रवत, अघ मार्ग पै न चलै कदा ॥
सौधर्म इन्द्र सु निज सभा में, की प्रसंशा राय है।
इक देव वासव नाम सुनकर हृदय संशय पाय है ॥
(दौ०) करन परीक्षा भूप उद्दायन, देव सुरग से आया है।
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है ॥१॥
मुनी भेष को धारि देव ने, कोढ़ शरीर चुचाया है।
दुर्गन्ध आवै, मक्खियां सब तन सों लिपटाया है ॥
भोजन समय नगर में आकर, राजा द्वार सु आया है।
राजा रानी, भक्ति-युत मुनी देख पड़गाया है ॥
(छन्द) आहार दीना भक्ति युत, मुनि वमन कीना जोर है।
छांटा महल सब भूप का, दुर्गन्ध फैली घोर है ॥
रानी औ राजा दुख करें, पापी उदय हम पाप है।
दम्पति सु फिर मुनि अंग को धोकर किया सब साफ है ॥
(दौ०) मुनि राजा रानी शरीर पर, भी वमन कराया है।
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है ।२॥
भाग गये जन सभी, महादुर्गन्ध और हुई ग्लानी है।
वैयावृत में, लगे मन वच तन राजा रानी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज शरीर पर वमन, न उसका कुछ विचार मन कीना है।
बहु पछिताया, कहै हम पापी मुनि दुख दीना है॥
(छन्द) हम दिया प्रकृति-विरुद्ध भोजन, घोर पापी बन गये।
हा हुई मुनि तन वेदना, इस पाप से हम सन गये॥
दृढ़ भक्ति ग्लानि न मन विषैं, लखि देव मन अति हर्ष है।
हो प्रगट धन धन करै सुर, नृप सत्य सम्यक दर्श है॥
(दौ०) इन्द्र प्रशंसा करी अधिक मैंने उससे भी पाया है।
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है॥३॥
देव कही राजन तुम ज्ञानी, दृढ़ व्रत दर्शन सुखदानी।
निज शरीर पर वमन दुर्गन्ध न की मन में ग्लानी॥
सत्य जुगप्सा-रहित आप हो, धन्य धन्य यह माता है।
उदार दानी, बहुत थुनि करि सुर सुरपुर जाता है॥
(छन्द) बैठे थे भूपति एक दिन, निज महल छत पर जाय के।
बादल का टुकड़ा पवन से, देखत गया सु विलाय के॥
परिवार, तन, औ भोग सब, इस तौर ही मिट जांयगे।
निज सुत को देकर राज कहने लगे हम वन जांयगे॥
(दौ०) वर्द्धमान जिन समवशरण, दीक्षा ले ध्यान लगाया है।
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है॥४॥
किया ध्यान निश्चल चित होकर, कर्म प्रकृति निरवारी है।
घाति घातिया, बोध केवल निज किरण पसारी है॥
भव्य जीव सम्बोध अनेकों भव से पार लगाये हैं।
अन्त अघाती, नाशि कर पद सु निरंजन पाये हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) रानी भी तजि सब भोग को, भूपति ही संग तप धारिके
कीना है ध्यान महान, मन इन्द्रिय विषय को मारि के ॥
पुनि धारि अन्त समाधि, शुभ भावों सहित तन तजि दिया ॥
पहुंची है पंचम ब्रह्मसुर हुई देव छेदा तन त्रिया ॥
(दो०) 'भगवत्' सम्यकदर्श तीसरा, अंग पालि शिव पाया है
भूप उद्दायन, अचल श्रद्धानी श्रुत में गाया है ॥५॥

×

श्री रेवती रानी चरित्र

लावनी—७७

सम्यकदर्श अमूढ़-दृष्टि की, धारक दृढ़ श्रद्धानी है ।
सती शिरोमणि परम धार्मिक सु रेवती रानी है । टेक ।
विजयारध गिरि दक्षिण-श्रेणी, भूप चन्द्रप्रभ बलधारी ।
तीर्थ वन्दना, करूं, इच्छा भई ऐसी सुखकारी ॥
राज-भार सुत को देकर के, दक्षिण मथुरा आये हैं ।
पुण्य योग से मुनी गुप्ताचारज यहां पाये हैं ॥
(छन्द) मुनिराज के सुन वैन छाया महा वैराग्य है ।
जग-राग तजि निज हित करू, सद्गुरु मिले अहोभाग्य है ॥
पद लिया चुल्लक का मगर, विद्या सु राखी एक है ।
जिनधर्म करन प्रभावना, तीरथ-दरश की टेक है ॥
(दो०) उत्तर मथुरा तीर्थ वन्दना, करने की मन ठानी है ।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक, सु रेवती रानी है ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलने को तैयार हुये तब गुरु से कहन लगे वाणी ।
किसी मनुज को सन्देशा भेजौ कह दो गुरु ज्ञानी ॥
बोले गुरु श्री सूरत मुनि को वन्दना हमारी है ।
सती देवती, रानी को धर्म-वृद्धि सुखकारी है ॥
(छन्द) यह बात सुन क्षुल्लक हृदय, में क्या उठी है भावना ।
मुनि भव्यसेन प्रसिद्ध तजि, गुरु करी अन्य सराहना ॥
मैं करूं इन सबकी परीक्षा, कौन कैसा है व्रती ।
गुरु धर्म-वृद्धी कही जिसे देखूं वो कैसो है सती ॥
(दौ०) उत्तर मथुरा आ क्षुल्लक अब करन लगे मनमानी है ।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है ॥२॥
प्रथम आयकर भव्यसेन मुनि, चरणों शीश नवाया है ।
धर्म वृद्धि तक न दी अभिमान हृदय में छाया है ॥
क्षुल्लक जानी है अभिमानी, अब इन को अजमाते हैं ।
चले शौच को, मुनी तब क्षुल्लक घास उगाते हैं ॥
(छन्द) मुनि हरिततृणका ध्यान तजि, तृण ऊपरें ही चलदिये
जब शौच को बैठे कमण्डल, शुष्क विन जल के किये ॥
विद्या से जल सर जीवयुत, मुनिको दिखाया है सही ।
मुनि शौच उस जल से किया, क्षुल्लक प्रगट हो इम कही
(दौ०) नाम अभव्यसेन मुनि थारा, क्रिया रहित अभिमानी है
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है ॥३॥
मुनि श्री सूरत पास जायकर, क्षुल्लक शीश नवाते हैं ।
धर्म-वृद्धि दे, मुनी बहु वात्सल्य दर्शाते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानी, ध्यानी, धीर वीर गम्भीर सरल चित पाते हैं।
गुरू-वन्दना, कही निज मस्तक पुनि पुनि नाते हैं॥
(छन्द) अब करन रानी की परीक्षा, धरा ब्रह्मा रूप है।
जल कमल दल पर बैठि, चतु आनन सु किये अनूप है॥
व्याख्यान वेद पुराण, देखन चले पुरजन भूप हैं।
रानी न मन आनी कहै, जिन ऋषभ ब्रह्म-स्वरूप है॥
(दो०) कहै रेवती दृढ़ श्रद्धानी ब्रह्मा केवल ज्ञानी है।
सती शिरोमणि, परमधार्मिक सु रेवती रानी है ॥४॥
द्वितिय दिवस चुल्लक नारायण, शंख चक्रधरि आते हैं।
मोर मुकट युत, गोपिका मुरली तान बजाते हैं॥
देखि मनोहर बांकी झांकी भूप आदि सब जाते हैं।
किन्तु रेवती, सत्य ज्ञानी नहिं हृदय समाते हैं॥
(छन्द) फिर तीसरे दिन रूप शंकर, का धरा गौरी-सहित।
शिर जटा जामें गंग निकली, गणपती औ बैल युत॥
शनि, शुक्र, दानव, दैत्य, सेवा करें हाथ त्रिशूल है।
नर नारि राजादिक सभी, बन्दन करें मन फूल है॥
(दो०) गये सभी पर गई न रानी, हृदें न बात समानी है।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है ॥५॥
चौथे दिन चुल्लक जी ने, वीर रूप धरि लीना है।
समवशरण की, पूरण रचना चतु संघ सु कीना है॥
इन्द्र, देव, देवी, पशु, नर सब, बन्दन करत दिखाये हैं।
भव्य सेन मुनि, और सब नगर दर्श को धाये हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) राजा कहै रानी चलौ, दर्शन करौ महावीर के।
तुम ना चलौ क्या बात, बतला दो जु संशय चीर के॥
रानी कहा चौबीस जिन, होने थे सो वे हो गये।
रुद्र ग्यारह नव हरी, हो चुके सब खो गये॥
(दौ०) ना पच्चीस जिनेन्द्र, हरी दश होय कही जिनवाणी है।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है॥६॥
अब क्षुल्लक अपना तन कृश करि, रानी मन्दिर आये हैं।
बहुत व्याधियों, युक्त तन रानी ने लखि पाये हैं॥
विनय सहित रानी ने उनको शुद्ध अहार कराये हैं।
भोजन करके, गिरे भूपर हा! शब्द सुनाये हैं॥
(छन्द) रानी किया उपचार बहु, इन वमन दुर्गन्धित किया।
रानी हृदय है खेद यह, मैं कष्ट साधू को दिया॥
ले उष्ण जल तन किया निर्मल वस्त्र कोमल लाय के।
पोंछा है सब तन हाथ से, मन रही बहु पछिताय के॥
(दौ०) देखा दृढ़ श्रद्धान, धर्म थिरता क्षुल्लक मन आनी है।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है॥८॥
प्रगट रूप अपना जब करके, रानी थुति उच्चारी है।
महा विवेकी, धर्म-दृढ़ जग में उत्तम नारी है॥
गुप्ताचार्य गुरू ने दीनी, धर्म वृद्धि सुखकारी है।
करी परीक्षा, अटल श्रद्धा धार्मिक सु तुम्हारी है॥
(छन्द) धन धन्य है देवी तुम्हें, तुम शुद्ध दर्शन पालती।
दृढ़ अंग दर्श अमूढ़-दृष्टी, मूढ़ता को टालती॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह देखि राजा भी हुआ दृढ़ तप किया पुनि दम्पती।
पंचम सुरग में देव दोनों, हुये हुई बहु सम्पती ॥
(दो०) काल पाय तप धरि पावेंगे, 'भगवत्' शिव रजधानी है।
सती शिरोमणि, परम धार्मिक सु रेवती रानी है ॥८॥

—×—

सेठ जिनेन्द्रभक्त चरित्र

लावनी—७८

सेठ जिनेन्द्रभक्त उपगूहन, अंग दर्श का धारा है।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है। टेक॥
सेठ जिनेन्द्र भक्त जिनधर्मी, यथानाम गुण पाया है।
निज आलय के, सतखने जिन आलय बनवाया है॥
हीरा पन्ना जवाहरात का काम, मनोज्ञ कराया है।
रत्नमई ही, पार्श्व जिन का प्रतिबिम्ब धराया है॥
(छन्द) त्रय छत्र थे मणि मोतियों के. लग रहा वैडूर्यमणि।
अति कान्ति थी जिसकी चमकती, कौन कवि उपमा सुभणि
चहुं ओर फैला शोर भारी, सेठ जिन-मन्दिर महा।
बहु दूर देश विदेश, से आवें सु नर-नारी यहां ॥
(दो० दर्श करत ना तृप्त होत मन, लगा सु द्रव्य अपारा है।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है। १॥
सूर्यक नाम चोर सुन पाया, सेठ जिनालय धन भारी।
मन ललचाया, करन चोरी कीनी मायाचारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुल्लक भेष बनाकर अपना, व्रत उपवास किये जारी।
नगर नगर में, धर्म का दे उपदेश सु हितकारी ॥
(छन्द) आया है नगरी सेठ की, पहुँचा जिनालय जाय के।
बहु उच्चस्वर बहु विनय से दर्शन किये जिनराय के ॥
तब सेठ देखा है व्रती, लीना इसे ठहराय के।
सन्मान श्रद्धा भाव से, आहार आदि करायके ॥
(दो०) रहौ यही जिन मन्दिर की रक्षाका काम तुम्हारा है।
सहधर्मी को पतित होते भी दिया सहारा है ॥२॥
चुल्लक रहने लगे मन्दिर में, सेठ हृदय सुख पाता है।
मायाचारी, आदि का भेद समझ नहिं आता है ॥
समय पायकर सेठ करन, व्यौपार विदेशों जाता है।
मन्दिर जी का, पूर्ण अधिकार इन्हें मिल जाता है ॥
(छन्द) तब सेठ जाकर नगर बाहिर, दिये डेरा तान है।
परभात होते ही जहाजों, का करै प्रस्थान है ॥
इत चोर चुल्लक उसी निश को, लगा ठीक निशान है।
ले छत्र भागा अर्द्ध निश लख ज्योति कहै दरबान है ॥
(दो०) चोर चोर है चोर पकड़ियो, भागा चोर हमारा है।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है ॥३॥
आगे चोर पिछारी रक्षक, भाग वहां पर आये हैं।
जहां सेठ जी जान परदेश जहाज लधाये हैं ॥
देखा चोर बचूं नहिं अब मैं, शत्रु शीश पर छाये हैं।
सेठ चरण की शरण गहि ऐसे बचन सुनाये हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) रक्ष रक्ष चरण-शरण, मो प्राण रक्षा कीजिये ।
मैं ली शरण अब आपकी, मो प्राण-भिक्षा दीजिये ॥
तब सेठ देखा गौर से, क्षुल्लक रहै जिन धाम है ।
है चोर हा हा चोर व्रत लेकर करै अघ काम है ।
(दौ०) किन्तु भेष है जैन व्रती का, व्रत-अपवाद करारा है ।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है ॥४॥
सेठ समझ सब बात धर्म-निन्दा का भय मन लाते हैं ।
रक्षक जन से, कही तुम झूठा दोष लगाते हैं ॥
किया काम तुमने खोटा, जो साधू चोर बताये हैं ।
छत्र हमारे, मैंने ही इनसे यहां मगाये हैं ॥
(छन्द) फिर डाट औ फटकार दे, सब से नमन करवाय के ।
लौटा दिये सेवक सभी, क्षुल्लक एकान्त बुलाय के ॥
धिग धिग तुम्हें व्रत धारि ऐसा रहे पाप कमाय के ।
नर जन्म औ जिन धर्म पा क्यों, खो रहे अघ लाय के ॥
(दौ०) जो जिन व्रत ले पाप कमाता, होय न वह भव पारा है ।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है ॥५॥
सेठ होय मन दुखी चोर को, बहु प्रकार समझाया है ।
पाप मार्ग से, छुटाकर फिर सन्मार्ग लगाया है ॥
चोर सेठ की धार्मिकता को, देख बहुत शर्माया है ।
तजि मायावी, रूप फिर सत्य रूप अपनाया है ॥
(छन्द) थे सेठ भी दृढ़ समकिती, किस तौर से अवगुण हरा ।
जिनधर्म, व्रत-निन्दा बचा, पुनि धर्म में स्थिर करा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निजगुण औ पर-अवगुण ढकै, उपगूह दर्शन अङ्ग है।
श्रद्धानयुत धारै हृदय, पद लहै जीव अभंग है ॥
(दौ०) जैनधर्म में मूल है दर्शन, 'भगवत' भवदधि तारा है।
सहधर्मी को, पतित होते भी दिया सहारा है ॥६॥

—:❀:—

श्री मुनि वारिषेण चरित्र

लावनी—७९

सच्चा मित्र जगत में वह जो धर्म मार्ग दृढ़ करता है।
पापमार्ग से छुड़ाकर सन्मारग में धरता है ।टेक।
वारिषेण मुनि जग-प्रसिद्ध, जो श्रेणिक सुत बढ़भागी हैं।
गृही अवस्था, घोर उपसर्ग जीति भये त्यागी हैं ॥
शूली सिंहासन हुई जिनके, पुष्प माल असि नांगा है।
सुर नर-पूजित, तपस्वी ध्यानी धीर विरागी है ॥
(छन्द) मुनि वारिषेण सु एक दिन, आये नगर आहार को।
मन्त्री तनुज श्री पुष्पडाल, लखा मुनी सुखकार का ॥
श्री बाल पन की मित्रता, और साधु पद तप शक्ति है।
आहार दान सु देन, पड़गहे करी नव भक्ति है ॥
(दौ०) किया आहार चले मुनि वनको, पुष्पडाल संग करता है
पाप मार्ग से, छुड़ाकर सन्मारग में धरता है ॥१॥
आगे आगे चाले मुनिवर, पुष्पडाल सु पिछारी है।
बहुत दूर तक, गये पर मुनि नहिं वचन उचारी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिन आज्ञा कैसे घर लौटूं सोच मित्र मन भारी है ।
क्या मन कहती, होय घर नव-विवाहिता नारी है ॥
(छन्द) संकेत से बतला रहा, यह थान इतनी दूर है ।
यह वृक्ष खेलत हे जहां. यह ताल जल भरपूर है ॥
मुनिराज उत्तर दें न कुछ पहुंचे जहां मुनिगण महा ।
यह बालपन का मित्र म्हारा, वाग्पिेण सु यों कहा ॥
(दो०) पुष्पडाल संकोच हृदय पर मुनिव्रत धारण करता है ।
पाप-मार्ग से, छुड़ाकर सन्मार्ग में धरता है ॥२॥
बारह वर्ष किया तप वन में, मन में त्रिया समानी है ।
नग्न दिगम्बर, भेष पर बन रहे अज्ञानी है ॥
दर्शन थिरता नहीं देखि, मुनि वाग्पिेण मन आनी है ।
मुनि उद्धारन, दर्श-थिरता करने मन ठानी है ॥
(छन्द) मुनि पुष्पडाल सु साथ ले. आये महल दरम्यान है ।
सां चेलना कीनी परीक्षा, पाय उत्तम ध्यान है ॥
बत्तीस निज नारी बुलाई, सब शृंगार सजाय कर ।
श्री पुष्पडाल मुनीश को, समझा रहे दिखलाय कर ॥
(दो०) भोगौ भोग नारि धन लीजै, होय जु मनकी थिरता है ।
पाप-मार्ग से, छुड़ाकर सन्मारग पर धरता है ३॥
पुष्पडाल मुनि देखो नारी लज्जित हो पग पड़ता है ।
धन्य धन्य प्रभु, हरी मेरे मन को सब जड़ता है ।
राज्य सम्पदा सुन्दर नारी, त्यागि आप तप धारा है ।
कानी नारी, मेरे घर मोहित मन सु हमारा है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) धिक्कार है इस मोह को, मैं वर्ष द्वादश खो दिये।
फिर होय सम्यकदर्श में, फिर उग्र उग्र सु तप किये॥
मुनि वारिषेण मुनीश, स्थिति अंग में प्रख्यात हैं।
वसु कर्म हनि तप स्वर्ग-से, पुनि शिव महल में जात हैं॥
(दो०) पुष्पडाल औ वारिषेण मुनि 'भगवत्' भव के हरता है।
पाप मार्ग से, छोड़कर सन्मारग में धरता है ॥४॥

—※×※—

श्री विष्णुकुमार मुनि चरित्र

लावनी—८०

सहधर्मी से वात्सल्य धरि, उनका कष्ट निवारा है।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णु कुमारा है ॥टेक॥
उज्जैनी नगरी के भूपति, श्री-वर्मा शुभ ज्ञानी हैं।
जिन के गृह में, सती श्रीमती नाम पटरानी हैं॥
बलि बृहस्पति, प्रहलाद, नमुचि, चतु मंत्री बहु अभिमानी हैं
मिथ्या-मार्गी, विप्रवंशी दुर्मति कुज्ञानी हैं॥
(छन्द) एक दिन उद्यान मुनि आये अकंपन सूर हैं।
हैं संघ में मुनि सात सौ, ज्ञानी व्रती भरपूर हैं॥
आचार्य यह आदेश दीना, मौन रहना ध्यान में।
करना न वाद विवाद, बाधा होय संघ महान में॥
(दो०) संघ वन्दना हेत जात, नर नारी भूप निहारा है।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णुकुमारा है ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्री से पूछी भूपति ने, कहां जात नर नारी है।
वन मुनि आये, वहां जावें मन्त्री उच्चारी है ॥
कहें भूप हम करें बन्दना, चलो सभी वन में भाई।
राजा मन्त्री, जाय वन करी बन्दना मुनिराई ॥
(छन्द) ध्यानस्थ सब मुनिराज लखि, भूपति हृदय अति हर्ष है
लौटा नगर को भूप करि, प्रत्येक मुनि का दर्श है ॥
मन्त्री कहें महाराज यह सब मूख बोले तक नहीं।
बोलें तो खुलती पोल, कपटी ढोंग धरि बैठे सही।
(दो०) मारग में मुनि मिले एक, लखि मन्त्री वचन उचारा है
ऋद्धि विक्रिया, तपाबल पाई विष्णु कुमारा है ॥२॥
भरकर पेट बैल यह आवें, मूरख बहु अज्ञानी है।
मुनिगण निन्दा, सुनी कानों मुनि मन अकुलानी है।
गुरु-आज्ञा न सुनी इनने ये, नगर अहार विहानी है।
अभिमानी लखि, श्री गुरु बोले मधुरी वाणी है ॥
(छन्द) यदि ज्ञानका अभिमान, तो शास्त्रार्थ करलो आयकर
मन्त्री किया शास्त्रार्थ गुरु से, गये मुहका खाय कर।
मुनि ने सकल शास्त्रार्थ का, व्यौरा गुरू से जाय कर।
कह दिया, तब गुरु न कही, वहीं रहो ध्यान लगाय कर ॥
(दो०) श्रुतसागर मुनि उसी थान पर, कीना ध्यान करारा है।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णु कुमारा है ॥३॥
मानि हृदय अपमान आपना, चारों निश में आते हैं।
चहूँ ओर से, श्री मुनि ऊपर शस्त्र चलाते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि निज-आतम लीन, धर्म हित वन-रक्षक आ जाते हैं।
ज्यों के त्यों ही, कील दिये मृतक समान दिखाते हैं॥
(छन्द) परभात होते भूप देखे, दुष्ट लखि निग्रह किया।
शिर मूड़ि मुख को श्याम करि, खर रोपि पुर बाहिर किया
भ्रमते बहुत दुख पावते, गजपुर नगर में आ गये।
महापद्म राजा की सभा में, पद सु मन्त्री पा गये॥
(दो०) राजनीति में कुशल, भूप का शत्रु विजय किया भारा है
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णु कुमारा है।४॥
भूपति हुआ प्रसन्न, कहै वर मांगो जो मन भाया है।
बलि आदिक ने कही, हम वर भण्डार रखाया है॥
मुनि अकंपनाचार्य संघयुत, धर्मामृत बरषाया है।
दैव योग से, नगर गजपुर विहार कर आया है॥
(छन्द) जाते निरख भवि वन्दना को, मन्त्रिगण पा भेद है।
सब बात पूरब याद कीना, मिला था जो खेद है॥
इन कारणे हम दुख उठाया, वह यहां भी आ गये।
संहार इन सबका करें, हम ठीक अवसर पा गये॥
(दो०) भूप दीजिये राज सात दिन, वच भण्डार हमारा है।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णु कुमारा है।५॥
महापद्म दिया राज सात दिन बलि राजा हो जाता है।
दानी बनकर, मुनि सब मारन ढोंग रचाता है॥
नरमेधी हो यज्ञ चहुँ तरफ, मुनि के कष्ट लगाता है।
अस्थि चर्म औ, राल गंधक पदार्थ डलवाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) मुनि संघ को दे बीच में चहुं ओर घेरा डालकर ।
दुर्गन्ध-युत, बहु वस्तु धरि, दीन। अगिन प्रज्वाल कर ॥
उपसर्ग भारी जानि मुनि, संन्यास लीना मांड़कर ।
निश्चय हुये निज ध्यान में, सब अन्न जल को छांड़कर
(दौ०) हा हा कार मचा नगरी में, मुनि को कष्ट अपारा है ।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णुकुमारा है ॥६॥
हुये कंठ गत प्राण सात सौ, मुनि तन को दुख भारी है ।
श्रवण तरैया कांपती नभ में मुनी निहारी है ॥
मिथुला गिर निश में मुनि बोले हा उपसर्ग अपारी है ।
पुष्पदन्त थे, एक चुल्लक सों बात उचारी है ॥
(छन्द) गजपुर सुनी संघ सात सै, पा रहे अति ही वेदना ।
जा कहौ विष्णुकुमार, विक्रिया ऋद्धि से छेदना ॥
तप योग ऋद्धि सु सिद्धि उनकों, काम यह वह कर सकें ।
हैं कंठगत मुनि सात सै, संकट सकल वह हर सकें ॥
(दौ०) चुल्लक जा सब कही बात, सुनि तत्क्षण यतन विचारा है
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल, पाई विष्णुकुमारा है ॥७॥
बौना रूप बना ब्राह्मण का, यज्ञ शाला में आये हैं ।
ऊँचे स्वर से मनोहर वेद मन्त्र बहु गाये है ॥
हुआ प्रसन्न कहै बलि मांगौ, स्वामी जो मन भाये हैं ।
तीन पेंड़ भू दीजिये राजन वचन सुनाये हैं ॥
(छन्द) संकल्प कर कहने लगा, महाराज तुम ही नाप लो ।
यह तुच्छ सा है दान उसको, आप अपने आप लो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद प्रथम धरा सुमेरगिर, मानुषोत्तर दूजा जाय है।
सुर असुर नर कंपित भये, गिरि धरण गई अकुलाय है॥
(दौ०) तीजा पैंड़ बता मुझको हो, पूरण वचन तुम्हारा है॥
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णुकुमारा है॥८॥
गिरा चरण बलि शिर नाखे, प्राण दान भिक्षा मांगे।
राजा आदिक, सभी नर नारी भागे पग नांगे॥
रक्ष रक्ष वच कहें सभी, सब ने वह यज्ञ हटाया है।
वैयाव्रत करि, मुनी गण का उपसर्ग मिटाया है॥
(छन्द) जै जै सु विष्णुकुमार जै जै, जैन धर्म उचारते।
प्रासुक अलूने अन्न का आहार दिया विचार से॥
श्रावण सुदी दिन पूर्णिमा, श्री विष्णु मुनि-रक्षा करी।
तब से ही रक्षा-बन्ध होवै, शुभ प्रथा यह जग परी॥
(दौ०) चारों मन्त्री जिन-मत धारा पाप-मार्ग निरवारा है।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णु कुमारा है॥९॥
विष्णुकुमार सात सौ मुनि के, जाते प्राण बचाये हैं।
मिथ्यामग को, चूरि जिनधर्म ध्वजा फहराये हैं॥
छेदोपस्थापन पुनि करके तप बल केवल पाये हैं।
नाशि अघाती, शिवालय में जा सिद्ध कहाये हैं॥
(छन्द) वह सात सो मुनिराज भी सद्गति लई तप ध्यान से।
सद्धर्म धारण कर सभी, मिथ्यात छोड़ा ज्ञान से॥
गौवत्स सम सहधर्मियों से, वात्सल्य सदा करो।
पालो दयामय धर्म-दर्शन शिव महल में पग धरो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत्' जैन गुरू चरणों को, बन्दन सतत हमारा है ।
ऋद्धि विक्रिया, तपोबल पाई विष्णुकुमारा है ॥०१॥

—※×※—

वज्रकुमार मुनि चरित्र

लावनी ८१

सोमदत्त सुत वज्रकुमार सु, जीवन गाथा सुखदाई ।
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म-ध्वजा जग फहराई ॥टेक॥
हस्तिनागपुर बलिराजा के, मन्त्री गरुड़ नाम-धारी ।
जिनके सुत थे, प्रतापी सोमदत्त गुण भण्डारी ॥
विद्यावान चतुर सब जन में, सौम्य सरल मूरति प्यारी ।
गृहिणी जिनके, यज्ञदत्ता सु नाम कहें नर नारी ॥
(छन्द) हुई यज्ञदत्ता गर्भिणी, उपजा हृदय में दोहला ।
मैं पक्व मधुर सु आम खाऊं, आम खाने मन चला ॥
तब सोमदत्त सु आम लेने चल दिया उद्यान है ।
देखा बगीचे आम तरुतल, धरें श्री मुनि ध्यान है ॥
(दो०) असमय में उस आम वृक्ष पर, आम लगा दिये दिखलाई
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म-ध्वजा जग फहराई ॥१॥
तप प्रभाव मुनि तरु फल लागे सोमदत्त मन जानी है ।
यह मुनि उत्तम, धीर गम्भीर तपस्वी ज्ञानी है ॥
बहु फल तोड़ि किसी जन हाथों, त्रिया पास पहुँचाता है ।
बहुत विनय करि, शीश श्री मुनि चरणों में नाता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) मुनि मुख सुना सब धर्म लक्षण, मुनी श्रावक भेद है।
वैराग्य होकर धरा मुनिपद, त्याग मन का खेद है॥
गुरु पास रह आगम पढ़ा, फिर हो एकाकी तप किया।
पुनि नाभिगिरि पर सूर्य सन्मुख, योग आतापन दिया॥
(दौ०) उधर यज्ञदत्ता के उर से, बालक जन्म हुआ जाई।
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥२॥
किसी प्रकार यज्ञदत्ता को, पता पती का पाया है।
सभी कुटम्बी, साथ ले मिलने मन ललचाया है॥
कायोत्सर्ग धरें मुनि गिरि पर, देखि क्रोध उर छाया है।
मुझे छोड़कर, यहां आकर यह ध्यान लगाया है॥
(छन्द) क्यों व्यर्थ कीना ब्याह तूने, दुष्ट दुख देने मुझे।
मैं किस तरह जीवन बिताऊं, शर्म ना आई तुझे॥
बालक है मेरे पास इसका, होय कैसे चालना।
ले मैं न पालूंगी इसे, तूही इसे अब पालना॥
(दौ०) तीव्र क्रोधकर बालक लेकर, मुनि चरणों पटका जाई।
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥३॥
बालक छोड़ मुनी के आगे, अपने घर को धाई है।
होनहार-वश, एक विद्याधर गया वहां आई है॥
बन्दन करी मुनी चरणों की, बालक लिया उठाई है।
शुभ लक्षण युत, भाग्य-शाली यह पड़ा दिखाई है॥
(छन्द) बहु हर्ष युत दीना त्रिया को, दम्पती सुख पा रहे।
है पुन्य-मूरति सौम्य सूरत, बार बार खिला रहे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखि वज्र चिह्न सु नाम उसका, धरा वज्रकुमार है।
विद्याधरों मे पला बालक, बुद्धि रूप अपार है॥
(दो०) निज प्रताप से जीत भूप बहु, राज्य सम्पदा अति पाई।
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥४॥
गरुड़वेग विद्याधर कन्या, नाम पवनवेगा जानो।
पाणिग्रहण करि, दम्पति मन में बहु आनन्द मानो॥
होंनहार बलवान विमाता के, भी पुत्र हुआ आके।
निज सुत पाकर, हृदय में सोच करै शङ्का पाके॥
(छन्द) है यह कुमार महाबली, मो सुत न इस आगे रहै।
नां राज्य पाट सु कर सकै, यह आग मो तन को दहै॥
यों एक दिन करते बुराई, सुनी वज्रकुमार है।
यह सुत न मेरा मिला गिरि, पर बना हिस्सेदार है।
(दो०) आय कुमार पिता सों पूछी, मात पिता दो बतलाई॥
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥५॥
आग्रह विकट देख विद्याधर, सारा हाल बताया है।
तत्क्षण वहां से, पिता पद-वन्दन को उठि धाया है॥
सोमदत्त मुनि मथुरा नगरी, गुफा में ध्यान लगाया है।
कुमर पिता युत, आयकर मुनि पद शीश झुकाया है॥
(छन्द) मन में हुआ वैराग्य भारी, देखि माया जाल को।
मांगी है दीक्षा दो प्रभो मेरो जो सकल बवाल को॥
कचलुंच परिग्रह मुंच, सम्यक, रत्नत्रय धारण किये।
श्री वज्रकुमार मुनीश तप बल, ज्ञान बहु जागा हिये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ) पिता पुत्र अब गुरु औ चेला, रहे ध्यान में लौ लाई।
वृष प्रभावना करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ६॥
मथुरा नगरी पूतगन्ध नृप नाम उर्मिला रानी है।
महासती है, परम धार्मिक दयार्द्र चित दानी है॥
उसी नगर में बणिक सुता, जो नाम दरिद्रा आनी है।
झूठन खाकर, दुक्ख से पूर्ण करै जिन्दगानी है॥
(छन्द) युग मुनी नगर अहार को, नन्दन सु अभिनन्दन सही
कण अन्न बीनत लखि दरिद्रा मुनी अभिनन्दन कही॥
हा कष्टयुत यह बालिका, उच्छिष्ट अन्न सु खात है।
थे अवधि ज्ञानी मुनि बड़े, नन्दन कहें सुनि भ्रात है॥
(दौ०) पुण्य प्रबल यह सुता भूप के, होगी पटरानी भाई।
वृष प्रभावना, करी जिन धर्म ध्वजा जग फहराई ॥७॥
भिक्षुक बौद्ध सुनी यह वाणी निश्चय हृदय समाया है।
सुता दरिद्रा लाय निज थानक पर ठहराया है॥
भोजन वस्त्र आदि से उसकी पुष्ट करी सब काया है।
क्रम क्रम करके, दरिद्रा ने अब यौवन पाया है॥
(छन्द) अति रूपवन्त हुई दरिद्रा, झूलती जा बाग में।
देखा है भूपति ने इसे, जलने लगा कामाग में॥
पूछा है परिचय भूप, निःसंकोच सब बतला दिया।
करि ब्याह मेरे साथ, प्रश्न सु बौद्ध भिक्षुक से किया॥
(दौ०) भिक्षुक कही बौद्ध मत धारो, तब कन्या दूं नर राई।
वृष प्रभावना, करी जिन धर्म ध्वजा जग फहराई ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम-अन्ध था भूप, किया स्वीकार बौद्धमत अघ-खानी ।
ब्याह दरिद्रा, साथ करि बना दई है पटरानी ॥
नाम बुद्ध-दासी धरि उसका, काम-केलि करता भारी ।
बौद्ध धरम की, मान्यता, रानी द्वारा भई जारी ॥
(छन्द) आया परब अष्टान्हिका, उर्मिला रानी पालती ।
वसु दिना पूजन पाठ जप तप, करै रथ सु निकालती ॥
कीना सदा की भांति, रथयात्रा महोत्सव जोर से ।
श्री जैन रथ रुकवा दिया, गया बौद्ध-दासी ओर से ॥
(दो०) पहले निकलेगा रथ मेरा, जिनवर रथ दिया रुकवाई ।
वृष प्रभावना, करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥९॥
अन्नजल दिया त्याग उर्मिला, जबतक रथ न निकल जावे ।
किसी तरह से, गुफा में उभय मुनी हैं सुनि पावै ॥
रानी आय करे पद-बन्दन, संकट धर्म सु बतलावै ।
हो प्रभावना, नाथ रथ जिनवर आगे चल जावै ॥
(छन्द) सुनि बात वज्र कुमार मुनि, धीरज दिया समझाय के
विद्याधरों को करी आज्ञा, रथ निकालौ जाय के ॥
उन बांधि भूपति सैन्य सारी, जैन रथ आगे चला ।
जय जय जिनेश कहें सभी, धन धन्य रानी उर्मिला ॥
(दो०) 'भगवत्' वज्रकुमार मुनी, दिया धर्मोद्योत सु प्रगटाई ।
वृष प्रभावना करी जिनधर्म ध्वजा जग फहराई ॥१०॥

—※×※—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वानरवंशी हनुमान

लावनी ८२

हनूमान उत्तम गुण-धारी, वानर-वंशी सुखकारी ।
वानर नांही, प्रतापी कामदेव पद के धारी ।टेक॥
इनके पूर्व बुजुर्ग नाम, श्रीकंठ भूप किहकंधपुरी ।
वानर देखे, देखकर रानी बहु मन मांहि डरी ॥
भूप हुकम मारन को दीना, मन्त्री गण समझाया है ।
पूर्वज थारे, इन्हों पर नेह बहुत दर्शाया है ॥
(छन्द) तब भूप हर्षित होय मन, ध्वजाचिन्ह कपि सु कराइया
औ मुकट में भी चिन्ह कपि, चित्राम बहु करवाईया ॥
तब से सभी कहने लगे, वानर सु वंशी भूप है ।
इस नाम से सु प्रसिद्धि पा, यह वंश का सु स्वरूप है ॥
(दौ०) भये अनेक पुरुष इस कुल में, धीर वीर जग हितकारी ।
वानर नांही, प्रतापी काम-देव पद के धारी ॥१॥
इस ही कुल में प्रगट भये, प्रहलाद नाम के इक राजा ।
शुभ गुण-मण्डित, सदा करते सु प्रजा का हित काजा ॥
पवन कुमार जु पुत्र प्रपाणी शस्त्र-शास्त्र विद्या ज्ञाता ।
सती अञ्जना, महेन्द्र पुत्री से जिनका त्रिय नाता ॥
(छन्द) बाईस वर्ष वियोग पति, पुनि समागम प्रच्छन्न है ।
लखि गर्भ सासु ससुर दुहू का, हो गया मन खिन्न है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरव किया जो पाप, सो अब उदय में गया आय के।
सासू ससुर ने अञ्जना' वन में दई छुटकाय के॥
(दो०) दासी साथ अजञ्ना वन में, पाये हैं बहु दुख भारी।
वानर नांही, प्रतापी कामदेव पद के धारी २॥
मात पिता घर गई अञ्जना, उनने भी धिक्कारी है।
पापोदय से, भयानक वन में फिरै विचारी है॥
जाकर पर्वत गुफा मध्य, बालक का प्रसव सु कीना है।
गुफा निवासी, देव ने बहुत सहारा दीना है॥
(छन्द) पुण्याधिकारी वीर बालक, रूपवान प्रतापधर।
मामा मिला है अञ्जना को, ले चला अपने सु घर॥
गिर गये उछल विमान से, सिल शैल पर पड़े आय के।
सिल खण्ड खण्ड जु चूर हो गई, यह रहे सुलकाय के॥
(दो०) माता हा हा करै सखी औ, मामा शोक किया भारी।
वानर नांही, प्रतापी कामदेव पद के धारी ॥३॥
मामा देखा आ विमान से, बालक पड़ा दिखाई है।
सिला खण्ड लखि प्रतापी जान हृदय चुपटाई है॥
श्री शैलेश नाम धरि इनका, पुर को गया लिवाई है।
द्वीप हनूरह, रहे हनुमान नाम सुखदाई है॥
(छन्द) माता पिता सु मिलाप होकर, गये निज पुर आय हैं।
हनुमान गुण नित वृद्धि पाई, जगत को सुखदाय हैं॥
श्रीराम के प्रिय पात्र बनि, जालंक सिय की सुधि लई।
विद्या सु बल धरि रूप वानर, आग लंका में दई॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) महा मनोहर लंका नगरी हनूमानने दी जारी
बानर नाहीं, प्रतापी कामदेव पद के धारी ॥४॥
रावण का समझाया बहुविधि, सिया भेज करो समझौता ।
धर्म-पक्ष है, राम का तुम अनीति जोड़ नाता ॥
मानी न मानी न एक बहु युद्ध किया गया मारा है ।
अजस छा गया आज तक जग रावण धिक्कारा है ॥
(छन्द) हनुमन्त बहुदिन रामसंग, रहि पुनि किया बहु राज है
वैराग्य भी धरि राम संग, तप किया आतम काज है ॥
पुनि कर्म हनि तुंगी शिखर से, पा लिया शिव धाम है ।
हनुमान श्री शैलेश पद, बन्दन करूं वसु याम है ॥
(दौ०) 'भगवत्' मागीतुङ्गी से ही, राम वरी है शिव नारी ।
बानर नाहीं प्रतापी कामदेव पद के धारी ॥५॥

—×—

राक्षस-वंशी रावण

लावनी—८३

रावण राक्षस नहीं, वीर यह राक्षस वंशी नर बंका ।
प्रतिनारायण, प्रतापी करौ न इसमें कुछ शंका टेक॥
लवण समुद्र विषें अति सुन्दर अन्तरद्वीप वसें भारी ।
तिन में लंका, और पाताल लंक अति सुखकारी ॥
इन्द्रपुरी-सम पुरी मनोहर, दक्षिण दिश का मण्डन है ।
बहुत सुरक्षित, सुन्दराकार मान मद खण्डन है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तहां भीम और सुभीम राक्षस, देव हर्षित होय के।
श्री मेघ-वाहन भूप को, लंका दई भय खोय के ॥
दीना रतनमई हार, दीप्ति सु सूर्य चन्द्र समान है।
दी राक्षसी विद्या महा, रण-कार्य में जु महान है ॥
(दो०) पूर्व जन्म के पिता, भीम राक्षस सु प्रेमयुत दी लंका।
प्रतिनारायण, प्रतापी करौ न इसमें कुछ शंका ॥१॥
भये मेघवाहन के कुल में, नाम सुकेशि प्रबल राजा।
तिनके माली, सुमाली माल्यवान त्रय सुत साजा ॥
माल्यवान के रत्नस्रवा भये, धीर वीर योद्धा भारी।
तिनके रावण, पुत्र थे प्रतिहरि बहु विद्या-धारी ॥
(छन्द) लघु भ्रात कुम्भ सु कर्ण जिनके, अरु विभीषण नाम है
है बुद्धिवन्त प्रतापधारी, वीर शुभ गुणधाम है ॥
धर्मात्मा सम्यक सु दृष्टी, सदाचारी जीव हैं।
स्वाध्याय पूजन का नियम, अरु दान देय सदीव हैं ॥
(दो०) मुनिको दे अहार करें भोजन, शुभ सु शुद्ध श्रावक ढंका
प्रति नारायण, प्रतापी करौ न इसमें कुछ शंका ॥२॥
अनन्तवीर लेवली सु आगे, लीनी यह सु प्रतिज्ञा है।
जो तिय मोकों, न चाहे करूं न तासु अवज्ञा है ॥
यद्यपि मैं त्रिखंड प्रतिराजा, मोकों सब सुविधा भारी।
पर नहिं भोगूं, मुझे जो ना इच्छै मन से नारी ॥
(छन्द) मन्दोदरी आदिक अठारह, सहस हैं रानी महा।
अति रूपवान सुशील सुन्दर, तिन सहित वह सुख लहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है इन्द्रजीत रु मेघवाहन, आदि पुत्र प्रतापधर ।
सब शूर वीर महा प्रतापी, शुभाचार विचार वर ॥
(दो०) पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण, बाजै रावण का डंका ।
प्रति नारायण, प्रतापी करौ न इसमें कुछ शंका ॥३॥
मानी और महामानी थे, रावण यह दुर्गुण भारी ।
पापोदय से, पूर्व संस्कार हरी सीता नारी ॥
समझाया सबने न मानी, मानी मान धरा मन में ।
भ्रात विभीषण, होय उन्मुख हरवाया है रन में ॥
(छन्द) सीता-हरण के पाप से, रावण हुआ बदनाम है ।
मरि नर्क पाया दुख सहे, खोटा जु खोटा काम है ॥
श्री इन्द्रजीत रु मेघवाहन, कुम्भकर्ण सु ध्यान कर ।
शिव थान पाया क्षेत्र बड़वानी शिखर से कर्म हर ॥
(दो०) 'भगवत्' पापोदय से छाया, जग में रावण आतङ्का ।
प्रतिनारायण, प्रतापी करौ न इसमें कुछ शंका ।४॥

—※×※—

रावण की शो-लप्रतिज्ञा

लावनी—८४

शूर वीर विद्वान पुरुष भी, बुद्धि-भ्रष्ट हो जाते हैं ।
पूरव संचित, उदय, में अशुभ कर्म जब आते हैं ॥टेक॥
प्रतिनारायण महा पराक्रमी, रावण को जानें संसार ।
तीन खण्ड की, भूमि पर था जिसका पूरा अधिकार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण, होता जिसका जै जैकार।
भूमिगोचरी, और विद्याधर सबने मानी हार ॥
(छन्द) एक दिन रावण प्रतापी, जीतने नल कुंवर को।
डालकर घेरा चतुर्दिश घेर लीना नगर को ॥
तब नलकुंवर यह देखकर, दुर्भेद्य रचि प्रासाद है।
भीतर प्रजायुत बैठकर, प्रभु नाम करता याद है ॥
(दो०) भूप नलकुंवर त्रिया नाम, उपरम्भा श्रुत में गाते हैं।
पूरब सञ्चित, उदय में अशुभ कर्म जब आते हैं ॥१॥
उपरम्भा रावण पर मोहित होकर भेजी दासी है।
कामातुर हो, जाय जब शुद्ध बुधि सकल विनाशी है ॥
अर्द्ध निशा में कृष्ण वस्त्र धरि दासी डेरा आती है।
उपरम्भा की, काम बात रावण को जाय सुनाती है ॥
(छन्द) सुनते ही मूंदे कान दोनों, निन्द्य यह प्रस्ताव है।
परनारि मैं भोगू नहीं निश्चय सु मेरा जवाब है ॥
कामान्ध होकर भूप नारी निन्द्य कर्म जु आचरै।
निज पती तजि पर-पुरुष भोगै, जाय नरकों में परै ॥
(दो०) सनी विभीषण बात, इसारे में निज भ्रात बुलाते हैं।
पूरब संचित, उदय में अशुभ कर्म जब आते हैं ॥२॥
कही विभीषण सुनों भ्रात, दुर्भेद्य कोट भेदन हारा।
भेद मिलेगा, बुलालो रानी करो न नांकारा ॥
भेद लेय फिर समझा देना, शील पालि सुखदाता है।
नीति बतावै, हर तरह काम निकाला जाता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) रावण ने मृदु वच मे दई, स्वीकारता दासी गई।
कुछ क्षण में गुप्त सु रीति से, उपरम्भा डेरे आगई ॥
वह प्रगट की जब वासना, तब लंकपति ने यों कही।
सम्भोग करना शान्ति से, गढ़ जीत कर पुर मे सही ॥
(दौ०) भेद बता छैमे गढ़ तोड़ूं, भेद पूछ सुख पाते हैं।
पूरब संचित, उदय में अशुभ कर्म जब आते हैं ॥३॥
माया रूपी प्रेम वच कहकर, रानी को घर भेजा है।
रवि उगते ही, कोट तोड़ा संग सेना ले जा है ॥
टूटत कोट प्रजा सब भागी, हा हा-कार मचाया है।
रावण राजा, नलकुंवर भूप बांधि कर लाया है ॥
(छन्द) फिर बुला रानी को महल में, धर्म का उपदेश दे।
समझाय शील महात्म, छोड़ा भूप को कुछ देश दे ॥
यों कही भोगौ भोग पति संग परपुरुष का त्याग कर।
सुख से बितावौ जिन्दगी, जिनधर्म में लौ लागकर ॥
(दौ०) उपरम्भा नलकुंवर नगर गये, रावण लंका जाते हैं।
पूरब संचित, उदय में अशुभ कर्म जब आते हैं ॥४॥
कितना ज्ञानी, कितना पंडित, औ कितना बलधारी है।
अशुभ उदय पर, उसी रावण की बुधि गई मारी है ॥
दण्डक वन से हर के लेगया, सीता जो परनारी है।
समझाने पर विभीषण के भी लात सु मारी है ॥
(छन्द) मन्दोदरी आदिक सभी, समझावते मानी नहीं।
सब भूल बैठा बात, उपरम्भा से जो पहले कही ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिमान वश सब से बिगाड़ी किया खोटा काम है।
इतिहास कायम जब तलक, रावण रहै बदनाम है॥
(दो०) 'भगवत्' कर्म महा बलवाला, पंडित मूर्ख कहाते हैं।
पूरब संचित, उदय अशुभ कर्म जब आते हैं ।५॥

×

सीता हरण

लावनी—८५

जनक-सुता को हरी दशानन, जाकर के दण्डक वन में।
सिंहनाद कर, राम को दे धोका भेजा वन में ॥टेक॥
होनहार बलवान राम लक्ष्मण, संग में सीता सुकुमार।
भ्रमते भ्रमते, आये थिति कीनी, दण्डक अरण मझार॥
पुन्य योग युग चारण मुनि को, नवधा दिया शुद्ध आहार।
चरणोदक में, वृक्ष से गिरा गृद्ध पक्षी दुखकार॥
(छन्द) पूर्व भव स्मरण से, पंक्षी हृदय दलगीर है।
मुनिराज के चरणों पड़ा, रोवै न बांधै धीर है॥
श्री मुनि भवान्तर कहा सारा, दिया व्रत श्रावकतना।
श्री राम के संग रहै जटाऊ, करै सीता हित घना॥
(दो०) वर्षा योग जु चार मास का, राम निवास उसी वन में।
सिंहनाद कर, राम को दे धोका भेजा वन में ॥१॥
खरदूषन का पुत्र शम्बु, उस वन में ही विद्या साधै।
बांस-बिड़े में, बैठकर सूर्यहास्य असि आराधै॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आया खड्ग बिड़े के ऊपर, जिसकी बहु सुगन्ध छाई।
धीर प्रतापी, वीर लक्ष्मण उत आ निकस्या भाई॥
(छन्द) लखि सूर्य हास्य खड़ग मनोहर, लिया लक्ष्मण धाय के
मन हर्षवन्त उसी बिड़े पर, दिया तुरत चलाय के॥।
कट गया शम्बुकुमार शिर, गिरा धरण पर मुरझाय के।
इत खड़ग मिलन सम्वाद लक्ष्मण, कहा रघु सों आय के॥
(दौड़े) चन्द्रनखा थी मात शम्बु को भोजन ले आई क्षण में
सिंहनाद कर, राम को दे धोका भेजा वन में॥२॥
मस्तक कटा पुत्र का देखा, माता रुदन किया भारी।
गिरी धरण पर, हाय सुत करै नेत्र से जल जारी॥
घूमत फिरै वनी के अन्दर, देखे राम लखन भाई।
मोहित होकर वनी कन्या कामातुर ढिंग हो आई॥
(छन्द) महा शीलवन्त सु रामलक्ष्मण, की विद्या समझाय के।
लज्जित हुई घर चली मग में, त्रिया चरित, बनाय के॥
वध पुत्र खरदूषण सुनत, करि क्रोध रणभेरी दई।
भेजी खबर लंकेश पर, पुष्पक चढ़ा आया सई॥
(दौ०) खरदूषण बहु दल ले आया, लक्ष्मण जोश बढ़ा तन में
सिंहनाद कर, राम को दे धोका भेजा वन में॥३॥
भीर पड़े पर सिंहनाद सुनि आ जाना रण भू मांही।
मैं बैरी को, करूं वश तुम सीता तजना नांहीं॥
जा युद्धस्थल में लक्ष्मण ने, मार मार फैलादी है।
खरदूषण को, मारकर सेना सकल भगादी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) लंकेश नभ से लखी सीता राम ढिग अति सुन्दरी।
हो लुब्ध पापी काम बुधिकर सिंहनाद क्रिया करी ॥
हा राम–ऐसा शब्द सुन, रघु चले भ्राता तीर है।
तब हरी रावण जानकी, मारा जटाऊ कीर है ॥
(दौ०) 'भगवत्' रावण पापाचारा, हुआ आज कायर मन में।
सिंहनाद कर, राम को दे धोका भेजा रन में ॥४॥

—:❀:—

सीता के वियोग का दुख

लावनी—८६

राम महा विद्वान मोह-वश, सिया शोक में रोवें हैं।
सिया सिया कहि, गिरे धरणी अंसुअन मुंह धोवें हैं ॥टेक॥
तुझे अकेली छोड़ि प्रिया मैं, गया भ्रात की सुधि लेंने।
क्यों तू रूठी, किया अपराध न कुछ तेरा मैंने ॥
तू सुकुमार शरीर भखी क्या, किसी व्याघ्र ने इस वन में।
बन-दुख सहकर, बता संन्यास रूप धारा मन में ॥
(छन्द) प्यारी मेरी हा खो गई इस वियावान उद्यान में।
कैसी करूं कित जांऊं, नहिं कुछ बात आवै ध्यान में ॥
हे वृक्ष वन के दो बता, प्यारी मेरी कित को गई।
हे गिर गुफा तुम दो पता, कुछ बात तुम से कहगई ॥
(दौ०) मिलै न उत्तर तब रघुनन्दन अपना धीरज खोवें हैं।
सिया सिया कहि, गिरे धरणी अंसुअन मुह धोवें हैं ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भटकत फिरें महा अटवी में, सिया विरह में रघुराई।
हाथ मलें हैं, रुदन करि सुधि बुधि तन की बिसराई ॥
खान पान सब क्रिया त्याग दी ऐसी मोह-दशा छाई।
हाय जानकी, जानकी कहां यही रट ठहराई ॥
(छन्द) रण जात लक्ष्मण आय, भाई का किया उपचार है।
पुनि मिल विराधित मित्र से, किया योग्य एक विचार है ॥
चहुँ तर्फ भेजे दूत, सीता मात की सुधि लेंन को।
लक्ष्मण सदा सत्पर रहें श्री राम के सुख देंन को ॥
(दो०) सिया-वियोग दुखी मन राघव, तनक न निश में सोवें हैं
सिया सिया कहि, गिरें धरणी असुअन मुह धोवें हैं ॥२॥
कपिवंशी सुग्रीव राय, किहकंधापुर के थे स्वामी।
अङ्गरु अंगद, पुत्र दो नारि सुतारा है नामी ॥
साहसगति विद्याधर भारी भूप रूप धरि पुर आया।
एक रूप लखि, नारि नर सभी हृदय विस्मय छाया है ॥
(छन्द) सुग्रीव तब श्री राम ढिग, आकर करी बहु मित्रता।
दुख हरो मेरा नाथ, मैं दूंगा तुम्हें सीता पता ॥
रघुवीर ने रण भूमि में, वध किया साहसगति बली।
सुग्रीव कष्ट मिटा सकल, रघुकीर्ति भानु प्रभा खिली ॥
(दो०) सकल सुभट ले साथ, सिया सुग्रीव दशों दिश जोवें।
सिया सिया कहि, गिरे धरणी असुअन मुह धोवें ॥३॥
रत्नगिरी पर ज्वलनजटी ने, सारा हाल बताया है।
किहकन्धापति, साथ ले शीघ्र राम ढिग आया है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्वलनजटी सब बात बताई, नर लंकेश हरी सीता ।
मैं रण कीना, छीन विद्या मुझ को कीना रीता ॥
(छन्द) तब राम मन साता हुई, लक्ष्मण करी बहु गाजना ।
लंकेश पापी समझले शिर पर तेरे अब ताज ना ॥
कपिवंशियो विद्याधरो लंका किधर चालौ अभी ।
तब मन्त्र कर हनुमन्त को लंका पुरी भेजा सभी ॥
(दौ०) 'भगवत्' सिय सन्देश राम सुन, कुछ प्रसन्न मुख होवें हैं
सिया सिया कहि, गिरे धरणी असुवन मुह धोवें हैं ॥४॥

—):×:(—

हनूमान का लङ्का गमन

लावनी—८७

महावीर हनूमान चले हैं, सीता की सुधि लाने को ।
रामदूत बन, लंकपति रावण के समझाने को ।टेक।।
राम निशानी दई मुद्रिका, नीठि नीठि समझाया है ।
महासती को, पती ने शुभ सन्देश पठाया है ॥
शीघ्र गगन गति चला पवन सुत, क्षण में जा पहुंचा लङ्का ।
बनी यन्त्र-युत, भयानक देख जिसे उपजै शङ्का ॥
(छन्द) छूटें फुलिंगे अग्नि के, विकराल नाग फुकारते ।
बहु सिंह लोचन लालकर, मुंह फाड़ कर हुंकारते ॥
मारग न जाने का कहीं आकाश लगा कोट है ।
हनुमत बली करि क्रोध तोड़ा, मारि पग की चोट है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) हुआ युद्ध कोट रक्षक से, भेजा ठीक ठिकाने को।
रामदूत बन, लंकपति रावण के समझाने को ॥१॥
मृत्यु पिता की देखि खेचरी, कीना क्रोध महा बलवान।
बहु सेना ले, लड़ी मन प्रबल शत्रु जाना हनुमान ॥
मोहित दोनों, हुये वहीं, गंधर्व व्याह किया बैठि विमान।
बहु सुख पाया, राम के काम हेतु पुनि किया पयान ॥
(छन्द) लंकापुरी में जा विभीषण से, मिला हनुमान है।
सब हाल ले पहुंचा जहां, सीता धरै पति ध्यान है ॥
अन्न जल सब त्याग कर, बैठी सुशीला धीर है।
प्रच्छन्न हो तब मुद्रिका, डारी सु हनुमत वीर है ॥
(दौ०) मुद्रा देख पती अपने की, सीता बढ़ी उठाने को।
रामदूत बन, लंकपति रावण के समझाने को ॥२॥
सीता कहै कौन उपकारी, पिया सन्देशा लाया है।
मुझ दुखिया को, मृत्यु से किसने आन बचाया है ॥
शीघ्र दर्श हे भाई दीजै, कहौ पती का शुभ सम्वाद।
कहां राम हैं, लखन मेरी भी कुछ करते हैं याद ॥
(छन्द) हनुमन्त तब प्रत्यक्ष हो, माता चरण सिर नाय के।
रघुनाथ का सब हाल, सीता को दिया समझाय के ॥
अरु कही मति चिन्ता करौ, कुछ काल बांधो धीर को।
चढ़ि लंक पर वध करि दशानन, मिलोगी रघुवीर को ॥
(दौ०) एकादश दिन बाद सियाको, मिला अशन है खानेको
रामदूत बन, लंक-पति रावण के समझाने को ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हनुमत लंक उपद्रव कीना, तोड़े मन्दिर बाग बजार ।
चरण घात से गर्द मर्द कर लंका नगरी दई उजार ।।
इन्द्रजीत से युद्ध किया पुनि पहुँचे रावण के दरबार ।
कही कुकर्मी, चोर अन्यायी, पापी है धिक्कार ।।
(छन्द) चोरि कर लाया सिया, तू शूरवीर कहावता ।
स्त्री नहीं कायर है जो, अब भी नहीं शरमावता ।।
भेज दे माता सिया, करि मेल लक्ष्मण राम में ।
अब भी भला इसमें तेरा, सुख राज करि निज धाम में ।।
(दो०) 'भगवत' कहना मान दशानन, मिल ले जान बचानेको
रामदूत बन, लङ्कपति रावण के समझाने को ।।४।।

—:*:—

लङ्का पर चढ़ाई

लावनी—८८

राम लङ्क पर चढ़े, सजाकर, अपना सारा दल बल है ।
लखि सेना को, भयानक पड़ी दशौ दिश खल बल है ।।
लिये साथ सुग्रीव विराधित, जामवन्त अंगद हनुमान ।
वज्रकरण भी, सिंहोदर शूर वीर भामण्डल जान ।।
कोटिशिला लक्ष्मण ने उठाई नारायण पद की पहचान ।
जिन्हें देखते, बली साहसगति विद्या किया पयान ।।
(छन्द) वह राम लक्ष्मण अति बली लङ्का चले हर्षाय के ।
शुभ शकुन मंगल होंय मग में, मिले राजा आय के ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ काल में पहुँचा कटक, लकापुरी श्री रामका ।
जहां करै सुख सों राज्य प्रतिहर, भूप रावण नाम का ॥
(दो०) केहरि सम प्रताप के धारी अभिमानी विद्याबल है ॥
लखि सेना को, भयानक पड़ी दशौ दिश खल बल है ॥१॥
सुन पर-चक्र चढ़ा लंका पर रावण बहुत रिसाया है ।
सब देशों के खगन पर, तत् क्षण दूत पठाया है ॥
महा विवेकी भ्रात विभीषण, नीतिवाक्य समझाता है ।
तजौ सिया को परतिया नाथ महा दुखदाता है ॥
(छन्द) तुम मुकट राक्षस वंश के, तुम को न शोभा देत है ।
पर नरी नागिन विषभरी, सम्यक रतन हरि लेत है ॥
सीता सती है पतिव्रता, हर्गिज न वह तुमको चहै ।
बलभद्र नारायण प्रगट करि युद्ध साता ना लहै ॥
(दो०) तातैं सन्धि करौ उनसेती, शुद्ध हृदय तजि छलबल है ।
लखि सेना को, भयानक पड़ी दशौ दिश खल बल है ॥२॥
रावण कहै त्रिखण्ड पती में, सागर तक लों मेरा राज ।
भूमि गोचरी, रंक तारीफ करै नहिं आवै लाज ॥
सुन्दर वस्तु जगत में जेती, मैं सबका हूँ अधिकारी ।
मुझे छोड़कर, कौन गृह रह सक्ती सीता प्यारी ॥
(छन्द) तब विभीषण ने कही, मानी महा दुखकार है ।
सब नाश कुल का होयगा, लंका पुरी हो छार है ॥
करि प्रेम लक्ष्मण राम से, दे भेज उनकी नारि को ।
लकापुरी करि राज्य निर्भय, मेटि कर सब रारि को ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो) अब भी मेरा मान कहा, नहिं पछतावै कर मलमल है
लखि सेना को, भयायक पड़ी दशौ दिश खल बल है ॥३॥
होकर रावण क्रुद्ध, विभीषण के मारन उद्यम कीना ।
इन्द्रजीत भी कही धिक्कार तुम्हारा है जीना ॥
करौ बड़ाई शत्रु पक्ष की कायर हमें बनाना है ।
मिलौ जायकर, यहां रह मुंह मत हमें दिखाना है ॥
(छन्द) वह न्यायवन्त महाविवेकी, धर्ममूर्ति सुशील है ।
की मित्रता रघुनाथसे कीन्हीं जरा ना ढील है ॥
घर का भिला भेदी बताया, हाल सब लंका तना ।
श्री राम रावण मास छहलौं, किया युद्ध यहां घना ॥
(दो०) 'भगवत' पुन्य सहाय रामका उन रावणका अघबल है ।
लखि सेना को, भयानक पड़ी दशौ दिश खलबल है ॥४॥

—*×*—

राम–रावण युद्ध

लावनी—८९

रावण राम दुहूं सेना में, युद्ध भयङ्कर होता है ।
जिसे देखकर कायरों का मन धीरज खोता है ॥टेक॥
महाबली दोनों दल योधा लड़ें न मानें मन में हार ।
घात परस्पर करें मुख मार मार ध्वनि रहे पुकार ॥
हाथी से हाथी असवारी, अश्व अश्व असवार निहार ।
दल पैदल, शस्त्र ले करें रणांगण नर संहार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) सुग्रीव भामण्डल विराधित वीर हनुमत लड़ रहे।
घननाद इन्द्र सु जीत मय, भट कुम्भकर्ण सु अड़ रहे॥
घनघोर युद्ध हुआ न मानें, हार सब भट विकट हैं।
सामान्य अरु द्रव्यास्त्र से, बहु चोट करते निकट हैं॥
(दो०) करें वीर रण केलि, युद्ध सागर में मारे गोता है।
जिसे देखकर कायरों का मन धीरज खोता है ।१॥
मारे गये अनेक सुभट, लाशों के ढेर दिखाते हैं।
हाथी घोड़े कटे जहां, शोणित नदी बहाते हैं॥
रुंड लड़ें बिन मुंड, चील कौवा पल भखि हर्षाते हैं।
घायल होकर, पड़े सो हाहाकार मचाते हैं॥
(छन्द) प्रलय सम रण भूमि सारी, अति भयंकरता धरै।
जहां नित्य लाखों जीव रण में, दुखित होकर के मरै॥
सुग्रीव भामण्डल हनुमत, बन्धे तीनों वीर हैं।
तन नाग फांसों में बन्धा, पावैं सकल तन पीर हैं॥
(दो०) देख पराजय निज सेना की दुःख राम को होता है।
जिसे देखकर, कायरों का मन धीरज खोता है॥२॥
राम मित्र-गरुणेन्द्र चितारा, आया ततक्षण रण थल में
दिया राम को, गरुड़ वाहन हल मूसल बहु बल में॥
वाहन सिंह हरी को दीना, खर्ग गदा दिये आभूषण।
दोनों भ्राता, सङ्ग सेना ले आ हुँकारे रण॥
(छन्द) गरुड़ वाहन देखकर, सब नाग गये पलाय के।
सुग्रीव, भामण्डल हनू सब मिले रघु सों आय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनि हुआ युद्ध महा विकट, सुर देखते आकाश से।
भट कुम्भकर्ण जु उभय सुतयुत, बन्ध गये अहि फांस से॥
(दो०) इन्द्रजीत घननाद बन्धा भ्राता सुनि रावण रोता है।
जिसे देखकर कायरों का मन धीरज खोता है॥३॥
किया शब्द विकराल, क्रोध से नैन रक्त हो जाते हैं।
देख दशानन, डरें सब नहीं सामने आते हैं॥
मार मार कर लाश बिछादीं, लक्ष्मण शब्द सुनाया है।
क्योंरे पापी, चोर रण में आकर गर्वाया है॥
(छन्द) चोर कर लाया सिया, उसका मजा अब पाय ले।
भेजूं तुझे यम लोक में, तू देव गुरू मनाय ले॥
चिर काल तक हुआ युद्ध, रावण हृदय रोष उपाय के।
विकराल शक्ति दई लखण, धरणी पड़ा मुरझाय के॥
(दो०) 'भगवत्' शक्ती लगी राम भाई मृत सम हो सोता है।
जिसे देखकर, कायरों का मन धीरज खोता है॥४॥

×

शक्ति से छुटकारा

लावनी—९०

राम करें विल्लाप, शक्ति लक्ष्मण भैया के लागी है।
धरें न धीरज, रुदन करिं खान पान सुधि त्यागी है॥टेक॥
तो बिन मेरे वीर हाय अब, कौन खबर लेगा मेरी।
मैं पापी हूं, कराई, नारि-हित भ्राता ढेरी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौंपा मुझे सुमित्रा माता, क्या जबाव दूंगा जाके ।
मरूं यही मैं, भ्रात अब जहर हलाहल को खाके ॥
(छन्द) हा कर्म तू अति निर्दयी, सब राज पाट छुटाय के ।
वन में अकेले ही दिये, घर घर तैने भटकाय के ॥
नारी मनोहर भी छुटाई भ्रात भी मारा गया ।
हे राम क्यों जिन्दा है तू, जब हृदय का प्यारा गया ॥
(दौ०) करौ चिता तैयार, जलूं भाई संग लावौ आगी है ।
धरै न धीरज, रुदन करि खान पान सुधि त्यागी है ॥१॥
भामण्डल सुग्रीव, विराधित, जामवन्त समझाते हैं ।
सुनें न रघुवर भ्रात गति देखि पछारें खाते हैं ॥
होंनहार बलवान कटक में, विद्याधर इक आया है ।
देखि लखण को, शक्ति युत अमृत वचन सुनाया है ॥
(छन्द) कोई शीघ्र भेजौ भरत ढिंग, ना ढील कुछ कीजै यहां ।
लावौ उदक स्नान जा कन्या विशल्या है जहां ॥
होवै उदय ना भानु तब तक, लौटकर आ जाइये ।
सूरज उदय के बाद, लक्ष्मण को न जिन्दा पाइये ॥
(दौ०) हनुमान सुग्रीव चले संग भामण्डल अनुरागी है ।
धरै न धीरज रुदन कर खान पान सुधि त्यागी है ॥२॥
अर्द्ध निशा में पहुंच अयोध्या, सोवत भरत जगाया है ।
सियाहरण का लखण शक्ती सब हाल बताया है ॥
भरत कोप कर उसी समय, रणभेरी को बजवाई है ।
सजा युद्ध को, लङ्क जाने की मन ठहराई है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तब कही भामण्डल न लका चलौ भरत महाबली ।
दीजै विशल्या न्होंन जल, जिससे बचै भ्राता हली ।।
तब भरत मामा नगर जा, भेजी विशल्या साथ है ।
ले शीघ्र गति लका चले, जहां अतिदुखी रघुनाथ है ।।
(दौ०) पुन्यप्रभाव विशल्या देवी, शक्ति हरी तजि भागी है ।
धरै न धीरज, रुदन कर खान पान सुधि त्यागी है ।।३।।
लक्ष्मण तन नीरोग उठा, कहां रावण शब्द सुनाया है ।
हर्षित होकर, भ्रात को राम कंठ चुपटाया है ।।
धन्य धन्य सुर कहें गगन में धन्य विशल्या नारी है ।
शील शिरोमणि, पूर्व तप किया तासु ने भारी है ।।
(छन्द) सब कटक तन नीरोग कीना गंध लेप लगाय के ।
व्याह लक्ष्मण सङ्ग विशल्या, का हुआ हर्षाय के ।।
आनन्द मंगल हों यहां' रावण सुनी यह बात है ।
चिन्तित हृदय बहु दुख करै, करि याद सुत औ भ्रात है ।।
(दौ०) 'भगवत्' सुत अरु भ्रात बंधे, उर उनकी चिन्ता जागी है
धरै न धीरज, रुदन करि खान पान सुधि त्यागी है ।।४।।

—×—

रावण से मन्दोदरी का अनुरोध

लावनी—९१

बार बार शिरनाय पिया को समझावै पटरानी है ।
एक न मानें, दशानन कूर चित्त अभिमानी है । टेक।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहै मन्दोदरी सुनों पती मैं, त्रिया-बुद्धि करि हूं हीनी।
पै कछु स्वामी, करों विनती, तुम से करि आधीनी॥
शूर वीर विज्ञान प्रतापी, जग में आप कहाते हौ।
महा विवेकी, अंग क्यों परतिय कीच लगाते हौ॥
(छन्द) नरकादि दुखको देत यह, परनारि नागिन विषभरी।
भव भव भ्रमण दुख सहै, अघकोर क्यों प्रभु तुम हरी॥
अठदश सहस नारी तुम्हारें, एक से इक सुन्दरी।
तजि सुरी सम विद्याधरी, मन क्यों बसी भूचर नरी॥
(दौ० परनारी कुलकी कलंकिनी, घरको नाश निशानी है।
एक न मानें, दशानन कूर चित्त अभिमानी है।१॥
दशरथ सुवन राम औ लक्ष्मण, प्रगटे हैं बलभद्र हरी।
कोटि शिला को, उठा लक्ष्मण सब संशय दूर करी॥
हो प्रसन्न गरुड़ेन्द्र जिन्हें, बाहन अरु शस्त्र दिये भारी।
सुत औ भ्राता, तुम्हारे बांधे जिन ने बलधारी॥
(छन्द) भ्राता विभीषण भी तुम्हारे, मिले उन से जाय के।
सुग्रीव भामण्डल बली, हनुमान भी गया आय के॥
बहु सैन्य जिनके साथ, सागर लांघ कर आये यहां।
शक्ती विफल हुई देखते, नारी विशल्या है जहां॥
(दौ०) नाथ सन्धि करि मिलौ राम से. भेजौ उनकी रानी है।
एक न मानें, दशानन कूर-चित्त अभिमानी है॥२॥
रावण कहै त्रिया तू मूरख, मो सम को है बलधारी।
मैंने भुज से, उठाया गिर कैलाश शिखर भारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोकपाल युत इन्द्र बांध कर, मैं क्षण में लाया लंका ॥
सुर नर कांपें मेरा सुन नाम खाय मन में शङ्का ।
(छन्द) मुझको न कुछ चिन्ता बन्धे सुत, भ्रात, भाई जा मिला
मैं गर्द मर्द करूं सबों को, तेग बल से एकला ॥
वे राम लक्ष्मण छोकरे, क्या युद्ध कर जानें भला ।
सुग्रीव भामण्डल हनूमत जानते क्या रण-कला ॥
(दौ०) मैं स्वामी सब वस्तु मेरी, सीता मेरे मन आनी है ।
एक न मानें दशानन क्रूर-चित्त अभिमानी है ॥३॥
मन्दोदरी कहै सुनों स्वामी, निज मुख क्यों तारीफ करौ ।
कही न मानों, मान के शिखर चढ़े बे-मौत मरौ ॥
नाश करा के सारे कुल का घर का दीप बुझाना है ।
पर नारी से प्रेम कर घोर नरक में जाना है ॥
(छन्द) कहै तब लंकेश प्यारी, जो मिलूं रघुनाथ से ।
कायर मुझे क्षत्री कहें, ताली बजा दोऊ हाथ से ॥
मैं जीत लक्ष्मण राम को, दूं जानकी धन धाम है ।
हो वीरता जाहिर मेरी, जग में बढ़ै मो नाम है ॥
(दौ०) 'भगवत्' जीत सिया दूं उसको, मो मन यही समानी है
एक न मानें दशानन क्रूर चित अभिमानी है ॥४॥

—※×※—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम की विजय

लावनी ९२

मन्दोदरि समझाया रावण, एक समझना लाता है।
शान्तिनाथ के, भवन विद्या साधन को जाता है ।टेक।।
बहुरूपिणी नाम विद्या का रावण साधन करता है।
गिरि सम निश्चल होयकर मन्त्र ध्यान में धरता है ।।
शान्त रहो सबको यह आज्ञा, रावण प्रथम सुनादी है।
हो न उपद्रव, लंक में मन्दोदरि समझा दी है ।।
(जन्द) जाय अङ्गद आदि बहु भट शोर अधिक मचाइया।
नर नारि पीड़ित करे, बहु धन धाम नाश कराइया ।।
रावण बली निज ध्यान में अविचल रहा मन लाय के।
हो गई विद्या सिद्ध, दशमुख से कहै शिर नाय के ।।
(दौ०) मैं सेवक हूं नाथ, मेरा अब जुड़ा आप से नाता है।
शान्तिनाथ के, भवन विद्या साधन को जाता है ।।१।।
नारायण को छोड़ सभी को, मैं क्षण मार भगाऊंगी।
दीजै आज्ञा, नाथ जो करके वही दिखाऊंगी ।।
रावण बहुरूपिणि विद्या को पाकर मन गर्वाना है।
सैन्य सजाई शस्त्र बहु ले रण हुआ रवाना है ।।
(छन्द) अपशकुन मारग में हुये, लाया नहीं कुछ ध्यान में।
ध्वज, छत्र, मुकट, गिरे धरण, बहु चूर है अभिमान में ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रण में करी अति गर्जना, बहु रूप रावण ने धरे।
विकराल लंकेश्वर निरखि के राम के सैनिक डरे॥
(दो०) निज सेना को देखि वीर, लक्ष्मण बढ़ि वचन सुनाता है
शान्तिनाथ के, भवन विद्या साधन को जाता है ।२॥
रे पापी फिर मुख दिखलाया, धरि बैरुपिया बाना है।
चोर लम्पटी, काम-अन्ध का रण में कौन ठिकाना है॥
व्यर्थ कटावै क्यों सेना को, तेरी मेरी बरणी है।
एक बचैगा, दुहूं में आज अखीरी करणी है॥
(छन्द) रावण चलावै शस्त्र, लक्ष्मण देय चोट उकाय के।
लक्ष्मण चलावे वह बचावे, लड़े अति रिसि आय के॥
सामान्य शस्त्रों से भिड़े, द्रव्यास्त्र युद्ध हुआ घना।
नर नारि देखें मध्य में, नभ लखें सुर देवांगना॥
(दो०) हो क्रोधित लंकेश, योग विद्या बहुरूप बनाता है।
शान्तिनाथ के, भवन विद्या साधन को जाता है ।३॥
दोय, तीन, दश, बीस हजारों शीश हरी ने छेदे हैं।
दूने दूने, बढ़ें लक्ष्मण सब ही का भेदे हैं॥
महाबली लक्ष्मण रावण के, सारे शीश विदारे हैं।
रथ ध्वज छेदी, छत्र सब शस्त्र विफल करि डारे हैं॥
(छन्द) रावण सुमिरि कर चक्र छोड़ा, क्रोध कर मारन अरी।
वह चक्र देय प्रदक्षिणा, पुनि आ गया कर में हरी॥
लक्ष्मण घुमाकर के चलाया, चोट मर्मस्थल लगी।
रावण गिरा प्राणान्त हो, रण क्षेत्र से सेना भगी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत्' रावण मरा सकल पृथ्वीमें शोर छा जाता है
शान्तिनाथ के, भवन विद्या साधन को जाता है ।।४।।

—):×:(—

कुम्भकर्ण आदि का मुक्ति-गमन

लावनी—९३

रावण मरा शोर जग फैला, घर घर चर्चा जारी है।
शोक छा गया लंक में रोवें सब नर नारी है ।टेक।।
देखि भ्रातकी मृत्यु विभीषण, शिर धुन धुनके रोता है।
भाई भाई, हाय भाई कैसा तू सोता है ।।
तू मानी मानी न एक, तो-बिना न शोभै यह लंका।
तू रण-बङ्का, तुझे लखि हो वैरी के मन शंका ।।
(छन्द) हे भ्रात तुझ को देख कर, परिवार के जन जीवते।
हे भ्रात बकरी शेर एकें, घाट पानी पीवते ।।
हे भ्रात रूठे क्यों पड़े हो, देत क्यों उत्तर नहीं।
हे भ्रात बोलो युद्ध में, रणवीर सोते हैं कहीं ।।
(दो०) तभी राम ने आय, विभीषण को समझाया भारी है।
शोक छा गया लंक में रोवें सब नर नारी है ।१।।
आठ दश सहस्र तिया राम ने, सब को यहां बुलवाया है।
रुदन किया तिन, मृतक पति देखि तिन्हें समझाया है ।।
पद्म सरोवर पर ले जाके, शव संस्कार कराया है।
भ्रात विभीषण सहित वहीं रह कर शोक मनाया है ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) राम यह आज्ञा करी, सुग्रीव और हनुमान को।
भ्राता तनुज लंकेश के, लाओ यहां तजि मान को॥
भट कुम्भकर्ण महाबली, घननाद इन्द्र सु जीत है।
बन्धन सकल तुड़वाय, रघुनन्दन करी बहु प्रीति है॥
(दौ०) कही बात समझाय, करौ लंका सु राज्य सुखकारी है।
शोक छा गया, लंक में रोवें सब नर नारी है॥२॥
वह चरमोत्तम वीर कहें, हम राज्य करेंगे शिव पुर का।
मुनिव्रत धारें कर्म हनि वास करें अविचल घर का॥
मन्दोदरी पिता मय राजा, वीतराग पद मांगा है।
बहु समझाये, राम-इन सब झंझट को त्यागा है॥
(छन्द) शुभ योग लंका वन विषैं, सँघ सहित आये केवली।
दुख शोक क्रन्दन क्लेश भागा, खिली भवि-अम्बुज कली॥
वन्दन सकल सुर असुर आये, धर्म-वृष्टि भई तहां।
श्री राम सब को साथ ले, की वन्दना प्रभु थे जहां॥
(दौ०) सुना धर्म उपदेश जीव को, भव भव में हितकारी है।
शोक छा गया, लंक में रोवें सब नर नारी है॥३॥
इन्द्रजीत, घननाद, रायमय कुम्भकर्ण दीक्षा धारी।
कई सहस नृप, प्रभू से लिया दिगम्बर पद भारी॥
मन्दोदरी आदि सब रानी, भई आर्यिका तजि घरबार।
लंकापुर से, आर्यिका गणना अड़तालीस हजार॥
(छन्द) तप करें दुद्धर भाव युत, तजि सकल मनुज विकार को
बावीस परिषह सहें मन वच, काय शुद्धाचारको॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रावण तनुज मुनि कुम्भकरण, सु कर्म काष्ठ जलाइया।
लहि बोध केवल शुद्ध, शिव पद अजर अविचल पाइया॥
(दो०) मय सुनि ऋद्धि अनेक पाय के, उत्तम गति को धारी है
शोक छा गया लंक में रोवैं सब नार नारी है॥४॥
राम लंक में गये विभीषण, उत्सव बहुत कराया है।
अभय घोषणा, हुई नर नारी मन हर्षाया है॥
देखें राम लंक नगरी को, राम लखन सब दर्श करें।
धन्य धन्य कहि, नारि नर मन में भारी हर्ष धरें॥
(छन्द) श्री राम सीता से मिले, कवि किम कहै उस हर्ष को।
अश्रुधार सुखमय हुई प्रेमाधार करि स्पर्श को॥
षट वर्ष लंका में विभीषण, ने रखा श्री राम को।
श्री मात की करि याद, फिर आये अयोध्या धाम को॥
(दो०) लक्ष्मण राम अयोध्या आये, उसकी शोभा न्यारी है।
शोक छा गया, लंका में रोवें सब नर नारी है।५॥
हुक्म विभीषण का पाकर के विद्याधर तहां आये हैं।
रत्नमणी के, हजारों मन्दिर तहां बनाये हैं॥
लंकापुर से बना चौगुना, सुन्दर नगर विनीता है।
इन्द्रपुरी के इन्द्र की सब विभूति को जीता है।
(छन्द) आये गगन में राम लक्ष्मण, जानकी जी संग में।
पुष्पक विमान चढ़े मनोहर, वस्त्र भूषण अंग में॥
आ मिले भाई भरत अरु, श्री शत्रुघन हर्षाय के।
पुनि मात चारों के चरण, वन्दन करे घर जाय के॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) 'भगवत्' घर घर बजै दुन्दु भी, खुशी नगर में भारी है।
शोक छा गया, लंक मैं रोवें सब नर नारी ॥६॥

—❀×❀—

सीता का वन-वास

लावनी—९४

लोक कहेतें राम जानकी, जगल में छुड़वाई है।
महासती को, अकेली तजी दया नहिं आई है ॥टेक॥
आय जानकी हरी दशानन, रही कुछ दिनों तक लंका।
कुटिल कुगामी, धूर्त पापी जन मन करते शंका ॥
उच्छृंखल जो त्रिया जार, पुरुषों घर जा घर सेवें व्यभिचार
निजमग पोषक, कहें वच लंका रही सिया सुकुमार ॥
(छन्द) तब नगर जन मिलि आ कही श्री राम से यह बात है।
मर्याद-पुरुषोत्तम हृदय पर, हुआ बज्राघात है ॥
महा शीलवन्त जनक सुता, हा दैव क्या इच्छा तेरी।
त्यागूं न मैं घर से इसे, अपकीर्ति हो जग में मेरी ॥
(दौ०) शीघ्र बुलाओ महाबली, लक्ष्मण जो मेरा भाई है।
महासती को, अकेली तजी दया नहिं आई है ॥१॥
लक्ष्मण कही नाथ मैं मारूं, पापी अधम कुगामी हैं।
जिह्वा छेदूँ उन्हों की जो नारी नर कामी हैं ॥
सतीशिरोमणि सीता माता, निष्कलंक उजियारी है।
महाविवेकी, पण्डिता जग में उत्तम नारी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तब राम लक्ष्मण से कही, अपकीर्ति कुल की होयगी ।
राजा चलै अन्याय मग, तब प्रजा नहिं सुख सोयगी ॥
लक्ष्मण कही हे नाथ, पापी जन कहे सीता तजौ ।
वह धर्म मूर्ति दयालचित तजि कोप समता को भजौ ॥
(दौ०) लक्ष्मण की यह उत्तम वाणी, हृदय न राम समाई है ।
महासती को, अकेली तजी दया नहिं आई है ।२॥
पास बुलाकर सेनापति को, कही जानकी ले जावौ ।
निर्जन वन में, भयानक जगह अकेली छुटकावौ ॥
जिन वन्दना बहाना करके, लई जानकी रथ बैठार ।
बियाबान में, सारथी दई सिया को तुरत उतार ।
(छन्द) तब कही सीता राम, लोकापवाद से त्यागी मुझे ।
तजि दें न व्रत सम्यक्त को, कहना कहूँ जो मैं तुझे ॥
तप दान संयम देव-पूजा, गुरुपद नित सरदहें ।
जिन धर्म श्रावक पद तजौ ना दुष्ट लोगों के कहें ॥
(दौ०) किया रुदन गम्भीर, गिरी धरणी पर तन मुरझाई है ।
महासती को, अकेली तजी दया नहिं आई है ॥३॥
देख सारथी सिया हाल, निज जीवन को धिक्कारा है ।
मन उदास हो, लौटकर आया नगर मझारा है ॥
उधर वनी में सीता माता, हाय हाय चिल्लाती है ।
होनहार से, भूप इक पकड़न आया हाथी है ॥
(छन्द) वह बज्रजंघ नरेश, जिनधर्मी महा गुणवान है ।
सुन रुदन पूछा हाल सारा, कहै अमृत वाणि है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू धर्म की भगिनी हमारी, घर चलो सेवा करूं ।
करना प्रसूत वहीं बहिन मैं, सकल तुम पीड़ा हरूं ।।
(दौ०) 'भगवत्' राम बुलावेंगे तब सौंपूं उन ढिग जाई है ।
महासती को अकेली तजी दया नहिं आई है ।।४।।

—×—

लवणकुमार मदनांकुश से पिता का युद्ध

लावनी—९५

बज्रजंघ घर रहै जानकी, सब जन शीश नवाते हैं ।
बहुत विनय कर, भेंट दे जय जयकार मनाते हैं टेक।।
गर्भ मास नव पूरण हुये, युग पुत्र जने सीता माता ।
मास श्रावणी, श्रवण नक्षत्र पूर्णिमा सुखदाता ।।
घर घर मंगल बजें बधाये, पुण्डरीक पुर में भारी ।
हर्षित होकर, कहें सब धन्य धन्य मुख नर नारी ।।
(छन्द) दौज चन्द्र समान बालक, वृद्धता को पावते ।
बाल-लीला करि सकल, परिवार को हर्षावते ।।
नाम लवणकुमार द्वितिय सु नाम मदनांकुश कहा ।
क्षुल्लक सिद्धारथ से पढ़ी, सब शस्त्र शास्त्र कला महा ।।
(दौ०) हुये निपुण अति युद्ध कला में, क्षत्रिय लखि घबड़ाते हैं ।
बहुत विनय करि, भेंट दे जय जयकार मनाते हैं ।।१।।
बज्रजंघ यौवन युत देख व्याह करन की मन ठानी ।
सुता मनोहर, तीस दो लवण पुत्र हित सुखदानी ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी पुर का नाथ नाम पृथु, ताकी सुता सकल गुणखान ।
बज्रजंघ ने, याचना की नहिं दी उसने करि मान ॥
(छन्द) तब कुमर युद्ध किया सु भारी, जीति पृथु सुत साथ है ।
तजि मान निज कन्या दई, नावे चरण में माथ है ॥
पुनि दिग्विजय को कुमर चाले, साथ मामा को लिया ।
पूरब दखिन पच्छिम सु उत्तर, देश सारा वश किया ॥
(दौ०) गंगा सिन्धु पार तक राजा चरणों भेट चढ़ाते हैं ।
बहुत विनय कर, भेंट दे जय जयकार मनाते हैं ॥२॥
लौट दिग्विजय कर घर आये सीता मन हर्षाया है ।
सिया ढूँढ़ते, तभी नारद नगरी में आया है ॥
विनय उभय सुत करी, खुशी हो नारद वचन सुनाया है ।
दिन दिन फूलौ, फलौ हो राम लखण-सी माया है ॥
(छन्द) सुन राम लक्ष्मण नाम, पूछी कुमर सब उनकी कथा ।
नारद कहौ विस्तार से, बलभद्र नारायण यथा ॥
तब पुत्र मामा सों कही, सेना सजावौ वेग से ।
जीतें अयोध्या युद्ध कर, हम राम लक्ष्मण तेग से ॥
(दौ०) आज्ञा-वर्ती सब राजों को, रण-सन्देश पठाते हैं ।
बहुत विनय कर, भेट दे जय जयकार मनाते हैं ॥३॥
करन पिता सों जाय युद्ध, सुनि सिया हृदय अकुलानी है ।
बंधै न धीरज, करै मन शोक बहै दृग पानी है ॥
नारद सिद्धारथ वहीं बैठे, पूछें पुत्र मात क्या बात ।
कौन सताई उसे दें दण्ड सत्य जानों हे मात ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) तब सिया अपना हाल सारा, आदि से बतलावती ।
वन-गमन रावण मरण, पुनि वन त्यजन सब समझावती ॥
हो पुत्र पति से युद्ध, यह भारी अमंगल चीज है ।
महाबली लक्ष्मण राम, मति सुत द्वेष बोबौ बीज है ॥
(दौ०) तब कहें पुत्र क्यों तजी तुम्हें, हम उनका बल अजमाते हैं
बहुत विनय करि भेट दे जय जयकार मनाते हैं ४॥
करि कूंच चले रणधीर अयोध्या, कुछ दिन में पहुंचे जाके
की रणभेरी, राम लक्ष्मण सुनि बोले अकुलाके ॥
को मरने को हुआ आय कर, कौन बजाया रण-डङ्का ।
कौन बली है, जिसे नहिं राम लखण की है शङ्का ॥
(छन्द) श्रीराम ने तब दूत भेजे, सकल विद्याधर मही ।
सुग्रीव भामण्डल विभीषण, दल सहित आये सही ॥
हनुमान भी आया तुरत, सजि युद्ध साज समाज है ।
नारद कही सीता सुवन, आये रणांगण साज है ॥
(दौ०) हुये सभी मध्यस्थ सिया ढिंग पुंडरीक पुर जाते हैं ।
बहुत विनय करि, भेट दे जय जयकार मनाते हैं ॥५॥
भामण्डल से मिली सिया, और सब ने शीश नवाया है ।
साथ सिया को, लेय सब नभ विमान ठहराया है ॥
लवण राम से, लड़ा, हरी से मदनांकुश रण साजा है ।
अतुल बली लखि, राम लक्ष्मण का धीरज भाजा है ॥
(छन्द) तब राम लक्ष्मण कहें, यह बलभद्र नारायण सही ।
नारद कही तब आय, सीता पुत्र हैं दोनों यही ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तजि शस्त्र बख्तर खोलि, दोनों मिले हैं सुख पाय के।
उन गहे चरण चचा पिता इन लिये कंठ लगाय के ॥
(दौ०) 'भगवत्' घर घर मङ्गल हुवा धन्य २ सुर गाते हैं।
बहुत विनय करि भेट दे जय जयकार मनाते हैं ॥६॥

—❀×❀—

सीता की अग्नि परीक्षा

लावनी—९६

राम पुत्र को पाय हृदय में, फूले नहीं समाते हैं।
महावीरता, धीरता निरख निरख सुख पाते हैं ॥टेक॥
करें सिया की याद होय मैं, मूर्ख तजी निर्जन बन में।
लोक कहेतें, सती क्या कहती होगी निज मन में ॥
पा अवसर सुग्रीव विभीषण, भामण्डल हनुमत वीरा।
कही राम से, जानकी लावें प्रभु तुमरे तीरा ॥
(छन्द) तब राम यों कहने लगे सीता महा निर्दोष है।
जन कहैं बात विपरीत मुझको यह बड़ा अफसोस है ॥
धीज देकर के सिया, विश्वास सबका पाय कर।
निकलंक होकर पूर्ववत्, मम घर रहै वह आय कर ॥
(दौ०) तब चारों पुर पुण्डरीक, सीता लेने को जाते हैं।
महावीरता, धीरता निरख निरख सुख पाते हैं ॥१॥
चरण कमल शिरनाय, सिया से कहें वचन यह चित दीजै।
चलौ अयोध्या, अभी श्री रघुवर के दर्शन कीजै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझा करके सती सिया को, नगर अयोध्या लाये हैं।
गई सभा में, राम सिंहासन तिष्ठे पाये हैं ॥
(छन्द) देखि सीता को कही, रघुनाथ कोप उपाय के।
मैं तजी वन में तू यहां क्यों, दर्श दीना आय के ॥
सीता कही हे राम तुम, बुलवाय के धिक्कारते।
न्याय आसन बैठि, अनुचित उचित कुछ न विचारते ॥
(दो०) राम कहें दे धीज सिया, हम तुझको यह समझाते हैं।
महाधीरता वीरता निरख निरख सुख पाते हैं ॥२॥
सीता कही नाथ आज्ञा दो, जहर हलाहल पी जाऊँ।
परूं सिन्धु में, अग्नि में धसूं न मन शंका खाऊं ॥
अग्नि प्रवेश करो तुम सीता, रघुवर वचन सुनाया है।
हाथ तीन सौ का चौखूंटा अग्नि-कुण्ड बनवाया है ॥
(छन्द) भरवाय चन्दन अगर ईंधन, प्रबल ज्वाल उठाइया।
नभ लगी अग्नि लखी न जावै सकल मन दुख पाइया ॥
यह अग्नि इससे क्या बचै, सब राम को समझावते।
श्री राम मन अति कठिन हूआ एक चित्त न लावते ॥
(दो०) भामण्डल सुग्रीव लवण कुश, सब मन में दहलाते हैं।
महाधीरता, वीरता निरख निरख सुख पाते हैं। ३॥
बरसै नैनों नीर सभी के, धैर्य सभी ने खोया है।
महाभयानक, अग्नि लखि राम हृदय में रोया है ॥
कहा अनीति करी यह मैंने, कही किसी की ना मानी।
कमल-शरीरी अग्नि में बचै न अब सीता रानी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) छूटे फुलिंगे अग्नि के, नभ धूम से सारा रुका।
वह कुण्ड चहुँ दिश अग्नि से, तप्तायमान सारा हो चुका॥
वन सकलभूषण मुनीश्वर को, हुआ केवलज्ञान है।
उन वन्दना को देव सब, आये अयोध्या थान है॥
(दौ०) कहैं देव यहां राम सिया का अग्नि प्रवेश कराते हैं।
महाधीरता, वीरता निरख निरख सुख पाते हैं॥४॥
सुनी इन्द्र यह बात, देव से कही करौ सीता-रक्षा।
महासती है, धर्म उद्योत करो ऐसी इच्छा॥
महिमा शील जगत में फैले, सीता नाम अमर होवै।
शीघ्र यत्न वह, करौ जानकी ज्यों कलङ्क अपना धोवै॥
(छन्द) भरी सभा में जानकी, यों कही हाथ उठाय के।
मन से, वचन से, काय से, निद्रा दशा में आय के॥
तजि राम दूजे पुरुष की हो, स्वप्न में भी चाहना।
हे अग्नि मेरी देह को निश्चय तुरत ही दाहना॥
(दौ०) होय परीक्षा आज धर्म की, धर्म वीर करवाते हैं।
महाधीरता, वीरता निरख निरख सुख पाते हैं॥५॥
आदि प्रभू का ध्यान हृदय में, सिद्ध सु शीश नवाया है।
सूरि साधु को वन्दि करि, मन्त्र अनादि सु ध्याया है॥
निर्भय-चित्त सती सीता ने, आगे पैर बढ़ाया है।
उमगा पानी, शील माहात्म सभी लखि पाया है॥
(छन्द) अग्नि धूम न रहे कोयला, हुआ सिन्धु अगाध है।
घुटने कमर छाती सु पानी शीश बे-मर्याद है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब करी करुण पुकार, रक्षा करौ माता जानकी ।
तुम शीलवन्त सती सु भिक्षा देहु हमका प्राण की ॥
(दौ०) सिया कृपा से खिंचा सब जल प्राणदान सब पाते हैं ।
महाधीरता, वीरता निरख निरख सुख पाते हैं ॥६॥
सहस पत्रका कमल तासु मधि रत्नमयी सिंहासन जान
ताके ऊपर, सती सीता बैठारी देव सु आन ॥
शची सहित सुर जजें, देवियां, मिलकर गावें गान ।
धन्य धन्य सुर कहें गगन में छाय रही यह ध्वनि अमलान ॥
(छन्द) बहु पुष्प अम्बरसे गिरे, जय जय करी नार नारि सब ।
तरि तोय माता तीर दोनों गये हैं सुकुमार तब ॥
श्रीराम सीता से कहें, करना क्षमा देवी मुझे ।
मैं निर्दयी जो बिन विचारें, बज्र दुख दीना तुझे ॥
(दौ०) सीता कहै न दोष तुम्हारा, कर्म उदय में आते हैं ।
महाधीरता, वीरता, निरख निरख सुख पाते हैं ॥६॥
कही राम चालौ घर देवी, हुक्म तुम्हारा मानूगा ।
आठ सहस्र तिय सभी में मुख्य तुम्हें मैं जानूगा ॥
सीता कही न अब घर जाऊं, मैं उस घर को जांऊगी ।
त्रिया लिंग को, छेद पुनि तप धरि शिवपुर पाऊंगी ॥
(छन्द) निज हाथ से कच लोंच रघुवर सामने डारे सही ।
हा सिया सीता हे सिया, कहि राम मूर्छा को लही ॥
पृथ्वीमती आर्या निकट, दीक्षा धरी सुखदाय है ।
इक श्वेत साड़ी मात्र तन, तप तपै दुद्धर भाय है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) 'भगवत' सीता शील महातम, अब तक श्रुत में गाते हैं
महाधीरता, वीरता निरख निरख सुख पाते हैं ।८।।

—):×:(—

जम्बू स्वामी चरित्र

लावनी—९७

चरम केवली जम्बू स्वामी, चरित महा मंगलदाता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता । टे।
पूरब भव द्विज वर्ण भ्रात युग, श्री भवदेव सु देवल नाम ।
कर्म योग से, मात पितु दोनों पाया सुरपुर धाम ।।
अथिर दशा संसार देख, भवदेव दिगम्बर पद धारा ।
श्री गुरु संघ में, भ्रमण कर शुद्ध स्वरूप सु मन धारा ।।
(छन्द) इक दिवस श्री भवदेव, चिन्ता भ्रात के उद्धार की ।
करने अशन निज नगर आये राह ली निज द्वार की ।।
इधर देवल भ्रात का, उस दिन हुआ था व्याह है ।
बंध रहा कङ्कण मुकट शिर, घर हो रहा उच्छाह है ।।
(दो०) द्वारापेक्षण नवधा भक्ति करि पड़गाहे देवल भ्राता ।
सुरशिव पावें, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ।।१।।
ले अहार मुनिवर जब चाले, पहुँचा वन लघु भ्रात चले ।
गये दूर बहु, भ्रात देवल मन बहुत विकल्प खिले ।।
दें न मुझे आज्ञा जाने की कहा करूं कैसे जाऊं ।
नव विवाहिता, वधू घर किस प्रकार उसको पाऊं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) चलकर श्री मुनिराज ने, निज संघ में जा थिति लही
लघु भ्रात मम यह नाम देवल, मुनिगणों से इम कही ।
देवल विचारी जाहुँ घर तो, भ्रात का अपमान हो ।
दीक्षा धरूं घर जाहुं तब, इनको न मेरा ज्ञान हो ।
(दौ०) यह विचार निश्चय मन करके जाड़ा मुनिवर से नाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥२॥
द्वादश वर्ष रहा मुनि संघ में, मन विकलता हुई न दूर ।
उसी नगर में, करि विहार पुनि संघ सहित आये गुरु सूर ॥
देवल मुनि निज नारि पता लेने को चाले पुर मांही ।
बाह्य नगर के, देखि चैत्यालय दर्शन-हित जाहीं ॥
(छन्द) इक आर्यिका का देखि मुनि पूछी सकल मन बात है ।
चल-चित्त मुनि का देख अर्जिनी, कहै वच अवदात है ॥
हे नाथ थारी नारि, मा सदृश सकल गुण खान है ।
मां रूप मम वय रूप जानो, फर्क रंच न आन है ॥
(दौ०) घरसम्पति करि खर्च, बनाया चैत्यालय यह सुखदाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥३॥
देखि मुनी निज नारि, आर्यिका शीलवन्त चारित्र धरें ।
तजी विकलता होय लज्जित मन पश्चाताप करें ॥
गुरु ढिग छेदोपस्थापन करि, शुद्ध रूप संयम पाला ।
दुद्धर तप धरि, अन्त विपुलाचल आये गुणमाला ॥
(छन्द) युग भ्रात धरि सन्यास, पाया ब्रह्मसुर शुभ थान है ।
सुख भोगि चय भवदेव, सुर पाया सु उमत्त ज्ञान है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन धन्य मङ्गल नाम श्री केवलि सुधर्माचार है ।
मन वचन तन वन्दन करूं कर जोरि भुवि शिर धार है ॥
(छन्द) देवल जीव आयु पूरी करि, रागगृही नगरी आता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥४॥
अरहदास पितु मात जिनमती, उपजे नन्दन गुणशाली ।
महामनोहर, क्रांति वपु देखि लजत शशि उजयाली ॥
जम्बुकुमार नाम शुभ सुन्दर, वज्र-वृषभ नाराच धरें ।
प्रबल प्रतापी, धीर गम्भीर शान्ति चित शोक हरें ॥
(छन्द) पट बध हस्ती तोड़ सांकल, मार २ मचा वहीं ।
सब नगर हा हाकार फैला, भूप मन दुख पावहीं ॥
इक मुष्टि दे गज शीश चढ़ि सब नगर मांहि फिराइयौ ।
बल बुद्धि अद्भुत रूप लखि भूपति हृदय हरषाइयौ ॥
(दो०) महा मंत्री पद दे नृप श्रेणिक, पाई मन में बहु साता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥५॥
विद्याधर मृगांक राजा की, सुता मनोहर सुखदाई ।
मुनि वच सुनिकर, मांग यह श्रेणिक नृप की ठहराई ॥
रत्नचूल विद्याधर भारी मांगै यह कन्या क्वारी ।
नृप मृगांक ने न दी आकर घेरी नगरी सारी ॥
(छन्द) इक गगन गति खग आ कही, श्रेणिक नृपति दरबार है
हे भूप तेरी मांग मांगत रत्नचूल गंवार है ॥
बहु कटक ले सब नगर घेरा, दुखी भूप मृगांक है ।
अति बली वैरी रत्नचूल, खगेश मन सु निशांक है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सुनकर यह सम्वाद, नृपति श्रेणिक मन बहु चिन्ता लाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥६॥
जम्बुकुमार भूप चिन्तित लखि बोले वच बहु गम्भीरा।
आज्ञा दीजै भूप, मैं हरूं सकल थारी पीरा ॥
पा आज्ञा राजा पितु मा की, कुमर जाय रण हुंकारे।
प्रथम युद्ध में, अरी के आठ सहस योद्धा मारे ॥
(छन्द) पुनि बांध बैरी को लिया, पाई विजय सुकुमार है।
यह देख राय मृगांक इनका, किया बहु सत्कार है ॥
बहु वस्त्र भूषण भेंट कर, कर जोरि यह विनती करी।
धन धन्य थारी वीरता, लज्जा रखी मम इस घरी।
(दौ०) पुनि मृगांक ले सुता अपनी, नृप श्रेणिक को परणाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥७॥
बहु सन्मान देय नृप श्रेणिक, विदा किये खगपति सारे।
विपुलाचल पै, गये बन्दन "सुधर्म" गुरु सुखकारे ॥
जम्बुकुमार पूर्व भव पूछे, श्री गुरु सब वृतान्त कहा।
भई उदासी, देहु दीक्षा गुरु से यों वचन कहा ॥
(छन्द) गुरु कही जम्बुकुमार तुम, इक बार निज गृह जाय के
पुर परिजनों से हो विदा, पुनि लेहु दीक्षा आय के ॥
घर जाय मात पिता कुटम से, कहत यों समझाय के।
भव भ्रमण से भयभीत मैं, दीक्षा धरूं वन जाय के ॥
(दौ०) मात पिता परिवार कुमर को हर प्रकार से समझाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी नगर के सेठ चारि, जिनकी चतु कुन्या मनहारी।
भई सगाई, कुमर की जिनके संग अति सुखकारी ।
सुनकर यह सम्वाद, पिता माता समझावें हर बारा।
एक न मानें, कुमर तजि कहैं जगत बांधव सारा ॥
(छन्द) वह परम शीलवती सुता, कहैं व्याह आज करावही।
जैसे बनें वैसे कुंवर को, जाय हम समझावहीं ॥
पितु मात यह वच मान, तत्क्षण सकल ठाठ रचाइयौ।
दोनों सजन मिल उसी दिन, संस्कार व्याह कराइयौ ॥
(दौ०) रति सम चारों बधू परण करि कुमर आपने घर आता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥९॥
सकल भोग उपभोग वस्तु से, सजवाया सब शयनागार।
कामोद्दीपक, करे चारों नारी सुन्दर शृङ्गार ॥
चार पहर निश चारि कामिनी, बारी बारी करत पुकार।
सुनें न स्वामी, अचल सय शयन करत मन रहित विकार ॥
(छन्द) तब पद्म श्री कहै सुनों स्वामी, बात हमसे कीजिये।
हम कहें सुनिये ध्यान दे, पुनि आप उत्तर दीजिये ॥
जो गोद की तजि पेट की आशा करे वह बावला।
सुख भोग त्यागि करो तपस्या, नाथ कैसे हो भला ॥
(दौ०) षट रस भोजन छोड़ि, कटुक फल कहीं न कोई नर खाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन कर जो नर ध्याता ॥१०॥
एक कथा पद्म श्री कहदी, उत्तर दे प्रभु समझाई।
कनक श्री कही, सुनों महाराज वचन मम चित लाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम सम मूरख और जगत में, पड़ै न मुझको दिखलाई ।
परसी थाली, छोड़ जो भूखा दर दर भटकाई ॥
(छन्द) कथा कनक श्री कही, दृष्टान्त कपि का देय कर ।
सुनि कुमर सम्बोधी न मैं, भव भ्रमूं क्षण सुख सयकर ॥
तब विनय श्री यों कहै, स्वामी पाय लक्ष्मी जो तजै ।
है उस समान न मूर्ख जग, जो त्याग अमृत विष भजै ॥
(दो०) अनुपम इन्द्रिय सुखको तजि जो भावी सुख को ललचाता
सुरशिव पावै। शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥११॥
कहै कुमर हे भोली बाला, क्षण-भंगुर ये सुख सारे ।
तृप्ति न होवै, भोगते भोग सुर असुर नर हारे ॥
इनके कारण लख चौरासी, योनि फिरें मारे मारे ।
धन्य वही नर, पूज्य हैं जिन भोगों को धिक्कारे ॥
(छन्द) तब नारि रूप श्री कहै, हे नाथ हट को छोड़िये ।
सब भोग योग मिलो सु उत्तम, नहीं मुख को मोड़िये ।
चिन्तामणी कर लगा स्वामी, क्यों न इच्छित फल लहौ ।
सुर किन्नरी सम चारि नारी छोड़ि वन मारग गहौ ॥
(दो०) हा हा खाय पड़ें हम पईयां, सैयां वनों न दुख-दाता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥१२॥
कहत कुमर सुनों हो नारी, यह जग अथिर विनाशी है ।
क्षणिक विषय सुख, अन्त में आवै पूर्ण उदासी है ॥
घर कुटम्ब की झूंठी ममता, मोह गले की फांसी है ।
त्याग जगत को धरूं मुनि पद यह मो मन भासी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) बहु काल सुर के भोग भोगे, तृप्ति मन की ना भई।
तो नर सुखों का काल केता, कहा थारे मन ठई ॥
पाय कर नर-तन करौ तप, जो मिटै आवागमन।
लहि सुख अनन्त अनादि अविचल धारि दीक्षा कर्म हन ॥
(दौ०) अशुचि त्रियातन करौ सफल, धरि सम्यक रत्नत्रयज्ञाता
सुरशिव पावै, शुद्ध मन बच तन करि जो नर ध्याता ॥१३॥
होनहार इक चोर उसी दिन, चोरी करने को आया।
राजपुत्र था, नाम था विद्युत श्रुत में बतलाया ॥
सुनी सकल त्रिय कुमर बात, मन में आनन्द लहा भारी।
देखा घर में, होय व्याकुल यों पूछत महतारी ॥
(छन्द) तुम कौन आये किस लिये, यहां पर तुम्हें क्या काम है
मैं चोर चोरी करत, मेरा मात विद्युत नाम है ॥
हो बावली सी आज तुम इत उत फिरौ क्यों मात है।
दुख भरी आह कराह लेती, कहौ क्या यह बात है ॥
(दौ०) तब सुत के वैराग्य होन का, हाल कहा सारा माता।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन बच तन करि जो नर ध्याता ॥१४॥
विद्युत कहै सुनों हो माता मैं समझाऊं सुत तेरा।
मामा कह कर, करादे तू उससे परिचय मेरा ॥
माता जाय चित्र सारी पर, कही पुत्र मामा आया।
वर्ष बारलों रहा परदेश व्याह सुनकर धाया ॥
(छन्द) सुनकर कुमर बहु प्रेमसे मामा मिलन किया चाव सों
पुनि परस्पर कुशलात पूछी, अधिक मान उच्छाव सों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुभांति विद्युतकुमर को, कहि कहि कथा समझावही ।
पर स्वामी मन थिर मेरुवत, रंचक न चित में आवही ॥
(दो०) चार कथा विद्युत ने भाषी पृथक पृथक उत्तर पाता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन कर जो नर ध्याता ॥१५॥
विद्युत बहुत विवाद किया, पर मिली सफलता ना किंचित
सूखे तरु ज्यों, खिलैं ना पुष्प सुधा से कर सिंचित ॥
धन्य धन्य मुख कहै नाथ मैं, आज सत्य मारग पाया ।
मुझे उबारौ, नाथ मैं पापी शरणागत आया ॥
(छन्द) निज हाल अपना आदि से ले, अन्त तक बतलाइया ।
मैं चोर चोरी करन आया, कपट भेष बनाइया ॥
लखि धीरता गम्भीरता, और त्याग दृढ़ वैराग्य को ।
मैं आज जीवन सफल कीना, दर्श कर बढ़ भाग्य को ॥
(दो०) चारों पहर निशा के बीते, भानु किरण निज प्रगटाता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ।.१६॥
उठकर कुमर लिया वन मारग, सब नगरी में शोर भया ।
कहें परस्पर, प्रतापी कुमर बताओ किधर गया ॥
नांगे पैर भजा राजा भी, आया सेठ के दरवाजे ।
पुरजन परिजन, करत हा हा आवें भाजे भाजे ॥
(छन्द) तब भूप इक शिविका सजाई अति मनोज्ञ विशाल है
पधराय तामें ले चले वन कुमर गुण-गण-माल है ॥
श्री रायश्रेणिक सेठ दोनों, कन्ध निज शिविका धरें ।
नर नारि पीछे चलत मारग, शब्द जय जय उच्चरें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) गये जहां वन श्री सुधर्मगुरु गणनायक जमविख्याता ।
सुर शिवपावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥१७॥
शिविका तजि गुरु वन्दन कीना मांगत प्रभु दीक्षा दीजै ।
जा सुखकारी, पाप-हारी मंगलमय शिव लीजै ॥
केश लुंच तन वस्त्र उतारे, भये दिगम्बर मुनि ध्यानी ।
दुद्धर तप करि, किया नर जन्म सफल भव अघ-हानी ॥
(छन्द) चोर विद्युत धरी दिक्षा, शुद्ध मन वच काय कर ।
श्री सेठ भी सयम धरा, धन धाम मोह नशाय कर ॥
श्री जिनमती माता भई, आर्या सकल गुण-मंडिता ।
चारों बधू तप करें दुद्धर, धीर वीर सु पण्डिता ॥
(दौ०) भव्य अनेक धरे व्रत चारित, कर्म नाशि पावें साता ।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन कर जो नर ध्याता ॥१८॥
श्री सुधर्म गुरु केवल पाया, जम्बु मुनी श्रुत केवल-ज्ञान ।
सिद्ध शिला गुरु, गये उस दिना स्वामी पद अर्हन्त महान ॥
भव्य अनेक भवोदधि तारे, करि विहार भू पर भगवान ।
मथुरा नगरी, जेठ, सुदि सप्तम पायौ पद निर्वाण ॥
(छन्द) विद्युत मुनी मथुरा पुरी, उपसर्ग सहि विजयी हुये ।
पुनि शुद्ध आतम रूप ध्याया, उच्च पद मांहीं गये ।
माता पिता चतु नारि तप कर स्वर्ग षष्ठम पावहीं ।
अनुक्रम सु नर भव पाय, तप कर मोक्ष पद सु लहावहीं ॥
(दौ०) 'भगवत्' मंगल रूप चरित यह, मन वच शुद्ध होय गाता।
सुरशिव पावै, शुद्ध मन वच तन करि जो नर ध्याता ॥१९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोरठ–श्री प्रभु जम्बूकुमार, चरम केवली की कथा ।
धारै हृदय मझार, सो नर सुर शिव पद लहै ॥
मैं मूरख बुधिहीन, आगम के अनुसार यह ।
रच्यौ छन्द सुख लीन, भगवत् भक्ति हृदय धरी ॥

—:०:—

अन्तिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु

लावनी—९८

श्री श्रुतधारी भद्रबाहु मुनि, चरित महा मंगल दाता ॥
जो भवि ध्यावैं, सुने बांचै सो लहै शिव सुख साता । टेक॥
नगर कोटपुर सोमशर्म द्विज, त्रिया सोमश्री सुखदानी ।
तिन गृह जन्मे, प्रतापी भद्रबाहु सुत श्रुत-ज्ञानी ॥
चौदह वटका खेल नगर, बालक खेलन की मन ठानी ।
उसी जगहपर, दैव योग आये गुरु गोवर्धन ध्यानी ॥
(छन्द) श्रुत पूर्ण गोवर्धन गणी, लखि भद्रबाहु कुमार को ।
शुभ चिह्न लक्षण निमित से, जाना श्रुती सुखकार को ।
विकराल पंचम काल अन्तिम, होय यह श्रुत-केवली ।
जिनधर्म भानु प्रकाशने, मिथ्यात तम को दल मली ॥
(दो०) कर विचार गुरु शिक्षा देने, जा कर पूछे पितुमाता ।
जो भवि ध्यावैं, सुने बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१॥
अल्प काल गुरु पास सर्व, विद्या सीखी सुखदाय महा ।
छन्द व्याकरण नीति, सब ज्ञान शास्त्र का भेद लहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज गृह जा पुनि राजसभामें, वाद जीति जग यश पाया ।
काल लब्धि पा, फेरि संयम लेने मन ललचाया ॥
(छन्द) पितु मात राजादिक कुटम सबसे ममत्व निवार के ।
गुरु पास आ भव फांस तोड़न, लिया संयम धारि के ॥
लखि संघ भार समर्थ गुरु, आचार्य पद दीना सही ।
श्री भद्रबाहु सु सूरि अब, सङ्घ-युत विहरत मही ॥
(दौ०) आये करत विहार प्रभु पुनि, नगर उज्जैनी विख्याता
जो भवि ध्यावै, सुनें वांचै सो लहे शिव सुखदाता २॥
सङ्घ मुनी चतुवीस सहस, सब नग्न दिगम्बर पद धारें ।
ज्ञानी ध्यानी तपस्वी क्रोध मोह मद निरवारें ॥
श्री रामल्याचार द्वितीय श्री, थूलभद्र थूलाचारज ।
श्री विशाख मुनि, सङ्घ में यह चारों थे गुण-वारिज ॥
(छन्द) जिन धर्म सूर्य प्रकाश करते, भव्य जन सम्बोधते ।
मुख वचन धर्म सुधा वरसते, चलत मारग सोधते ॥
मन वचन काय त्रिगुप्ति पालें, पंच महाव्रत धारते ।
पच समिति तप कर शस्त्र लेकर, कर्म रिपु को मारते ॥
(दौ०) दया शील रत्नत्रय धारक, शुद्ध निजातमको ध्याता ।
जो भवि ध्यावै, सुनें वांचै सौ लहै शिव सुख साता ॥३॥
राज्य करै उज्जैन नगर, श्री चन्द्रगुप्त राजा भारी ।
प्रबल प्रतापी, धर्म-धारी चन्द्रश्री तसु नारी ॥
शयन करत निश अन्तिम पहरे, स्वप्न लखे अति दुखकारी ।
तजि निद्रा को, भयातुर राजा मन चिन्ता जारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) शुभ पुण्य योग उद्यान में, मुनि सङ्घ आगम जान के।
बन्दन चलौ नृप प्रजा युत, आनन्द मन बहु आन के ॥
गुरु पद कमल की वन्दना, करि राय पूछ स्वप्न फल।
श्री भद्रबाहु मुनीश, श्रुत धारी कहैं फल योग बल ॥
(दौ०) राजा स्वप्न कहै गुरु सन्मुख पृथक पृथक उत्तर पाता।
जो भवि ध्यावै सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥४॥
सुरतरु शाखा भंग प्रथम, यह, स्वप्न प्रगट राजा कीना।
धरि संयम त्यागै, घोर कलिकाल होय उत्तर दीना ॥
सूर्य अस्त फल अङ्ग पूर्व का, ज्ञान न पंचम काल लहै।
शशि मण्डल में छिद्र, नर जिन शासन से विमुख रहैं ॥
(छन्द) अहि कृष्ण द्वादश फणसहित, दुर्भिक्ष बारह वर्ष हो।
सुर विमान विपर्य गति, चारण मुनी नहिं दर्श हो ॥
देव विद्याधर कहीं, कलिकाल में न लखावहीं।
घूरे कमल फल वंश क्षत्री, धर्म अंश न पावहीं ॥
(दौ०) क्षत्री विषय लम्पटी होवें, सत्य धर्म नहिं मन भाता।
जो भवि ध्यावै, सुने बांचै सो लहै शिव सुख साता ।५॥
व्यन्तर देव नचें घर घर में, नीच देव पूजा पावैं।
चमक आगिया, धर्म जिन न्यून प्रबल मिथ्या गावैं ॥
तोय रहित सर लखा, धर्म की कथा न उत्तर प्रान्त रहै।
कुछ जल देखा, दिशा दक्षिण में धार्मिक क्रांति लहै ॥
(छन्द) स्वर्ण भाजन खीर भोजन, श्वान करते देखिया।
उच्च कुल निर्धनी हों, गृह नीच लक्ष्मी पेखिया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गज पीठि कपि आरूढ़, फल अकुलीन नृप पद पावहीं।
क्षत्रिय नृपति सेवक रहें, बहु दासता मन लावहीं ॥
(दो०) उदधि लोप मर्याद करै राजा अनीति मारग जाता।
जो भवि ध्यावै सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥६॥
लघु बच्छा रथभार वहें बालक व्रत गहि पीछै त्यागें।
राज पुत्र था गर्दभ सवार राजा मिथ्या मग लागें ॥
रत्न धूलि से ढके मुनी पद धारि पूजादिक चाह करें।
लड़ै परस्पर युगल गज, अनावृष्टि अतिवृष्टि करें ॥
(छन्द) इस स्वप्न फल शशिगुप्त सुनि, भव भोगसे भय आनिके
तजि सकल राज समाज, दीक्षा धरी गुरु वच मानि के ॥
श्री भद्रबाहु मुनीश, चर्याहेत पुर आये सही।
जिनदास गृह षट दिवस बालक, गच्छ गच्छ सु वच कही ॥
(दो०) मुनि पूछी किम काल, वर्ष द्वादश प्रमाण शिशु वच गाता
जो भवि ध्यावै, सुनें बाचै सो लहै शिव सुख साता ॥७॥
सुनकर बालक वचन गुरू, निज अन्तराय जाना मन में।
छोड़ि अशन को आय कर योग दिया फिर वन में ॥
निमित ज्ञान से बाल वचन का, सारा फल प्रत्यक्ष लहा।
सकल संघ को बुलाकर पास प्रभू यह वचन कहा ॥
(छन्द) सब सुनों संघ मुनीश यहां द्वादश वरस दुष्काल हो।
बरसै न जल भू मध्य में, महा भयानीक अकाल हो ॥
नहिं पलि सकै मुनि धर्म यहां, इससे तजौ इस देश को।
दक्षिण चलौ जहां रख सकौ, निर्विघ्न श्री मुनिवेश को ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दौ०) सुनकर हितकर वचन संघ सब गुरु चरणों को शिर नाता
जो भवि ध्यावै, सुनें वांच सो लहै शिव सुखदाता ॥८॥
कर आज्ञा शिरोधार्य गमन सब दक्षिण दिश का ठहराया।
नगर उज्जैनी, भव्यजन समाचार यह सुन पाया ॥
आये सब नर नारि चित्त में छाई व्याकुलता भारी।
सभी सेठ मिल, रहे श्री गुरु सों इमि वच उच्चारी ॥
(छन्द) हे नाथ द्वादश वर्ष, क्यों सौ वर्ष का जु अकाल है।
नहिं खर्च होसक्ता हमारे, नाथ बहु धनमाल है ॥
दिन रैन युग कर दान बांटें सत्य यह वच मानिये।
है अतुल धन धान्यादि हमारे नाथ शंक न आनिये ॥
(दौ०) समझावें तब भद्रबाहु गुरु, पूर्ण रूप श्रुत के ज्ञाता।
जो भवि ध्यावै, सुनै वांचै सो लहै शिव सुख साता ॥९॥
सुनों सुधी धरि ध्यान तुम्हारे धन धान्यादि अतुल जाना।
भक्त साहसी, धीर जिन धर्म परायण यह माना ॥
किन्तु यहां मुनि धर्म नहीं पल सक्ता शुद्ध रूप भाई।
इससे हमने, दिशा दक्षिण जाने की ठहराई ॥
(छन्द) होकर निरुत्तर श्रावकन, तब संघ मुनिवर सों कही।
रहिये यहां हे नाथ, हम सबविधि करें भक्ती सही ॥
निज प्राण रहते नाथ हम, चरणों की सेवा में रहें।
सम्पति अटूट अहार आदिक, दे गुरु पद सर दहें ॥
(दौ०) हमें छोड़कर कहीं न जावौ, सुनों मुनीश्वर सुख दाता।
जो भवि ध्यावै, सुनै वांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन कर ऐसे वचन, राजाचारज हर्षाये ।
थूलभद्र मुनि, और थूलाचारज भी ठहराये ॥
होनहार था बुरा और भी, रहे मुनी दश होय हजार ।
भद्रबाहु गुरु, संघ युत दक्षिण दिश को किया विहार ॥
(छन्द) संग द्वादश सहस मुनि करते विहार चले तहां ।
भव्यजन सम्बोधते, श्री चन्द्रगिरि पर्वत जहां ॥
आकाश वाणी हुई, गुरुवर निमित्त ज्ञान लगाइया ।
निज आयु अन्त विचार करि, सब संघ को समझाइया ॥
(दो०) करौ विहार सभी मुनिराई, तोड़ि देहु मुझ से नाता ।
जो भवि ध्यावै, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख दाता ॥११॥
श्री विशाखाचार्य मुनी को संघभार सोंपा सारा ।
चन्द्र मुनी युत, गुफा में निज सन्यास योग धारा ॥
चन्द्रगुप्त मुनि चरणों की सेवा, में तल्लीन रहैं ।
कुछ दिन बीते, अशन विन तभी गुरू यों वचन कहैं ॥
(छन्द) जावौ अशन के हेत वन में, मार्ग आगम युक्त है ।
निर्दोष जो आहार दाता, देय मुनि को भुक्त है ॥
शशिगुप्त मुनि चर्या करी, वनसुरी की बहु परीक्षा ।
नगरी रची भवि जन सहित, जब लखी दृढ़ मुनि दीक्षा ॥
(दो०) बहुत दिनोंके बाद मुनीश शशिगुप्त शुद्ध भोजन पाता ।
जो भवि ध्यावै, सुने बांचै सो लहै शिव सुख दाता ॥१२॥
पड़ा बहुत दुर्भिक्ष मचा, उत्तर दिश हाहाकार महा ।
जर पशु मूवे, विना त्रण धान्य सभी ने त्रास लहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नगर उजैनी के धनिकों, ने भोजन वस्त्र दिये भारी।
यह सुन करके, भिखारी जन घेरी नगरी सारी ॥
(छन्द) इक दिवस भोजन करि मुनी, जब लौटकर वन आरहे
पीछे रहे मुनि वृद्ध उनको, मार कर सब खा रहे ॥
यह देखि श्रावक जन करी विनती श्री मुनिराय से।
वन में पलै संयम नहीं नगरी वसौ सब आय के ॥
(दौ०) कहा करें हम प्रभू वने यह, भिखमंगे दुख के दाता।
जो भवि ध्यावै, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१३॥
बन तजि सब नगरी में आये, तो भी मिला न सुख भाई।
घेरें इनको, भिखारी तब लाठी कर ठहराई ॥
दिन में भोजन बनें नहीं, तब निश में लाना तय पाया।
कर में लाठी, कमण्डल भोजन पात्र सु ठहराया ॥
(छद) निश लेय भोजन धरें, दिन में खाय निज स्थान में।
अब रूप शिथिलाचार फैला, लगै नहिं मन ध्यान में ॥
बड़दन्त कृष्ण शरीर, वृद्ध मुनी जु रूप डराइया।
निश में निरख इक कामिनी, भय खाय गर्भ गिराइया ॥
(दौ०) तब श्रावक जन कही, वस्त्र धारौ तुम तन भय उपजाता
जो भवि ध्यावै, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१४॥
त्याग सकल आगम मर्यादा, धारण वस्त्र किये तन में।
विषय लम्पटी, काय रक्षा का ध्यान रहा मन में ॥
अर्ध फाल मत चला प्रथम, पुनि बने श्वेत पट के धारी।
इन्द्रिय-पोषक, रचे बहु ग्रन्थ बने शिथिलाचारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) इमि वर्ष द्वादश कार व्यतीत, अनीत मारग धाइया।
मुनि भेष तजि अघ भेष धरि, विपरीत रूप बनाइया॥
दुर्भिक्ष पूरण हुआ, अम्बर से पड़ी जल धार है।
त्रण धान्य पैदा हुआ, पशु नर करी जय जयकार है॥
(दौ०) दक्षिण दिश से श्री विशाख सङ्घ उत्तर भारत को आता।
जो भवि ध्यावैं, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता॥१५॥
सङ्घ दोय दश सहस्र मुनी ले, आये चन्द्रगिरी स्वामी।
चन्द्रगुप्त मुनि करी, वन्दना ठहराये गुणधामी॥
वेश वृद्ध लखि चन्द्रगुप्त के, प्रति वन्दना न की मुनिराय।
चरित निहारें सभी मुनिवर के मन रही संशय छाय॥
(छन्द) किया सब उपवास तब, शशिगुप्त वचन उचार है।
हे नाथ नगरी श्रावकों युत, करौ शुद्ध अहार है।
तब साधु सब आहार लेकर आ गये निज धाम हैं।
भूले कमण्डल एक क्षुल्लक, गये पुनि उस ठाम हैं॥
(दौ०) टंगा कमण्डल तरु शाखा, पर नगर दृष्टि में नहिं आता
जो भवि ध्यवें, सुनें बांचै सो लहै शिव सुखसाता॥१६॥
आकर हाल कहा सब मुनि से, तब गुरु इमि मन में धारी।
चन्द्रगुप्त मुनि, शुद्ध संयम है अतुल पुण्य धारी॥
इसके पुण्य प्रभाव रची, देवों ने यह नगरी भारी।
शुद्ध संयमी, धीर गम्भीर तपस्वी सुखकारी॥
(छन्द) कचलुंच तब करवाय, प्रति बन्दन करी मुनिराज सब।
करते विहार चले नगर, उज्जैन वन पहुंचे हैं अब॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनि आगमन गुरु संघ, थूलाचार आदिक मिल सभी ।
इक शिष्य भेजा वन विषें, सब भेद लेने को अभी ॥
(दौ०) देखि विडम्बन रूप कही गुरु धिगधिग तुम संयम-घाता ।
जो भवि ध्यावै' सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१७॥
शिष्य आय निज गुरुजनों से, सब हालत बतलाई है ।
मुझे देख कर, उन्होंने बच धिक्कार सुनाई है ॥
रामल्यादिक मिलकर सबने, मन्त्र किया क्या करें उपाय ।
वयोवृद्ध तब थूलभद्र ने सभी संघ को दिया जवाब ॥
(छन्द) सब तजौ यह विपरीत मग उन ढिग चलौ हर्षायके ।
छेदोपस्थापन करो, पुनि तप धरौ सब जाय के ॥
निज भूल अंगीकार करि कीजिये सभी मन शुद्धता ।
तजि सकल शिथिलाचार को, सब तजौ इन्द्रिय गृद्धता ॥
(दौ०) मूर्ख लम्पटी असदाचारी, उनको नहिं यह बच भाता ।
जो भवि ध्यावै, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१८॥
कलकलाट करि थूलभद्र के, सब ने बज्र प्रहार किया ।
मार मार कर, वहीं प्राणान्त देह संहार किया ॥
कुतप योग से प्राण त्याग कर व्यन्तर देव हुआ भारी ।
अवधि विचारी, उपद्रव किया संघ को दुखकारी ॥
(छन्द) तब करी सब व्यन्तर सु पूजा, त्याग सब श्रद्धान को
तसु रूप पोषक रचे बहु, आगम सु निज अभिमान को ॥
वस्त्र युत मुनि मोक्ष जावें त्रिया मोक्ष बतावही ।
अर्हन्त कवलाहार अरु, साग्रन्थ देव सु ध्यावहीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दो०) हुण्डावसर्पिणि काल पंचमा, चला पंथ यह दुख दाता ।
जो भवि ध्यावै सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥१९॥
श्वेताम्बर मतकी यह उतपति, भविजन निश्चय मन आनों ।
होय सरागी, ग्रन्थ युत उमे न सत्य देव जानों ॥
जो विषयों में लिप्त न होता वह सच्चा सुख का दाता ।
धरै परिग्रह, लम्पटी साधु न शिव पद को पाता ॥
(छन्द) जो राग द्वेष कषाय युत, कैसे करै पर का भला ।
जिसमें परस्पर हो विरोध न शास्त्र दे सम्यक कला ॥
जो दण्ड वस्त्र रु पात्र धारै, देव गुरु किम शान्ति है ।
उद्धार जग का करै कैसे, जब स्वयं मन भ्रान्ति है ॥
(दो०) किम भवदधि से करै पार, वह खुद नहिं जग से तिर पाता
जो भवि ध्यावै, सुनें बांचै सो लहै शिव सुख साता ॥२०॥
दोष अठारह रहित, श्री जिनदेव सदा ध्यावौ मन में ।
धर्म दया मय, गुरु निर्ग्रन्थ वीतरागी तन में ॥
आदि अन्त अविरोध शास्त्रका, पठन कीजिये मनवचकाय ।
वृष दश पालौ, दर्श, चारित्र ज्ञान, शिवमग उरलाय ॥
(छन्द) हिंसादि पांचों पाप तजि, पंच व्रत धरौ सुखदाय है ।
मधु, मांस, मद्य, निवार, जप तप व्रत करौ मन लाय है ॥
जिनधर्म द्योत करौ सदा, करि दान पर उपकार को ।
'भगवत' जपो अहिनिश, श्री शुभ मन्त्र पंचनवकार को ॥
(दो०) यह श्री भद्रभाहु मुनि गाथा, 'भगवत्' गा मन हर्षाता
जो भवि ध्यावै, सुनें वांचै सो लहै शिव सुख साता ॥२१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—विक्रमाङ्क षट तीन इक वामागति जु विचार।
इन्द्रिय-पोषक प्रगट जग, श्वेताम्बर परचार ॥
भद्रबाहु मुनिवर कथन, आगम मांहि विशुद्ध।
निरखि पद्य रचना करी, 'भगवत्' बालक बुद्धि ॥

—×—

मोह निद्रा त्यागो

लावनी—६५

मोहनींद में सोवौ चेतन, क्यों ना जागत सुज्ञानी।
है यह काया, भिन्न जीव से जो तुमने अपनी जानी ॥
तू चिनमूरति यह जड़ भाई, इससे पृथक सम्बन्ध तेरा।
जिसको समझै मेरी यह साथ देयगी यह जु मेरा ॥
पुष्ट करै षट रस भोजन से, इसकी खातिर में जु लगा।
अन्त समय पर, चेतन प्यारे यह तुमको देगी सु दगा ॥
(छन्द) जब आय कर यमराज तेरा ले पकड़ कर हाथ है।
तब और क्या यह काय भी हर्गिज चलै ना साथ है ॥
जाना पड़ै तुझको अकेला, ठीक यम दरबार है।
जहां मात पितु भ्राता औ नारी, ना कोई परिवार है ॥
(दौ०) हाथ मलै है और रोवै है, पीछे से हो पछितानी।
है यह काया भिन्न जीव से जो तुमने अपनी जानी ॥१॥
अनादि काल से साथ लगे हैं, अष्ट कर्म दुखदाय तेरे।
ज्ञानादिक जो, तेरे गुण सो सब इनने जेर करे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वश इनही के में होकरके, लेने नाना स्वांग धरे ।
लख चौरासी, योनि में पाप रूप बहु कर्म करे ॥
(छन्द) तू कर्म के वश में पड़ा भोगै काम फल आप है ।
कभी हो सुखी कभी दुख सहै, यह फल सु पुन्य रु पाप है ॥
सुर, नर, पशू, नारक, औ थावर में भ्रमा चिरकाल है ।
बहु पुण्य योग मिला मनुष तन, करै क्यों नहिं ख्याल है ॥
(दो०) जो अब के यह दाव जाय, तो होगी फिर दुर्लभ पानी ।
है यह काया, भिन्न जीव से, जो तुमने अपनी जानी ।२॥
मात, पिता, सुत, मित्र, औ दारा, ए सब स्वारथ के साथी ।
मेरा मेरा कहत में, आयु यों ही बीती जाती ॥
निश दिन रहै फिकर दौलत की, त्रिया जाल में तू राचा ।
इस ही को ही, तू जानता यही मेरा है सुख सांचा ॥
(छन्द) है सत्य सुख निज आत्मचिन्तन, श्रुत, देव, गुरुश्रद्धात है ।
तजि क्रोध मान कषाय ममता, धारि आतम ज्ञान है ॥
समता औ शुभ संतोष से, मिट जायगी भव वेदना ।
क्रम २ सु तप करि शिव मिलै, इस तरह भव दुख छेदना ॥
(दो०) क्यों ना जानि भजौ निज आतम समझावै यों जिनवाणी
है यह काया, भिन्न जीव से जो तुमने अपनी जानी ॥३॥
है जिन धर्म महा सुखदाई, मङ्गल मूल अशुभ नाशै ।
भव संतित का, छेदनहारा अविचल सुख को परकाशै ॥
श्री जिनवर का शरणा लीजै, सारे संकट नशि जावै ।
सुर नर असुरों, कर जो पूजित गणधर जिनको नित ध्यावै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) सर्वज्ञ सर्वदर्शी जगोत्तम, देव श्री अर्हन्त हैं।
जिन गुण अनन्त सु ध्यान नित, करते सु साधु महन्त हैं॥
नित ध्याय उनको भव्य तू वह पार भवदधि से करें।
संसार सागर से निकालें, जाय शिव सुख में धरें॥
(दो०) 'भगवत्' सदा जपो इनको हो, ये मंगलमय अघहानी।
है यह काया, भिन्न जीव से जो तुमने अपनी जानी॥४॥

—):×:(—

निश्चय व्यवहार सम्यक्त्व

लावनी—१००

निश्चय औ व्यवहार दोनों समकित, सु जीव उपयोगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा सहयोगी है। टेक॥
मोक्ष महल पर जाना जिय को, चौदह पैड़ी चढ़ना है।
क्रम क्रम करके, धार दृढ़ पग आगे को बढ़ना है॥
बहिरातम अन्तर आतम, परमातम त्रय आतम संज्ञा।
बहिरातम का, दीर्घ ससार न तरि पावै गंगा।
(छन्द) अन्तर जु आतम जीव जग में, भेद तीन प्रकार है।
उत्तम, औ मध्यम, जघन, इनमें प्रथम हों भव पार है॥
व्यवहार समकित धारि फिर निश्चयकी करि आराधना।
लागे हैं आतम, ध्यान में, शिव थान पावन भावना॥
(दो०) उत्तम ज्ञानी आम ध्यानी, यह जग सच्चे योगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा सहयोगी है॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यम आतम व्रती पुरुष हैं, जो द्वादश व्रत धारी हैं।
निज स्वरूप के, प्राप्ति की जो करते तैयारी हैं ॥
धर्मक्रिया में लीन सदा ही, सदाचार को पालै हैं।
संयम रत हैं, सरल सन्तोषी अघ को टालै हैं ॥
(दौ०) जो भेद एकादश बताये, नाम प्रतिमा कहत हैं ॥
दर्शन औ व्रत आदिक सभी को, पालते रत रहत हैं ॥
जो लोभ लालच त्याग, त्यागा निज शरीर सु राग है।
जो व्रत चरित पालन करें जिनधर्म में अनुराग है ॥
(दौ०) दर्शन प्रतिमा के धारी ले, ऐलक तक उद्योगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा उपयोगी है ॥२॥
सघन नाम है उस आतम का जो नहिं व्रत का धारी है।
किन्तु सदा ही देव गुरु आगम दृढ़ता भारी है ॥
घर में रहै नारि सुत पालै, खूब कमाता खाता है।
किन्तु हृदय में, ध्यान निज आतम का ही ध्याता है ॥
(छन्द) मध में रहै सब से अलग ज्यों रहै पानी में कमल।
भोगत है भोग विरक्त मन, करता है जिन वच पर अमल ॥
आचार और विचार जिसका, धर्म के अनुकूल है।
जो पाप रूप असत क्रिया. करता कभी नहिं भूल है ॥
(दौ०) धर्मोद्योतन खर्च करै धन, मन योगी तन भोगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा उपयोगी है ॥३॥
यह तीनों अन्तर आतम के, भेद बताये जिनवाणी।
सभी समकिती किन्तु है भेद विशेष रु कम ज्ञानी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विन व्यवहार न निश्चय दृढ़ हो धीरे धीरे पाता है।
साधन कर कर, फेर वह बन जाता बहु ज्ञाता है॥
(छन्द) पाना है यदि निश्चय सु समकित साधिये व्यवहार को
बनकर सदाचारी व्रती, त्यागौ सकल अविचार को॥
फिर उत्तरोत्तर बढ़ा दृढ़ता, धारि करि संयम सकल।
निज रूप का शुभ ध्यान करना, छोड़कर मन का विकल॥
(दो०) ऐसा किये विना ना सरिये, रहौ सदा भव रोगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा उपयोगी है॥४॥
जो व्यवहार छोड़ि व्रत चारित, निश्चय भरै सपट्टा है।
वह एकान्ती, लगावै अपने पन में बट्टा है॥
विन धार्मिक जप तप पूजन के, केवल आतम कथन करै।
वह नर मूरख, चाहने घृत बालू का मथन करै॥
(छन्द) जो विन सकल चारित्र धारें, चाहता शिव वास है।
जो बिना व्रत धार्मिक क्रिया होना चहै भव पास है॥
जो रट लगा निश्चय चरित की, समयसार सु धार है।
वह नर न घर का घाट का, ना होय भव के पार है॥
(दो०) जा मानी न किसी की मानें, वह सद्गुरु नहिं ढोंगी है।
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा सहयोगी है॥५॥
जब यह जीव धारि व्रत चारित बन जाता है अभ्यासी।
तब निश्चय में, होय दृढ़ भोग रोग आशा नाशी॥
आत्म-धर्म में लीन होयकर, निज पर भेद मिटाता है।
समयसार के, कथन को सार्थक करि सु दिखाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द) यद्यपि है निश्चय मोक्ष दाता, आत्म रूप सु लीन है।
निश्चय बिना इस जीव का होगा न भव भय क्षीण है॥
किन्तु निश्चय साधने को मूल में व्यवहार है।
व्यवहार बिना ना सधै निश्चय, आगमोक्त विचार है॥
(दौ०) 'भगवत्' जो एकान्त कथन, वह बिन इञ्जन के बोगी है
निश्चय समकित, मिलन व्यवहार सदा सहयोगी है॥६॥

—※×※—

अपनी बात

लावनी—१०१

सदाचार घर घर में वर्ते, धार्मिकता हो जन जन है।
ख्याति लाभ की, भावना किञ्चित नहिं मेरे मन है॥टेक॥
पुण्य पाप फल का दिग्दर्शन, आगम में दिखलाया है।
पुण्य सु फल से, मिलै सुख साता यह बतलाया है॥
पाप कुफल दुख का दाता है, समझाया है जिनवाणी।
पाप पुण्य से, परै शुद्धातम-दृढ़ता शिव दानी॥
(छन्द) इस लावनी संग्रह में, जो जो लिखी भवि जीवन कथा।
वह पुण्य पाप स्वरूप, सुख दुख प्रगट करती हैं यथा॥
जो सदाचार औ धर्म में, दृढ़ रहै उन सुख पाय के।
पुनि धारि तप सब कर्म हनि शिव पुर बसे हैं जाय के॥
(दौ०) अच्छा पुण्य बुरा अघ दाता, समझ धारिये निज तन है
ख्याति लाभ की, भावना किंचित नहिं मेरे मन है॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मात्मा का चरित पठन, सुनने से मन हर्षाता है।
शुभ भावों से, पुण्य का बन्ध मिलै सुख साता है॥
पापी पाप करै मन हर्षै दुख फल उसका पाता है।
नरकादिक, में घोर दुख सहै जो पाप कमाता है॥
(छन्द) इन लावनी के पाठ से, सब चरित आवें ध्यान में।
धर्मात्मा पापात्मा की, भावना हो ज्ञान में॥
हो ज्ञान तब उत्थान, अपने की करैगा कामना।
इसलिये ही सु प्रयास यह, उत्थान निज पर भावना॥
(दौ०) आगमके अनुसार कथन सब, अन्यथा न कुछभी इन है।
ख्याति लाभ की भावना किंचित नहिं मेरे मन है ।२।
इस अतिरिक्त और भी कविता, लिखी मेरी हैंगी भाई।
जिनको पढ़ सुन होय बहु ज्ञान प्रभा वृष प्रगटाई॥
'श्री सुकमाल चरित्र' आधुनिक, शैली में त्रिसन्धि गाई।
जो बाजे पर, मधुर ध्वनि कहै प्रगट हो ललिताई॥
(छन्द) श्री सुखानन्द मनोरमा का, शीलचरित महान है।
लिखा खेलने स्टेज पर, लखि बढ़ै हिरदै ज्ञान है॥
'भगवत् भजन संग्रह' में धार्मिक छन्द कविता सोहनी।
सदाचार धार्मिकता बढ़ावन, भव्य जन मन-मोहनी॥
(दौ०) पूजन आदि और भी कविता, उपयोगी श्रावक गण है
ख्याति लाभ की, भावना किंचित नहिं मेरे मन है ।३।
जो सज्जन छपाय करि कविता, बांटे धर्म-प्रभावन को।
उनको ही मैं, दऊ जो धर्म-हेत खर्चें धन को॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी को बेच, लाभ लेने की नहिं मो इच्छा है।
मेरे गुरू ने, दई मुझ को ऐसी ही शिक्षा है ॥
(छन्द) यह वृष प्रभावन के लिये, करना स्वपर कल्याण है।
अरु सदाचार सद्धर्म वर्द्धन, अरु बढ़ाने ज्ञान है ॥
हो भव्य जन साधर्मियों में, स्वाध्याय प्रचार है।
इस भावना को धरि हृदय, ना और कुछ सु विचार है ॥
(दौ०) मन्द बुद्धि से हों जो त्रुटियां, क्षमा सु करना बुधजन है।
ख्याति लाभ की भावना किंचित नहिं मेरे मन है ॥४॥
मैंनपुरी उत्तर प्रदेश में, जिला सु फरिहा है कसवा।
भोलानाथ जी पूज्य बाबा का यहां पर है बसवा ॥
पिता सु लाला चौबेलाल जी, मात द्रोपती सुखदाता।
तिन उर उपजे, नाम 'लक्ष्मण' 'भगवत्' यह दो भ्राता ॥
(छन्द) भ्रात दोनों शूद्र जल का, त्याग दिया अहार है।
उन्नीस सौ छियासी है विक्रम, सु गुरु संघ पधार है ॥
आचार्य वर्य सु 'शान्तिसागर' 'चन्द्र वीर' सु हर्ष है।
उस समय लक्ष्मण की अवस्था, ठीक सोलह वर्ष है ॥
(दौड़) चार वर्ष छोटे थे लक्ष्मण, भगवत् भ्रात बड़ापन है।
ख्याति लाभ की, भावना किंचित नहिं मेरे मन है ॥५॥
पांच पुत्र दोनों ने पाये, पापोदय ना कोई है।
बड़े बड़े हो, मरे फल मिला किया जो सोई है ॥
कन्या सात हुई दोनों के, तिन में अब दो बाकी है।
लक्ष्मण भाई, गये सुर-पुर न मिलै अब झांकी है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द जो पाप पूरब भव किये फल भोगना उनका पड़ा।
दुख पर सहे दुख पुनः दुख भगवत हृदय अब है कड़ा ॥
फरिहा निकट ही क्षेत्र, मरसलगंज अतिशय युक्त है।
आदीश प्रभु हैं अतिशयी, भगवत् उन्हीं का भक्त है ॥
(दौ०) बालपन से सेवक उनका, उन सेवा में रत तन है।
ख्याति लाभ की, भावना किंचित नहिं मेरे मन है ॥६॥
देव, शास्त्र, गुरु, सेवक भगवत् आगम पंथ सु प्यारा है।
उठी भावना, हृदय में क्षेत्रोद्धार विचारा है ॥
विमलसिन्धु आचार्य कृपा से, भवि जन दिया सहारा है।
भव्य मनोहर, ऋषभ जिन-बिम्ब क्षेत्र ला धारा है ॥
(छन्द) यह बिम्ब श्वेत स्वरूप पद्मासन महान विशाल है।
अन्यत्र भारत में कहीं नहिं, मिलै इसी मिशाल है ॥
तद् रूप कटनी तीन वेदी, कमल सुन्दर हाल है।
करि दर्श होवै हर्ष, दर्शन करौ लखौ कमाल है ॥
(दौ०) 'भगवत्' सेवक ऋषभचरण का उन्हीं शरण में जीवन है।
ख्याति लाभ की, भावना किंचित नहिं मेरे मन है ॥७॥

इति लावनी संग्रह समाप्त।

—❀×❀—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धा शुद्धि पत्र

लावनी संख्या	पृष्ठ सख्या	लायन	अशुद्धि	शुद्ध
१	२	७	भ्रात	भ्राता
२	४	१७	सुने	सुनाँ
२	५	२२		नर सुर
३	८	७	चौबीस	चौबीसी
४	८	५	उज्जैनी	उज्जैनी के
६	१३	२	पापप्रहारी	पापहारी
६	१३	४	सबका	सब
६	१४	१०	सुधा	क्षुधा
७	१५	११	जो वाशी	जो है वाणी सुख — मुख
७	१६	६	पात है	पाता है
८	१७	५	कीनी	कीनी है
८	२०	२	काटा	कटा
९	२१	२	लक्ष्मण	लक्ष्मणा
९	२१	७	मुनि के	मुनी के
९	२१	२२	प्रभु वतादो	प्रभुसु वतादो
१०	२३	५	खीचता	खींचत
१२	२६	२	प्रहारी	पापहारी
१२	२६	४	मूरती	मूरति
१२	२७	६	वालकुमर	वालकवुमुर
१२	२८	११	सात तौ	सातौ
१३	२९	१८	सन	मन
१३	३०	८	देख	देखकर
१५	३४	१७	सुनकर	सुनकर के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६	—	३६	—	१२	—	तनमें	—	तन
१६	----	३६	----	२०	—	पेट भरन-पेट भरने		
१७	—	३९	—	१३	—	सुखी ईश	—	सुखीनईश
१७	—	३९	—	२१	—	शुद्धध्यान	—	शुद्ध सुध्यानसे
१८	—	४३	—	१२	—	सन्देशाहि	—	सन्देश है
१९	—	४४	—	१	—	लुंच क्राध	—	लुंचैक्रोध
१९	—	४५	—	२	—	झट	—	झट ला
२०	—	४६	—	१६	—	बंठे	—	बैठे हैं
२१	—	४७	—	७	—	कर	—	करा
२१	—	४७	—	८	—	विलास	—	विसाल
२१	—	४८	—	३	—	प्रतिमां-जिनप्रतिमां		
२१	--	४८	--	१५	--	छिपौतुम-छिपौ तुम्ही		
२१	—	४९	—	१७	—	भगगत्—		भगवत्
२२	—	५१	—	१६	—	थाक—		थाम
२३	—	५५	—	४	—	धम—		धर्म
२३	—	५५	—	१९	—	स्त्रोत्रपढि—		स्त्रोस्त्र
२३	—	५५	—	२०	—	यदि सुनतं-जिमसुनत		
२४	—	५६	—	१०	—	देख-देखै		
२४	—	५७	—	७	—	लेक-लेकर		
२५	—	५९	—	५	—	झुकाऊग-झुकाऊंगा		
२७	—	६४	—	१६	—	होंनी अटल-होंनीं है अटल		
२८	—	६६	—	१५	—	लघुन-लघु से न		
२९	—	६८	—		--	मनधता है-मनधरता है		
२९	—	६९	—	१६	—	मद्यमांस-मद्य औमांस		
३०	—	७०	--	३	-	मनुष-मानुष		
३०	-	७०	-	१२	-	चलन-चलने		
३०	-	७१	-	५	-	छोंट छोटे		
३०	-	७१	-	१२	-	क्यावुद्धि क्या कुवुद्धि		
३१	-	९७	-	९	-	अन्नभोज-अन्न भोजजु		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२	७४	१	—	लावनी—.३ लावनी ३२
३२	७५	१४	—	औलोरी है-औनारी है
३२	७६	९	—	वन बनें
३२	७६	११	—	दुर्गन्ध -दुर्गन्धजु
३३	७९	४	—	वैसी—वैसी ही
३३	८०	८	—	चलित-चलिता
३३	८०	११	—	जो अक्षर अधिक है
३०	८५	४	—	बाबला-है बाबला
३५	८५	७		कर मांगता करके सुमांगता
३५	८६	११		राख राखा
३५	८६	१४		मैनेलहा-मैंने नां लहा
३६	९०	१५		कोदन में-जाबन में
३८	९६	१		यही-यही है
२८	९७	१		धधकाती-धधकानीं
२९	९८	१		देख जगी क-देख जगकी
२९	९८	२१		ममता भी ममता भी वठी
९०	१०१	१२		धन से धन से न
४२	१०६	४		मैंने ही मैंने
४४	११३	५		रोवत रोवत रोवत
४६	१ ८	३		चढा-चढाया
४२	११८	१४		लगा - लगा है
४७	१२०	४		विवेक की - विवेकी
४८	१२४	२०		माता ने -माता
४९	१२५	२०		४६ ४९
४९	१ ६	७		सामा - सोंमा
४९	१२८	२		सेठ - सेठ ने
४९	१२८	१०		फल - फलजिय
४९	१२९	२२		पात - पाप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५०	१३४	१७	पाप - पाप है।
५०	१३५	७	गर - घर
५०	१२८	१५	नैननीर - नैननीरनां
५०	१४०	७	सही सती
५१	१४१	१५	जिनमंदिर - जिनमंदिर को आते हैं
५१	१४३	२०	पार पडीन-पार पडीना
५३	१४७	१७	वर्ण तगडी - स्वर्ण तगडी
५३	१४७	१७	कटि खोल कटि खोल २
५५	१५०	५५	कम - कर्म
५५	१५१	१३	कोटिभट - कोटी भट सु
५५	१५१	१६	फिर - फिरै
५५	१५२	११	भटकते - भटकत
५६	१५३	३	राज - राजा
५७	१५६	१३	वर्ष - वष के
५७	१५६	१६	जीत - जीत लिया
५७	१५८	२	जैसा - जैना
६१	१६६	२	धरम - धरमका
६१	१६६	८	जना - जाना
६१	१६६	१६	औमाता पिता - माता पिता
६१	१६७	१०	कुछ ध्यानमन- औशुभ विचार
६१	१६८	६	यह हाल यह हाल है
६२	१६९	१८	पैसा - पैसा ही
६३	१७१	७	मिनेत्रियों - अभिनेत्रियों
६६	१७८	१५	मित्र - मित्र मुझे
६७	१८०	५	प्रभाव - प्रभाव ही
६८	१८३	१७	वैर - वैर की
६८	१८३	२१	तव जाना - तव देव जाना
७०	१८८	१८	आकर - आय कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७१	१९२	१	६४	७१
७१	१९२	३	मुनि - श्री मुनि	
७२	१९८	१६	कीनी - कीनीं है	
७४	२०८	२२	यह यही	
७६	२१६	७	मभा - सभा	
७६	२६	१९	भी बमन-भी वहु बमन	
७६	२१८	७	वेंन छाया- बेंन मन छाया	
	२१९	३	मुनिको - मुनिको कहि	
७७	२२०	१९	दिन क्षुल्लक-दिन-श्री-क्षुल्लक जी ने	
७७	२२१	४	नव हरी - नव हरी भी	
७९	२२६	१०	बन रहे - बने रहे	
८०	२२९	२१	कष्ट-काष्ट	
८०	२३०	११	सुनी - मुनीं	
८०	२३०	१२	विष्णु कुमार-विष्णु कुमारसे	
८३	२४०	१७	लेकली-केवली सु आगे	
८३	२४१	७	न मानीं - नां मानीं	
८५	२४५	५२	ढिग हो आई-ढिग आई	
८६	२४७	१४	छाया है - छाया	
८६	२८७	१८	दिश जोवै-दिश में जोव	
९३	२६३	३	मय सुनि - मय मुनि	
९४	२६४	५	घर जा घर - घर जा	
९६	२७२	७	गावें गान-गावें मंगल गान	
९८	२८७	१	रामल्या चारज-श्री रामाल्याचारज	
९८	२८७	३	मुनि दश होय-मुनीं दश दोय हजार	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रण द्वारा—

शान्तिसागर जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था

शान्तिवीर नगर

पो० श्रीमहावीर जी (राजस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ❀ ॥ धार्मिक

[छपवाव

"जिनवाणी माह
छन्दों युक्त जो कि-
जन्म अन्ध चांडाली
सुकोमल तन सुकमाल
कर घोर उपसर्ग जीत
सविस्तार वर्णन है।
"शील माहात्म्य" अ
जो कि--ग्रामीण तथा
पर नौटंकी के रूप में
भजन संग्रह" "भगवत
कविता, यह उपरोक्त
छपवाकर बांटना चाहें

भग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi